नाटककार

ललन प्रसाद ठाकुर

रचनावली



सम्पादक : प्रकाश झा



लल्लन प्रसाद ठाकुर एवं कुसुम ठाकुर

नाटककार लल्लन प्रसाद ठाकुर रचनावली

नाटककार लल्लन प्रसाद ठाकुर रचनावली

सम्पादक

डॉ. प्रकाश झा

मैथिली लोक रंग

मैलोरंग, प्रकाशन

मैलोरंग

मैथिली लोक रंग
651, चौथा तल, अग्रवाल चैम्बर-III
26, वीर सावरकर ब्लॉक
विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली-92
mailorang@gmail.com
9811774106, 9711127142

प्रथम संस्करण : 2022

कवर चित्र : मनीषा झा

कवर अभिकल्पन : राजीव शर्मा
टाईप सेटिंग : संजीव कुमार (बिट्टू)
: जूली श्रीवास्तव

ISBN : 978-93-82828-37-2

मूल्य : 595/-

मुद्रक : विकास कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटर्स, ट्रॉनिका सिटी, लोनी, गाजियाबाद-201102

Natakakar Lallan Prasad Thakur Rachanavali
Edited by Dr. Prakash Jha

समर्पण

अंतरराष्ट्रीय मैथिली नाट्य महोत्सवक परिकल्पक
रंगशिरोमणि श्री मंत्रेश्वर झाकेँ
जिनक नाट्यदृष्टिसँ
लल्लन प्रसाद ठाकुर सन सम्पूर्ण रंगकर्मी
लक्षित भ' सकलाह
संगहि
लल्लनजीक मैथिली रंग-अभियानमे संग देनिहार
रंगकर्मीलोकनि केँ चरणमे समर्पित

अनुक्रम

गीत/लोरी

हिन्दी रचना

नाटक

एकांकी

सस्मरण : अर्धांगिनी

परिशिष्ट

भूमिका

मैलोरंग द्वारा स्थापना वर्ष 2006 मे प्रथम 'मिथिला रंग मोहोत्सव' आयोजनमे अंतरराष्ट्रीय सेमिनारक आयोजन भेल छल। एहि संगोष्ठीमे तात्कालीन प्रायः सब विधाक व्यक्तित्व आमंत्रित छलाह। सेमिनारमे कतेको विषय आयल मुदा सबस' बेसी खगता जाहि दिस ध्यान डॉ. गंगेश गुंजन जी आकर्षित करौने रहथि ओ छल, मैथिली नाटक संबंधित एकटा समृद्ध प्रलेखण (डक्यूमेंटेशन) स्थान होबाक चाही, जाहि ठाम मैथिली नाटक संबंधित सब जानकारी भेटबाक चाही।

हम स्वयं जहिया कोनो आलेख वा कि कोनो नाटक वा कि अन्य कोनो सामग्रीक खगता बुझलहुँ, ओहि सामग्री के हेरबामे कतेको महीना लागैत छल आ एखनो लागि जाइत अछि। तखने मोन पड़ि जाइत अछि डॉ. गंगेश गुंजनक ओ पाँति। तेँ प्रयासमे छी जे मैलोरंगकेँ मैथिली नाट्य संबंधी समृद्ध प्रलेखण (डक्यूमेंटेशन) केन्द्र बनाओल जाय।

मैथिली नाट्य विधाक विशेष अध्ययन लेल मैथिली नाटकक पाठ अति आवश्यक अछि। जखने कहियो मैथिली नाटकक चर्च - वर्च होइत अछि त' किछु प्रमुख नाटकक नाम अवश्य सोंझा अबैत अछि। प्रायः ओहन रंगकर्मी वा नाट्य प्रेमी लोकनि जे साकांक्ष छथि अपन गप्प-शप के दौरान नाटक 'लोंगिया मिरचाई', 'बकलेल', 'मि. नीलो काका' नाटकक चर्च कोनो ने कोनो रूपमे क' दैत छथि। तेँ एहि नामके प्रति आकर्षण बढ़ैत चलि गेल। हमर सबहक नाट्य संबंधी सभ जिज्ञासा के दूर करनिहार श्री महेंद्र मलंगिया जीक शरणमे जायल गेल। हुनक व्यक्तिगत पुस्तकालयमे उपर्युक्त नाट्य पुस्तक हेरल गेल। पढ़ल गेल। लेखक के बारेमे चर्च-वर्च कयल गेल। नाटककार लल्लन प्रसाद ठाकुरकेँ प्रति आकर्षण बढ़ल गेल। धीरे धीरे अधिकांश रचना एकत्रित क' मैलोरंगक डक्यूमेंटेशन सेक्शनमे राखि देल गेल। एहि बीच कतेको ठाम स' हिनक रचनाक माँग अबैत गेल। फोटोकॉपी पठाओल गेल।

वर्ष 2016-17 ई. मे मैलोरंग रेपर्टरीसँ जुड़लीह अभिनेत्री मनीषा झा। मनीषा अपन अभिनयक परिचय 'धूर्तसमागम' नाटकमे प्रेक्षकक समक्ष रखने छथि। एक दिन अनायासे मनीषा कहि उठलीह जे स्व. लल्लन ठाकुरजी हुनकर मौसा जी छथिन आ श्रीमती कुसुम ठाकुर मौसी। श्री लल्लन जी मादे बहुत रास गप्प हुअ' लागल। सोशल मीडियाक माध्यम स' कहियो काल हमरो श्रीमती कुसुम जी सँ गप्प हुअ' लागल। अही समय कोनो व्यक्तिगत काजसँ श्रीमती कुसुम ठाकुर दिल्ली अयलीह। मनीषाक प्रयास स' हमरा सभहक भेंट-घाँट राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के प्रांगण मे भेल। कतेको प्रकारक योजना पर गप्प भेल। जाहिमे हमर प्रस्ताव छल स्व. लल्लन प्रसाद ठाकुर जीक रचनाक संकलन प्रकाशित होबाक चाही। ई प्रस्ताव हुनको नीक लगलनि, काज प्रारम्भ करबाक ओ स्वीकृति देलनि। मुदा, लगले कोरोना महामारीक प्रकोप आबि गेल आ काज सबटा ठप्प भ' गेल। जखने कोरोना स' कनि फारकति भेल त' एहि रुकल काज के फेर स' बढ़ाओल गेल। श्रीमती कुसुम जी लगातार अपन यात्रा पर रहैत छथि संगहि आन आन कतेको तरहक व्यस्तता सेहो रहैत छनि मुदा, हुनकर मोनक एकटा कोन मे ई काज हरदम पहिल नं. पर रहैत छलनि। बिना हिनकर सहयोग के स्व. लल्लन प्रसाद ठाकुर जीक संकलन निकालब कठिन काज छल। आई ई प्रति अपनेक सोझा अछि। हृदय स' आह्लादित छी।

एहि रचनावलीमे स्व. लल्लन ठाकुर जीक सभ रचनापर अलग-अलगसँ अपन प्रतिक्रिया लिखल जा सकैत छल, जाहिसँ हमर सम्पादकीय कनी भरिमगर लगितय। हुनक सभ रचनाक कथासार सेहो देल जा सकैत छल। जेना अधिकांश सम्पादित पुस्तकमे देखबामे अबैत अछि। सम्पादकक सम्पादकीय आलेख सम्पूर्ण रचना सँ पैघ भ' जाइत अछि। प्रायः प्रयास रहैत अछि, जे रचनाकार गौण रहथि आ सम्पादक अपनाकेँ स्वयं श्रेष्ठ साबित क' लैथि। हमरा ई कनी अनसोहाँत सन लगैत अछि। लेखककेँ स्वयं मात्र अपन रचनाक संग सम्पूर्णतामे रखनाइ हमरा उचित लगैत अछि। रचनापर सविस्तार आलेख दोसरठाम लिखल जा सकैत अछि, रचनावलीमे किएक? तेँ एहि ठाम लेखकक रचनापर कोनो प्रकारक सम्पादकीय प्रतिक्रिया नहि देल अछि। 'विद्यापतिक दुर्दशा' प्राप्त नहि भ' सकल तकर खेद अछि। रचनाक उचित निर्णायक अपने सन गुणी पाठक छी—श्री लल्लन जीक रचना पढ़ू, गुणू आ विस्तारित करू... से सादर आग्रह।

—प्रकाश झा

परिचय

नाम : श्री लल्लन प्रसाद ठाकुर।
ग्राम : समौल, जिला मधुबनी, मिथिला (बिहार)।
जन्म : 05 जनवरी, 1953 ई.।
शिक्षा : वाट्सन हायर सेकेण्डरी स्कूल, मधुबनी (वर्ष 1967 ई.)।
एम. आई. टी. मुजफ्फरपुर (असैनिक अभियंत्रणाक स्नातक, वर्ष 1973 ई.)।
वृत्ति : टिस्को, जमशेदपुरक सी.ई. एण्ड डी.डी. विभाग मे अभियंता।
साहित्यिक रुचि : मैथिली एवं हिंदी भाषामे नाटक तथा गीत लेखन, निर्देशन, अभिनय, गायन एवं वादन।

पारिवारिक परिचय :

माताक नाम : श्रीमती सुभद्रा देवी।
पिताक नाम : श्री हीरानंद ठाकुर।
दू बहीन छः भाई मे दोसर संतान श्री लल्लन ठाकुर।
रंगमंचक प्रेरणा स्रोत : ज्येष्ठ पित्ती श्री आशानंद ठाकुर एवं ज्येष्ठ भाई यशोदानंद ठाकुर।
रंगमंचक प्रथम गुरु : बुच्ची बाबू।
वैवाहिक तिथि : 13 जुलाई, 1972 ई.।
पत्नीक नाम : श्रीमती कुसुम ठाकुर।
संतानक नाम : कुमार भाष्कर ठाकुर आ कुमार मयूर ठाकुर।
'मिथिलाक्षर' संस्थाक स्थापना : वर्ष 1983 ई.।
देहावसान : 07 सितम्बर, 1995 ई.।
(नोट : श्री लल्लन ठाकुर जीक सभ उपलब्ध रचना समग्रमे संकलित अछि)



लल्लन प्रसाद ठाकुर

स्मरण

हम्मर एल.पी.टी.

कुसुम ठाकुर

[सन् 1996क गप्प थिक। एक बेर हमारा एकटा पत्रिकामे किछु लिखय लेल कहल गेल छल। हम बस एतबे लिखी सकलौं ''हम की लिखी हमर त' लेखनीए हेरा गेल''। मुदा आई बुझना जाइत अछि जे नहि, हमरा एकटा कर्तव्यक निर्वहन करबाक अछि।]

हम सदिखन अपनाके हुनकर शिष्या, सहचरी आ नहि जानि की सब बुझैत रही। हुनक एकोटा रचना एहन नहि होइत छलैन जाहि केर पूरा होम' स' पहिने हम कैएक बेर नहि सुनैत रही। हम त' हुनक एक-एक रचनाके ततेक बेर सुनैत रही, जे करीब करीब कंठस्थ भ' जाइत छल। एक एक संवाद आइ धरि ओहिना हमर कानमे गुंजैत रहैत अछि। हम त' हुनक सबस' पैघ आलोचक, सबस पैघ प्रशंसक रही। अद्भुत कलाकार छलाह, एक कलाकारमे एक संग एतेक रास गुण भैरसक नहि होइत छैक। लेखक, निर्देशक, अभिनेता, गीतकार, संगीतकार, सब गुण विद्यमान छलैन्ह। हमारा की बुझल जे नीक लोकक संग बेसी दिनक नहि होइत छैक। भगवानोके नीक लोकक ओतबे काज होइत छैन्ह जतबा कि मनुष्यके। हम त' भगवान स' कहियो किछु नहि मँगलियैन्ह, बस हुनक संग सदा भेटय, यैहटा कामना छल। मुदा, एकटा बात निश्चित अछि, जँ ओं भगवान छैथ आ कहियो भेंटलैथ त' अवश्य पुछबैन्ह, जे ओ हमारा कोन गलतीक सजा देलैथ, हम त' कहियो ककरो खराब नै चाहलियन्हि।

एतेक कम दिनक संग, परंच ओ जे हमरापर विश्वास केलैन्ह आ हमरा स्नेह देलैन्ह, शायद हमरा सात जन्मोंमे नहि भेंट सकैत छल। एखनो जँ हम हुनक फोटो के सामने ठाढ़ भ' जाइत छी त' बुझाइत अछि, जे ओ कहि रहल छथि, हम सदिखैन अहाँक संग छी।

हुनक नाटक केर समग्र प्रकाशित होए ई हमर हार्दिक इच्छा छल, जाहिके पूरा करय केर श्रेय प्रकाश जीके जाइत छन्हि। हम प्रकाश जीके हृदय स' आभारी छी।

•

आनंद मिश्र

लल्लन प्रसाद ठाकुर समाजकेँ चिन्हल, रंगमंचक सीमाकेँ बूझल तथा लोकरुचिक ध्यान राखि सामाजिक समस्याक चित्रण अपन कृतिसभमे कएल। लोक ओकरा पसिन्न कएलक आ लल्लन ठाकुरक नाटक गाम-गाममे अभिनीत होमए लागल। नाटकक मुख्यधारामे नवीन मोड़ अनितहुँ लल्लन ठाकुर नवीनताक बाढ़िमे भसिएलाह नहि।

आब नहि छथि लल्लन प्रसाद ठाकुर। किंतु अपन कृति चाहे ओ 'नीलो काका' रहथि, चाहे 'बड़का साहेब' वा 'लोंगिया मिरचाई' सभमे ओ वर्तमान रहताह आओर ओकरा माध्यमे ओ समाजमे, मैथिली नाटक जगतमे अमर रहताह। हुनक स्मृति मैथिली नाट्यलेखनकेँ गति प्रदान करैत रहत।

('भंगिमा' पत्रिकाक दिसम्बर, 1995; अंक 23 स' साभार)

•

पं. गोविंद झा

दिल्लीक तालकटोरामे हम भावुक भ' गेल रही से अपनहु बुझाएल। भावुकता शांत भेला पर कहने रहिअनि, ''एतेक दिन हम अहाँकेँ हलुक बुझैत रही, मुदा राति अहाँ हमर धारणाकेँ उनटाए देलहुँ।'' आइयो स्व. ठाकुर जे यदा-कदा स्मृतिमे अबैत छथि से केवल बकलेलक लेखकक रूपमे। 'बकलेल' नाटक हमरा माथमे कतेको प्रश्न सभक बिहारि आनि देने छल आ प्रायः तेँ ओहि दिन हमर हाथ स्व. लल्लन प्रसाद ठाकुरक पीठपर चल गेल रहए, जकर स्पर्श हमरा कहिओ नहि बिसरत।

('भंगिमा' पत्रिकाक दिसम्बर, 1995; अंक 23 स' साभार)

•

मंत्रेश्वर झा

स्वर्गीय लल्लन ठाकुर एक अत्यंत प्रतिभाशाली लेखक निर्देशक आ गंभीर अभिनेता छलाह। हमरा लोकनि जे अंतरराष्ट्रीय नाट्य समारोह पटना, दिल्ली आ विराट नगरमे करैत रही तकर ओ एक सशक्त आ सक्रिय हस्तक्षेप छलाह। हुनकर नाटक मनोरंजक त' रहबे करनि सोद्देश्य होइत छलनि। मैथिलीमे जे नाट्य लेखन एखन ठमकल जकाँ अछि तखन लल्लनजी बेसी मोन पड़त छथि। हुनकर समस्त नाट्य लेखन के समग्र प्रकाशन एक प्रशंसनीय प्रयास थिक। एहि लेल श्रीमती कुसुम ठाकुर आ डॉ. प्रकाश झाक सराहना।

•

महेंद्र मलंगिया

तहिया मैथिली नाटक क्षेत्रक युवातूरमे सबस' ओजस्वी, तीक्ष्ण बुद्धिक आ रंगमंचक प्रति भावुक लोक छलाह लल्लन ठाकुर। नाटकके ँ सम्पूर्णतामे बुझनिहार बहुत कम लोक छथि मैथिलीमे, लल्लनजी एहि मामलामे आँखिगर लोक छलाह। हुनक कलम स' आरो रचनाक अपेक्षा छल मुदा...।

•

गंगेश गुंजन

पैघ सँ पैघ लेखक दैहिक आयु प्रकृति सीमिते रहैत छैक। मैथिलीक दुर्भाग्यसँ लल्लन ठाकुरजी सदृश नाटककारहु अपना सभक बीच बेसी नहि रहलाह से तँ अबस्से बड़ दुःखद, किन्तु अपन एक, दू नहि जानकारीक अनुसार पाँच-पाँचटा विशिष्ट नाटक लीखि क' गेल छथि, जे हुनका बहुत युग धरि यशस्वी आयु द' क' जीवन्त रखतनि से भरोस हमरा लोकनि क' सकैत छी।

प्रकाश जी जखन ललन ठाकुरजी पर केंद्रित पोथीक प्रकाशनक सूचना आ किछु लिखबाक आग्रह कयलनि तँ स्वाभाविके जे बहुत प्रिय लागल। जहाँ धरि स्मरण अछि ठाकुरजी हमर समकालीने सहयात्री बहुत यशस्वी लेखक

छथि। अपना लेखक पतिपर केंद्रित एहि तरहक पोथी छपयबाक आ समाजक सोझाँ रखबाक श्रीमती ठाकुरक ई उद्देश्य हमरा विशेष प्रभावित कयलक। तें हुनका हम सादर अभिवादन करैत छी।

पोथी समाजोपयोगी हयत से हमरा भरोस अछि। ललनजी कें हम

अपन स्मरणांजलि दैत छी आ एहि आयोजनक सफल सुन्दर होयबाक शुभकामना।

•

प्रकाश झा (फिल्म निर्माता, निर्देशक)

स्व. लल्लन ठाकुरजी असीम प्रतिभावान व्यक्ति छलाह। लेखन, निर्देशन, प्रशासन अर्थात सर्वगुण सम्पन्न व्यक्तित्व। हुनका संग काज करक अवसर पाबि हम बहुत प्रसन्न छी।

•

छत्रानन्द सिंह झा

मात्र दस वर्षक अवधिमे नाटककार ललन प्रसाद ठाकुर नाट्य लेखनक क्षेत्रमे जे प्रतिष्ठा आ सफलता अर्जित कएलनि, तकरा पाएब बहुतोक लेल असम्भव। ललनजी सृजनशील व्यक्ति छलाह। मैथिलीक प्रगति लेल ओ सब किछु करए चाहैत छलाह। मैथिली सिनेमा लेल सिनेमा निर्माणक सब गुर पहिने सीखि लिय' चाहैत छलाह। नाट्य-साहित्य, रंगमंच आ सिनेमाक एकटा संभावनाक असमय अंत ठीके मैथिलीक लेल अपूर्णीय क्षति अछि।

('भंगिमा' पत्रिकाक दिसम्बर, 1995; अंक 23 स' साभार)

•

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

कोनो नाटककारक दीर्घ समय धरि जन मानसमे रहब अपने आपमे एकटा बड़का पुरस्कार जकाँ भ' जाइछ। ताहि दृष्टिएँ लल्लन ठाकुर जी एकटा प्रतिमानके रूपमे हमर सभक सामने छथिये। 'बकलेल' जकाँ नाटकक प्रणेता कैं 'भंगिमा' आ अन्य कतेको संस्था मंचित क' चुकल अछि। ओना हमर सभक कोनो व्यवस्थित नाट्य शोध संस्था नहि अछि, तैं मैथिली के नाटक रचयिता दय बेसी किछु सामग्री भेटइ नहि छै। तकर अभाव कैं पूर्ति करैत ई अभिनंदन ग्रंथ आबि रहल अछि, तदर्थ हमर हार्दिक शुभकामना। उमेद इयैह जे हमरा सभ कैं आर किछु नव नव नाटक भेटत हिनकर परिशीलित लेखनी स'।

•

रमानंद झा 'रमण'

लल्लन प्रसाद ठाकुरक नाटकसँ ई अवश्य स्पष्ट अछि जे ओ अपन युग जीवनक समस्याक प्रति पूर्णतरू संवेदनशील छलाह। ओकर परिणतिक प्रति चिंतित छलाह। समाज कैं कलुशहीन देखबाक आकांक्षा छलनि। आ ई संवेदनशीलता कोनो नाटककारकैं महान बनबैत अछि।

('भंगिमा' पत्रिकाक दिसम्बर, 1995; अंक 23 स' साभार)

•

विभूति आनन्द

लल्लन प्रसाद ठाकुर जी अपन लेखनमे यथार्थकैं सर्वोपरि मानैत छलाह आ ओहि यथार्थ समाज-हितकैं अपन मूल-मंत्र रूपमे जपैत रहैत छलाह। ठाकुरजीक नाटकक मूल काया मैथिलीक रहैछ, प्राण रहैछ मैथिलक आ तैं समग्रतामे नाटक सम्पूर्ण

मिथिलाक लेल अपन भ' क' उभरैत छनि। नगरसँ महानगर धरि, मोहल्ला - टोलासँ सम्पूर्ण समाज धरि हिनक नाटककेँ बड़ सुगमतासँ खेलायल जा सकैछ।

('आधुनिक मैथिली नाटक - पहिल शताब्दी' पुस्तक स' साभार)

•

अशोक

स्व. ठाकुरक गामसँ स्नेह करब मिथिला सँ स्नेह करब थिक। यैह स्नेह हुनकर परिचालक शक्ति छलनि। एही कारणेँ ओतेक विपरीत वातावरणोंमे ओ एक गाम, एक मंच लौहनगरीयोमे सिरजि लेलनि। अपन नाटकमे सोझ-साझ, आडम्बरहीन, संवेदनशील ग्रामीण पात्र सभहक माध्यमेसँ ओ संवेदनहीनता, अपसंस्कृतीकरण, सड़ल राजनीतिक - सामाजिक व्यवस्था, ऊँच-नीच ओ शिक्षा व्यवस्था आदि पर प्रहारक' सकलाह। ई सभ हुनकासँ सम्भव भ' सकलनि, किएक त' हुनका मोनमे गाम बसल छलनि।

('भंगिमा' पत्रिकाक दिसम्बर, 1995; अंक 23 स' साभार)

•

विजय चंद्र झा

दिल्लीक प्यारेलाल भवनमे पाँचम अंतर्राष्ट्रीय मैथिली नाट्य समारोहक आयोजक अखिल भारतीय मिथिला संघ छल। मुख्य अतिथि फिल्मकार प्रकाश झा छलाह। जमशेदपुर स' आयल नाटक 'बकलेल' छल। सबस' बेसी पुरस्कार अही नाटक के भेट गेल रहै। तहिए भेंट भेल छलाह श्री लल्लन प्रसाद ठाकुर। तहिना हँसमुख, तहिना मिलनसार, तहिना दिव्य आ भव्य पुरुष, तहिना अभिनय आ ताहू स' बढ़ि क' लिखनाहर। अद्भुत व्यक्ति छलाह लल्लन बाबू।

•

कुमार शैलेंद्र

नाटकमे लोक किंवा लोक स्वभावक अनुकरण कयल जाइत अछि। जाहि अभिनयकैं लोक ठीक बुझय तकरे उचित बुझबाक चाही। लोककैं अभिनय पसिन पड़लैक माने अभिनेता सफल भेल। लल्लन प्रसाद ठाकुर वृद्ध चरित्र सभ केने छलाह, यद्यपि ओ स्वयं उमेरिक ओहि पड़ाव धरि नहि पहुँचल रहथि, तथापि ओहि चरित्र सभक सूक्ष्मताकैं ओ चुटकीसँ पकड़ि - पकड़ि क' मंचपर प्रस्तुत क' गेल छथि। तैं हुनक तीनू नाटकक ओ तीनू चरित्र जकरा ओ मंचपर जीवंत बनौलनि, प्रेक्षककैं विशेष पसिन पड़लनि तैं लल्लन प्रसाद ठाकुर रंगप्रेमी दर्शककैं बहुत दिन धरि मोन रहथिन्ह।

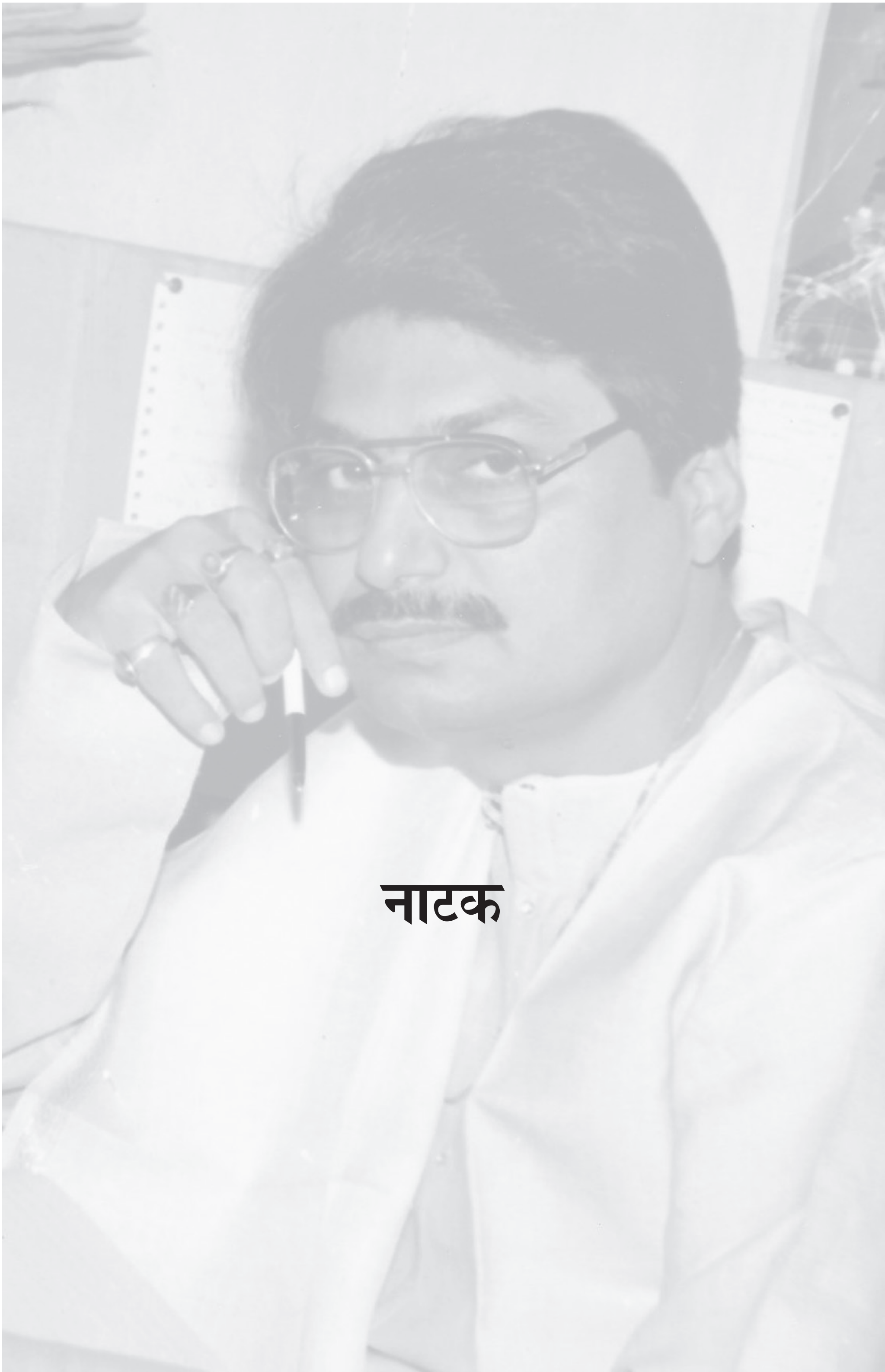
('भंगिमा' पत्रिकाक दिसम्बर, 1995; अंक 23 स' साभार)

•

सुधीरभाई मिश्र (कार्यकारी निर्माता प्रकाश झा प्रोडक्शंस)

परम आदरणीय स्व. लल्लन ठाकुर जी मैथिल आ मिथिलाक गौरव छथि। हुनकर स्नेह आ आशीर्वाद हमरा जिनगी के बहुत बेसी प्रभावित केने अछि। मैथिली साहित्यक सबस' उत्तम शब्द हुनकर महिमामे अर्पित अछि।

•



नाटक

बड़का साहेब

प्रथम मंचन

स्थान : रविन्द्र भवन, जमशेदपुर

दिनांक : 20 नवम्बर, 1983

निर्देशक : लल्लन प्रसाद ठाकुर

कलाकार

छेदी झा : लल्लन प्रसाद ठाकुर

चूड़ामणि झा :

भोला : लक्ष्मी कान्त झा

मीना : श्रीमती मीना ठाकुर

मिक्की : कुमारी नलिनी झा

बिक्की : कुमार मयूर

बी. सी. झा : पूर्णानन्द झा

रानी : कुमारी बन्दना मिश्र

बर्माजी : नीलाम्बर चौधरी

संगीत : राजा

कला : के. पी. राव

पार्श्वस्वर : बैद्यनाथ झा

मंच सहयोग : बालमुकुन्द चौधरी, रूपनारायण झा, प्रो॰ श्रीमती गीता सिन्हा, श्रीमती इन्दिरा झा

पार्श्वनृत्य : ज्ञान प्रकाश झा एवं कुमारी प्रतिमा

मंच निर्देश

ओना त' पर्दा बदलि कय दृश्य सभ देखाओल जा सकैछ परन्च, जतय मंच पर प्रकाशक नीक व्यवस्था हो ओतय प्रकाशक उपयोग क' एकहि मंच पर सभ दृश्य प्रस्तुत कयल जा सकैत अछि। प्रस्तुत रेखाचित्रमे मंच दू भाग मे विभाजित कयल गेल अछि।

भाग 1 : उज्जर पर्दाक पाछू कपड़ापर ईटाक जोड़ाइक पेंटिंग कैल गेट लागल छहरदेबाली। उज्जर पर्दाक आगू बरामदाक दृश्यक हेतु दूटा गार्डेन चेयर, एकटा गोलका टेबुल, अखबार।

भाग 2 : डाईंगरुमक सभ दृश्य देखाओल जायत।

आरम्भ : (क) मुख्य पर्दा हटैत अछि। उज्जर पर्दाक पाछू छेदी झा आ चूड़ामणि ठाढ़ भ' गप करैत छथि। पाछू सँ प्रकाश दय शैडोमे हिनका लोकनिकेँ देखाओल जा रहल अछि।

(ख) गीत बजैत काल - छायाक लेल प्रकाश बन्न कय स्लाइडसँ कास्टिंग देखाओल जा सकैत अछि।

(ग) गीतक समाप्तिपर - शैडो लाइट एवं स्लाइड लाइट बन्न होइत अछि। उज्जर पर्दा हटा देल जाइत अछि। पुनः प्रकाश मंचपर। भोला डाईंगरुमसँ निकलि छहरदेबालीक गेट लग जाइत अछि।

(घ) छेदी झा, चूड़ामणिकेँ भोला भीतर अनैत छन्हि। प्रकाश बन्न। उज्ज्र पर्दा अपन स्थानपर आबि जाइत अछि। पुनः मंचपर प्रकाश।

अन्य दृश्य सभ भाग-1 आ भाग-2 मे नाटकक हिसाबे चलत।

अन्त - बालचन्द्र झा एवं बर्माजीक डाईंगरुमसँ प्रस्थानक बाद, सम्पूर्ण मंच अन्धकार। चूड़ामणि एवं मिक्कीकेँ उज्जर पर्दापर छाया *(शैडो)* मे अंग्रेजी नृत्य करैत देखाओल जा सकैत अछि।

पुरुष पात्र

छेदी झा : बृद्ध ग्रामीण व्यक्ति
चूड़ामणि झा : ग्रामीण मेधावी छात्र
भोला : बालचन्द्र झाक नोकर
बिक्की : बालचन्द्र झाक 6 वर्षक पुत्र
बालचन्द्र झा : पैघ अफसर
बर्माजी : पैघ अफसर एवं बालचन्द्र झाक मित्र
बाबूजी : मीनाक पिता

स्त्री पात्र

मीना : बालचन्द्र झाक स्त्री
मिक्की : बालचन्द्र झाक 17-18 वर्षक पुत्री
रानी : बर्माजीक स्त्री
माय : मीनाक माय

नाटक मँचनक हेतु आवश्यक सामग्री

प्रथम दृश्य	:	सोफासेट, शोकेश, टेपरिकार्डर, कालीन, पेगटेबुल, दूटा कुर्सी, गोल टेबुल, चिप्पी लागल छाता, पितरिया लोटा, कम्बल मे बान्हल मोटरी, चमड़ा बाला बैग, ताला-कुँजी, नेम प्लेट 'B.C. IAS टेलीफोन सेट, दरबाजाक पर्दा।
दोसर दृश्य	:	ट्रे, दू टा चाहक कप, कागज-कलम, स्कूल बैग।
तेसर दृश्य	:	एक अखबार।
पाँचम दृश्य	:	दू टा कैसेट, तौलिया, सिगरेट, ऐशट्रे।
छठम दृश्य	:	ओछाओनक सेट, अटैची, वैनेटी बैग।
सातम दृश्य	:	माटिक बर्तन मे मिठाई पैक क' क' बान्हल, एक अखबार।
अन्तिम दृश्य	:	नेम प्लेट 'C. M. Jha, IAS) बोतल, गिलास।

-: द्रष्टब्य :-

एहि नाटकक मंचन अबधि केर कम करबाक बिचार हो त' छठम दृश्य मे ''मीनाक माय आ बाबूजीक'' भूमिका बला पात्रगण कँ पूर्णतया हटा देल जा सकैछ। एहि सँ एक स्त्री पात्रक आवश्यकता सेहो कम भ' जायत। चारिम दृश्य केर पूर्णतया छाँटल जा सकैत अछि।

एतबा कयला सँ नाटकक मूल भावना पर कोनो विशेष अन्तर नहि पड़त।

बड़का साहेब

पहिल दृश्य

(बी. सी. झाक बंगलाक मुख्य द्वार। फाटकमे बड़का ताला लटकल अछि। छेदी झा आ चूड़ामणि फाटक लग ठाढ़ छथि आ बालो-बालोक आवाज दय रहल छथि। चूड़ामणिक हाथमे कम्मलमे बान्हल एकटा मोटरी आर एकटा पुरान चमड़ाक बैग छन्हि। मोटरीक संग एकटा पितरिया लोटा सेहो बान्हल अछि। छेदी झाक हाथमे चिप्पी लागल छाता।)

छेदी : बालो छ' हौ। बालो... *(चूड़ा सँ)* बाउ। इएह ने बंगला छैक बलो के?

चूड़ा : जी मामाजी। पता त' इएह छैन्ह काकाजीके। ओम्हर देखियौन नेम प्लेट सेहो लागल छैन्ह बी. सी. झा।

छेदी : बेसी झा...? हौ बालोक नाम छैक बालचन्द्र झा नहि की बेसी झा।

चूड़ा : वैह भेलै मामाजी। बी. सी. झा।

छेदी : अथाह बूड़ि छह। की पढ़ैत-लिखैत छह पता नहि। बालचन्द्र झा कतहु बेसी झा आ कम झा होइक?

चूड़ा : ओफो मामाजी। बेसी झा नहि। बी. सी. झा। अँग्रेजीमे अहिना नाम लिखल जाइत छैक। बी. सँ बाल सी. सँ चन्द्र आ झा। बुझलियैक?

छेदी : अच्छा-अच्छा...। हौ ई अँग्रेजी हम की बुझबैक...। तखन त' इएह घर भेलै बालोक...। एतेटा बंगला आ एकोटा चिड़ई चुनमुनी नहि देखबामे अबैत अछि...। बालो...हौ बालो।

घरमे सभ बहीरभ' गेल छह की...? हौ बाउ, क्यो बजिते नहि अछि। देखह ने फाटकमे एतेकटा ताला लटकल छैक। तों एकटा काज करह। फानि क' भीतर चलि जाह आ केबाड़ ढ़कढ़काबह त'।

चूड़ा : नहि मामाजी। ई ठीक नहि होयत। काकजीकेँ तामस भ' सकैत छन्हि।

छेदी : की कहलह तामस? गाममे टटघरत' सय ठामसँ चूबैत छन्हि आ एहि ठाम बड़का बंगलामे कानमे तूर- तेल द' क' सूतल छथि जेना कतहुके लाट साहेब होइथ।

चूड़ा : लाट साहेब होथि वा नहि होथि परन्च, बंगला देखलासँ त' अवश्ये बुझना जाइत अछि जे काकाजी कोनो बड़का साहेब छथि।

छेदी : आएँ! की कहलह ब...ड़...का....सा...हे...ब...

(दुनू पात्र स्थिरभ' जाइत छथि। पार्श्व गीत बाजय लगैत अछि आ पर्दापर एत स्लाइडसँ पात्र परिचय (कास्टिंग) देखओल जा सकैत अछि।)

गीत

जेम्हरे देखू तेम्हरे देखू
सभ छथि बड़का साहेब, बड़का साहेब
बिसरि गेलाह जे अपन गाम आ समाजके...गाम आ समाज के
बदलि रहल छथि जे अपन रीति आ रेवाजके... रीति आ रेवाज के
एहेन लोक... हो हो हो हो
एहेन लोक... छथि कोन काजके, छथि कोन काजके
जेम्हरे देखू... तेम्हरे देखू...
मिथिलामे जन्म लेलनि, मैथिल नइ बनलाह, मैथिल नइ...
एहेन पवित्र माटिक मोल नहि बुझलाह, मोल नहि बुझला...
घोरि के पीबि गेलाह सब लोक लाजके... सब लोक लाजके...

जेम्हरे देखू... तेम्हरे देखू...

छेदी : *(गीत समाप्त भेलापर)* बालो, हौ बालो! *(जोरसँ चिकरैत छथि। भोलाक दोसर दिस सँ प्रवेश। मीना दरबाजाक पर्दाक अढ़मे ठाढ़भ' देखैत छथि।)*

भोला : के छी यौ? माने एतेक किएक चिकड़ि रहल छी?

छेदी : की कहलह चिकड़ि रहल छी? भरि राति रेलगाड़ीक धुकुर-धुकुर पेटमे हड़बोंग मचा देलक अछि आ ताहि परसँ घन्टा दू घन्टासँ बालो छह हौ, बालो छह हौ चिचिया रहल छी। परन्च, तोरा सबके कान रहौ तखन ने। बालोक अन्न खा खा क' देहक संग कानो मोट भ' गेल छह।

भोला : देखू, कने सम्हरि क' बाजू। बूढ़ लोक छी माने कि तैं चुप छी। नहि त'...

छेदी : नहि त' की करबह? हमरा धमकी दैत छह। आब' दहक बालो के। तोहर से खबरि लेतह जे सात पुश्त धरि याद रखतह।

भोला : देखू, फेर कहैत छी माने कि चुप्पे रहू। आ ई के अछि अहाँक बालो-टालो। बजाउ त' कनी हमर खबरि लेब' बला के। माने कि...

छेदी : बाप रौ बाप। ठीके कहलकैक अछि : बाप के नाम साग-पात आ बेटाक नाम परोर... बालो...हौ...बालो...।

चूड़ा : मामाजी! कने चुप्पे रहू...। हौ भाई, ई बंगला बी. सी. झा जीक छन्हि ने?

भोला : हँ छनि। माने कि तै सँ की?

चूड़ा : देखह। हमरा लोकनि हुनके गामसँ आयल छी। कने जा क' कहुन्ह जे गाम सँ छेदी बाबू आयल छथि।

भोला : अहाँ गामसँ आयल छियैन्ह वा मामा गामसँ आयल होइएन्ह। माने कि साहेब साँझमे छ' बजे भेटताह। अहाँसभ साँझमे आउ।

छेदी : साँझ मे आउ...? बाउ, देखैत छह एकर टेढ़ी ? अँय हौ साँझ धरि की हमरा लोकनि एहि अज्ञात शहरमे घूमि-घूमिक'

बजरंगबलीक पाठ करैत रहब ? कत' के रहय बला छह हौ ?

भोला : हम साहेबके माने कि सासुरके छियैन।

छेदी : तैं ने। तैं ने। कहलकैक अछि ''सार सम प्रिय जग नाहीं''। ताहि पर सँ तों त' बालोक खबसिया सार छहुन।

भोला : खबसिया सार। ई की भेलै माने कि ?

छेदी : प्रचण्ड लोक छह। एतबो नहि बुझैत छहक। हौ बोल-चालक भाषामे जेना घरबालीक ममियौत भाई भेलाह ममियौत सार, पिसियौत भाई पिसियौत सार, तहिना घरबालीक गामक खबास भेल खबसिया सार।

भोला : औ बूढ़ा। माने कि अहाँ के जे मोन हुए से बाजू। परन्च आब जाउ। साहेबसँ भेंट करबाक हो त' साँझमे आउ।

छेदी : फेर वैह बात। तों ताला खोलैत छह कि नइ ?

भोला : माने कि अहाँ खामखाह रगड़ा क' रहल छी।

छेदी : की कहलह ? हम रगड़ा क' रहल छी ? तोहर ई मजाल। चूड़ा देखैत की छह। फानिकय एहि लुच्चाक दिमाग त' दुरुस्त करह।

चूड़ा : मामाजी चलू एत' सँ।

छेदी : चलू ? कत' चलू ?

चूड़ा : पहिने एत' सँ चलू त'...। हम कहैत छी चलू त'।
(दुनू गोटे बिदा भ' जाइत छथि। मीनाक हस्तक्षेप)

मीना : भोला हिनका लोकनिके अन्दर नेने अबहुन।

भोला : जी मेम साहेब...। औ बूढ़ा, औ अहींके कहैत छी। एम्हर आउ। हे, महादेबके जेना बोकिया-बोकियाक' लोक जगबैत अछि, तहिना चिचिया-चिचियाक' अहूँ अपन काज बनाइये लेलियैन्ह माने कि...हें...हें... *(ताला खोलि क' अन्दर अनैत छन्हि)*
आयल जाओ बूढ़ा सरकार।

छेदी : हौ खबास। नाम त' रखने छह भोला परन्च छह बमगोला। चूड़ा .... बालो की घरमे मेमके रखने छथि।

चूड़ा : ओफोह मामाजी। मेम नइ। काकी के कहलकैन्ह अछि मेम

साहेब।

(बरामदा दिस बढ़ैत छथि आ मंच परहक प्रकाश नहूँ-नहूँ बन्न भ' जाइत अछि)।

दोसर दृश्य

(मीना डाईंगरुमक दरबाजापर ठाढ़ छथि। छेदी, चूड़ा आ भोलाक बरामदामे प्रवेश।)

मीना : अबियौ। बैसियौ।

(दुनू गोटेक बैसलाक उपरान्त)

अपने लोकनि कत' सँ आबि रहल छियैक ?

चूड़ा : जी.... अपने...।

मीना : हम मिसेज झा।

चूड़ा : *(बढ़िक' पैर छुबैत)* काकी हमरा लोकनि गामहिंसँ आबि रहल छी। अपने श्री छेदी झा आ हम हिनक भागिन...। हमर स्व. पिताजी सेहो सासुरे बसि गेल छलाह। हिनके प्रतापे कहुना पढ़ि लिख सकलहुँ।

(मीना बढ़िक' छेदी झाक पैर छुबैत छथि)

छेदी : अखण्ड सौभाग्यवती होथु। बौआसिन हिनका लोकनि त' गाम घर छोड़िए देने छथि त' कोनाक' लोक सभकें चिन्हथिन्ह। खैर, बौआसिन। बालोक परिवारसँ हमरा कोनो सम्बन्ध नहि परन्च, बूझू त' अपन भाईयोसँ बेसी सम्बन्ध बालोक पितासँ रहल अछि। आ गामक सम्बन्ध त' सर्वोपरि। बौआसिन, ई चूड़ामणि। बड़ मेधाबी विद्यार्थी छथि। बी.ए., एम.ए. कयने छथि। फस्टोमे फस्ट भ' क'। किदन त' कहैत छैक... की ल' क' कयने छह हौ?

चूड़ा : जी, डिस्टींकसन।

छेदी : वैह-वैह। कतेको ठाम प्रयास कयलैन्ह कतहु नौकरी नहि भेटलन्हि। बालोक कम्पनीमे काल्हि परीक्षा छन्हि।

चूड़ा : परीक्षा नहि, इन्टरव्यू।

छेदी : वैह-वैह। कहलकै जे से किने। ई त' कहैत छलाह जे पैरवी-पैगामसँ की हैत। अपन ज्ञानसँ जँ चाकरी भेटत त' ठीक अन्यथा कोन फायदा। हमहीं कहलियैन्ह जे हौ बाउ अपन बालो ओहि ठाम अछि। ओकरा बुते जे हेतैकसे करबे करतह। रहबाक, खयबाक, पिबाक सबहक सुविधा। चलह हमहूँ चलैत छी।

मीना : जी नीके केलिएक जे अपनहुँ एलियैक। भोला! पाहुन लोकनिकेँ पैर- हाथ धोयबाक इन्तजाम करहुन।

छेदी : बौआसिन। आर जे से त' सब ठीक। हिनकर भोला बड़ बहसल छन्हि।

मीना : जी। नान्हिएटा सँ रहि आयल अछि से कने बदमास भ' गेल अछि। भोला पैघ लोकक आदर करबाक चाही। चल, माफी मगहुन्ह हिनकासँ।

भोला : जी माफ क' देल जाओ माने कि बूढ़ा सरकार।

छेदी : हे हो बालोक खबसिये सार। आब कोना नाँगर सुटकन्त जात खरहीमे। तखन त' कौआ जकाँ टाँय-टाँय करैत छलह। जाह जलक ब्यबस्था करह।

(भोलाक प्रस्थान)

हँ, त' बौआसिन हम कहैत रही जे बड़ मेधावी छथि ई चूड़ा। गामक स्थिति त' की कहू। भरि पेट भोजन करबाक सामर्थ नहि रहि गेल छैक लोकके। हमर बहिन, हिनक माय, के धन्यवाद जे अपन पेट काटिक' अपन, अपना बच्चा सभक जीवन चला रहल छथि। ई अपने शहरमे चटिया सभकेँ पढ़ाक' अपन शिक्षा ग्रहण कयलन्हि अछि। कथीदनकेँ परीक्षा सेहो देने छथि। कहैत छथि पास भेलापर मजिस्टर कलक्टर भ' जेताह। से जहिया हेताह-तहिया ने। अखैनत' जीविका आवश्यक छन्हि।

मीना : कोन परीक्षा देलियैक अछि?

चूड़ा : जी I A S मे बैसल रही।

मीना : वाह। ओकर त' अही मासमे रिजल्ट सेहो निकलतै। केहन

भेल अछि परीक्षा?

चूड़ा : जी अपना हिसाबे त' नीके कयने छी। तखन...

मिक्की : *(डाईंग रुममे प्रवेशक संग)* Mummy, I am going to the Collage. Who is there?

मीना : (डाईंग रुममे जाय) मिक्की फेर वैह बात। एक बेर नहि कतेको बेर कहि देने छी जे हमरा घरमे मैथिली छोड़ि क' दोसर कोनो भाषा नहि बाजि सकैत छी। बाहर जे मोन हुए से बाजू अहाँ बाप बेटी।

मिक्की : Oh Sorry Mummy, बाहरमे के आयल अछि ?

मीना : एम्हर आउ। पैर छूबि क' प्रणाम करियौन। बाबा हेताह। गामसँ आयल छथि।

(मिक्की प्रणाम करैत छथिन्ह। छेदी आशीर्वाद दैत उठि क' ठाढ़ भ' जाइत छथि)

छेदी : खूब प्रसन्न रहू। बौआसिन! ई बड़की बेटी ने ?

मीना : जी।

छेदी : अहा! केहन दिव्य! केहन सुन्नरि! केहेन पवित्र! *(उदास भ' जाइत छथि)* बौआसिन। पता नहि हिनका बुझलो हेतन्हि कि नहि। चूड़ाक पिता चिन्तामणि आ बालो लंगोटिया यार। दुनूमे से प्रेम जे, जे करथि से दुनू एकहिसंग। कहियो चिन्तामणि हमरा गाममे रहथि त' कहियो बालो चिन्तामणि ाक गाम चलि जाथि। अहा! एहन प्रेमदेखल नहि। एक दिनक गप ओहिना आँखिक सोझा घूमि रहल अछि। चू. ड़ाक नामकरण संस्कार छल। हिनकर त' बियाहो नहि भेल रहनि...। हिनक नाम राखल गेल चूड़ामणि। चिन्तामणि परिहास केलथिन्ह जे बालो तोहर बियाह हेतह त' पहिले कन्या रत्न प्राप्त हेतह आ तकर नाम राखल जायत रूपमणि। *(मिक्की मुँह बिचकबैत छथि)*

आ ओहि रूपमणि सँ हम चूड़ामणिक बियाह करायब। बालो कहलथिन्ह जे देखह यार, जे बजलह अछि ताहि सँ मुकरि त' नहि जेबह। हमरे पंच बनाओल गेल। जे क्यो एहिसँ

मुकरता तनिका हमरा जे मन हो से दण्ड दी। *(आखि सँ नोर पोछैत)* परन्च...परन्च दूइये सालक बाद त' चिन्तामणि एहि संसारसँ चलि गेलाह। आब...आब के कराओत एहि दिव्य कन्याक विवाह चूड़ाक संग।

मिक्की : छीः मम्मी। हमर बियाह की एहि धोती, कुर्ता, लम्बा-लम्बा टीक बला चूड़ा-दही सँ हैत? आबय दियौन पापा के हम शिकायत करब।

मीना : मिक्की अहाँ कॉलेज जाउ।

(मिक्कीक प्रस्थान)

अखन नेनमति छैक, किछु नहि बुझैत छैक। अपने लोकनि क्षमा क' दियौ।

छेदी : कोनो बात नहि बौआसिन। कने एक गिलास चाह पीबाक इच्छा छल।

मीना : जी। तुरत... *(प्रस्थान)*

छेदी : चूड़ा। हौ बड़ आश्चर्य होइत अछि। बालोक घरबाली आ बेटी केहन उदण्ड छैक। हम ससुर तुल्य हेबैन्ह आ हमरा सोझामे केहनदन डिरेस पहिर क' कोना टाँय-टाँय क' रहल छलीह। छीः। छीः।

चूड़ा : मामाजी। काकी त' बड़ नीक स्वभावक बूझि पड़ैत छथि। केहन शुद्ध मैथिली बजैत छथि। वर्ना आइ-काल्हि जकरा आगूमे साहेब कि मेम साहेब लागि जाइत अछि, से त' अँग्रजी आ हिन्दीमे गप करब अपन शान बुझैत अछि। मैथिली बाजब त' अपमान प्रतीत होइत छैक। आ ई ड्रेस आ पैघ लोकक सोझा गप-सप केनाइ त' आइ काल्हिक सभ्यताक ब छोट-छीन बात छैक।

छेदी : मारह गोली एहन सभ्यता कैं।

भोला : ककरा गोली मारि रहल छियै माने कि दूढ़ा सरकार ?

छेदी : अखन त' ककरो नहि। गोली रहैत त' सबसँ पहिने तोरे मारितौंह।

भोला : अरे बाप रौ बाप... *(चाह राखि परा जाइत अछि)*

(कागज पेनक संग मीनाक प्रवेश)

मीना : बौआ। अहाँ अपन रोल नम्बर त' लिखा दिय'।

चूड़ा : रौल नम्बर? कथिक? इन्टरव्यूक लेटर नम्बर की?

मीना : ओहो लिखब। पहिने आई.ए.एस. परीक्षाक रौल नम्बर लिखा दिय'।

चूड़ा : रौल नम्बर मोन नहि परैत अछि...। हँ! हमरा संगमे आ. ईडेन्टीटी कार्ड अछि।

(बैगसँ निकालि दैत छथि)

ई आई. ए. एस. के आईडेन्टीटी कार्ड आ ई इन्टरव्यूक पत्र।

(मीना कागजमे नोट करैत छथि। विक्कीक स्कूलक बस्ता टँगने प्रवेश)

मीना : आइ बड़ जल्दी छुट्टी भ' गेल विक्की?

विक्की : मम्मी। आइ जुबली पार्कमे शूटींग हेतै। अमिताभ बच्चन, गब्बर सिंह सभ आयल छैक। तैं छुट्टी भ' गेल। हमरो देखा देब ने मम्मी?

मीना : अच्छा-अच्छा। प्रणाम करियौन्ह बाबा हेताह।

(विक्की हाथ जोड़ि 'प्रणाम' कहैत छथि)

मीना : एना नहि। पैर छुबि क' प्रणाम करियौन्ह।

(विक्की अपन पैर छुबि 'प्रणाम' कहैत छथि। सभ हँसैत छथि)

मीना : अपन पैर नहि। बाबाक पैर छुबि क' प्रणाम करियौन्ह।

(विक्की पैर छुबि 'प्रणाम' करैत छथि)

छेदी : खूब प्रसन्न रहू बाउ। खूब प्रसन्न रहू।

विक्की : अहाँ हमर बाबा हैब ?

छेदी : हँ बाउ। हम अहाँक बाबा छी।

विक्की : हमरा एकटा पोएम अबैत अछि बाबा पर। सुनाउ ?

छेदी : पेम ?

चूड़ा : पेम नहि। हिनका एकटा कविता अबैत छन्हि से सुनेताह।

छेदी : कविता। कोन कविता ? ''साते भवतु सुप्रिता'' सुनाबह,

सुनाबह...।

विक्की : *(हाथ पैर चमक'बैत)*

Ba, ba, Black Sheep
Have you any wool?
Yes Sir, Yes Sir
Three bags full .
One for my Master
One for my dame
One for the little boy
Who cries down the lane .

(चूड़ा हँसैत छथि। मीना विक्की कैं डँटैत ल' जाइत छथि)

छेदी : एना किएक ठिठिआइत छह ? ई छौंड़ा की फकड़ा पढ़िक' चलि गेल? गारि-तारि त' नहि द' देलक?

चूड़ा : नहि-नहि! मामाजी ओ त' अपनेक बड़ाई करैत छल। कहैत छल अहाँक हृदय बड़ विशाल अछि। अहाँ सँ हम प्रेम करैत छी।

छेदी : बाह-बाह! आखिर गामक धर्म छैक। कहैत छैक ''होनहार वीरवान के होत चिकने पात।''

(मंच पर प्रकाश नहूँ-नहूँ बन्न भ' जाइत अछि)।

तेसर दृश्य

(मंच पर प्रकाश देल जाइत अछि। चूड़ा अखबार पढ़ि रहल छथि। छेदी चुपचाप बैसल छथि। मोटर गाड़ीक आवाज आ हार्नक आवाज)।

चूड़ा : बूझि पड़ैत अछि जे ककाजी आबि गेलाह। कारक आवाज आबि रहल अछि।

छेदी : बालो की मोटरगाड़ी रखने छथि ?

चूड़ा : अवश्ये रखने हेताह। एतेक पैघ अफसर छथि गाड़ी त' अवश्ये होबाक चाहियैन्ह।

छेदी : हूँ! गाम पर त'...।

चूड़ा : मामाजी! गामपरहक आ एतुक्का बात एकदम भिन्न छैक। बाहरमे जेहेन समाज रहैत छैक ताहि हिसाबसँ रहय पड़ैत छैक। जेना एहिठाम जतेक बंगलाबला सभ छैथि, सभ कार रखने होयताह त' काकाजी कैँ सेहो सामाजिक प्रतिष्ठाक हेतु वा आफिसक आवश्यकतानुसार राखय पड़ल हेतैन्ह। एहिठाम सभहक बच्चा अँग्रेजी स्कूलमे पढ़ैत हेतै त' कका. जीक धीया-पूता कोना हिन्दी स्कूलमे पढ़तैन्ह ? एत' सभ गोटे हिन्दी वा अँग्रेजी मे फटाफट गप्प करैत रहत आ ओत' ककाजी सभ मैथिली छँटताह त' केहेन लगतैक ?

छेदी : तोहर माने ई जे, जे-जे लोक सभ करय सैह हमरो लोकनि करी। मानिलैह जे एहिठाम लोक सभ बीचे सड़कपर ठाढ़ भ' क' लघुशंका करैत अछि तैं कि हमहूँ करी वा कानपर जनउ आ हाथमे जल ल' क' कतहु कात करोट मे जाइ।

चूड़ा : अहाँ त' सभहक उल्टे माने लगा लैत छी।

छेदी : हौ उल्टे माने की? देखबे केलहक जे कोना एतुक्का छौंड़ी सभ अर्धनग्न भ' सड़कपर चलल जाइत छल। तैं की हमरो लोकनिक बेटी-पुतहु ओहिना चलथि तोंहीं ने कहैत छलह जे एहि सभ शहरमे लैला बियाह खूब प्रचलित भ' गेल छैक।

चूड़ा : लैला बियाह नहि। लभ-मैरेज, प्रेम-वियाह।

छेदी : सैह भेलै। हौ, तों कहक प्रेम-वियाह हम कहैत छियैक लैला बियाह। जखने छौंड़ी लैला बनि जायत ओकरा मजनू भेटबे करतैक। आ बिन माय-बापक आज्ञा के बियाह करबे करत। तैं की हमरो लोकनिक धीया-पूता ओहिना बियाह करय ? तों सैह ने कहैत छह।

चूड़ा : नहि-नहि। हमर कहब ई छल जे जाहि समाजमे लोक रहैत अछि ताहि समाजक किछु ने किछु ग्रहण करय पड़ैत छैक।

छेदी : खाक ग्रहण करय पड़ैत छैक। हौ, इएह ने ग्रहण कयल. न्हि अछि जे अँग्रेजी मेमबला डिरेस पहिर क' उघार माथे हमरा सोझामे ठाढ़ भ' फटा-फट गप करैत छलीह...। भरि

रातिक सफर क' क' आयल छह आ भोरे सँ एत' बैसल छह। पेटमे मूससभ उठा-पटक करैत हेतह आ भेटलह की? एक कप चाह, सेहो मँगलाक बाद। इएह थिक हमरा लोकनिक ग्रहण लगलाक बादक सभ्यता। हौ देहाती छी, पढ़ल-लिखल नहि छी, परन्च बुझैत नहि छियैक से गप नहि। तखन, बुझाइत अछि जे आइ-काल्हि लोक अहिना पैघ कहबैत अछि। बड़का साहेब कहबैत अछि। छोड़ह। हटाबह। बौआसिन त' दरिद्र घरसँ आयल छथि। एकहि बेर जे सभ चीज-वस्तु देखने हेथिन्ह त' दिमाग उलटि गेल हेतैन्ह। परन्च बालो त' हमर गामक थीक। आब' दहक ओकरा। देखिहक, बात-चीत, व्यबहार, स्वागत...। अँय हौ बालो अखैन धरि बाहर नहि निकलल, घरेमे घुसल अछि।

चूड़ा : ऑफिससँ अयलाह अछि। कपड़ा लत्ता बदलि क' औताह।

छेदी : ऑफिस सँ एत' दुपहरे मे छुट्टी भ' जाइत छैक ?

चूड़ा : भोजन करबाक लेल किछु कालक छुट्टी फेर ऑफिस।

छेदी : ओह...।

(भोलाक प्रवेश)

भोला : बूढ़ा सरकार। मेम साहेब पुछैत छथि माने कि जे अहाँ कैं भोजनमे की नीक लगैत अछि।

छेदी : भोजनमे की नीक लगैत अछि। हौ भोजनमे भोजन नीक लगैत अछि कि नीक लागत जलखै।

भोला : माने कि आइटम की-की नीक लगैत अछि।

छेदी : सुनहक हौ चूड़ा। 'एहिठाम' की-की नीक लगैत अछि। हौ अखैन धरि त' अन्नक दर्शनो नहि भेल अछि जे बुझितियैक जे एहिठाम कतेक प्रकारक अन्न होइत छैक।

चूड़ा : मामाजी। काकी के पुछबेबाक से अभिप्राय नहि। अभिप्राय अछि छन्हि जे की की नीक लगैत अछि। भात की रोटी, कोन-कोन तीमन तरकारी...।

छेदी : से किएक हौ खबास ?

भोला : सैह सभ बनेबै अहाँ सभहक भोजनक लेल माने कि...।

छेदी : माने कि तोहर कप्पार...। अँय हौ, दू बजैत हेतैक आ एखन धरि तों इएह पुछ' अयलह अछि जे की-की बनतै। राम....राम...।

भोला : अखैन धरि माने कि साहेबक लंचक तैयारी होइत छलै।

छेदी : लंच ?

चूड़ा : लंच माने भेल दिनुका भोजन...।

छेदी : अएँ...? दिनुका भोजन नहि, लंच माने प्रपंच...। हौ खबास तोहर साहेब कि सोनक भात आ चानीक दालि खाइत छथुन्ह ओ कि कहलकैक...लंच मे, जे हमसभ नहि खा सकैत छी?

चूड़ा : हिनका किएक किछु कहैत छियन्हि। ई त' नोकर-चाकर छथि। सुनू यौ खबास, अहाँ कैं जे मोन हुए से बना लिय'।

छेदी : तोहर साहेब एलथुन्ह?

भोला : कखैन ने। माने कि आब त' भोजन क' क' आराम क' रहल छथि... *(प्रस्थान)*

छेदी : की कहलक..... आराम क' रहल छथि...।

(उदास भ' जाइत छथि। आ कुर्सीपर बैसि रहैत छथि। मंचपर प्रकाश बन्न होइत अछि)

चारिम दृश्य

(मंच पूर्ववत छेदी एवं चूड़ाँघि रहल छथि। विक्कीक प्रवेश)

विक्की : बाबा...बाबा...सुनैत छी? निन्न लागल अछि की?

छेदी : *(हड़बड़ाइत)* आबह... आबह... बैसह। की भेलह बाउ तोहर?

विक्की : विक्की...।

छेदी : अँय की कहलह पिक्की?

विक्की : पिक्की नहि विक्की....।

छेदी : चूड़ा .... हौ चूड़ा, सूति रहलह की?

चूड़ा : *(हड़बड़ाइत)* नहि मामाजी ... कहू।

छेदी : हौ, सुनह एकर नाम...विक्की...विक्की झा।

विक्की : *(कने तमसाइत)* What is wrong with my name ?

चूड़ा : नहि-नहि बौआ। अहाँक नाम त' बड़ सुन्नर अछि। एहि मे कोनो खराबी नहि।

छेदी : की बड़ सुन्दर अछि? हौ बाउ तोहर माय-बाप के दोसर कोनो नाम नहि फुरेलैन्हि जे ई विक्की-टिक्की राखि देल. थुन्ह?

विक्की : केहन बढ़िया त' नाम अछि हमर। एहि सँ बढ़ियाँ आर कोन नाम होइत छैक?

छेदी : आइ काल्हुक इएह ऐब। एकटा नान्हिटा के टेलहा सेहो सभ बातमे बहस कर' लगैत अछि। बाउ, हमरा सभहक समयमे एहन नाम राखल जाइत छलैक जेकर माने होइक, अर्थ होइक, जेना उमापति माने शंकर, सीता राम, कृष्ण इत्यादि-इत्यादि...। आर कतेक बतबियह।

विक्की : त' हमर नामक कोनो अर्थ नहि ?

छेदी : कोनो नहि... विक्की...एकर की अर्थ? हमरापर जँ भरोस नहि त' हिनका सँ पूछि लैह।

(विक्की एक बेर चूड़ा दिस देखैत, किछु सोचैत)

विक्की : बाबा। अहाँक की नाम अछि?

छेदी : हमर नाम! हौ हमर नाम थिक छेदी झा।

विक्की : क्या? छे दी झा। You mean six given Jha.

(चूड़ा नहूँ- नहूँ हँसैत छथि)

बाबा। ये क्या हुआ? छे दी ... अरे दी तो देदी। इसको नाममे रखने का क्या मतलब ? ये भी कोइ नाम रखने का तरीका हुआ? छे दी झा, सात ली झा।

छेदी : अरे बाप रे। बड़े मियाँ त' बड़े मियाँ, छोटे मियाँ शुभानअल्लाह। अँय हौ तों हमरा सँ ठठ्ठा करैत छह? हमर नामक उपहास करैत छह?

चूड़ा : ओह मामाजी । अहाँ त' बाते-बात मे खिसिया जाइत छी। हिनकर नाम त' ककाजी वा काकी रखने होयथिन्ह। त' हिनका कहला सँ कोन फायदा। दोसर, ई बच्चा की बुझ' गेलैक। तेसर बात... कहलक त' ठीके अछि। पहिनहुँ त'

अधिकांश नाम तेहने राखल जाइत छल जेकर कोनो माने नहि होइत छल। आइ काल्हुक कनेक अँग्रेजियतबला भ' गेल अछि नाम सभ। मात्र एतबेक अन्तर।

छेदी : अच्छा-अच्छा ठीक छैक। हौ विक्की... स्थिर भ' क' बैसह। कने एक झपकी ल' ली। स्नान-ध्यान नहि कयलहुँ से मोन कोनादन लगैत अछि।

विक्की : स्नान नहि कयलहुँ अछि ? बाबा, चलू ने हमर आ दीदीबला बाथरूम मे स्नान क' लिय।

छेदी : हे हौ बाउ। माय आ बाप के कोनो चिन्ते नहि आ तों हमर स्नानक चिन्ता क' रहल छह...। भोजन केलह ने? त' जाह तोहूँ आराम करह।

(विक्कीक प्रस्थान। मंचपर प्रकाश बन्न होइत अछि)

पाँचम दृश्य

(बी. सी. झाक ड्राईंगरूम। सोफासेट, सेन्ट्रल टेबुल शोकेश, पेग टेबुल, फर्श पर कालीन इत्यादि-इत्यादि। शोकेशमे राखल टेप-रिकार्डरसँ मैथिली गीत ''चुमाबह हे ललना धीरे-धीरे'' बाजि रहल अछि। तौलियासँ मुँह हाथ पोछैत बालचन्द्र झाक प्रवेश। टेबुलपर सँ सिगरेट उठाक' जरबैत छथि आ ट्रे सँ सुपारी उठाक' खाइत छथि। फेर अखबार पढ़' लगैत छथि। गीत नीक नहि लागि रहल छन्हि। उठिक' कैसेट बदलिक' अँग्रेजी धुन लगा दैत छथि आ ओकर आनन्द लेबय लगैत छथि। मीनाक प्रवेश। मीना बढ़िक' टेप बन्न क' दैत छथि)।

मीना : केहन बढ़ियाँ त' गीत होइत रहैक। अहाँकेँ त' बस अँग्रजी गीत।

बालचन्द्र : *(हँसैत)* इन्गलिश म्युजिक नहि त' की 'चुमाबह हे ललना धीरे-धीरे'... नानसेन्स।

मीना : हँ हँ। अहाँ लेखे सभचीज नानसेन्स...। बेटीक जखन बियाह होयत ने तखन इएह गीत सभ बजा देबै आ अपने जा क' चुमाओन आ परिछन क' देबै।

बालचन्द्र : हा...हा...हा...। चुमाओन आ परिछन। अरे बाप रे बाप।

केहन प्रचंड बूड़ि लगैत रहैत अछि मैथिल ब'र सभ चुमाओन काल मे... ''ओह माइ गौड''...। हे अपना बियाहमे त' ज्ञाने नहि छल। मिक्कीक बियाह कि आब हम ओना होमय देबै? खूब शान-शौकत सँ मॉडर्न तरीका सँ बियाह हेतैक मिक्कीक।

मीना : अच्छा-अच्छा जे मोन हुए से करब...। हे खूब मोन पड़ल बियाहक बातपर। छेदी ककाक संग जे चूड़ामणि जी आयल छथि नौकरीक लेल, ओ बड़ सुन्नर ब'र छथि। first class A M. A. Distinction ल' क' पास केने छथि। अपन मिक्कीक लेल बड़ उपयुक्त होयत।

बालचन्द्र : अहाँक दिमाग खराप भ' गेल अछि। ओ दड़िद्र छिम्मड़ि जे हमरा दरबज्जापर नौकरीक लेल ठाढ़ अछि ओकरा सँ हम अपन बेटीक बियाह करायब? छीः छीः छीः।

मीना : देखू तमसाउ जुनि। कने स्थिर मोनसँ सोचियौक। एहन लड़का तकबामे जे परेशानी होइत छैक तकर अन्दाजा अहाँ कैँ नहि अछि। आ ई लड़का त' आई. ए. एस. मे सेहो परीक्षा देलकैक अछि। आइ दरिद्र छथि त' काल्हि आई. ए. एस. भेलापर की नहि रहतैन्ह?

बालचन्द्र : अहिना जँ सभ आई. ए. एस. होमय लागय त' कोन बात...। यैह अहाँ नहि बुझैत छियैक। ई सभ आइ-काल्हुक टैक्टिस छै। जहाँ बी. ए. पास केलक नहि कि आई॰ ए. एस. मे बैस' लागल। चाहे थर्ड डिभिजन मे किएक नहि पास होइत आयल हो। आ अही आई. ए. एस. के नाम पर 20-25 हजार टाका बेसी गना लैत अछि। आ तेहने मूर्ख रुपैया देबयबला सभ।

मीना : सभ रुपैया देबयबला मूर्खे छैक...? देखलियैन्ह कि ने महेन्द्र बाबू के, अही बड़प्पनमे मारल गेलाह। बेटी 35 बरषक भ' गेलन्हि कतहु बियाह नहि भेलन्हि। आब के करतैन्ह ?

बालचन्द्र : अहाँ के त' सदिखन अधलाहे बात सुझैत रहैत अछि। हरदम थर्डक्लास थिंकिंग...।

मीना : अहँ। के के बुझाबय...। कने इहो त' सोचियौक जे अहाँ जे वचन चूड़ामणिक पिता स्व. चिन्तामणिकेँ देने रहियैन्ह। ओ त' अहाँक अभिन्न मित्र छलाह।

बालचन्द्र : अभिन्न मित्र...? अरे गाम-घरमे त' सभ अभिन्ने रहैत छैक। सभ स्वार्थवश...। आ हम हुनका कोन वचन देने रहियैन?

मीना : इएह जे अहाँकेँ जँ बेटी होयत त' चूड़ामणिक संग ओकर बियाह करायब।

बालचन्द्र : बकबास। के कहलक ई गप?

मीना : छेदी कका। हुनके त' अहाँ दुनू गोटे पंच बनौने रहियैन्ह।

बालचन्द्र : हँसी मजाकक गप्प कोनो मायने रखैत छैक ? आ ई छेदी कका अपन भागिनक नौकरीक लेल आयल छथि कि हमर बेटीक गला घोटबाक लेल?

मीना : नहि-नहि। ओ त' बड़ आत्मीय लोक छथि। ओ त' गप्प-गप्पमे मोन पड़ि गेलैन्ह...। हे कतेक काल भ' गेल अहाँकेँ आफिससँ अएना। भेंट त' क' लियौन्ह।

बालचन्द्र : अखैन हमरा फुर्सत नहि अछि। भोलाकेँ कहि दियौन, कहि देतैन्ह काल्हि अयबाक लेल।

मीना : काल्हि अयबाक लेल! ओ सभ त' एतहि आयल छथि।

बालचन्द्र : एतहि आयल छथि। एत' कि कोनो खैरात बँटैत छै ?

मीना : एना नहि बजबाक चाही। ओ कका छथि। समाज छथि। अहाँ एत' नहि औताह त' कत' जेताह ?

बालचन्द्र : अहाँ हमरा सिखायब जे की बजबाक चाही ...? अहाँ नहि चिन्हैत छियैक एहि समाजकेँ आ सम्बन्धीकेँ। आइ एकटाकेँ रहय देबैक, काल्हि चारिटा मुँह बौने चलि आओत। भोजन भात करबियौ आ ताहिपरसँ बिदाई दियौ। आ तैयो गाममे जा क' कुचेष्टा करत जे दालि पनिगर खुयेलैन्ह, तरकारी दुइयेटा खुयेलैन्हि वगैरह-वगैरह। हम आहि सब फेरमे नहि पड़ब।

मीना : की करबै अहिना होइत छैक। समाजिक गप्प थिकैक। *(टेबुलपर सँ कागज उठा क' दैत छथिन्ह)*

ई चूड़ामणिक इन्टरव्यूक डिटेल छन्हि। ई इन्टव्यू त' वर्मा जी ने लेथिन्ह। कने हुनका कहि दियौन त' अवश्ये नौकरी भ' जेतन्हि।

बालचन्द्र : हम एकबेर कहलहुँ ने जे हम ई सभ धंधा नहि क' सकैत छी। गाम घरक लोककैं नौकरी। हूँ...।

मीना : अहाँकैं त' हमर कोनो गप सोहाइते नहि अछि...। कतेक उम्मीद ल' क' आयल छथि ओसभ। आ ई त' अहाँक लेल छोट छीन बात थिक। अहाँक अन्दरमे इन्टरव्यू छल त' कोनो वर्माजी अपन भातीज द' कहने रहथि आ अहाँ हुनकर काज कइयो देने रहियैन्ह।

बालचन्द्र : सभटा गप्प अहीं बुझैत छियैक त' जाउ हमरा बदलामे अहीं ऑफिस जाउ आ हम एत' बैसिक' भाँटा उसनैत छी...। यै गाम घरक लोककैं वा कि सम्बन्धी कैं कतहु नौकरी दियाबी। वा कोनो मदद करी? देखलियैन्ह कि नहि फूल बाबूकैं। गामक जेकरा नौकरी दियेलथिन्ह सैह मजदूर नेता भ' गेल आ हुनके विरुद्ध मे नारा लगाबय लगलैन्ह ''फूल चन्द्र मिश्र मुर्दाबाद''।

मीना : सभ एक्के रंग नहि होइत छैक। अहाँकैं त' कोनो बात बुझेनाई मुश्किल अछि। काल्हि अही समाजक आवश्यकता होयत। ई शहरक समाज कोनो काजक नहि रहत।

बालचन्द्र : राखू ई लेक्चरबाजी अपने लग। हमर समय भ' गेल अछि। हम चलैत छी। मूड ऑफ क' क' राखि देलहुँ।

(उठि क' विदा होइत छथि कि मीना हुनकर हाथ पकड़ि लैत छथिन्ह)

मीना : अहाँ कैं हमरे सप्प्त। हुनकासभ सँ भैंटक' लियौन्ह तखन जायब।

बालचन्द्र : ओफ। अहाँ त' ई सप्पत द' क'... खैर। अहाँक इच्छा ... त' हमभें क' लैत छियैन्ह।

(प्रस्थान)

(मंच परहक प्रकाश बन्न होइत अछि)

छठम् दृश्य

(बरामदाक दृश्य। छेदी झा, चूड़ामणि बैसलँघि रहल छथि। बालचन्द्र झाक प्रवेश। बालचन्द्र, छेदी झाक आ चूड़ामणि बालचन्द्रक पैर छूबि प्रणाम करैत छथि)।

छेदी : के बालो? जीबैत रह'। कोना छह?

बालचन्द्र : जी नीके छी।

छेदी : बड्ड प्रसन्नता भेल तोहर ई मान-मर्यादा, बंगला-गाड़ी सभ देखि क'। तों त' वास्तवमे बड़का साहेब भ' गेल छह। बाह-बाह।

बालचन्द्र : सभ भगवानक दया। कहू की बात?

छेदी : हौ बैसह ने। बात त' हेबे करत। पहिने गाम-घरक कुशल मंगल सुनिलैह। तोहर माय कहलथुन्ह अछि जे चारि साल भ' गेलह गाम गेला। भाय सभ सेहो अयबाक लेल कहल. थुन्ह अछि। कनियाँ कैँ, बच्चा सभकैँ देखक लेल त' सौसे गाम आँखि पथने अछि। द्विरागमनक बाद त' एको बेर नहि गेलीह अछि आ बच्चा सभ...।

बालचन्द्र : कका हमर ऑफिसक समय भ' रहल अछि। कहू कोन प्रयोजने अहाँ आयल छी?

छेदी : *(कने सकुचाइत)* बालो! हिनका चिन्हलहुन्ह। ई चिन्तामणिक बेटा चूड़ामणि। बड़ मेधावी छात्र। बौआसिन त' सभटा गप कहनेहे हेथुन्ह। आब त' सभटा दारेमदार तोरे पर जे कहुना हिनका नौकरी भ' जाइन्ह।

बालचन्द्र : कका मेधावी छथि त' नौकरी भेटबे करतैन्ह।

छेदी : हौ आइ काल्हि कि अपन योग्यतापर नौकरी भेटैत छैक। कतेको ठाम प्रयास क' चुकलाह अछि। परन्च, सभ व्यर्थ। आब तों अपन जोर लगा दहुन्ह। लोको त' बुझय जे तों बड़का साहेब भ' गेल छह।

बालचन्द्र : ई हमर सिद्धान्तक खिलाफ अछि। सोर्स पैरबीसँ नौकरी ल' क' जीबी, ताहिसँ बढ़ियाँ नौकरी नहि करी।

छेदी : अँय नौकरी नहि करी। हौ नौकरी नहि करताह त' खयताह

की? ई जे एतेक पढ़लन्हि-लिखलन्हि अछि से की किताब आ कापी चाटि क' जीताह?

बालचन्द्र : से त' हिनक योग्यतापर छन्हि। पदक लेल उपयुक्त होयताह त' चुनेबे करताह...। खैर अपने लोकनि ठहरल कत' छी?

छेदी : ... ठहरल... ठहरल...।

चूड़ा : जी... अखैन त' अपनहि सँ भेंट करबाक लेल सोझे स्टेशन सँ एतहि आयल छी। आब भेंट भ' गेल त' कोनो धर्मशालामे रहि जायब।

बालचन्द्र : दरअसल, ई त' ततेक छोट बंगला छैक जे एकोटा बाहरक लोक कैँ सामंजस्य केनाई मुश्किल भ' जाइत अछि।

छेदी : ठीक कहैत छह बालो। तों एकदम ठीक कहैत छह। बाहरक लोक कैँ सामंजस्य केनाइ मुश्किल होइते छैक।

बालचन्द्र : आब हम चलैत छी। हमर ऑफिसक समय भ' गेल। *(प्रस्थान करैत)*

भोला... भोला... *(भेलाक प्रवेश)*

मेम साहेबकैँ कहि दियहुन्ह जे साँझमे क्लबमे पार्टी छैक, तैयार रहती। आ... सुन, हिनका लोकनिकैँ भोजन करा दिहुन्ह।

(बालचन्द्र झा एवं भोलाक प्रस्थान)

चूड़ा : मामाजी चलू एत' सँ।

छेदी : ठीके कहैत छह। चलह। मारह गोली एहन नौकरी कैँ। भगवानक दया सँ दस कठा जमीन बाँचल अछि। जहिया भगवानक मर्जी हेतैन्ह नौकरी भेटबे करतह। *(छाता उठबैत)* की सोचि क' आयल रही आ की भेल...

(बजैत प्रस्थान)

(एम्हर चूड़ा बैग, मोटरी उठबैत प्रस्थान क' रहल छथि। मीना जे ड्राइंगरुमक पर्दाक अढ़ सँ सभटा सुनैत रहथि, बरामदापर आबि)

मीना : बौआ एक मिनट सुनि लिअ।

(चूड़ा अबैत छथि)

बौआ हमर एकटा बात मानि लिअ।

चूड़ा : कहू काकी।

मीना : काल्हि अहाँ ई इन्टरव्यू अवश्य दियौ। हमर हृदय कहैत अछि जे अहाँकेँ ई नौकरी भेटबे करत... आ...आ... हिनकर बात केँ खराब जुनि मानी। ई त' ... ई त' अहाँ सभकेँ देखि क' अत्यधिक प्रसन्न भेल रहितथि। आइ पता नहि की भेलैन्ह। बुझाइत अछि अपन बौसक संग किछु खटपट भ' गेलैन्ह अछि। सभ सँ उखड़ल-उखड़ल गप क' रहल छलाह। ई त' अहाँक लेल जान लगा देताह।

चूड़ा : नहि-नहि काकी। ककाजीक गप केँ कतहु अधलाह मानी। अहाँ कहैत छी त' हम इन्टरव्यू देब। अवश्य देब।

मीना : बौआ। छेदी कका केँ बजालियौन्ह। भोजन क' लिअ।

चूड़ा : नहि काकी। मामाजी केँ मनौनाइ कठिन अछि। ई आग्रह अखैन छोड़ि दिअ। बेश, आज्ञा दिअ।
(पैर छूबैत छथि)

मीना : *(आशीर्वाद दैत)* काल्हि इन्अरव्यू अवश्य देब।

चूड़ा : जी अहाँक आज्ञा कोना टारि सकैत छी।
(चूड़ाक प्रस्थान। मीना आपस ड्राइंगरुममे अबैत छथि आ परेशान एम्हरसँ ओम्हर टहलि रहल छथि। बैसैत छथि फेर एकाएक उठि क' फोन लग जाइत छथि आ कोनो नम्बर लगब' लगैत छथि कि रानी बर्माक प्रवेश)।

रानी : की यै मीना? ककरा फोन क' रहल छी?

मीना : अरे रानी। आउ-आउ। अहीं केँ फोन लगा रहल छलहुँ। नीके भेल अहीं आबि गेलहुँ।

रानी : की, कोनो खास बात की? आइ अहाँ उदास जानि पड़ैत छी।

मीना : की कहू...। अपना लोकनि मे सभ दोष मौगिये पर।

रानी : हँ। से त' छैक। ककरो कोनो कमी भ' गेल कि बस सभ दोष हमरे लोकनिपर आबि जाइत अछि।

मीना : अच्छा ई कहू जे बर्माजी एतहि छथि ने?

रानी : हँ एतहि छथि। एखने त' भोजन क' क' गेलाह अछि। सोचलहुँ बहुत दिन भ' गेल त' चली अहीं सँ भेंट क' आबी...। बर्माजीक आइ बड़ खोज क' रहल छी की ... कोनो खास बात की?

मीना : अरे जाउ... अहाँके त' सदिखन मजाके सूझैत रहैत अछि।

रानी : हे लिअ। हमर बर्माजीक एतेक बेसब्री सँ कोनो दोसर स्त्री याद करय त' हमरा की सूझत...? अच्छा...। चलू आब सिरीयसली पूछैत छी... बर्माजीक लेल कोनो खास बात की?

मीना : रानी... की कहू एकटा बड्ड पैघ दुविधामे पड़ल छी। हमर सासुर सँ छेदी कका आ हुनक भागिन आयल छथि। ओ छेदी ककाक भागिन हिनकर अभिन्न मित्रक बालक छथिन्ह। हुनकर काल्हि इन्टरव्यू छन्हि बर्माजीक डिपार्टमेन्टमे।

रानी : अच्छा...।

मीना : हँ। ओ विद्यार्थी बड्ड तेज। बहुत सुन्नर रिजल्ट छन्हि। हिनका लग बड़ उम्मीदसँ आयल छथि जे नौकरी भेटबे करतन्हि, परन्च...।

रानी : परन्च की?

मीना : रानी। अहाँ हमर एकटा काज क' दिअ। क' देब ने?

रानी : कहू। हमरा बुते जँ होयत त' अवश्ये क' देब।

मीना : अहाँ बर्माजी सँ कहि क' ई नौकरी ओहि विद्यार्थी कँ दियबा दियौन्ह।

रानी : आ जँ हिनका बुते होइबला हेतैक त' अवश्ये हेतैन्ह। नै करथिन से कोना हेतैन्ह। हमर बात नहि मानताह त' जेताह कतय?

मीना : रानी। अहाँक उपकार हम नहि बिसरब। आ... हे ई बात हिनका नहि ज्ञात हो। नौकरी भेटलापर बुझथिन्ह त' कोनो बात नहि।

रानी : से किएक?

मीना : से किएक...? हिनका त' गाम-घरक, समाजक लोक एक

पाइ नहि सोहाइत छन्हि। आ ओ सभ जँ घूमि क' आपस गेलाह खाली हाथ गेलाह त' गाममे सभ कहतैक जे कनिएँ मना क' देने हेथिन्ह। तैं किछु मदद नहि केलथिन्ह। मर्द कैँ त' क्यो दोष नहि दैत छैक।

रानी : हँ यै। ठीके कहैत छी। लोकसभ त' ई बुझिते नहि छैक जे जँ मर्द अपने स्ट्रांग रहय त' की मजाल जे मौगी टस सँ मस भ' जाय...। अच्छा आब चलैत छी...। साँझमे पार्टीमे आबि रहल छी ने?

मीना : हँ आयब।

(टेबुलसँ कागज उठा क' दैत)

ई ओही विद्यार्थीक इन्टरव्यू डिटेल छन्हि।

(रानी कागज अपन बैगमे धरैत छथि)

अएँ यै रानी बिनोदक रिजल्ट कहिया बहरेतैन्ह?

रानी : कहैत छल जे 5-7 दिनमे बाहर भ' जायत। दू साल सँ दिल्लीमे रहि क' तैयारी केलक अछि। 20 हजार टाका लागि गेल अछि। कतेक तरहक कोचिंग केलक अछि। उम्मीद त' पूरा अछि जे एहि बेर कम्पीट करबे करत।

मीना : भगवान करथुन्ह जे कम्पीट क' जाथि। एतेक तेज विद्यार्थी हुनका नहि हेतैन्ह त' केकरा हेतैक।

रानी : अच्छा आब चलैत छी। *(प्रस्थान)*

(मीना पुनः आपस आबि ड्राइंगरुममे बैसैत छथि कि कारक हार्न सुनाइ दैत अछि)

मीना : भोला... भोला...।

भोला : *(प्रवेश)* जी मेम साहेब...।

मीना : ई त' अपन कारक हार्न बुझाइत छौक। कने देख त' साहेब एलथुन्ह की?

भोला : साहेब त' एको घंटा नहि भेलै जे गेलखिन्ह त' अखने कोना आबि जेथिन्ह माने कि?

मीना : कहैत छियौ जा क' देख' लेल त' बहस क' रहल छैं?

भोला : ठीक छै, देखैत छियै। मुदा हम कहैत छी माने कि जे बाजी

लगा लिअ साहेब नहि आबि सकैत छथि...।

(बड़बड़ाइत चलि जाइत अछि। आ ओम्हर सँ अटैची नेने अबैत अछि। आ पाछू सँ मीनाक माय, बाबूजी आ बालचन्द्र झाक प्रवेश)

भोला : मेम साहेब...मेम साहेब... मालिक आ मलिकिनी एलखिन्ह अछि। *(खुशी सँ)* फेर कतहु घूम' जेबै माने कि सभ गोटे।

(मीना बढ़िक' माय बाबूजीक पैर छूबि प्रणाम करैत छथि)

माय : अँय गे मीना। हम सभ अबैत छी त' ओझा कैं कतेक प्रसन्नता होइत छन्हि। आ तोरा की भ' जाइत छौ?

बाबूजी : हिनका कहाँ किछु भेलैन्ह अछि। केहेन बढ़ियाँ त' छथि।

माय : अहाँ चुप रहू। सदिखन बेटिये के पक्ष। कहियो हमरो त' पक्ष लितहुँ।

बाबूजी : यै ओ त' हमर पूज्य पिताजी ओहि पार्टीक टिकट हमरा द' देलन्हि जाहि मे अहाँ छी। वर्ना हम त' हरदम अहाँक विपक्षेमे रहितहुँ। आ इन्कलाब जिन्दाबाद करैत रहितहुँ।

माय : बस अबितहि अपन बकर-बकर शुरू क' देलौंह।

मीना : माय... ई अखैन कोन गाड़ी सँ .... आ ई ओझाजी कत' भेंट भ' गेलथुन्ह?

बाबूजी : कोन गाड़ी सँ। अरे ओएह पटनाबाली सँ। सभ दिन ओ गाड़ी ठीक समय पर चलत परन्च, जहिया अहाँक माय ओहिपर बैसि जाथि त' की मजाल जे समयपर चलय।

माय : हँ हँ जेना अहाँ त' ओहिपर बैसल रहिते नहि छी।

बाबूजी : अरे हम त' सेवकछी अहाँक। गाड़ी-घोड़ा मालिककैं चिन्हैत छैक सेवक कैं नहि... आ ओहि बेर ओझाजी हिनका फोन नम्बर की द' देलथिन्ह बस... स्टेशन पर उतरितहि ओझा. जीकैं फोनक' दियौन्ह। हम कहैत-कहैत रहि गेलियैन्ह जे चलू रिक्शा ल' लैत छी। मुदा हिनका त' ओझाक मोटरपर चढ़ि...।

बालचन्द्र : जा। त' एहि मे हर्ज की। गाड़ी-घोड़ा होइत छैक कथीक लेल।

मीना : त' अहिमे अहाँकेँ ऑफिसक हर्ज नहि भेल?

बालचन्द्र : *(तमसाइत)* फेर अहाँ केँ वैह बात।

बाबूजी : अरे रे... अपने दुनू गोटे त' लड़य लगलहुँ। ओझा देखल जाओ। 40 साल भ' गेल हमर बियाहक परन्च, आई धरि देखू केहेन प्रसन्न छी। एकर कारण बुझल अछि अपनेकेँ... एकर कारण ई थिक जे ई बजैत छथि जोर सँ त' हम बजैत छी मधुर आवाजमे... हम त' छी गाँधी बाबाक चेला। क्यो एकबेर बिठुआ कटैत अछि त' कहैत छियै हौ भाई एकबेर आर काटि लैह। जोड़ा लागि जेतह....।

(भोला चाह आनिक' राखि दैत अछि)

माय : आब चुप्पो रहब कि बकर-बकर करिते रहब। ... अँय गै मीना आई तोरा की भ' गेल छौ। मोन-तोन खराब छौ की?

मीना : नहि-नहि। हमरा किछु नहि भेल अछि।

माय : सैह। देख हम चललियौ अछि जगन्नाथ जीक यात्रा पर...की ओझा कहिया चलथिन्ह?

मीना : माय... पछुले बेर त' गेल रही। फेर ...

माय : हे गै तों त' किदन भ' गेलैंह। तोहर गप-सप त' तेहन होइत छौ जेना हम तोहर सतमाय छियै।

बाबूजी : हँ-हँ-हँ... सतमाय नहि सत्यमे माय छियै। अहाँक जँ आशीर्वाद रहलन्हि त' बेटी जमाय दिन दूना आ राति चौगुना बढ़ैत रहता।

माय : हमर आशीर्वाद किएक नहि रहतैन्ह। हम त' हृदय सँ आशिर्वाद द' रहल छियैन्ह...। रे भोलबा...भोलबा।

भोला : *(प्रवेश)* जी मलिकिनी।

माय : रे बड़ भूख लागल छौ तोहर मालिक केँ...।

बाबूजी : यै अपना भूख लागल अछि से कहैत कि लाज होइत अछि जे हमर नाम लगा रहल छी।

भोला : मलिकिनी ... माने कि भोजन रखले छै माने कि फिरीज मे... ठीके कहलकै अछि ''दान-दाने पे लिखा है खानेवाले का नाम।'' बनलै केकरा लेल आ माने कि खेबै अहाँ सभ।

बालचन्द्र : की माने ?

भोला : साहेब... ओ सभ बिन भोजन कयने पड़ा गेलाह।

बालचन्द्र : *(मीना सँ)* की ई ठीक कहैत अछि?... हूँ। एहन टेढ़ी? देखलहुँ किने? बड़ सिफारिश करैत रही। बेटीक बियाह करबैत रही। हूँ।
(अन्दर चलि जाइत छथि)

बाबूजी : मीना की बात? के बिना भोजन कयने चल गेल? केकरा सँ मिक्कीक बियाह...।

मीना : बाबूजी। *(कानय लगैत छथि)*
बाबूजी हमर सासुरसँ आयल छथि ओ सभ। ओ लड़का ब सुन्नर। बड़ तेज। परन्च, हिनका त' गामक सभ दरिद्र बुझाइत छन्हि। सभ स्वार्थी बुझाइत छन्हि।

माय : गै ठीके त' ओझा कहैत छथुन्ह। हमर नतनीक बियाह कि दरिद्र घरमे होयत?

बाबूजी : यै अहाँ चुप रहू...। अहाँ अपन बेटीक जहिया बियाह कयने रही तहिया ओझा कैँ की छलन्हि?

माय : आब त' छन्हि ने?

बाबूजी : हँ आब छन्हि। त' ओहू लड़का कैँ भ' जेतै।

माय : देख गै मीना। ई गाम-घरक चक्करमे जुनि पड़। तोरा आब कमी कथीक छौ। भगवान सभ किछु देने छथुन्ह।

मीना : तोहर माने जे हम बिसरि जाइ, सास, दियर सभ कैँ बिसरि जाइ?

माय : तों त' सदिखन झगड़े करय लगैत छैं। नीक गप कहैत छियौ से बुझिते नहि छैं।

बाबूजी : अहाँ अधलाह गप कहिया कहलियैक अछि जे आइ नीक गप कहबै।

माय : सैह त'... अँय की कहलहुँ हम एकरा नीक गप कहियो नहि ने कहलियै...? ठीके ओझा कहैत छथिन्ह जे ई कहियो अपन सटैन्डर नहि बना सकैत अछि।

बाबूजी : हे कथीलेल अँग्रजी भषा कैँ न'व-न'व शब्द दय अनुग्रहित

करैत छियै...। यैह शब्द छैक स्टैन्डर्ड। आ हे धन्य अहाँक जमाय कम सँ कम अहाँक स्टैन्डर्ड त' बनिये गेल अछि।

माय : करू अहाँ दुनू बाप बेटी कैँ जे मोन हुए। परन्च, एकटा बात सूनि ले गे मीना, हे गाम-घर देख' लगबैं त' अपन घर बर्बाद भ' जेतौ। ओझा जे करै छथिुन्ह से नीके लेल। तोहर साउस कैँ आर बेटा नहि छन्हि जे खाली ओझे करथिन्ह? *(प्रस्थान)*

बाबूजी : विचित्र लीला अछि। एकटा अहाँक माय छथि ... आ एकटा अहाँ छी। दुनू मे कतेक के अन्तर। खैर, धैर्य सँ काज करी... भगवान पर आस्था राखी... चलू आब स्नान ध्यान कर...।

(दुनूक प्रस्थान प्रकाश बन्न होइत अछि)

सातम् दृश्य

(भेला सोफा कुर्सीसभ पोछि रहल अछि आ मस्त भ' गीत गाबि रहल अछि ''मरे पैरों मे घुँघरु बंधा दे तो फिर मेरी चाल देख ले, कोई मेरी भी शादी करा दे तो फिर मेरी चाल देख ले'')

(बर्माजी आ रानीक प्रवेश)

बर्माजी : की रे भोलबा... *(भेला मस्त भ' गाबि रहल अछि)* की रे भोलबा।

भोला : परनाम मालिक। अबियौ, बैसियौ ने माने कि...।

बर्माजी : की रे बड़य बियाह करै के मोन होइ छौ।

भोला : जी मालिक *(लजाइत)*

बर्माजी : अँय रे। लेकिन बियाह कैय कैय कनियाँ के राखभी कत'?

भोला : जी...?

बर्माजी : अच्छा एकटा ग'प करिहें। बियाह कैय कैय अपन कनियाँ तों हमरे दै' दीहें।

भोला : जी...?

बर्माजी : जी की? देबही कि नै अपन कनियाँ, से ने बाज ?

भोला : मालिक हें-हें-हें अहाँकेँ त' एकटा कनियाँ छथिये, माने कि दोसर ल' क' की करब?

बर्माजी : ढ़ौहरीक भैय... तो बड़ बूड़ि छैं। रे ई भेली दरभंगाक, हम अपने सहरसाक आ तोहर बियाह कराय देबौ पूर्णियाँ या भागलपुर। ब'स पूरा मिथिला पर अपन राज। आ सुन, एम्हर सुन...हे विशेष बात ई जे ई भेली आब ओल्ड स्टॉक आ तोहर कनियाँ रहतौ न्यू स्टॉक। ओकरा हम अँचार बनै'य कैय बूइयाम मे धैय देबै आ कखनो...कखनो...।

रानी : दुर जाउ। अहाँकेँ त' सदिखन मजाके सूझौत रहैत अछि। नोकरो-चाकरो केँ नहि छोड़ैत छियैक।

बर्माजी : ई नोकर-चाकर कोना भेल? ई थिक झा जीक सासुरक लोक। माने ई भेल सार। आ एकर कनियाँ होयत सरहोजि। आ हे, सारि पर त' आधे अधिकार परन्तु, सरहोजि पर त' तीन चौथाईक अधिकार। की रे भोलबा...?

भोला : माने कि जी मालिक।

रानी : जी मालिक। जी मालिक। जो भाग अपन काज कर।

भोला : माने कि जी मालिक *(कहैत प्रस्थान)*

रानी : अहूँ त' हहे करैत छी। एकटा हम सम्हरिते नहि छी आ दोसरक लोभ।

(बालचन्द्र झा आ मीनाक प्रवेश)

बालचन्द्र : केकरा एकटा नहि सम्हरैत छैक ?

रानी : हिनके। भोला केँ कहैत रहथिन्ह बियाह क' क' कनियाँ हमरा द' दे।

बर्माजी : तहन कोन बेजाय कहलियै औ झा जी...।

(दुनू गोटे हँसैत छथि आ बैसैत छथि)

त' झा जी, पूरी गेल रही? केहन रहल?

बालचन्द्र : ठीके-ठाक। अपन कहू की हाल-चाल?

बर्माजी : सब ठीके अछि। हँ... अहाँक कैन्डिडेट के हम सलेक्ट कैय लेलियै। आब त' एप्वांटमेन्ट लेटर सेहो भेट गेल हेतै।

बालचन्द्र : हमर कैन्डिडेट! हमर के कैन्डिडेट ?

बर्माजी : अरे वैह। की त' नाम छलै... हँ, चूड़ामणि झा।

बालचन्द्र : अहाँ कैं कहलक हिनका विषय मे...?

मीना : हम रिक्वेस्ट कयने रहियैन्ह।

(ओम्हर चूड़ामणि हाथमे मिठाईक दोना नेने प्रसन्न भ' आबि रहल छथि। बरामदापर ड्राइंगरुमसँ आबि रहल आवाज सुनि ठाढ़ भ' जाइत छथि)

बालचन्द्र : *(तमसाइत)* अहाँकैं के कहलक ई सभ करबाक लेल? हम जखन मना कयने रही जे हमरा ई सभ पसिन्न नहि तखन अहाँ एहन काज किएक कयलहुँ?

मीना : हम त' नीके जानि कयलहुँ।

बालचन्द्र : खाक नीक जानि कयलहुँ। आब ओकरा नौकरी भेट गेलै। काल्हि सँ ओ पचास तरहक प्रोबलेम ल' क' आओत आ परेशान करत। अहाँ सभटा ओहने काज करैत छी जे हम नहि चाहैत छी।

बर्माजी : झाजी, शांत भैय जाउ। जे भैय गेलै से भैय गेलै। आब की करल जै'य सकैत छै?

बालचन्द्र : नहि यौ बर्माजी। आइ एकर फैसला भइये जाय। सभटा हिनके बुझाइत छन्हि। जेना हम किछु समाजकँच-नींच बुझिते नहि छियैक। कहू त' आ जँ हमर इच्छा होइत त' कि ओहि चूड़ामणि झा द' हम अहाँ कैं नहि कहि सकैत रही?

(एहि बीच मिक्की किछु तकबाक हेतु ड्राइंगरुममे आयल रहैत छथि। चूड़ामणिक नाम सुनितहिं)

मिक्की : चूड़ामणि! अरे वैह टीकीबला चूड़ादही। पापा जनैत छी एकटा बुढ़बा जे गामसँ आयल छल ओ मम्मीकैं कहैत रहैन्ह जे हमर मैरेज ओही चूड़ादहीसँ करेबाक लेल।

बालचन्द्र : अरे हिनकर दिमाग खराब भ' गेल छन्हि। बड़ दानी बनय चललीह अछि।

मीना : हँ...हँ...हमर दिमाग खराब भ' गेल अछि...। सेहन्ते रहल जे कहियो सासुर जइतौंह। गाम घर समाज सभछूटि गेल।

सौंसे इलाकामे घोल भेल अछि जे हमहीं अहाँकेँ दूरि क' क' राखि देने छी। आ फेर ई सभ घूमिक' जैतथि तखन त' हमरा नामपर लोक दुर-दुर करतै।

रानी : मीना कने शान्त भ' जाउ। दुनू गोटे जँ तामस करब त' कोना होयत?

बालचन्द्र : अरे ई की शान्त हेती। ई त' अपन लोक परलोक सुधारि रहल छथि। माथक दर्द त' हमर बढ़ौलन्हि अछि।
(एतबहिमे चूड़ाक हाथसँ मिठाइक माँटिक बर्तन खसबाक आवाज। सभ दरबाजा दिस देखैत छथि। चूड़ामणि अन्दर अबैत छथि)

चूड़ा : कका जी। काकीक कोनो अपराध नहि। अपराध सभ हमर थीक। अपने कैँ जँ नहि पसिन्न त' हे लिअ
(जेबी सँ एप्वान्टमेन्ट लेटर निकालैत फाड़ैत)
हम अहाँक सोझामे ई एप्वान्टमेन्ट लेटर फाड़ि दैत छी। भाग्यमे होयत त' दोसर भेट जायत। अहाँकेँ कोनोतरहक परेशानी हमरासँ आब नहि होयत...। काकी। अहाँ बास्तबमे हमर माइयो सँ बढ़ि कय ममतामयी छी। अहाँक उपकार हम जीवन भरि नहि बिसरि सकैत छी। जे भूल-चूक भेल हो से माफ करब।
(काकी आ ककाक पैर छूबि चलि जाइत छथि। सभ अबाक)।

बर्माजी : वाह-वाह! केहेन स्वाभिमान ! अपूर्व ! झा जी, ई स्वाभिमानी युवक हमरा सभहक उपर भारी कलंक लगाय कैय चलि गेल। अच्छा आब की करल जा सकैत अछि।

रानी : हँ हँ। आब की करबै? अहाँ सभ मुँह झुकौने बैसल रहू। कतेक मुश्किल सँ त' एहि सभ ठाम अपन समाजक लोक कैँ नौकरी भेटैत छैक। तकर ई दुर्दशा... छीः छीः...।
(भोला अखबार राखय अबैत अछि)

बर्माजी : रे भोला अजुका पेपर छौ की?
(बर्माजी पेपर उनटबैत छथि)

रानी : चाहे लोक मरय, चाहे जिबय अहाँकेँ त' बस पेपर चाही। ई अखबार त' हमर सौत भ' गेल अछि।

बर्माजी : *(अचानक)* रानी...रानी... बिनोदक की रौल नम्बर छै? मोन अछि की? आई. ए. एस. के रिजल्ट निकलल छै।

रानी : हँ हँ 39742। देखियौ।

(झुकि क' देखय लगैत छथि)

बर्माजी : है यैह। 39742। कम्पीट कय गेल। चलू रानी जल्दी घर चलू।

बालचन्द्र : बधाई हो। *(उदास स्वर सँ)*

मीना : (शोकेश सँ कागज अनैत) कने ईहो रौल नम्बर तकियौ त'।

बर्माजी : *(तकैत)* अरे ईहो रौल नम्बर छैक। केकर छै...? केकर छै ई रौल नम्बर ?

मीना : चूड़ामणि के!

(सभ एक संगे "चूड़ामणि के"?)

मिक्की : मम्मी...की सच्चे? चूड़ामणि जीक छन्हि ई रौल नम्बर।

मीना : हँ।

बर्माजी : झाजी बड़ पैघ अपराध कयलहुँ अछि अहाँ। आब हमरा पूरा विश्वास अछि जे ई लड़का भाइभा मे सेहो कम्पीट करबे करत आ आई. ए. एस. होयबे करत...। रे भोलबा ... दौड़ कय जो आ हुनका बजाय आन...।

(भोला जाइत अछि)

बालचन्द्र : मीना...मीना... बड पैघ गलती भ' गेल हमरा सँ, एहन लड़का हाथ सँ निकलल चलल जा रहल अछि।

रानी : से की?

बालचन्द्र : की कहू। मीना त' ओहि लड़का सँ मिक्कीक बियाहक बात करैत छलीह। हमरे आँखिपर पर्दा लागल छल। चीन्हि नहि सकलियै।

बर्माजी : तखैन देखैत की छी? दौड़ू अपने जाउ।

बालचन्द्र : हम कोन मुँह ल' क' जाउ। आ हमरा गेने कि ओ आपस औताह?

बर्माजी : अवश्ये औताह। जाउ। ओना नहि मानथि त' पैर पकड़ि क' माफी मांगि लेब। एहन मौका फेर नहि भेटत। तैयो नहि मानथि त' मीनाक सप्प्त द' देबैन्ह। ओ अवश्ये औताह।

रानी : हँ। हँ। अहूँ जइयौन्ह संगे। ओ अवश्ये औताह।

(बालचन्द्र झा परेशान एम्हर सँ ओम्हर टहलि रहल छथि। मिक्की लग आाबि)

मिक्की : *(हाथ पकड़ि क')* जाउ ने पापा...।

बालचन्द्र : अँय...।

मिक्की : हँ पापा...अहाँ जाउ ने।

(बालचन्द्र झा आ बर्माजी बिदा होइत छथि। मंचपर प्रकाश नहूँ- नहूँ बन्न होइत अछि)

अन्तिम दृश्य

(बी॰ सी॰ झाक नेम प्लेट बदलि क' सी. एम. झा, आई. ए. एस.क नेम प्लेट लगा देल जाइत अछि। उज्जर पर्दा पर (ShadowLight) *सँ मिक्की एवं चूड़ामणि कँे कोनो अँग्रजी धुनपर नाच करैत देखाओल जा रहल अछि। चूड़ामणिक हाथमे गिलास छन्हि जेकरा बेर-बेर ओ मुँह लग ल' जाइत छथि)*

''पार्श्व स्वर''

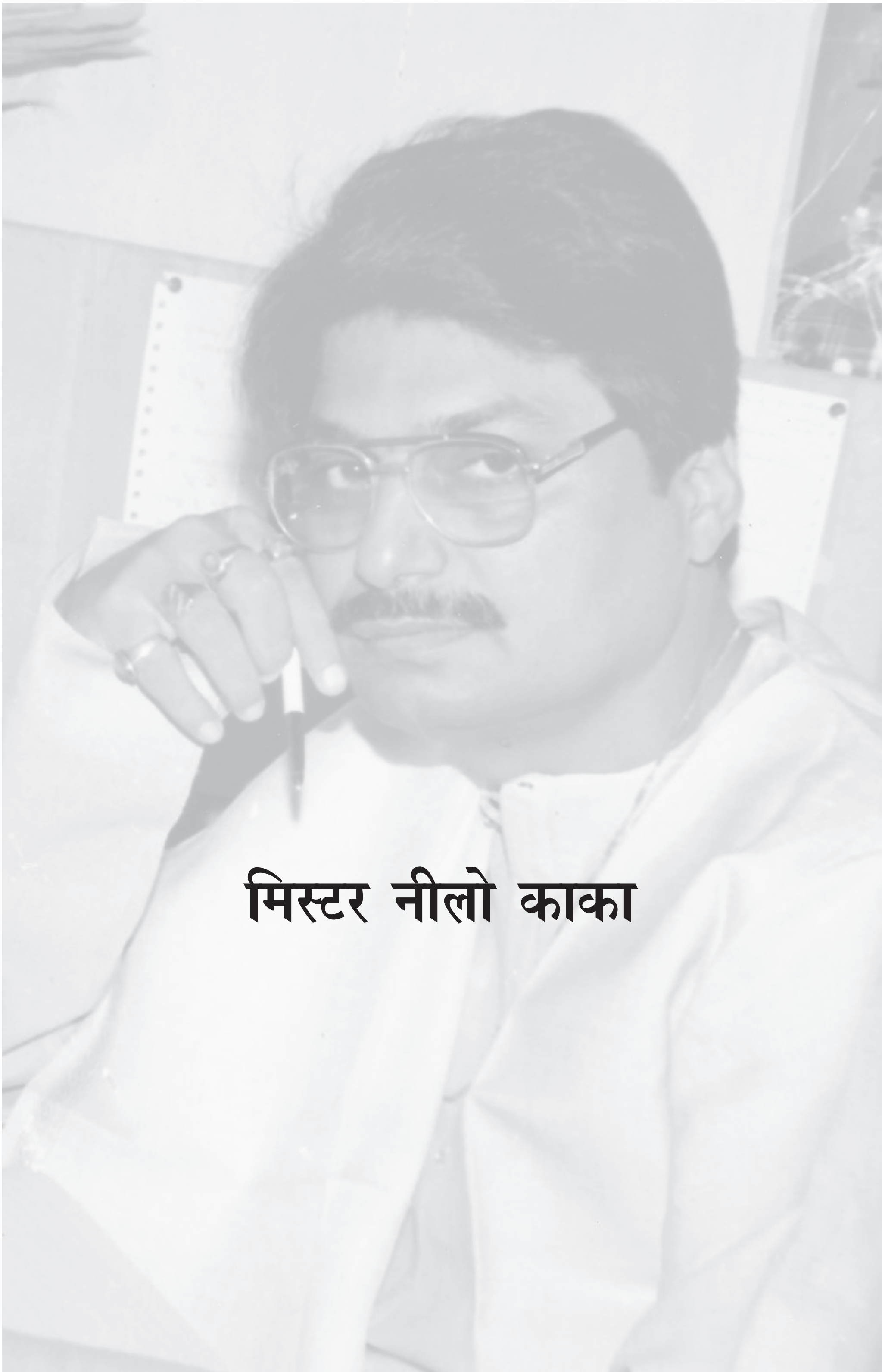
श्रीमती बालचन्द्र झाक अथक प्रयास, छेदी झाक आशीर्वाद एवं दहेजक मोट राशिक प्रभावसँ चूड़ामणि एवं कुमारी मिक्कीक विवाह सम्पन्न भेल। कालान्तरमे चूड़ामणि भ' गेलाह C.M.Jha,IA आ अपन ससुर श्री बालचन्द्र झा जकाँ बिसरी गेलाह अपन अतीत कँे। बिसरी गेलाह अपन गाम, अपन सभ्यता, संस्कृति एवं समाज कँे। आ डूबि गेलाह पश्चिमी सभ्यताक चभच्चा मे।

अहिना कतेको बी. सी. झा, सी. एम. झा, ठाकुर, मिसर, चौधरी, पाठक, बर्मा, सिंह, यादव अबैत रहताह आ बिसरल जेताह अपन गाम, सभ्यता, संस्कृति आ समाजकँे आ कहबैत रहताह बड़का साहेब। यैह होनी अछि, यैह भविष्य थीक।

(मुख्य पर्दा खसैत अछि)

समाप्त

●



मिस्टर नीलो काका

मिस्टर नीलो काका

पुरुष पात्र

नीलो काका	:	पचपन वर्षक वृद्ध व्यक्ति। हास्य व्यंग्यक मूर्त्ति। पहरावा बढ़ियाँ, खूब साफ धोती, रंगीन टी-शर्ट जाहिपर किछु ने किछु लिखल रहैत अछि जेना : I LOVE YOU, FORGET ME NOT किछु लड़की सभक चित्र बनल, दाहिना हाथमे काड़ा, इत्र-फुलेलक प्रयोग करैत छथि, चमचमाईत जूता इत्यादि।
चलितरा	:	निलो'क नौकर, 50-55 वर्षक
वकील साहेब		
ओझाजी		
पानबाला		
युवक		
रमेश	:	30-35 वर्षक युवक
गुलाब मंडल	:	रमेशक मित्र एवं सरपंच
ननकिरबा	:	6-7 वर्षक बालक
मनचनमा		
सुनैना चौधरी		
मुख्यमंत्री		
सिपाही		

स्त्री पात्र

लीलावती	:	40 वर्षक उमेर, नीलो'क स्त्री
मिस नीली	:	25 वर्षक प्रेस रिपोर्टर

पहिल एवं दोसर मंचनक कलाकारगण

रविन्द्र भवन, जमशेदपुर

भारतीय नृत्यकला मंदिर, पटना

17 नवम्बर, 1984

13 जून, 1985

निर्देशक : लल्लन प्रसाद ठाकुर

नीलो काका : लल्लन प्रसाद ठाकुर

चलितरा : लक्ष्मीकान्त झा/कुमार भास्कर

लीलावती : वन्दना मिश्र/ कुसुम ठाकुर

वकील : पूर्णानन्द झा/मोहन झा

ओझाजी : देवचन्द्र झा/बाल मुकुन्द चौधरी

मनचनमा : रतीश चन्द्र मिश्र

पानबला : रुपनारायण झा

रमेश : सुधीर चन्द्र मिश्र

गुलाब : नीलाम्बर चौधरी

युवक : बाल मुकुन्द चौधरी/प्रेमनाथ झा

सिपाही : देवचन्द्र झा/मोहन झा

सुनैना : रतीश चन्द्र मिश्र

मुख्यमंत्री : पूर्णानन्द झा/बाल मुकुन्द चौधरी

मिस नीली : वीणा सिंह/अनीता सिंह

ननकिरबा : कुमार मयूर

संगीत : राजा

पार्श्वस्वर : जी॰ विश्वनाथ

मंच व्यवस्था : बैद्यनाथ झा/जी॰ विश्वनाथ

मंच-निर्देश

मंचकेँ तीन भागमे विभाजित कयल गेल अछि। प्रकाश व्यवस्थासँ मंचपर सभ दृश्य प्रस्तुत कयल जा सकैछ। भाग एकमे नीलो काकाक घरक दृश्य। भाग दूमे पान दोकानक दृश्य। भाग तीनमे मात्र पटनाक दृश्य एवं नेता लोकनिक भाषणक दृश्य देखाओल जा सकैछ।

दोसर दृश्य समाप्त भेलापर बीचवला पर्दा लगा देल जाइत अछि एवं एकटा गेट ठाढ़ क' देल जाइत अछि। तेसर दृश्यक समाप्तिपर पुनः ई पर्दा, गेट आ कुर्सी हटा देल जाइत अछि।

पुनः पाँचम दृश्यमे ई पर्दा लगा देल जाइछ एवं मंचक एक भागमे मुख्यमंत्रीक भाषणक हेतु कुर्सी, टेबुल, माइक लगा देल जाइत अछि एवं दोसर भागमे नीलो काका'क भाषणक हेतु सभ इन्तजाम।

छठम दृश्यमे अहि पर्दापर शैडो लाइटमे किछु व्यक्तिकेँ रेडियोपर समा. चार सुनैत देखायल जाइत अछि। शैडोमे देखेबाक हेतु एरियल वला ट्रांजिस्टर नीक रहत।

छठम दृश्यक बाद अहि पर्दाकेँ हटा देल जाइत अछि एवं नाटकक शेष भाग, मंचक भाग एक एवं भाग दूमे चलैत अछि।

भूख-हड़तालक हेतु पानक दोकानक आगू चौकी लगा देल जाइत अछि। चौकीपर ओछौन, मसनद आदि राखि देल जाइत अछि।

नाटक मंचनक हेतु आवश्यक सामग्री

मंचपर

भाग 1	:	पलंग, लकड़ीक रैक, टिनही बक्शा, कुर्सी।
भाग 2	:	पान दोकान, दूटा बेंच।
भाग 3	:	गेट, कुर्सी।
प्रथम दृश्य	:	जूता पॉलिश, ब्रश, सौन्दर्य-प्रसाधन, ऐना, कंघी, पतरा, टेप रेकार्डर, गीतक कैसेट, छिलुआ लोटा, गिलास, पनबट्टी, जलपानक सामग्री, सय टाकाक दू टा नोट।
दोसर दृश्य	:	पान दोकानक समान, लाल कपड़ा, सरौता इत्यादि।
तेसर दृश्य	:	चमड़ाक बैग, सिपाहीक बन्दूक, कैमरा।
चारिम दृश्य	:	लाठी।
पाँचम दृश्य	:	चारिटा कुर्सी, दूटा टेबुल, 2 फुलदान, 2 टेबुल क्लॉथ।
छठम दृश्य	:	एरियल वला ट्रांजिस्टर।
सातम दृश्य	:	चारिटा फूलक माला, मिस नीली'क हेतु ब्रीफकेस, नोटबुक, कलम, दू टा लड्डू।
आठम दृश्य	:	चमड़ाक बैग इत्यादि।
नवम दृश्य	:	चौकी, ओछाओन, मसनद, फूलक माला, पंखा, दरी इत्यादि।
दशम दृश्य	:	भोजनक पैकेट।

मिस्टर नीलो काका

पहिल-दृश्य

(नीलो काकाक घरक दृश्य। पलंग, टेबुलपर सौन्दर्य-प्रसाधन। नीलो काका ऐनामे अपन मुँह देखैत क्रीम, पाउडर आदि लगा रहल छथि आ टेप रेकार्डरसँ आबि रहल गीत 'बोल राधा बोल ...' क आनन्द ल' रहल छथि। हिनक खबास चलितरा नीचाँ बैसल अछि आ जूतामे पालिश लगा रहल अछि।)

नीलो : चलितरा ... चलितरा ... रे चलितरा...

चलितरा : *(हड़बड़ाइत)* जी मालिक भ' गेल पालिश...

नीलो : अच्छा-अच्छा ला पहिरा...

चलितरा : बहिरा? फेर हमरा बहिरा कहलहुँ! घरबालीक किरपासँ कने ऊँच सुनैत छी तँ' कि अहाँ हमरा बहिरा कहब? जाऊ... आइसँ हम अहाँक चाकरी नहि करब घरबालीक किरपासँ ...

नीलो : हा-हा-हा... रौ बहिरा नइ कहलियौ... कहलियौ जे ला जूता पहिरा...जूता...

चलितरा : हूँ *(जूता पहिराबैत छनि)*

नीलो : हे रौ चलितरा...! कने देख त' केश ठीकसँ सिटायल कि नइ ... आ पाउडर आ क्रीम नीक जकाँ मिलल अछि कि नइ!

चलितरा : मालिक...! घरबालीक किरपासँ अहाँ त' बुढ़ाढ़ियोमे छौंड़ा सभक कान कटैत छी!

नीलो : हे रे शाला ...! बुढ़ाढ़ीमे कोना? अँय रौ... तोरा हम बूढ़ लगैत छियौ?... बता-बता त' हमर उमेर की अछि?... रौ, हम छी सोड़ह वर्षक! बुझलीही...सोड़ह वर्षक...!

चलितरा : हो...हो...हो...मालिक! अहूँक उमेर त' मौगीक उमेर भ' गेल। कहियो सोड़हसँ बेसी होइते नइ अछि घरबालीक किरपासँ...

नीलो : घरबालीक किरपासँ किने? अँय रौ केकर घरबालीक किरपासँ...? तोहर...?

चलितरा : हें...हें...हें... हँसी किएक करैत छी मालिक!

नीलो : हम हँसी करैत छियौ? अँए रौ तोरा माने हम घरबालीक किरपासँ सोड़ह के छी... हे रौ! तों ठीके कहैत छें! घ'रेबालीक किरपासँ सोड़ह के छी नइ त' चौदह के रहितौं... चौदह कैँ..!

लीलावती : *(पनबट्टाक संग प्रवेश)* हँ-हँ त' के कहलक बियाह करबाक लेल? बियाह नइ करितौं त' रोज अपन छठिहारे मनबैत रहितौं।

नीलो : लीलावती...!

लीलावती : मरि गेली लीलावती! लीलावतीक कप्पारपर त' ओही दिन अठबज्जर खसि पड़लैन जहिया बाप अहाँक संग बिदा केलैन।

नीलो : हे यै...! अहूँ क'म नइ छी। मीना कुमारी जकाँ फटाफट डायलॉग देने चलल जा रहल छी।

लीलावती : अहाँ के त' मीना कुमारी, कोन कुमारी छोड़ि क' किछु फुरिते नइ अछि। सीट-साट केलौं आ आब निकलब त' भरि दिन मटरगस्ती करब, सनीमा देखब, आर की? घर-दुआरसँ त' कोनो मतलबे नइ अछि। अपनाकैँ त' अहाँ...ओ की कहैत छैक जे...कोन कुमार...? कोन कुमार...*(मोन पाड़ैत)*

चलितरा : मलकिनी... दलीप कुमार।

लीलावती : हँ-हँ वैह दलीप कुमारसँ कम बुझिते नइ छी।

नीलो : छीः छीः छीः! कोन बूढ़ खूँसटसँ हमर तुलना केलौं... भरि दिनक जतड़ा बिगाड़ि देलौं... चलितरा...!

चलितरा : मलकिनी...! मालिक त' ठीके कहैत छथि। कहाँ मालिक सोड़ह बरीस के आ कहाँ ओ...दलीप कुमार...

लीलावती : आहा-हा-हा! चूड़ाक गबाही दही! तोहर मालिक सोड़ह बरीस

के नइ, छ' दिनक छथुन, जो, मधुबनीक चौकपर छठिहार करा दिहुन...हूँह...

(प्रस्थान)

चलितरा : मालिक...! ई ठीक नइ भेल घरबालीक किरपासँ। मलकिनी तमसा गेली।

नीलो : तमसा गेली त' दू कौर भात बेसी खेती। रौ तौं नइ बुझबीही। नीलोक लीलावतीक लीला अपरम्पार छनि। चल उठा झोरा-झपटा। बड़ अबेर भेल।

(जयबाक उपक्रम... वकील साहेब आ ओझाजीक प्रवेश। वकील साहेबक एक आँखिपर मोतियाबिन्द वला हरियरका पट्टी लागल छनि)

वकील : नीलो काका... नीलो काका...!

नीलो : चलितरा... चलबाक काल ई वकीलबाक दर्शन। बूझिले जे अझुका दिन समाप्त! धूरे कनहा, तोरा वकील के बना देलकौ? तोरा त' घोड़ा सभक सहीस बनिबतौ ने। भोरे उठि क' घोड़ाक दुनू आँखिमे अपन एक बत्तीसँ फोक्सींग मारैत रहितैं आ कोनो घोड़ीकेँ देखितहिकि बत्ती भुक-भुक-भुक-भुक कर' लगितैं!

वकील : नीलो काका...!

नीलो : खचरहबे...! तोरा बूझल नइ छौ जे एहि बेरमे हम रोज बाहर निकलैत छी! तखन ई एक बत्तीबला टार्च ल'क' हमरा सोझाँ किएक एलैं?

वकील : ओप्फो...नीलो काका ...! अहाँके त' सदिखन एके बात रहैत अछि। हिनका चिन्हलियैन? ओझाजी...राँटी वला...!

(ओझाजी नीलो काकाक पै'र छूबि प्रणाम करैत छथि)

नीलो : फटफटाइत रहू!

ओझा : जी?

नीलो : खूब फटफटाइत रहू!

ओझा : जी... अहि आशीर्वादक अर्थ नहि बूझल!

नीलो : औ अहाँक बाप जे अनर्थ केलैनि तकर अर्थ की बूझब?

ओझा : जी?

नीलो : अहाँक बाप अहाँक बियाहमे 25000 टाका आ एकटा फटफटियाक माँग केलनि। से फटफटिया अहाँकेँ ई वकील. बा कीन क' देबे करत। ताहि दुआरे आशीर्वाद देल जे फटफटियापर फटफटाइत रहू।

ओझा : हा-हा-हा...! अपनेक विषयमे जेहने सूनल तेहने पाओल।

नीलो : *(ओझा के घूरि क' देखैत)* हे रे शाला...! तोहूँ क'म नइ छैँ। इह...! हमरा विषयमे सूनल! की सूनल? हम कि कोनो अजूबा छी जे हमरा विषयमे सूनल? ... रे कनहा..., तोरा दोसर कोनो नइ भेटलौ जे ई राँटीबला महामहोपाध्याय के उठा अनलैं?

वकील : ओह...नीलो काका! अहाँ त' हद करैत छी। जमाइयो के नइ छोड़ैत छी। आबो त' रामक नाम लिअ'। आब कतेक दिन अहि संसारमे रहब से के जनैत अछि?

नीलो : रे वकीलबा...! खचरपनीसँ बाज नहि एबैं? रे मरबैं तौं, मरतौ तोहर बाप! हम त' तोहर बापोक मत्समांस खेबौ आ तोरो मत्समांस खेबौ...!

(लीलावतीतक प्रवेश)

लीलावती : हँ हँ किएक नइ । केकरो दूटा नीक वचन नहि कहि सकैत छियै? जमाय आयल छथि। बैसबोक लेल नइ कहलियैन। ओझा..., बैसथु! हिनकर बाबाकेँ सभ संग अहिना रहैत छनि। खराब जुनि मानिहथि।

(ओझा लीलावतीकेँ प्रणाम करैत छथि आ बैसि जाइत छथि)

जहाँ क्यो मरैक नाम आ'कि साँपक नाम ल' लैत अछि कि हिनकर त' हवासे उड़ि जाइत छनि।

(प्रस्थान)

नीलो : साँप... *(एम्हर-ओम्हर देखैत)* हे यै...हे यै.... लीलावती हमरा किएक डर हैत। हम त' जीवने बिता रहल छी नागिनक संग...हूँह...केहेन बढ़िया गीत होइत रहै...

(टेप रेकार्डरक आवाज बढ़ा दैत छथि...गीत जोरसँ बाज'

लगैत अछि)

वकील : नीलो काका! अहाँकेँ पहिल बेर ओझाजीसँ भैँट भेल अछि, किछु पुछियौन!

(नीलो काका गीतमे मग्न छथि। वकील साहेब फेर जोरसँ टोकैत छथि)

वकील : नीलो काका...यौ नीलो काका...!

नीलो : *(टेपक आवाज कम करैत)* हूँ...

वकील : अहाँ के ओझाजीसँ पहिल बेर शैँट भेल अछि, किछु पु. छयौन-आछियौन!

नीलो : हँ-हँ, तौँ ठीके कहैत छ'। पहिल बेर भैँट भेल अछि। अच्छा...बच्चा... कने ई त' कहू जे ई कोन सनीमाक गीत छै?

ओझा : जी...जी...ई त' हमरा नइ बूझल अछि।

नीलो : देखलैँ रे वकीलबा! तोहर जमाय के एतबो नइ बूझल छौ!

वकील : ओप्फो...नीलो काका! ओझाजी एहन-ओहन विद्यार्थी नइ छथि। पढ़ैबला छथि। सदिखन टॉप करैत अयलाह अछि।

नीलो : अच्छा! बच्चा...! अहाँ करैत की छी?

ओझा : जी, एम.ए. कयलाक बाद पी.एच.डी. क' रहल छी। विषय अछि ''मिथिलाक प्राचीन रीति-रिवाज आ'' आधुनिक राजनीतिक परिवेशमे ओकर महत्व''।

नीलो : वाह! वाह! मिथिलाक रीति-रिवाज! वाह! ...अँय यौ क्यो कहैत छल जे बियाहक बेरमे विधकरी के अहाँ नाक नइ पकड़' देलियै।

ओझा : जी, हँ! ई कोन तरीका भेल, नाक पकड़बाक? भ' सकैत छै जे स्वांस अवरुद्ध भ' जाइ। मृत्यु भ' सकैत छै।

नीलो : वाह! वाह! स्वांस अवरुद्ध भ' सकैत छै, मृत्यु भ' सकैत छै! ...औ बूड़ि..., लाखक-लाख मैथिल जे बियाह केलक आ करोड़क-करोड़केँ जनमा क' चलि गेल तकरा सभकेँ स्वांसे ने अवरुद्ध भेलै आ अहाँक स्वांस अवरुद्ध भ' जाइत?

ओझा : जी, बात...

नीलो : की बात? औ पढ़ैत छी मिथिलाक रीति-रिवाज आ कहयो ई सोचलियै जे बियाहमे बिधकरी द्वारा नाक किएक पकड़ल जाइत छैक?

(लीलावती आ चलितराक जलपान एवं चाहक कप-प्लेट संग प्रवेश)

लीलावती! कहियौन ओझाकेँ जे बियाहमे नाक किएक पकड़ल जाइत छैक।

लीलावती : हम जँ' पढ़ल-लिखल रहितहुँ त' ई दशा नइ रहैत। अहाँक संग मरैत-खपैत नइ रहितौं।

नीलो : वैह! वैह! आब भेटल जवाब ओझा?

ओझा : जी, हमरा किछु बूझल नहि।

नीलो : औ बूझब कोना! अहाँक बुझनाशयमे त' गोबर ठूसल अछि त' बूझब कोना! औ बूड़ि, बियाहक बाद पुरुष केँ भेटैत छै एकगोट कनियाँ। जेना हमरा लीलावती भेटली। आ... जुवानीक जोश मे, प्रेममे डूबि, पुरुष अपन कनियाँकेँ आँखिमे नुका क' राखि लैत अछि। बच्चा.., राखि त' लैत अछि परंच बादमे वैह कनियाँ पुरुषक आँखिमे बरसाती कीड़ा जकाँ जिनगी भरि गड़ैत रहैत छैक आ पुरुषक आँखिसँ भरि जिनगी नोर झहरैत रहैत छैक। ताहि दुआरे बियाह कालमे नाक पकड़ल जाइत छैक जे आँखिसँ त' नोर बहबे करतैन, कहीं नाकोसँ ने बह' लागनि। की रै चलितरा..?

(ओझा आ वकील मुँह दबा क' हँसैत छथि)

चलितरा : एकदम ठीक कहलियै मालिक! हमरा आँखिसँ त' ततेक ने नोर बहल अछि जे ओतेकमे त' एकटा पोखरि भरि जाइत घरबालीक किरपासँ।

लीलावती : आ ओहीमे तोँ डूबि क' मरि जैतेँ। हूँह...!

(लीलावतीक प्रस्थान)

नीलो : लीलावती...लीलावती...! हा-हा-हा! आइ भोरेसँ हिनकर माथमे पेट्रोमेक्स बड़ि रहल छनि। होऊ... ओझा...! जलपान करू! चाह पीबू!

(ओझा जलपान कर' लगैत छथि। वकील साहेब के जलपान नहि करैत देखि ...)

नीलो : की रे वकीला...तोरा मुँहमे जाबी किएक लागल छौ? अपच भ' गेल छौ की?

(वकील साहेब सेहो जलपान कर' लगैत छथि। मनचनमा खबासक प्रवेश)

मनचनमा : गोर लगै छी मालिक!

नीलो : गोर लगै छैँ त' गोराइत रह। बाज की बात?

मनचनमा : *(नीलोक लग आबि पैर दबबैत)*

मालिक! सुखियाक बिदागरीक लेल पाहुन एलैये। कहैत हई जे काइल भोरे ल' जेबै। छुट्टी नइ हई। जोतखी जीसँ पुछलियनि त' कहलन जे काइल भोरमे त' मीर्तयोग हई। तनी अपने देख लितियै...

नीलो : हूँ...! रौ ई जोतखी आब सठिया गेल छौ। ठहर पतरा देख' दे।

(पतरा ताकय लगैत छथि)

पतरा की भेल...पतरा...लीलावती...! ...लीलावती... *(चिकड़ैत)* ओप्फो... यै लीलावती...हमर पतरा कत' अछि?

चलितरा : (प्रवेश) मालिक एतेक किएक चिचिया रहल छी? हम त' एत्तै छी।

नीलो : रे शाला...! हम चिचिया रहल छी पतरा-पतरा नइ कि चलितरा : चलितरा! रे हमर पतरा कत' अछि?

चलितरा : त' एना ने कहू...। ओ त' भनसाघरमे राखल छै घरबालीक किरपासँ। थमहूँ, नेने अबै छी।

नीलो : पतरा...! भनसाघर...! हा-हा-हा... आब बुझाइत अछि जे पतरा देखि क' लीलावती भोजन बनबैत छथि।

(चलितरा पतरा आनि क' दैत छनि। पतरा देखैत...)

छीः छीः छीः! साक्षात अमृत योगके मृतयोग कहैत अछि ई शाला जोतखी। शालाके दिमाग खराब भ' गेलैये। रौ! कालि भोरमे त' सभसँ उत्तम दिन छौ! जो निश्चिन्त भ'

बिदागरी कर..!

मनचनमा : आ...मालिक! हाथमे एकोगो पाई नइ हई। कोना क' इन्तजाम-बात करबै से नइ बुझाइत हई।

नीलो : हे रे शाला...! तौं अपनाकैं बड़ बुधियार आ हमरा बड़ बूड़ि बुझैत छैं? कि नै? पहिने दिन ताकि दिय', फेर पाई के इन्तजाम क' दिय', तकरा बाद कहबैं जे तोहर बेटीकैं कोरामे उठा क' ओकर सासुर पहुँचा दिय', किने?

मनचनमा : नइ मालिक! एना कहूँ होलैये! सत्ते कहै छी, एकोगो पाई नइ हई। सौंसे परोपट्टामे बदलामी हो जेतै।

वकील : बदलामी भ' जेतौ? हूँह! बदलामी भ' जेतौ त' तेकर ठीका की नीलो काका नेने छथुन? जो अपन काज कर।

नीलो : रे कनहा...! बेसी फच्च-फच्च नइ कर। अपन चोंच बन्न राख।

(लीलावतीक पानक संग प्रवेश)

लीलावती : किएक नइ? किएक नइ? अहाँकैं जे मोन हुए से करैत रही आ सभ चुपचाप देखैत रहय? द' दियौ, के रोकैत अछि? आब बचिये की गेल अछि? डीह-डाबर सभ बेच क'द' दियौ।

नीलो : आ-हा-हा! लीलावती! अहाँ त' बेकारे तमसा रहल छी। हमहूँ त' एकरा सैह कहैत रहियै। हे रे मनचनमा! एतेक कालसँ कहि रहल छियौ जे हमरा लग एकटा भुरही पाई तक नइ अछि त' बूझ'मे नइ अबैत छौ? जो, दिमाग नइ खराब कर।

मनचनमा : मालिक...एना...

नीलो : मालिक, मालिक। कहैत छियै से बुझिते नइ छै। चलितरा...!

चलितरा : जी मालिक!

नीलो : शाला के गरदनियाँ द'क' बाहर क'र, दिमाग खेने जा रहल अछि।

(आ चलितराकैं पाइ दैक लेल दू आँगुरक ईशारा करैत छथि)

चलितरा : जी मालिक?

नीलो : रे, शाला के गरदनियाँ द'क' बाहर क'र।
(पुनः चलितराकेँ दू आँगुरक ईशारा करैत छथि)

चलितरा : जी मालिक...! ...रे चल...कहै छियौ चल!
(धकलैत बाहर ल' जाइत अछि आ डाँड़सँ दू सय टाका बाहर क' दैत अछि संग-संग ककरो नइ कहबाक ईशारा करैत अछि)

नीलो : हुँह! पहिने दिन ताकि दिय', फेर टाका दिय'...कहाँ-कहाँसँ शाला सभ...
(लीलावतीक प्रस्थान)

वकील : नीलो काका! कालि भोरमे त' साक्षात पूब दिसक लेल मृत योग छै। जोतखीजी त' ओकरा ठीके कहने छलखिन। परन्च, अहाँ त' ओकरा अमृत योग बना देलियै?

नीलो : हँ! त' की भ' गेलै?

वकील : आ जँ कहीँ किछु भ' गेलै त'?

नीलो : त' तौँ अपन दोसरो आँखि फोड़ि लिहैँ! मूर्ख चपाटनन्दन नहितन! वकालत पढ़लक अछि। अँए रे, सौँसे संसारमे करोड़क-करोड़ लोक जे जतरा करैत अछि, तकरा लेल मृतयोगे नइ आ हमरा सभक लेल मृतयोग! ई जतेक मासांत, मासादि, अधपहरा, दिकशूल सभ अछि, सभटा मैथिलेक लेल? हुँह..! चलितरा...चलितरा...!

चलितरा : *(प्रवेश)* जी मालिक!

नीलो : उठा झोरा-झपटा... चल बड़ अबेर भेल। बाजा ल' ले। ई वकीलबाक चलते त' अझुका दिन समाप्त छौहे...।
(नीलो काका आ चलितराक प्रस्थान। मंचक अहि भागमे प्रकाश बन्न होइत अछि)

दोसर-दृश्य

(साधारण पानक दोकान। पान दोकानक दुनू कात एक एकटा बेंच लागल अछि। पानबला मस्त भ' पान लगा रहल अछि। चाहक दोकान सेहो बगलेमे अछि जकरा मंचपर देखायब आवश्यक नहि। एक युवक अबैत छथि आ चाहबला के चाहक लेल कहैत छथि।)

युवक : चाहबला... हौ चाहबला... एक गिलास चाह लाबह! *(कोनाबला बेंचपर बैस' लगैत अछि)*

पानबला : बौआ! ओइ बेंचपर बैसू!

युवक : से किएक। एहि बेंचपर बैसवामे की हानि?

पानबला : बौआ! ई बेंच नीलो काकाक लेल रीजफ रहैत छनि।

युवक : रीजर्भ! अँय हौ, ई कोनो ट्रेनक डिब्बा छै जे ककरो लेल बर्थ रीजर्भ रहतै। ...आ ई नीलो बाबू कत' के जमिन्दार छथि जे चाहो-पानक दोकानपर बर्थ रीजर्भ रखैत छथि।

पानबला : नीलो काकाकेँ नइ चिन्हैत छियैन? आहि रौ बाप! अहि इलाकामे नीलो काकाकेँ के नइ जनैत छनि। ओ त' बिना जमीने-जालकेँ सौंसे परोपट्टाक जमीन्दार छथि। बुझाइत अछि अहाँ अइ इलाकामे न'ब आयल छी।

युवक : न'ब त' नइ आयल छी मुदा बहुत दिनपर अयलहुँ अछि। पटनामे मौसा ओत' रहि क' पढ़ैत छलहुँ, आब एत्तहि पढ़ब।

पानबला : औ बौआ, अहाँ मौसा ओत' रहि क' पढ़ैत होइ कि मौसी ओत'। एत' त' कलेक्टर साहेब सेहो नीलो काकाकेँ दू-दू बेर क' प्रणाम करैत छनि। तैँ कहैत छी जे ओई बेंचपर बैसू।

युवक : हद्द भ' गेल। ई कोन बात भेलै? ककरो बपौती छै जे जतय ओ बैसत ओतय आओर क्यो नइ बैसि सकैत अछि। हम एत्तहि बैसब। देखैत छियै के की करैत अछि। *(ओहि बीच नीलो काका आ चलितरा ओहिठाम पहुँचि क' पाछूसँ सभ बात सुनैत रहैत छथि। हस्तक्षेप करैत...)*

नीलो : हँ-हँ, के की क' सकैत अछि। अहाँ त' विद्यार्थी छी ने। अहाँकेँ के की करत। परन्च, हे बाऊ! अहाँ जँ कालेजक विद्यार्थी छी त' हम स्कूलक विद्यार्थी छी। अहाँकेँ जँ' प्रोफेसर छथि त' हमरा की छथि चलित्तर ...?

चलितरा : घरबालीक किरपासँ गुरुजी मालिक!

नीलो : हँ! आ अहाँ जँ नां'गट छी त' हम की छी चलितरा?

चलितरा : घरबालीक किरपासँ महानां'गट मालिक!

नीलो : हँ! हम एना क' अहाँक गट्टा पकड़ि क' अहि बेंच परसँ उठा क' ओहि बेंचपर बैसा देब।

(गट्टा पकड़ि क' उठबैत आ धक्का दैत)

बूझल...हमरे नाम नीलो काका थीक!

(रमेश आ गुलाबक प्रवेश)

रमेश : की भेल नीलो काका?

नीलो : हैत की? देखह ने इलाकामे एकटा आओर हीरो जनम लेलक अछि। कने एकरा बुझा दहक जे सैए हीरोक एक हीरो नीलो अपने।

गुलाब : *(युवक लग जा क')* औ भाई साहेब! चिन्है नइ छियैन नीलो काकाकेँ? चुपचाप चाह पीबाक अछि त' पीबू नहि त'...

युवक : *(भनभनाइत)* हद्द भ' गेल! ई त' जबरदस्ती छी। गुण्डागर्दी छी।

(प्रस्थान करैत) हीरो सन ड्रेस पहिरि लेने छथि आ...

नीलो : पकड़ त' शाला के! शाला गुण्डागर्दी अखैन देखलक कहाँ अछि। पकड़...!

रमेश : जाए दियौ नीलो काका। बेचारा के नइ बूझल हेतै। तैँ त'...

पानबला : *(हस्तक्षेप करैत आ पान दैत)* नीलो काका, दरोगा जी आयल छलाह। कहलैन अछि जे फुलचनमाबला काज क' देने छथि, आ अहाँकेँ प्रणाम कहलनि अछि।

नीलो : हे रौ, दरोगा के जे बड़का छै एस.पी., तेकर जे बड़का छै

कलक्टर आ तेकरो जे बड़का छै मनीस्टर, सेहो नीलो कैं झुकि-झुकि क' प्रणाम करैत छै। ई शाला एकटा छोट-छीन काज की क' देलक, कि उपकार जतब' आयल छल। रौ, हमरासँ भैंट करबामे की होइत छै?

रमेश : अहाँ जे सातो पुरखाकैं तारि देबै। तैं त' अहाँक ड'रे हाकिम-हुक्काम सभ सुटकल घुरैत अछि।

नीलो : सुटकल नइ रहत त' की? देखलही किने? फुलेसराक जीनपर जे गुणेश्वर ठाकुर जबर्दस्ती कब्जा कर' चाहैत छलाह त' जहिना जाक' कलक्टर के कहलियै तहिना ओ आबि क' अपने फैसला केलकौ आ गुणेश्वर ठाकुर कैं कत्तेक फज्झति केने रहय से त' देखनेहे रह'। रौ, जहियासँ सुनैना चौधरी मनीस्टर भेलौ तहियासँ त' नीलोक पाँचो आँगुर घी मे। रौ, सुनैनमाकैं कहबै उठ त' उठ आ बैस त' बैस।

गुलाब : फूसि बजैत छी नीलो काका अहाँ।

नीलो : हे रे खचरहबे! हम फूसि बजैत छी? रे फूसि बजैत छें तों, फूसि बजैत छौ तोहर बाप, तोहर सौंसे खानदान...

गुलाब : खराब जुनि मानी नीलो काका। परन्च, हम त' कहबे करब। आ जँ' नइ, त' ई त' कहू जे आई धरि ई क्षेत्र एतेक पछुआयल किएक अछि? अहि क्षेत्रक प्राचीन सभ्यता, संस्कृति आ विद्वतासँ संपूर्ण देश लाभान्वित भ' रहल अछि। तथापि, निर्धनता, दरिद्रता, बाढ़ि, रौदीसँ सदा आक्रांत रहैत अछि। पटौनीक एतेक अभाव, जमीनबला सभक अत्याचार, सरकारी अफसरक पराकाष्ठापर पहुँचल भ्रष्टाचार। की, अहि क्षेत्रसँ बढ़ि क' कत्तौ भ' सकैत अछि?

रमेश : ई सभ तँ' बड़ पैघ गप भेल। मात्र ई त' कहू जे अहाँक गामसँ मधुबनी धरि पक्की सड़क कियैक नहि बनल? अहि इलाकाक स्कूल सभक ई दशा किएक? सरकारी राशनक दोकान सभमे राशनक बदलामे लोक सभकैं मात्र भाषण किएक भेटैत छैक?

गुलाब : आ, आई धरि अपन क्षेत्रमे कोनो कल-कारखाना सरकार

किएक नइ बनबौलक?

रमेश : कका, आई जँ' कोनो नीक कारखाना बनल रहैत त' हमरा सभ सन पढ़ल-लिखल युवक बेरोजगार नइ रहैत। आई जँ' पटौनीक व्यवस्था भेल रहैत, बाढ़िक रोक-थामक उपाय भेल रहैत, त' चारू दिस जे निर्धनता, दरिद्रता अछि से नइ रहैत।

नीलो : हे रौ, बुझाइत अछि तौं दुनू कोनो नाटकक डायलोग याद क'क' आयल छैं। फटाफट देने चलल जा रहल छही। कि नइ?

गुलाब : नीलो काका, ई डायलोग नइ अछि। ई सत्य गप थीक जे आब अहाँ सन-सन व्यक्तिकेँ बूझय पड़तै। कर' पड़तै।

नीलो : रौ, त' एहिमे हम की करबौ?

रमेश : अहाँक बोल-भरोसपर लोक चुनाव जीतैत अछि, अहाँक डरे कलक्टर, मिनिस्टर सभ नुकायल घुरैत अछि, झुकि-झुकि क' प्रणाम करैत अछि त' आहाँ की नइ क' सकैत छी!

नीलो : हे रे शाला! तौं दुनू मिलक' हमरा चढ़ा रहल छैं, कि नइ?

गुलाब : नहि-नहि नीलो काका। हम सभ ठीके कहैत छी। अहाँ जँ' चाही त' एहि क्षेत्रक कायापलट भ' सकैत छैक। अहाँ सन कर्मठ, ईमानदार बुजुर्ग सभ जँ' एकठाम होथि आ आजुक युवकक मार्गदर्शन करथि त' मात्र मिथिले नइ, सम्पूर्ण राज्यक, सम्पूर्ण देशक कायापलट भ' सकैत छैक।

नीलो : अच्छा-अच्छा! बेसी पौलीश करबाक काज नइ । आब' दही सुनैना चौधरी के। हम कहि देबै।

रमेश : अहिठाम कहलासँ किछु नइ हैत। सभटा प्लानिंग, सैंक्शन आ ऑर्डर पटनासँ होइत छैक। हमरा सभक विचारसँ त' अहाँ पटना जइयौ, आ पकड़ियौन सुनैना चौधरी कैँ। ओ सभटा काज करा देताह। कमसँ कम सड़क, स्कूल ओ कोटा दोकान सभक स्थिति त' सुधारिये सकैत छथि।

गुलाब : आ कका, ई कोनो हमहीं दू गोटे कहि रहल छी, से नइ। काल्हि पंचायतमे सेहो ई गप भेल छल। आ हमरा सभकेँ

भार भेटल जे अहाँकेँ अनुरोध क'क' पटना पठाओल जाय।

नीलो : पटना...? की रे चलितरा...?

चलितरा : मालिक! ई बौआ सभ त' ठीके कहैत छथि घरबालीक किरपासँ। हे रे छौंड़ा...हे रे चाहबला..., मालिककेँ कने खूब कड़गर चाह बना क' दहुन। आई भोरेसँ मोन पितआयल छनि घरबालीक किरपासँ, हें...हें...हें...!

(प्रकाश बन्न होइत अछि)

तेसर-दृश्य

(पटनामे मंत्री सुनैना चौधरीक आवासक गेट। "सुनैना चौधरी, मंत्री ग्रामीण विकास एवं शिक्षा" लिखल पट्टा टाँगल अछि। गेटपर सिपाही बैसल खैनी बना रहल अछि। नीलो काका हाथमे चमड़ाक बैग, दोसर हाथमे छाता नेने सीधे घुसल चलल जा रहल छथि।)

सिपाही : *(नीलोक बाँहि पकड़ैत)* औ, धड़धड़ायल कत' घुसल जाइत छी?

नीलो : *(एम्हर ओम्हर देखैत)* हौ, सुनैना चौधरीक यैह ने घर छै?

सिपाही : हँ। देखैत नइ छी, कतेकटा बोर्ड लागल छै! परन्च, मंत्रीजी अखन बड़ बीजी छथि। ओ अखन ककरोसँ भेंट नइ करता।

नीलो : हौ! भेंट त' करत ओकर मुइलहा बाप! तोँ जा क' कहुन जे नीलो बाबू आयल छथि।

सिपाही : एक बेर हम कहि दिया ने जे मंत्री जी अखैन ककरो से मुलाकात नहीं करेंगे। त' फेर कथी लेल एते तंग करते हैं।

नीलो : अँय! हौ अखने तोँ खिच्चा सजमनि जकाँ मुलायम छलह आ तुरन्ते ई जुआ कोना गेलह? ई...मैथिली बजैत-बजैत कि पेटमे हड़बेंग मच' लगलह जे हिन्दीक रामबाण चलब' लगलह!

सिपाही : हे यौ सुनू! सकल-सूरतसँ त' अहाँ नीके लोक बुझाइत छी, कने दादा टाइप छी। आ हे, मैथिलीसँ जँ' बड़ प्रेम हो त' जाऊ, अहूँ गाँधी मैदानमे एगो विद्यापति समारोह मना

लिय', जे सभसाल नीक लोक सभ मनबैत छथि आ हे, हमर दिमाग जूनि चाटू!

नीलो : हे हौ शाले! तोरा जँ' बुझाइत छ' जे ई बन्दूक हाथमे ल' नेने तौं बड़ काबिल आ हम बड़ बूड़ि, त' हे, तोरा सन सन कैएकटाकेँ हम जेबीमे ल'क' घुमैत छी। हट'ह सामने सँ, नइ त' सभ खचरपनी बहार भ' जेतह।

सिपाही : अहाँ बात नइ मानेगा? हमहूँ देखते हैं, अहाँ कोना अन्दर जाते हैं।

(बन्दूक तानि दैत अछि)

जाइये, हिम्मत है त'! कनी घुसकर देखिए, भेजा फाड़ कर रख देंगे। शाला! हमरा गाली देता है! बूढ़ आदमी जानकर अखैन तक चुप रह गया।

नीलो : बाप रे बाप! रे शाला, बन्दूक हटो! हमरा बूढ़ कहलें! बूढ़ हेतौ तोहर बाप, बूढ़ हेतौ तोहर बापक बाप, बूढ़...

सिपाही : चौप...शाला...! भाग एत'सँ!

नीलो : की...? की कहलैं...? *(चिकरैत छथि)* हे रे सुनैना...! रे सुनैनमा, रे बहिरा सुनैनमा...! देख तोहर ई सिपाही हमर की दशा केने अछि!

(नीलो चिकड़ि रहल छथि आ सिपाही हुनका बाहर दिस धकेल रहल छनि)

रे सुनैना...रे अभगला...बहिर भ' गेल छें रे..!

(ओम्हर सुनैना चौधरी नीलो काकाक आवाज सुनि क')

सुनैना : *(नेपथ्यसँ स्वतः)* ई त' नीलो काकाक आवाज छी! बाप रौ बाप! ई पटना कोना आबि गेला? बुझाइत अछि सिपाही हिनका रोकि देलकनि अछि। आई त' ई हमर कोनो दशा बाँकी नहि रखताह। मुख्यमंत्री अबैबला छथि। हम की करी...!

(ओम्हर नीलो काका चिचिया रहल छथि। सुनैना चौधरी मंचपर आबि...)

सुनैना : सिपाही! आने दो!

नीलो : *(सिपाहीक बन्दूक के ठेलैत)* आने दो? रे बहिरा तौं अही बैजतीक लेल हमरा बेर-बेर पटना आब' कहैत छलैं? तोहर सभ गुण्डपनी हम आब बुझलियौ!

सुनैना : नीलो काका! गोर लगैत छी!

नीलो : गोर की लगबें हमर कप्पार! तौं त' आब हमरा साक्षात चोर लगैत छें। डकूबा..., पहिने ऐ सिपाहीकेँ नौकरीसँ हटो नइ त' आई तोहर कोनो दशा बाँकी नइ रखबौ!

सुनैना : कने शान्त होऊ! कने शान्त होऊ! अहि बेचाराक कोनो दोष नहि। ओ बेचारा अहाँकेँ नहि चिन्हलक। आ अखैन मुख्यमंत्री आबयबला छथि तँ' हमहीं आदेश देने रहियै।

नीलो : आ-हा-हा-हा! आदेश देने रहियै! अँय रौ, भरि जिनगी बाप-पुरखा सभ गामक टटही घरमे पड़ल रहैत छलौ आ तोरा की बुझाइत छौ जे मंत्री भ' गेलैं त' बड़ काबिल? इह..., कतेटाके आखरमे लिखने अछि-सुनैना चौधरी, मंत्री...! आँखिके आन्हरा आ नाम नयनसुख! हुँह... सुनैना चौधरी!

सुनैना : ओप्फो, नीलो काका! आबो त' तामस छोड़ू! कहू... का. ेना-कोना पटना अयलहुँ?

नीलो : कोना-कोना अयलहुँ? रौ, थोड़े दूर ट्रेन सँ, थोड़े दूर बससँ आ बसअड्डासँ पैरे-पैरे आबि रहल छी!

सुनैना : हमर पुछबाक माने जे कोनो काजसँ कि अहिना?

नीलो : अहिना कि तोरा ओत' हमर सासुर थीक जे मोन भेल त' बैग उठेलहुँ आ बिदा भ' गेलहुँ...! काजसँ आयल छी! सुन, अपना इलाकामे पटौनीक नीक व्यवस्था, एकगोट नीक कारखाना, हमर गामसँ मधुबनी धरि पक्की सड़क, गामक स्कूल...

(मुख्यमंत्रीक प्रवेश)

सुनैना : *(हस्तक्षेप करैत)* मुख्यमंत्री आबि गेलाह!

(गेट दिस दौड़ैत छथि आ फेर मुख्यमंत्रीक संग आपस होइत छथि। मुख्यमंत्री आगू बढ़ि जाइत छथि आ सुनैना चौधरीकेँ पाछूसँ हाथ पकड़ि नीलो काका रोकि लैत छथि)

नीलो : हे रे सुनैना, ई तोहर मुख्यमंत्री की गूड़क ढ़ेप छौ जे चट्ट द’ चुट्टी जकाँ सटि गेलैं आ हम कि माटिक ढ़ेप छी रौ...?

सुनैना : नीलो काका कनी काल प्रतीक्षा करू...!

नीलो : प्रतीक्षा करू? ह’म प्रतीक्षा करू! कही अपन मुख्यमंत्रीकेँ प्रतीक्षा करतौ। पहिने हमर काज क’र तखैन मुख्यमंत्रीक नेहोरा करिहें।

सुनैना : नीलो काका, हम पैर पकड़ैत छी! मात्र पन्द्रह मिनट ओम्हर ओहि कुर्सीपर बैसू!

नीलो : कुर्सीपर बैसू? रे शाला तौँ हमरा कुर्सीक लोभ द’ रहल छैँ? हम कि कुर्सी नइ देखने छी। खचरहबें, तोहर सभ टेटियेनाई हम बूझैत छियौ। तौँ जाहि कुर्सीपर बैसल छैँ से तेना क’ पोन त’रसँ घीच लेबौ जे धम्मसँ खसबैं- चारू नाल चित्त!

(मुख्यमंत्री प्रवेशक संग)

मुख्यमंत्री : चौधरी जी ई के कार्टून हैय?

सुनैना : जी...जी ई नीलोकाका छथि। हमर कन्स्टीचुएन्सीक लोक छथि...

मुख्यमंत्री : अहाँ के त’ हम फोनपर कह देने रही जे परम आवश्यक गप करबाक हैय, केयो हियाँ न रहे। आ ताहूमे ऐसन असभ्य लोक...

नीलो : की कहलहुँ, असभ्य आदमी? अहाँ हमरा असभ्य कहलहुँ? अँय यौ, अहूँ से बेसी क्यो असभ्य भ’ सकैत अछि? दू आदमी जखैन गप क’ रहल अछि त’ बीचमे टपकि पड़लहुँ। खबरदार, जे फेर बजलहुँ, हम सुनैनासँ गप क’ रहल छी, अहाँसँ नइ!

मुख्यमंत्री : *(क्रोध सँ)* चौधरी जी? ...सिपाही...! गरदन पकड़कर इस आदमी को गेट से बाहर कर दो। जादे बकबक करे तो थाना पहुँचा दो। चौधरी जी चलू।

(सुनैनाक हाथ पकड़ि नेने चल जाइत छथि)

सिपाही : जी सरकार! हिनका अभी हम थाना क्या बाँकीपुर जेले पठा देते हैं। ऐ...चलो...!

(नीलोकेँ पकड़ि क'ल' जेबाक प्रयास...नीलो तामसे चि-चया-चिचियाकेँ बजैत छथि..)

नीलो : रे सुनैना ई ठीक नइ भेलौ। नीलोक लीला आब देखिहेँ। जिनगी भरि मुख्यमंत्रीक तरबा चटैत रहिहेँ। शाले, अबिहेँ मधुबनी! देखा देबौ! नं'गटे नइ घुमेलियौ त' हमर नाम नीलो नहि। तौँ अपनाकेँ बुझैत की छही?

सिपाही : *(धकलैत)* अरे, चलो! अखैन हमहीं अहाँक नाम देखा देते हैं।

(जोरसँ धकेल दैत अछि। नीलो ओम्हरसँ आबि रहल प्रेस रिपोर्टर मिस नीलीक संग धक्का खाइत खसि पड़ैत छथि। सिपाही दौड़ि क' नीली लग जाइत अछि आ हाथ पकड़ि उठबैत अछि।)

सिपाही : आ-हा, हा, हा,...! परणाम मेम साहेब! कतौ चोट त' नइ लगा?

नीली : नहीं-नहीं!

(एकटा पाँच टाकाक नोट बैगसँ बहार क' सिपाहीकेँ दैत अछि। फेर नीलोपर नजरि पड़ैत छनि।)

ओह! ओल्ड मैन! लुकिंग भेरी स्मार्ट!

नीलो : सम्राट! हे यै दाई, सम्राट नइ महासम्राट! आ से जँ देखबाक हो त' चलू मधुबनी, देखा' दैत छी जे केहेन सम्राट छी। ई सुनैनमा जे हमरा धक्का द'क' गेटसँ बाहर केलक अछि से सारकेँ नं'गटे नइ घुमेलौं त' फेर की!

नीली : मगर, बाबा...!

नीलो : बाबा...! छीः छीः छीः!

नीली : ओह, रोमांटिक मैन! आइ एम सॉरी! आपका नाम क्या है?

नीलो : हें हें हें हमर नाम, नीलो ... नीलो काका!

नीली : ओह! भेरी गुड! तो ... मिस्टर नीलो काका, मैं कह रही थी कि ये चौधरी साहब तो मिनिस्टर हैं, इनके पास पावर है, आफिसर्स, पुलिस इनके पीछे हैं, फिर...फिर आप इनका

क्या बिगाड़ लेंगे?

नीलो : क्या बिगाड़ लेंगे? हे यै दाई, ई गरिजम्मा पहिर लेलौं त' की बुझाइत अछि जे भगवान सभटा बुद्धि अहींकेँ द' देलैन? हे...! अहाँ छी मौगी, मौगिये रहू! पुरुष जुनि बनू! पुरुषसँ अखैन भेंट कहाँ भेल अछि!

नीली : हाए..! ह्वाट ए नाइस मैन! आइ लभ यू मिस्टर नीलो काका!

नीलो : अँय...ई की गिटिर-पिटिर बाजि देलक ई छौंड़ी! हें..हें...हें...! दाई, अहाँक की नाम अछि आ अहाँ की करैत छी?

नीली : मिस्टर नीलो काका, आपका नाम नीलो काका और मेरा नाम मिस नीली। मैं एक प्रेस रिपोर्टर हूँ। अखबार में लिखती हूँ। अब मैं आपका फोटो लूँगी और उसे अखबारमे छापूँगी।

(कैमरा ठीक करैत फोटो लेबाक उपक्रम)

मिस्टर नीलो काका, जरा मुस्कुराइये...

(थैंक्यू...बाय..कहैत मंत्रीक घर दिस विदा होइत छथि।)

सिपाही : मेम साहेब...मेम साहेब अखैन थैम जाइये! अखैन मुख्यमंत्री आए हैं...

(प्रकाश मंचपर बन्न होइत अछि)

चारिम-दृश्य

(नीलो काकाक घरक दृश्य। नीलो काका चिन्तामग्न छथि। वकील साहेबक ननकिरबाक प्रवेश। ननकिरबा बड़ अगत्ती अछि। ओ हरदम नीलो काकाकेँ किछु-किछु कहि क' तंग करैत रहैत अछि। नीलो काकाक जेना आन सभक संग एके रंगक व्यवहार रहैत छनि, अहि छौंड़ाक संग तेहने व्यवहार करैत छथि। ननकिरबा चुपचाप आबि क' नीलो काकाक बगलमे बैसि जाइत अछि।)

ननकिरबा : बाबा, अहाँ पटना गेल रही?

नीलो : हँ!

ननकिरबा : बाबा, पटना त' बड़ पैघ शहर छै। बड़का-बड़का रेलगाड़ी

चलै छै, बड़का-बड़का मोटरगाड़ी चलै छै। बाबा, अहाँ मोटरगाड़ीपर चढ़लहुँ?

नीलो : नइ!

ननकिरबा : तखैन त' मोटरगाड़िये अहाँपर चढ़ि गेल हैत?

नीलो : की..? की कहलैं?

ननकिरबा : हँ, गुरुजी कहैत छथिन जे, जे क्यो पहिल बेर पटना, दिल्ली जाइत अछि, तेकरा मोटरगाड़ी धक्का मारि दैत छै आ ओकरा ऊपर चढ़ि....

नीलो : अच्छा- अच्छा, चुप रह'! बेकार दिमाग जुनि खराब कर'।
(ननकिरबा कने काल चुप रहैत अछि। फेर...)

ननकिरबा : बाबा, हमरा लेल पटनासँ बूसट नइ अनलहुँ? अहाँ त' कहने रही जे जहिया पटना जायब त' अपने सन बूसट नेने आयब!

नीलो : रौ, तौं चुप रहबैं कि नइ ...! तेहर बाप त' मासमे दू बेर क' पटना जाइत छौ, किएक ने कहै छही नेने एतौ?

ननकिरबा : बाबूजी त' खाली माय के लेल नूआ, बिलाउज आ कथी-कथी दन सभ अनैत छथिन।

नीलो : ओ...! रौ, ई नूआ आ बिलाउज त' बुझलियौ, परन्च ई कथी-कथीदन की होइत छै?

ननकिरबा : *(कने लजाइत)* हमरा बाज'मे लाज लगैये!

नीलो : इह...! लाज लगैत छनि...! जो, बादमे अबिहें। अखैन हमर मोन नइ ठीक अछि।
(ननकिरबा कने काल चुप रहैत अछि फेर किछु सोचि क')

ननकिरबा : बाबा! एकटा बात कहू... अहाँक जे महींस ढ़ोड़बा ओत' पोसिया लागल छल से मरि गेल।

नीलो : अँय...की...?

ननकिरबा : हँ, सच्चे!

नीलो : हे भगवान...ई की सभ भ' रहल अछि...
(माथ पकड़ि क' बैसि जाइत छथि। ननकिरबा पलंग परसँ उतरि नीलोक बगलमे आबि ठाढ़ भ' जाइत अछि।)

ननकिरबा : नीलो बाबा... नीलो बाबा...!

नीलो : हूँ...!

ननकिरबा : बाबा, अहाँ कनैत किएक छी?

नीलो : अएँ, की कहलैं...हम कनैत छी? रे नां'गट, तोरा हम कनैत बुझाइत छियौ?

ननकिरबा : नइ, अखैन त' नइ, लेकिन बुझाइत अछि जे कनीकालमे अहाँ कान' लागब!

नीलो : रे खचरहबे...! तोरा बुझाइत छौ जे हम कानय लागब?

ननकिरबा : हँ...! आ फेर बुझाइत अछि जे अहाँ कनैत-कनैत मरि जैब।

नीलो : अरे बाप रे बाप! जेहने कनहा बाप, तेहने लुच्चा बेटा! रे..., मरबैं तौं, मरतौ तोहर बाप। हम त' तोहर बापोक मत्समांस खेबौ आ तोरो मत्समांस खेबौ...हँ...!

ननकिरबा : बाबा...! हमरा ओत' आई मांउस नइ बनल अछि। अहाँक ओत' बनल अछि की?

नीलो : आरौ तोरी के ...! रौ कोन लगनमे कनहा तोरा जनमेलकौ रौ? तौं त' बापोसँ दू डेग आगू छैं! भगै छैं कि नइ! से मारि मारब सरबे कि हड्डी-पसली एक भ' जेतौ! भाग...! *(ननकिरबा कनी दूर जा क')*

ननकिरबा : बाबा! हम जाइ छी!

नीलो : त' जो ने! जल्दी भाग...!

ननकिरबा : *(पुनः कनी दूर जा क')* बाबा, त' हम जाइ छी!

नीलो : अरे त' जो ने! किएक दिमाग खा रहल छैं!

ननकिरबा : *(पुनः कनी दूर जा क')* बाबा, त' हम जाइ छी!

नीलो : बाबा हम जाई छी,...बाबा हम जाइ छी ...! खच्चर नहि. तन! अहि ठाम लड्डू राखल छनि। भगै छैं कि दियौ चारि घरमेच्चा?

ननकिरबा : *(पलंगक नीचाँ दिस देखबैत)* बाबा! बाबा! साँप! *(कहैत पड़ा जाइत अछि)।*

नीलो : *(डरे पलंगपर ठाढ़ भ' चिचिआय लगैत छथि।)* साँप-साँप! बाप रौ बाप, साँप! चलितरा...! चलितरा...साँप...हे जगदम्बा!

रक्षा करू!

चलितरा : *(प्रवेश)* जी मालिक! की भ' गेल?

नीलो : साँप-साँप! पकड़ि क' ला त' गुण्डाकेँ!

(चलितरा जाइत अछि)

ई सभ हमर प्राण लेब'पर तुलल अछि। हे जगदम्बा! साँप-साँप!

चलितरा : *(प्रवेश)* मालिक डण्डा...!

(एकटा डण्डा नेने अबैत अछि)

नीलो : रौ, ई डण्डा आन' के कहलकौ तोरा?

चलितरा : अहीं त' कहलहुँ मालिक, पकड़ि क' आनए एहि डण्डा केँ।

नीलो : रे बहिरा शाला...! रे...ओई गुण्डाकेँ पकड़' कहलियौ। वकीलबाक बेटाकेँ! ओ त' हमर हदस्से उड़ा देलक! नीचाँमे साँप छौ रे...साँप! जगदम्बा...! सभ हमर प्राण लेबापर लागल अछि...!

(चलितरा हँसैत ओहि छौंड़ाकेँ पकड़' चलि जाइत अछि)

हमरा जीबय नइ देत ई शाला सभ... हे जगदम्बा रक्षा करू— साँप-साँप...बाप रे बाप ...साँप...!

(एक टांगपर ठाढ़ भ' जगदम्बाक स्मरण करैत छथि)

(रमेश आ गुलाबक प्रवेश)

रमेश : नीलो काका पलंगपर किएक एकटंगा देने छी?

नीलो : साँप-साँप...रे शाला! तौँ सभ हमरा जीबय नहि देबै!

गुलाब : साँप...कत' छै साँप?

नीलो : नी...नी...नी...नीचाँ...मे!

रमेश : *(नीचाँ देखैत)* कतहु त' नइ छै साँप। अहाँकेँ झूठे भ्रम भेल अछि। बैसू...स्थिर सँ।

नीलो : नइ छै...

(नीचाँ दिस झाँकि क') कतहु नइ छै..?

गुलाब : ओ...हो...! कहैत त' छी, कतहु नइ छै। बैसू...!

(नीलो बैसैत छथि।)

रमेश : कका! एना पलंगपर ठाढ़ रही से की भ' गेल छल?

नीलो : की भ' गेल? ठेल-ठालि क' हमरा पटना पठा देलैं तौं सभ! ओत' की भेल से हमहीं जनैत छी। तौं सभ हमर बैजती करबापर तुलल छैं। सभ हमर प्राण लेबापर लागल अछि।

गुलाब : कका! अहाँकेँ त' फुसिये प्राणक ड'र होइत अछि। प्राणसँ मोह त' सभकेँ होइत छै, परन्च अहाँ सन नइ! आ...ई पटनाक गप त' हमरा सभकेँ पता लागि चुकल अछि। सुनैना चौधरीक व्यवहारसँ बहुत दुःख भेल अछि हमरा सभ केँ।

नीलो : *(पलंगसँ नीचाँ उतरैत)* पता लागि चुकल छौ? तोरा सभकेँ कोना पता लगलौ?

रमेश : कका! ई अझुका अखबार थीक। अहिमे सभ किछु छपल अछि।

(एहि बीच काकीक पानक संग प्रवेश)

अहाँक फोटो सेहो छपल अछि।

नीलो : *(रमेशसँ अखबार लैत)* फोटू...ओ...बुझलियौ...! ई सभ ओहि छौंड़ीक काज छौ जे पटनामे हमरासँ टकरा गेल रहौ!

लीलावती : दाई गे दाई! त' आब छौंड़ियो सभसँ धक्कम-धुक्की कर' लगलौं?

नीलो : लीलावती...! त' अहिमे की? हम निकलैत रही आ ओ गरिजम्मा चढ़ौने घुसैत रहय कि हमरा देहसँ टकरा गेल। फेर...

लीलावती : फेर...?

नीलो : फेर? फेर ओ हमर हाथ पकड़ि लेलक। कहलक हमर घर चलू। घर ल' गेल। घर सुन्न सपाट। घरमे क्यो नइ।

लीलावती : माय गे माय ...!

नीलो : भरि दिन भरि राति ओकरे संग रहलहुँ। आ-हा-हा-हा...! जेहने सुन्नरि देख'मे तेहने सुन्नर नाम...नीली...! नीलो आ नीली!

लीलावती : बाप रे बाप! तौं सभ सुनैत छह हौ? एहेन जुलुम होइए अहि घरमे! हमर त' करमे जरल अछि। सभटा बिका गेल।

आब इहो सभ होब' लागल। हम आब एक क्षण एत' नहि रहि सकैत छी। हम आइये नैहर चलि जायब
(कनैत प्रस्थान)

नीलो : लीलावती...लीलावती...! हा-हा-हा...! लीलावतियो एकटा चीजे छथि!

गुलाब : कका! काकीकेँ अहाँ बड़ तंग करैत छियैन!

नीलो : हे रे शाला! तोहर काकीकेँ नइ तंग करबौ त' कि तोहर घरबालीकेँ तंग करबौ? अँय...रौ...ई मौगी सभ होइते अछि अधकपारि! चालिस वरीषसँ हमरा संगे छथि आ देखबे केलैं कोना चट्ट द' विश्वास क' लेलनि। अच्छा, हटा एहि गपकेँ! ई त' क'ह जे फोटूक संग ई छौंड़ी हमरा विषयमे लिखलक की अछि?

रमेश : लिखलक अछि जे अहाँकेँ जखैन सिपाही धक्का द'क' बाहर क' देलक त' अहाँ जोर-जोरसँ चिचिया-चिचिया क' सुनैना चौधरीकेँ चैलेंज देलियै जे जँ' ओकरा हिम्मत होई त' मधुबनी आबय!

नीलो : ओह...! ई सभ छापि देलकौ है छौंड़ी? सुनैनमाकेँ त' हम नइ छोड़बौ! पुबरिया पोखैरमे गोति-गोति क' मारि देबै।

गुलाब : हुनका आब की मारबैन्ह, ओ त' अपने आब खतम छथि।

नीलो : से की?

गुलाब : मुख्यमंत्रीक कहलापर ओ रिजाइन क' देलनि अछि। माने एम.एल.ए.सँ त्यागपत्र द' देलनि अछि। आब मुख्यमंत्री अपना सभक क्षेत्रसँ चुनाव लड़ताह!

नीलो : त्यागपत्र द' देलक? ओह...! बुझाइत अछि इएह सभ गिटि. र-पिटिर करबाक लेल मुख्यमंत्री ओकरा ओतय आयल रहौ। परन्च, गुलाब! हमरा ई नइ बुझायल जे, जे मुख्यमंत्री छैहे, ओकरा फेर चुनाव लड़बाक कोन प्रयोजन? आ...ई सुनैनमा जे त्यागपत्र देलकौ अछि, से त' शालाकेँ सभ लाटसाहबी घुसैर जेतै!

रमेश : कका! ई जे मुख्यमंत्री छथि से ई त' एम.पी. छथि ने।

मात्र तीन मास पहिने त' ई मुख्यमंत्री भेलाह। कानूनक हिसाबें हिनका छः मासक भीतरे एम.एल.ए. भ' जेबाक छनि। तखने ई आगू मुख्यमंत्री रहि सकताह। आ बुझाइत अछि जे हिनका सभसँ बढ़ियाँ अपने सबहक कन्स्टीच्युएन्सी बुझेलनि। तैं, सुनैना चौधरीसँ सीट खाली करबौलनि अछि।

गुलाब : आ...ई सुनैना चौधरी सेहो घाटामे नहि रहताह। हुनका कथुक चेयरमैन बना देथिन त' फेर माले-माल! फेर वैह लाटसाहबी!

नीलो : ओह..., आब बुझलियौ! आब' दही मुख्यमंत्रीकँ चुनाव लड़'! बड़ा जे हमर बैजती केलक से आब बुझेतै जे कोन बाँसक दाहा बनैत छै।

गुलाब : परन्च कका! ओ मुख्यमंत्री छथि। हुनका ल'ग सभ पावर छनि। आ ताहूमे ई चुनाव त' सरकारक प्रतिष्ठाक प्रश्न छैक। सभ तरहक तागत लगाओत सरकार। लाखक-लाख टाका खर्च होयत। बूथपर बूथ कैप्चर करत हुनक गुण्डा सभ! त' हुनका हम-आहाँ की बिगाड़ि सकैत छियैन?

नीलो : की बिगाड़ि सकैत छी? रौ, ओकरा कोनो हालतमे जीत' नहि देबै!

रमेश : त'ककरा जितेबै?

नीलो : जे ओकरा विरुद्ध ठाढ़ हैत! शालाकँ आब बुझेतै जे नीलो कोन चीज थीक!

गुलाब : परन्च नीलो काका, मुख्यमंत्रीक विरुद्ध क्यो नइ ठाढ़ हैत। जँ' क्यो ठाढ़ भइयो जायत त' बादमे 5-10 हजार टाकापर बिका जायत आ बैसि रहत। तखन त' ओ बिना हील-हुज्जतकँ जीत जेताह।

नीलो : अनर्थ हैत! घोर अनर्थ हैत! हमर इज्जति त' माटिमे मिल जैत...! तोरे सभक काज छौ! तोंही सभ हमर इज्जतिकँ माटिमे मिलेबापर लागल छैं!

गुलाब : कका! गलती हमर सभक अवश्य अछि परन्च, अहूँक आँखि परसँ पट्टी त' हटल!

रमेश : कका! हमरे सभकैं नइ, ई अखबार पढ़ि सौंसे गामक लोक कैं, सौंसे परोपट्टाक लोककैं बड़ दुःख छै। दुसध टोली, कुरमी टोलीक लोक सभ त' से तमसायल अछि जे कहैत अछि जे ई सुनैना एम्हर टपल त' ओकर गरदनि काटि क' फेंक देब!

गुलाब : कका! एतबे नइ! लोक सभ इएह विचार क' रहल अछि जे मुख्यमंत्रीक विरुद्ध चुनावमे अहींकैं ठाढ़ कएल जाय!

नीलो : हे रे शाला! तौं सभ की हमरा बड़ बूड़ि बूझि नेने छैं? अँय? एकबेर बूड़िपना केलौं जे तोरा सभकैं कहलापर पटना गेलौं आ बैज्जति भेलौं। आब चुनावमे ठाढ़ करा क' हमरा जड़िसँ नश्त-नाबूद कर' चाहैत छैं?

रमेश : नइ... नइ नीलो काका! की अहाँकैं विश्वास होइत अछि जे हमरा लोकनि की, इलाकाक क्यो अहाँक अहित चाहैत अछि?

गुलाब : कका, रमेश ठीक कहैत छथि। अहाँ अहिपर विशेष जुनि सोचू। हमरा सभक एक मात्र उद्देश्य अछि अहाँक बैज्जतीक बदला लेब आ एहन चोर-बेईमान, भ्रष्ट नेता सभकैं सबक सिखायब। आ एहि लेल आवश्यक अछि जे अहाँ चुनावमे ठाढ़ होई।

नीलो : हे रौ! तूँ दुनू मिलिकैं हमरा लाहैब करबापर लागल छैं! रौ, हमरा ने पढ़' अबैत अछि ने लिख' अबैत अछि, अनपढ़ छी, बाज' नइ अबैत अछि त' हम कोना चुनावमे ठाढ़ होयब आ हमरा भोट के देत?

रमेश : कका, ई सभ कोनो बात नइ! चाहे क्यो पढ़ल हो कि अनपढ़ हो, सभकैं अधिकार छै जे ओ चुनाव लड़ि सकय!

गुलाब : आ आब त' ओ समय आबि गेल अछि अहि देशमे जे अहाँ सन ईमानदार, समाजसेवी, कर्मठ व्यक्ति सभ, जनिका पाछू क्षेत्रक समस्त जनता रहैत अछि, ओ सभ आगू आबथि। सुनैना चौधरी सन व्यक्ति अहाँ लोकनिकैं खुशामद क'क' सपोर्ट ल' लैत अछि आ चुनाव जीत जाइत अछि। आ

जीत क' की करैत अछि से त' देखबे केलौं। ई सभ देश कैं, राज्यकैं गर्तमे डुबौने चलल जा रहल अछि।

रमेश : एतबे नइ अपने त' चोरी बेईमानी करिते अछि, भ्रष्टाचार करिते अछि, अहूँ सनक व्यक्तिकैं जाने-अनजाने चोर-बईमान बनबैत रहैत अछि।

गुलाब : कका, आब सोचबाक समय नइ अछि। अहाँकैं चुनाव लड़बाक अछि। तखैन आगू जे जगदम्बाक इच्छा!

नीलो : चलितरा...!

चलितरा : जी मालिक!

नीलो : रौ, ई शाला सभ त' आब चुनाव लड़' कहैत छौ!

चलितरा : मालिक! बौआ सभ त' ठीके कहैत छथि घरबालीक किरपासँ! हें-हें-हें!

(प्रकाश बन्न होइत अछि)

पाँचम-दृश्य

(मंचपर एक दिस मुख्यमंत्री भाषण द' रहल छथि। मंचक ओहि भागमे प्रकाश)

पार्श्वमे : मुख्यमंत्री जिन्दाबाद, मुख्यमंत्री जिन्दाबाद!

मुख्यमंत्री : उपस्थित भाई एवं बहिन लोकनि! हम अहाँकैं सामने अहाँकैं क्षेत्रसँ चुनाव लड़े आयल छी। हम हीयाँ से चुनाव लड़े के काहे आयल छी- काहे की हमहूँ मैथिल छी। अई मिथिलापर हमरो कुछो अधिकार हय। भले ही मधुबनी हमर जनम भूमि न रहल हो, लेकिन हमरो गाम मिथिलेमे हैय। लेकिन, जखनी हियाँ ऐलौं त' हियाँ के दशा देखकर बहुत दुःख भेल। जगत जननी माँ मिथिलाक भूमिक ई दशा! रोए लगलहुँ!

(आँखिसँ चश्मा निकालि, रूमालसँ नोर पोछबाक उपक्रम)

कथी न हैय मिथिलामे? विद्वता, सामाजिकता, आदर सब त' कूटि-कूटि क' भरल हैय, तखन फेर ई दशा काहे? हमरा बहुत अफसोस हैय ई कहैत जे हियाँ के जे भी प्रतिनिधि

भेला हैय ओ क्षेत्र दिस एकदम ध्यान न देलनि। चाहे ओ हमरे पार्टी के किएक ने होथि। हम अहाँ से वोट माँगे एली हन तइसे न कह रहल छी। वस्तुतः हम बड़ा दुःखी भेली। हम इहाँ के जनता के विश्वास दिलाबैत छी जे अई इलाकार्कें स्वर्ग बनैल जैत। इहाँ से हम गरीबी के हटा के दम लेब।

उपस्थित भाई एवं बहिन लोकनि हम साथे-साथे एगो और बात कहब जे वोट त' हमरा देबहे करी साथे-साथे ओइसन उमेदवार, जकरा बाजे के ठेकान न हैय, जे एसेम्बलीमे जा के गारी छोड़ आन कोनो दोसर भाषाक प्रयोग न कर सके ओकरा अहाँ लोकनि बढ़ियाँ से सबक सिखाबी। एक बेर फेरो निवेदन जे हमरा आन न बूझी। एक बेर जोरसँ नारा लगाबी-जय भारत, जय भारत, जय मिथिला, जय मिथिला!

(चौधरी जी सँ, जे मंचपर हुनक बगलमे बैसल छथि)

चौधरी जी! की बात? जोरसँ आवाज न आ रहल हैय? ओह! बूझि पड़ैत अछि जे अहाँ सभ बहुत देर से इन्तजार करैत करैत थाकि गेल छी। हम जादे समय न लेब। सिर्फ इहे कहब जे हमर पार्टी अहींक पार्टी हैय....गरीबक पार्टी हैय! धन्यवाद!

(मुख्यमंत्री जिन्दाबादक नारा पार्श्वसँ एवं मंचक एहि भागमे प्रकाश बन्न)

(मंचक दोसर भागमे प्रकाश। श्री नीलो काका एवं गुलाब बैसल बैसल छथि। पार्श्वसँ नीलो काका जिन्दाबाद -नीलो काका जिन्दाबादक नारा गूँजि रहल अछि। गुलाब ठाढ़ भ' माइकपर भाषण दैत छथि)

गुलाब : कृपया शांत भ' जाई। शांत भ' जाई। अहाँक सोंझा अहाँक प्रिय नेता श्री नीलो काका बैसल छथि। अपने सभसँ नि. वेदन जे श्री नीलो काकार्कें अपन बहुमूल्य वोट द' विजयी बनाबी एवं अहि क्षेत्रक उद्धारक हेतु संघर्षक शंखनाद फूंकि दी। आब हम श्री नीलो काकासँ निवेदन करबैन्ह

जे ओ अपन भाषणसँ हमरा लोकनिक मार्गदर्शन करथि। श्री नीलो काका....*(श्री नीलो काका सँ)* नीलो काका उठू, भाषण दियौ।

(नीलो ठाढ़ भ' जाइत छथि आ फेर चारू दिस देखि बैसय लगैत छथि)

नीलो : रौ हम की बजबौ! बड्ड लोक छै। हमरा त' ठकबक्की ध' लेलकौ।

(पार्श्वसँ ठहाका)

गुलाब : ओप्फो नीलो काका! किछुओ त' बजियौ नइ त' सभ चौपट्ट भ' जायत।

नीलो : *(ठाढ़ भ')* औ लोकनि! हमरा ई छौंड़ा सभ कहलक चुनावमे ठाढ़ भ' जाऊ त' हम ठाढ़ भ' गेलौं! त' आब अहाँ सभ पूछब जे कियैक ठाढ़ भ' गेलहुँ? ओ जे सुनैनमा अछि आ ओकर जे मुख्यमंत्री छै दुनू हमर बैज्जती केलक। अखबारमे से छपा गेल फोटूक संग। औ हम गेल रही सुनैनमा के कहय जे रे बाऊ, अपन इलाकामे खेतक पटौनीक नीक व्यवस्था क'र, सरकारी अफसर सभक भ्रष्टा. चारकेँ खतम क'र, इलाकामे कोटाक नीक व्यवस्था, नीक स्कूल सभक व्यवस्था क'र। परन्च, भेल की! बैज्जती...!

(पार्श्वसँ हिन्दी में बोलिए -हिन्दी में)

नीलो : हे रे शाला! के छैं रे! ओ...त' ई अहाँ है। अहाँ की बूझते हैं कि हमरा हिन्दी बाजने नहीं आता है। अँय...!

(पार्श्वसँ -अरे अब तो आप एम.एल.ए. बनियेगा। नेता बनियेगा। अब तो कम से कम ई हीरो बाला ड्रेस छोड़िये)

नीलो : हे रे शाला! बहुत फटर-फटर करता है। रे, हम अहाँ से भोट मांगने आये हैं कि अहाँ के उपदेश सुनने आये हैं? शाले! भाषण सुनबाक है तो सुनो नइ त' अपन घरक रास्ता पकड़ो। बेसी फटर-फटर किया त' दुनू टाँग चीर क' हाथमे धर देंगे।

(मंचसँ उतरबाक उपक्रम। गुलाब हुनका रोकि लैत छनि।)

गुलाब : कका एना नइ! बाप रे बाप सभ चौपट्ट भ' जायत। अखैन वोट लेबाक अछि। *(जनता सँ)* भाइयों! कृपया शांत होकर बैठें! सभा में हुड़दंग करने वाले कौन हैं, हम जानते हैं। इनको कल भी मैंने मुख्यमंत्री के साथ जीप में घूमते देखा है। भोलेन्टियर! कृपया इन महाशय को सभा से उठाकर बाहर कर दें। अब आप नीलो काका का भाषण सुनें।

नीलो : हँ, त' हम कहैत रही जे हम चुनावमे ठाढ़ भ' गेलौं। औ ठाढ़ त' भ' गेलौं परन्च हमर जे ओ कनहा भातिज अछि ओकिलबा, ओ बेर-बेर आबि क' कहैत अछि जे कका बैस जाऊ! आ कहैत अछि जे जँ' बैसि जायब त' दस हजार टाका सेहो प्राप्त भ' जायत। हमर घरबाली, लीलावती से कहैत छथि जे अहिसँ सुन्नर मौका आओर की भेटत? दस हजारमे कैकटा जमीन जे भरना लागल अछि से छूटि जायत। जीतब त' नहियें, ई टकबो हाथसँ चलि जायत। परन्च...परन्च, औ लोकनि! ई हमर मोन नइ मानलक। वकीलबा के साफ-साफ कहि देलियै जे रे कनहा! तौं जो आ अपन मुख्यमंत्रीकेँ गमकौआ तेलसँ मालिश क'र ग'। हम त' ठाढ़ भ' गेलियौ त' आब ठाढ़े रहबौ। जितियौ कि हारियौ। तखैन त' औ लोकनि, एक बेर त' ई छौंड़ा सभ पटना पठा क' बैज्जती करबाइये देलक, आब एहि चुनावमे देखी अहाँ लोकनि की करैत छी। एक दिस मुख्यमंत्री ठाढ़ छथि जनिका पाछाँ सौंसे सरकारी सेना लागल अछि, दोसर दिस आन-आन पार्टीक नेता ठाढ़ छथि। हिनका सभकेँ टाकाक कोनो कमी नइ। आ तेसर दिस ई छौंड़ा सभ हमरा ठाढ़ करा देलक अछि। फुसिये गामे-गाम घुरबैत अछि। एकटा लॉडीस्पीकर धरा दैत अछि आ कहैत अछि : कका, भाषण दियौ। खैर, आब त' ई शाला सभ जे-जे कहत, से करबे करब जाधरि चुनाव नइ भ' जाइत अछि। परन्च, एकटा बात हम साफ-साफ कहि दैत छी जे जाहि सारक विषयमे हमरा पता लागल जे ओ हमरा भोट नइ देलक

अछि, तकरासँ हम जिनगी भरि नइ बजबै आ तकर श्राद्ध मे हम भोजो नइ खेबै। आर अहाँ सभ जानी। हम किछु नइ कहब। जानी अहाँ सभ, कि जानथि जगदम्बा! नीलो बैसि जाइत छथि।

(पार्श्वसँ नीलो काका : जिन्दाबादक नारा। मंचपर प्रकाश बन्न होइत अछि।)

छठम-दृश्य

(मंचपर मद्धिम प्रकाश। किछु व्यक्ति ठाढ़ भ' ट्रांजिस्टरसँ समाचार सुनबाक लेल उत्सुक छथि। ट्रांजिस्टरसँ पहिने संगीत फेर समचार अबैत अछि। नीलो काकाक विजयक समाचार सुनि सभ उत्साहसँ नीलो काका जिन्दाबादक नारा लगबैत छथि।)

पार्श्व सँ–

ये आकाशवाणी पटना, राँची, भागलपुर, दरभंगा है। शाम के साढ़े सात बजे हैं। अब आप बलवन्त प्रसाद शर्मा से प्रादेशिक समाचार सुनिये।

मधुबनी विधान सभा क्षेत्र में वोटों की गिनती जारी है। मुख्यमंत्री श्री चन्द्रकान्त अपने निकटतम प्रतिद्वन्द्वी निर्दलीय उम्मीदवार श्री नीलो झा से आठ हजार छः सौ तीस मतों से पीछे हैं।

राज्य में परिवार नियोजन कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए चालू वित्तिय वर्ष में राज्य सरकार दो करोड़ से अधिक रुपये खर्च करेगी। आज पटना में आयोजित दो दिवसीय सेमिनार का उद्घाटन करते हुए राज्य के स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन मंत्री, श्री ढ़ोलक राम तपसिया ने यह जानकारी दी।

आज पटना से मुजफ्फरपुर जा रही राज्य पथ परिवहन निगम की एक बस हाजीपुर के निकट एक ट्रक से टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो गयी, जिससे तीन यात्रियों की मृत्यु घटनास्थलपर ही हो गयी। मरने वालों में एक बच्चा भी शामिल है। घायलों को पटना मेडिकल कॉलेज हस्पतालमे दाखिल किया गया है।

अभी-अभी समाचार मिला है कि मधुबनी विधान सभा क्षेत्र से निर्दलीय

उम्मीदवार श्री नीलो झा निर्वाचित घोषित किये गये हैं। आकाशवाणी पटना, राँची, भागलपुर, दरभंगा से प्रादेशिक समाचार समाप्त हुए।

(नीलो काका जिन्दाबादक नारा गूंजय लगैत अछि)

सातम-दृश्य

(नीलोक घरक दृश्य। नीलो मालासँ लदल पलंगपर बैसल छथि। लीलावती बगलमे बैसल छथिन। चलितरा पंखा होंकि रहल छनि। गुलाब आ रमेश कुर्सीपर बैसल छथि। पार्श्वसँ नीलो काका जिन्दाबादक आवाज आबि रहल अछि। फेर नारा मद्धिम भ' जाइत अछि।)

नीलो : *(जोशमे आबि)* हे रौ चलितरा... नीलो काका...

चलितरा : जिन्दाबाद!

नीलो : नीलो काका ...

चलितरा : जिन्दाबाद!

नीलो : *(अपन गरदनिसँ माला निकालि लीलावतीकेँ पहिराबैत)* रे चलितरा...लीलावती...!

सभ : जिन्दाबाद।

नीलो : लीलावती...!

सभ : जिन्दाबाद।

लीलावती : दुर...जाऊ! अहाँकेँ सदिखन हँसिये सूझैत रहैत अछि!

नीलो : लीलावती! हमर दार्जलिंग लीलावती...!

रमेश : हा-हा-हा! कका, दार्जलिंग नइ डार्लिंग!

नीलो : अरे वैह! हमर डारलिंग लीलावती! आई हमर खुसिक ठेकान नइ पूछू! आई त' मोन होइत अछि जे कोनो पहाड़पर अहाँक संग हनीमूनी मनब' चली। जेना ओ कनहाक बेटी आ जमाय गेल रहै।

(ननकिरबाक प्रवेश)

की रे ननकिरबा? बाप कत' छौ? मुख्यमंत्रीकेँ मालिश कर' गेल छौ की?

ननकिरबा : बाबा! एतेक माला किएक पहिरने छी? एकटा हमरो देब?

नीलो : ले-ले! *(माला पहिराबैत)* ले पहीर! रौ, आई हम बड़ खुश छी! मुख्यमंत्रीकेँ हरा देलियौ। चलितरा! एकरा लड्डू दही। बेसिये क' दही। रे ननकिरबा, एकटा लड्डू अपन बापो के खुआ दीहें।

ननकिरबा : बाबा! आई अहाँ खुश किएक छी?

(चलितरा लड्डू आनि क' दैत अछि)

नीलो : रौ कहलियौ त' जे आई हमर जिनगीक सभसँ खुसीक दिन थीक। सुनैनमा आ ओकर मुख्यमंत्री हमर बैजती केने रहौ। आब शाला सभकेँ बुझाइत हेतै जे कोन भाव पड़लै!

ननकिरबा : बाबा! आई अहाँ बड़ खुश छी त' आई त' साँपसँ ड'र नइ लागत?

नीलो : हे रे लम्पटबा! तौँ भगै छैँ कि नइ! फेर हमरा डरा रहल अछि। खच्चर नहितन!भाग एत' सँ...

(ननकिरबा लड्डू खाइत चलि जाइत अछि)

गुलाब : धन्य छी नीलो काका अहाँ! सभ संग एके रंग! बूढ़ कि जुआन, मौगी कि पुरुष आ कि बच्चा, सभक संग एके रंग! ताहि दुआरे...

(मिस नीलीक बैग लटकौने प्रवेश)

नीली : हाय! मिस्टर नीलो काका!

नीलो : *(पलंगसँ उतरैत)* अरे नीली दाई अहाँ! अहाँ एतय...? हमर गाम कोना-कोना...?

नीली : ओह, नीलो! यू आर रियली ग्रेट!

(समान राखि बढ़िक' नीलोकेँ कसि क' पकड़ि लैत अछि आ नीलोक गालपर चुम्मा लैत अछि)

(लीलावती छीः छीः करैत मुँह घुमा लैत अछि)

मिस्टर नीलो काका, आई रियली लव यू!

नीलो : *(रमेश लग जा, रमेशक कानमे पुछैत छथि)*

रमेश, ई छौंड़ी की गिटिर-पिटिर बाजि रहल छौ?

रमेश : *(कने सकुचाइत)* कका, ई कहैत छथि जे अहाँ महान छी

आ...आ...आ..ई अहाँसँ प्रेम करैत छथि।

नीलो : अँय...की? लीलावती, लीलावती! अहीँ ने कहैत रही जे हम बूढ़ भ' गेलौं! देखू...देखू जे केहेन जुआन छौंड़ी हमरासँ प्रेम करैत अछि!

लीलावती : माय गे माय! ई मुँहझौसी केहेन निर्लज्ज छै! मा'र बाढ़निसँ! हे गै! तौँ एत'सँ भगैत छैँ कि नइ?

नीलो : आ-हा-हा-हा! लीलावती! ई छौंड़ी एतेक दूरसँ आयल अछि एकरा लेल किछु जलपानक प्रबन्ध करबै कि गारियेसँ पेट भरि देबै?

लीलावती : जलपान! अहि मुँहझौंसीकेँ त' हम जहर खुआ देबै! बाप रौ बाप! आब अनर्थ भ' रहल अछि एहि घरमे। आब हम की करी...हे भगवान...*(प्रस्थान)*।

नीलो : लीलावती...लीलावती...हे...हे...हे...।

नीली : मिस्टर नीलो काका, ये आपकी मिसेज हैं क्या?

नीलो : अँय...?

गुलाब : मिस नीली! आहाँ ठीक चिन्हलियैन। ई नीलो काकी छलथि।

नीली : फिर ये मुझसे इतना नाराज क्यूँ हो गईं?

नीलो : अरे-अरे, नीली दाई हटाऊ एहि गपकेँ? कहू, कोना-कोना अयलहुँ? आऊ पहिने बैसू!

नीली : सच कहती हूँ मिस्टर नीलो काका। मैं क्या कोई भी तो सोच नहीं सकता था कि आप मुख्यमंत्री को हरा देंगे। पहले जब मैंने पढ़ा कि आप चुनाव लड़ रहे हैं तो सोची कि घोड़ावाला या साइकिलवाले कि तरह आप भी लाइन में आ गये। रियली, आइ वाज सरप्राइज्ड टू हियर द एलेक्शन रिजल्ट...! मुख्यमंत्री बेहोश पड़े हैं। पूरे स्टेट में तहलका मचा हुआ है। सीधे पटना से आ रही हूँ। अब मैं आपका इन्टरभ्यू लूँगी, फिर अखबार में छापूँगी।

नीलो : इन्टरव्यू? नीली दाई पहिने त' अहाँ फोटू लेके छाप दिया आब ई इन्टरबू कथी होता है?

रमेश : ओह काका, इन्टरबू नइ इन्टरभ्यू! माने ई अहाँसँ प्रश्न

पुछतीह आ अहाँक जवाबकेँ अखबारमे छपती। किनै मिस नीली?

नीलो : ओ...

नीली : अच्छा, सबसे पहले यह बतलाइये कि मुख्यमंत्री को हराकर आप विजयी हुए, यह सुनकर आपको कैसा लगा?

नीलो : कैसा लगा? बहुत नीक लगा! ओहिना लगा जेना राम को रावण को मारके लगा होगा।

नीली : अरे, तो आप, मुख्यमंत्री को रावण जैसा राक्षस समझते हैं?

नीलो : अरे नीली दाई, ऊ शाला त' ओकरो से गेल गुजरल है। जनता का पैसा खा-खाकर पेट फुलौने जा रहा है। कोठा-पर-कोठा पिटता जा रहा है। आ सभसँ पैघ बात ई जे सुनैनमा आ ई मुख्यमंत्री हमरा बैजती किया था। धक्का मारके गेट से बाहर कर दिया था। अहाँ त' अपना आँखसँ देखबे किया था।

नीली : हूँ...*(नोट करैत)* अच्छा ये तो बताइये कि आप तो निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में जीते हैं। क्या किसी पार्टी में मिलने का विचार है?

नीलो : छीः छीः छीः! सभ पार्टी एक्के है, सभ शाला चोर!

गुलाब : आँ-हाँ-हाँ...कका, आब एना नइ बजियौ। आब त' अहाँ एम.एल.ए. छी।

नीलो : किएक नइ बजियौ? की ई पार्टी वला सभ सत्य हरिश्चन्द्रक खानदानक थीक? रौ, ईहो सभ त' सरकार चलौने छौ। की लोककेँ बूझल नइ छै जे जेकरे कुर्सी भेटलै सैह लूट' लागल।

गुलाब : ओप्फ! अहाँकेँ के बुझाबय!

नीली : अच्छा, मिस्टर नीलो काका! क्या आप को उम्मीद थी कि आप चुनाव जीत जाएंगे, मुख्यमंत्री को हरा पाएंगे?

नीली : हे यै नीली दाई! सच पूछी त' हमरा त' एको पाई विश्वास नइ छल। इ त' ई छौंड़ा सभ हमरा खड़ा कर दिया त'

हम खड़ा हो गये। केयो नहीं कहता था कि हम जीतेंगे। हमरा लीलावती भी कहती थी कि हारेंगे, आ', फेर बैजती होगा। पता नइ कोना-कोना क' हम जीत गये।

गुलाब : मिस नीली! नीलो काकाकेँ या आओरो केकरो भनहिं विश्वास नहि हो परन्च, हमरा लोकनि कैँ, हमर कार्यकर्त्ता लोकनिकेँ पूर्ण विश्वास छल जे जँ' जीतब नहियों त' संघर्ष तगड़ा हैत। मुख्यमंत्रीकेँ या आन-आन नेतो सभकेँ जे होइत छलैन जे नीलो काका हुनकर किछु बिगाड़ि नइ सकैत छथिन, से भ्रम छलैन। जा, हम त' मैथिलियेमे बजने चलल जा रहल छी। वाइ द वे मिस नीली, क्या आप समझ रहीं हैं?

नीली : हाँ-हाँ, क्यूँ नहीं! हाए, कितनी स्वीट है आप की भाषा! बोल नहीं सकती, पर सब समझैत अछि हम।

गुलाब : हा-हा-हा...! सब समझैत अछि हम नइ सब बूझैत छी हम।

नीली : वाइ द वे, आप लोगों का परिचय?

गुलाब : अरे हँ, ई त' सभसँ पहिने होयबाक चाही। हम गुलाब मंडल। अहि ग्राम-पंचायतक सरपंच, आ ई रमेश चौधरी, एम.ए.। आ अहाँक विषयमे त' सभ किछु नीलो काकासँ सुनिये चुकल छी। की कका?

नीलो : बेसी खच्चरपनी जुनि क'र! ...अच्छा...तौँ सभ गप करह, हम कने लीलावतीक मून्ड ठीक करैत छी।
(प्रस्थान)

रमेश : मून्ड नइ कका...मूड...हा-हा-हा....

गुलाब : हा-हा-हा... त' मिस नीली हम कहैत रही जे हमरा सभसन पढ़ल-लिखल युवक नीलो काका सन व्यक्तिकेँ उम्मीदवार बनेलौं जेकि निछट्ट अनपढ़ छथि, किएक? अहि लेल कि हिनका सन व्यक्तिकेँ कोनो तरहक ड'र-भ'र नइ । कोनो तरहक लोभ नइ । जे करता से निःस्वार्थ। नीलो काका एत' नइ छथि तैं, कहि रहल छी। ई बात नइ त' अखबारमे छापी आ ने केकरो कहबै। नीलो काकाकेँ बड़ तामस होइत छनि जँ' क्यो एकर जिक्रहु क' दैत छनि। ओ बात ई जे

नीलो काका अपन जमीन-जाल बेचिक' कि भरनो राखि क' अहि परोपट्टाक लोक सभकेँ मददि करैत छथिन। क्यो एहन नइ भेटत जे हिनकासँ उपकृत नइ अछि। आ सेहो काकीसँ चोरा क' करैत छथि ई सभ काज।

नीली : अच्छा...?

रमेश : जी...! एतबे नइ! हमरा सभकेँ विश्वास अछि जे सौंसे देशमे अहि प्रकारक जे व्यक्ति सभ छथि, ईमानदार, समाजसेवी आ जिनकर सपोर्टपर आजुक ई भ्रष्ट, बेईमान नेता सभ चुनाव जीतैत अछि, ओ लोकनि एहि चुनावसँ प्रोत्साहित हेताह आ अगिला चुनावमे सामने औताह। मिस नीली! देशक जनता आब बड़ बुझनुक भ' गेल अछि। आब ओकरा बेसी दिन तक क्यो ठकि नइ सकैत छैक। ओ नीक जकाँ जनैत अछि जे के की अछि। परन्च, जखैन एहन व्यक्ति सभ आगू औताह नइ , चुनाव लड़ताह नइ त' फेर जनता केकरा वोट देत? ओही बेईमान सभमे से ककरो ने?

गुलाब : मिस नीली! देखबे केने हैब, सुनबे केने हैब जे एहन पवित्र मिथिलाक की दशा अछि। सरकारी भ्रष्टाचार, जातिवाद, सरकारी उपेक्षा, दहेज सन राक्षस एकरा घू'न जकाँ चाटि गेल अछि। एकरा लेल के जिम्मेवार अछि? के? वैह नेता सभ...मिथिलाक नेता सभ। सभ अपन बनेबामे लागल अछि। क्षेत्रक चिन्ता केकरो नइ।

रमेश : मिस नीली, अहूँ अखने कहलौं, समस्त संसार कहैत अछि जे मिथिलाक भाषा बड़ मधुर अछि, प्राचीन अछि। करोड़ो लोक बजैत अछि। परन्च, संविधानक अष्टम अनुसूचीमे स्थान नइ दिया सकलाह। त', अहीं कहू जे कि आब ओ समय नइ आबि गेल अछि जे आम जनता जागय आ एहेन प्रोफेशनल नेता सभकेँ मारि भगाबय?

नीली : भेरी गुड! हन्ड्रेड परशेन्ट करेक्ट! परन्तु, आज के इस पॉलिटिक्स में जहाँ पैसा, गुण्डागर्दी, बूथ कैप्चरिंग का बोल. बाला है, ऐसे लोग क्या कर सकते हैं? वह भी निर्दलीय

उम्मीदवार होकर?

गुलाब : की नइ क' सकैत छथि? आ जँ' एहन-एहन मात्र दस कर्मठ व्यक्ति जमा होथि त' मिथिलाक कोन बात, समस्त राज्यक, समस्त देशक कायापलट भ' सकैत अछि।

नीली : परन्तु, मैंने तो पढ़ा कि नीलो काका मीटिंग में भी लोगों को गाली देते थे। ...फिर भी...?

रमेश : मिस नीली...ई मिथिला थीक। हास्य-व्यंग्य, विद्वताक भूमि। प्रेमसँ भरल, निश्छल हृदय कतेको लोग भेटता जे प्रेमसँ भरल गारिमे भिजा देता। आ नीलोकाकाक गारि त' हमरा सभक लेल, अहि इलाकाक लोकक लेल त' आशीर्वाद थीक। हिनका विषयमे अहाँकेँ नीक जकाँ नइ बूझल अछि तैं अनसोहाँत लागि रहल अछि।

गुलाब : मिस नीली! आब अहाँ आराम करू! नीलोकाकाकेँ मधुबनी शहरमे जुलूसमे जयबाक छनि। आ संझुका ट्रेनसँ त' नीलो काका पटना जाइये रहल छथि। काल्हिये त' शपथ-ग्रहण छैन। रस्तेमे अहाँ सभकिछु पूछि लेब। कका...कका... चलू अबेर भ' रहल अछि।

(नीलोक प्रवेश चलितराक संग)

गुलाब : चलितरा...चलितरा..., मेमसाहेबक स्नान-भोजनक व्यवस्था करिहैं। हम सभ जाइत छी ...!

चलितरा : ठीक छै बौआ! अहाँ सभ जाऊ निश्चिंत भ' क' घरबालीक किरपासँ।

रमेश : कका! एना करैत छी जे हम रहि जाइत छी। मिस नीलीक सभ इन्तजाम-बात क' देबैन। हिनका कोनो असुविधा भ' जेतैन त' बड़ दुःखक गप हैत!

गुलाब : कका, देखि लिय', ई रमेश अपन चालिसँ बाज नइ आओत!

नीलो : हे रे शाला! नीली दाइक असुविधाक खेयाल छौ कि अपन सुविधाक? गुण्डा नहितन। चल चुपचाप हमरा संगे। जहाँ कोनो छौंड़ीकेँ देखल कि कुकुर जकाँ जीहसँ लेर चुबय लगैत छै। रौ, एकर बाप-पित्तीक सेहो इएह हाल छै...चल

चुपचाप.. चलह गुलाब।
(नीलो, रमेश आ गुलाबक प्रस्थान। मंचपर प्रकाश बन्न होइत अछि)

आठम-दृश्य

(नीलोक घरक दृश्य। चलितरा बैसल ऊँघि रहल अछि। नीलो पटनासँ आपस अबैत छथि। हाथमे बैग छनि। चादर छनि।)

नीलो : चलितरा...चलितरा... चलितरा...!

चलितरा : *(सुतले मे)* औ अहाँकेँ एक बेर कहि देलौं ने जे मेले साहेब पटना गेल छथि।

नीलो : हे रे शाला मेले के नाती! आँखि फोलि क' देख। मेले तोरा सोंझामे ठाढ़ छौ।

चलितरा : *(हड़बड़ाइत उठैत अछि)* मालिक अहाँ! परणाम! मालिक आबि गेलियै?

नीलो : त' तोरा की बुझाइत छौ जे हम पटनासँ टेलीफूनसँ बाजि रहल छी...!

चलितरा : हें-हें-हें...

नीलो : आ..हा...हा...हा..., आई बीस दिनपर अपन गामक माटि-पा. निक दर्शन भेल। ई नं'गटा सभ कहाँ से हमरा एम.एल. ए. बना देलकौ। आब दौड़ैत रहथु नीला पटना! रौ, आब त' सालमे कम-सँ-कम चारि-पाँच मास पटने रह' पड़त।

चलितरा : *(नीलोक जूता फोलैत)* मालिक! ओ गरहण जे लाग' बला रहै से लागि गेलै घरबालीक किरपासँ?

नीलो : ग्रहण?...हा-हा-हा... रौ, गरहण नइ, शपथ-ग्रहण लेब' गेल रहियौ। शपथ-ग्रहण!

चलितरा : मालिक! ई चन्दर गरहण, सूरज गरहण सुनैत रहियै, ई शपथ गरहण की भेलै?

नीलो : तौं नइ बुझबीही! तौं की, हमहूँ त' पहिले बेर बुझलियौ। रौ, एकटा लौडीस्पीकरा ओ विधानसभाक स्पीकर पकड़ने

रहौ, आ एकटा हमरा धरा देलकौ। ओ जे-जे बजने गेलौ तकरे हम दोहरौने गेलियौ। यैह भेलौ शपथ-ग्रहण, बुझलही?

चलितरा : बूझि गेलियै मालिक घरबालीक किरपासँ....

नीलो : लीलावती...लीलावती...लीलावती...! चलितरा...! लीलावती कत' छथुन?

(चलितरा चुप रहैत अछि)

नीलो : रै पुछलियौ जे लीलावती कत' छथि? सुनैत नइ छैं की?

चलितरा : मालिक....मालिक...मलकिनी चलि गेली!

नीलो : चलि गेली! कत' चलि गेली?

चलितरा : मंगरौनी....नैहर...!

नीलो : ओहूह....त' अहाँक बुद्धि हराइये गेल लीलावती!

चलितरा : मालिक! मलिकीनी कहि गेली अछि जे आब हुनका नइ बजबियौन, आब ओ नइ औतीह!

नीलो : ओ...!

चलितरा : आ हमरा कहि गेलीये अहाँकेँ कहि देबाक लेल जे ओहि मुँहझौसी नीलीक संग बियाह क'-क' मौज-मस्ती मनेबाक लेल। आ जे बचल-खुचल जमीन-जाल, डीह-डाबर अछि, से बेचि-बिकनि क' लीडरी करबाक लेल।

नीलो : ओहूह...

चलितरा : ई ठीक नइ भेल मालिक घरबालीक किरपासँ...

नीलो : तोँ ठीके कहैत छैं। परन्च...चलितरा, तोँ त' जनिते छैं जे जमीन की जाल बेचि क' आ'कि भरना राखि क' हम कोनो मौज-मस्ती नइ केने छी। सभटा लोके सभकेँ देने छियै। रौ, ककरो भूखल देखैत छी त' रहल नइ जाइत अछि, ककरो बेटीक बियाह पाई बिन नइ होइत देखैत छी त' मोन नइ मानैत अछि, ककरो दबाई बिनु मरैत देखैत छी त' हृदय काँपि उठैत अछि।

चलितरा : से त' ठीके मालिक। अहाँ त' देवता छी। सौंसे परोपट्टाक लोक अहाँक उपकारसँ दबल अछि। ओ त' अहीं सभकेँ मना क' दैत छियै ककरो नइ कहबाक लेल, नइ त' लोकसभ

त' ढ़ोल पीट-पीट क' अहाँक जय-जयकार करैत।

नीलो : रौ, उपकार केहेन? भगवान धिया-पूता नइ देलनि त' ककरा लेल राखी? हँसि-बाजि क' जिनगी बिता रहल छी। मात्र.. .मात्र एतबे कचोट रहि गेल जे आई धरि लीलावती हमरा नइ बूझि सकली। ...रौ, ई नेतागिरी कोनो हम अपना मोने करैत छी? तोंही कह त'...! कतेक विश्वास छै लोककेँ हमरापर जे मुख्यमंत्रीकेँ हरा देलक आ हमरा जिता देलक। आब...आब, लोक सभक विश्वासकेँ हम कोना तोड़ि दियै। तोंही कह त'?

चलितरा : से त' ठीके कहैत छी मालिक! अच्छा...हमहीं एकबेर मल. कनी लग जायब। हुनका बुझेबैन। घरबालीक किरपासँ ओ अवस्से मानि जेतीह।

(झोरा आ बैग उठा क' घर दिस प्रस्थान। रमेश आ गुलाबक प्रवेश।)

दुनू संगे : गोर लगै छी नीलो काका ...!

नीलो : नीके रह'!

गुलाब : अखने पता लागल जे अहाँ आबि गेलहुँ। अखबारमे त' हम सभ पढ़िते रहौं जे...

रमेश : कका! अहाँ त' धूम मचा देलियै। अखबार सभ त' अहाँक प्रशंसाक पूल बान्हि क' राखि देने अछि।

नीलो : पूल नइ बान्हत त' की! हम कि ककरो कर्ज खेने छियै जे सहबै! विधान सभाकेँ हिला क' राखि देलियौ! सपीकर कहलकौ जे नीलो बाबू कनी ठीक से बाजिये, त', हम कहलियै जे हे यौ सपीकर, हमरा जहिना बाजने आता है तहिना बाजेंगे। हम कि कोनो सुनैना चौधरी हैं कि चन्द्रकान्त हैं जे जनता के सोंझा में त' मधुर-मधुर बाजता है आ पाछूमे जनता का पैसा खा-खाकर कोठापर कोठा पीटता जा रहा है। एतबे कहलियै कि सपीकर के मुँह फक्क! विपक्षी दलक एम.एल.ए. सभ त' नीलो बाबू जिन्दाबादक नारा लगबय लगलौ। आ चन्द्रकान्तक जगहपर जे ई नवका

मुख्यमंत्री भेलौ अछि, से त' चारू नाल चित्त!

गुलाब : माने कि हुनकर अहाँ राम नाम सत्य करा देलियैन?

नीलो : रौ, से कहाँ भेलौ! बड़ चतुर छौ! हमरासँ भेंट कर' एलौ। त' हम कहलियै जे हे यौ मुख्यमंत्री, हमर क्षेत्रक उद्धार करेबाक लेल जे-जे काज छै से जल्दी कराऊ! त' कहैत अछि जे पहिने हमर पार्टीमे मिल जाऊ तखने सभटा काज हैत, नइ त' किछु नइ । आ ई विपक्षी पार्टी बला सभ त' हमर दरबार करैत छलौ जे हमर पार्टीमे मिल जाऊ त' हमर पार्टीमे! परन्तु हम त' कोनो पार्टीमे नइ जेबैन, से बूझिले!

रमेश : कका, से त' ठीक! परन्च, ई इलाकाक काज सभ जे नइ हैत त' लोक सभ जे अहाँपर एतेक उमेद लगौने अछि तकर की हैत?

नीलो : आब से जे हौ! तैं, हम ओकरा सभक संग नइ मिलबौ! सभ एकसँ बढ़िकेँ एक चोर-उचक्का! तोंही सभ ने हमरा जबर्दस्ती ठाढ़ केने छलेँ! आब बुझही!

गुलाब : कका...ई कहलासँ त' काज नइ चलत! अहि क्षेत्रक एम.एल.ए. त' आब अहीं छियै! लोक त' अहींक नाम जनैत अछि।

रमेश : आअहि क्षेत्रक जनता जे एतेक प्रेम सँ, एतेक आदरसँ अहाँकेँ ई प्रतिष्ठा दियौलक अछि से कि अहाँ एक क्षणमे बिसरि जेबै? किछु ने किछु त' करै पड़त!

नीलो : से त' ठीके कहैत छें। लोकक ध्यान अबैत अछि त' सिट्टी-पिट्टी गुम भ' जाइत अछि, परन्च, कएल कि जाय? ई मुख्यमंत्री त' किछु नइ करतौ जाधरि हम ओकर पार्टीमे नइ मिल जाइ छी!

गुलाब : आ पार्टियेमे मिल गेने कोन भरोस जे ई काज करबे करताह? तखन त' भ' सकैत अछि जे अहाँसँ बदला लेबाक हेतु आरो किछु नइ करथि!

रमेश : तों ठीक कहैत छ' गुलाब! परन्च कैल कि जाय?

कोना...एकटा आइडिया..!

गुलाब : की?

रमेश : नीलो काका अपन मांगक लेल मुख्यमंत्रीक उपेक्षापूर्ण नीतिक विरुद्ध भूख-हड़ताल करथि! तखैन त' ई मुख्यमंत्री दौड़ि क' सभ बात मानि लेथिन!

नीलो : हँ-हँ किएक नइ! रे शाला, तों सभ हमरा की बुझैत छैं? अँय? पहिने फुनगीपर चढ़ा देलें, आब जड़िसँ काट' चाहैत छैं? भूख-हड़ताल करबा क' हमर प्राण लेब' चाहैत छैं? खच्चर सभ नहितन....! नीलो काका भूख-हड़ताल करथि...हुँह...!

रमेश : कका, ई सभ बजलासँ काज नइ चलत! अहाँकेँ भूख-ह. ड़तालपर बैसय पड़त! हम सभ जाइत छी सौंसे प्रचार करबैत छी। इन्तजाम-बात करबैत छी। अहाँ तैयार रहू। चलह गुलाब। एकरा छोड़ि आन कोनो रास्ता नइ... *(प्रस्थान)*

नीलो : हे रे डकूबा सभ! रे गुलाब... रे रमेश...गुलाब...रमेश...हमर प्राण लेबयपर किएक तुलल छैं रे...! चलि गेल! दुनू चलि गेल। हमर गरदनिमे ससरफानी लगा रहल अछि। हे जगदम्बा! रक्षा करू एहि चाण्डाल सभसँ...चलितरा...रे चलितरा...!

चलितरा : *(प्रवेशक संग)* की भेल मालिक, एना....

नीलो : रे सुनलें किने? ई सभ हमर प्राण लेबापर लागल अछि। कहैत अछि भूख-हड़तालपर बैस' पड़त। रौ, हमरा त' एको साँझ बिनु भोजनकेँ नइ रहि होइत अछि, हम कोना भूख-हड़ताल करबै रौ...! उठा झोरा-झपटा, चल कतहु पड़ा जाइत छी.... *(पड़ेबाक उपक्रम...चलितरा हुनका हाथ पकड़ि रोकि लैत अछि...)*

चलितरा : मालिक घबराइत कियैक छी! सभ ठीक भ' जेतै!

नीलो : रे शाला! तोंहूँ एकरा सभक संग मिल गेल छैं! रे तोरा बैस' पड़ितौ तखन ने बुझितही!

चलितरा : मालिक! सैह त' हमहूँ कहैत छी! घबराइत कियैक छी?

घरबालीक किरपासँ हम त' छी ने!

नीलो : इह्ह! घरबालीक किरपासँ ई बाघ मारि लेता! रे शाला, हम त' भुखले मरि जैब।

चलितरा : ओप्फो मालिक! तकरे त' उपाय कहैत छी। हे, रोज राति क' हम चुपचाप भोजन पहुँचा देब। अहाँ चुपचाप खा लेब। केकरो पता नइ लगतै। लोको सभ खुश, आ अहूँ खुश!

नीलो : एना भ' सकै छै की?

चलितरा : सभ भ' सकै छै मालिक, सभ भ' सकै छै! घरबालीक किरपासँ! चलियौ आब स्नान ध्यान करियौ...!

नीलो : बेस, चल...परन्च एकटा बात सुनिले...हमरा जँ भूखल रहय पड़त त' भूख-हड़ताल परसँ पड़ा जेबौ...से बूझिले...

(दुनूक घरक दिस प्रस्थान)

(मंचपर प्रकाश बन्न होइत अछि)

नवम-दृश्य

(पान दोकानक दृश्य। चौकीपर बिछौन लागल अछि। पोस्टर सभ टांगल अछि। नीलो मसनद लगा क' बिछौनपर बैसल छथि मालासँ लदल। चलितरा पंखा होंकि रहल छनि। गुलाब माइकपर बाजि रहल छथि। रमेश, पानबला आ आओर किछु व्यक्ति एम्हर-ओम्हरक काजमे व्यस्त छथि। नीलो काका जिन्दाबादक नारा गूँजि रहल अछि।)

गुलाब : अपने लोकनि कृपया शांत भ' जाई! आ ओमहर जे शामियाना लागल अछि ओहिमे बैसी...! नीलो काका भूख-हड़तालपर बैसि चुकल छथि। सरकारकेँ भूख-हड़तालक सूचना आ हमरा लोकनिक सभ मांग पठा देल गेल अछि।

नीलो काका भूख-हड़ताल कियैक क' रहल छथि से अपने लोकनि के ज्ञात अछि। बहुतो लोकक विचार छल जे नीलो. काका कलक्टरक ऑफिसक सोंझामे भूख-हड़ताल करथि। परन्च, नीलो काकाक कहब छनि जे कलक्टर होथि कि एस.पी.। सभ जनताक सेवक छथि। जनता कियैक हुनका

लग जायत। हुनका लोकनिकेँ जनता ल’ग आब’ पड़तैन। *(थोपड़ीक गूँज)*

ताहि लेल ओ एहि चौक पर, एहि चाह-पानक दोकान ल’ग भूख हड़ताल करबाक सेहो कारण अछि। एहिठाम नीलो काकाक जिनगीक बहुत रास समय बीतल छनि।

आब हम एहि क्षेत्रक जनतासँ आग्रह करैत छी जे नीलो काकाक भूख-हड़तालक समर्थनमे प्रत्येक गामसँ कम-सँ-कम पच्चीस व्यक्ति एक-एक दिनक रिले फास्ट करथि...एक-एक दिनक भूख-हड़ताल करथि आ नीलोकाकाक मनोबलकेँ बढ़ाबथि। आजुक लेल पिलखवारक पच्चीस व्यक्ति ओम्हर बला शामियानामे बैसि चुकल छथि। हमर ई विश्वास अछि जे जनताक हरदम विजय भेलैक अछि। जँ हमरा लोकनि बिना भेदभाव केँ, दलगत राजनीतिसँ ऊपर उठि एक होई त’ विजयश्री भेटबे करत। सरकारकेँ सभ मांग मानई पड़तै। एकबेर जोरसँ नारा लगाबी ...नीलोकाका... जिन्दाबाद... नीलोकाका...जिन्दाबाद...हमर मांग...पूरा हो....

(प्रकाश बन्न होइत अछि)

दशम-दृश्य

(रातिक दृश्य। चौकीपर नीलो कछमछ क’ रहल छथि। कखनो उठैत छथि त’ कखनो बैसैत छथि। रमेश, गुलाब, चलितरा आ आओर किछु व्यक्ति नीचाँमे सूतल छथि।)

नीलो : *(मद्धिम स्वर मे)* चलितरा...चलितरा...रे शाला चलितरा...

रमेश : *(कुड़बुड़ाइत)* की भेल नीलो काका?

नीलो : किछु नइ... किछु नइ...तौं सुतह

(रमेश सूति रहैत छथि फेर कने कालक बाद...)

नीलो : चलितरा...हे रे शाला बहिरा चलितरा...

गुलाब : *(कुनमुनाइत)* की भेल नीलो काका? निन्न नइ भ’ रहल अछि की?

नीलो : हमरा निन्न नइ होइत अछि ताहिसँ तोरा की? की भेल नीलोकाका...की भेल नीलोकाका! खच्चर सभ नहितन.... सुतता से नइ!

(फेर सभ सूति रहैत अछि। कनीकालक बाद...)

नीलो : चलितरा...रे चलितरा...

(चलितरा उठैत अछि आ गमछामे बान्हल भोजन निकाल' लगैत अछि)

रे शाला, हमर पेट, अंतड़ीमे सटल जा रहल अछि आ तौं फोंफ कटैत छलैं?

चलितरा : मालिक...रमेश बौआ आ गुलाब बौआ सभ जगले ने छलाह। तैं त' हम नइ दैत रही। हे लिअ'! चुपचाप खा लिअ'। केयो नइ बूझत घरबालीक किरपासँ...

गुलाब : के...के...?

चलितरा : हम...चलित्तर...बौआ सूतू...! कने मालिककेँ पंखा होंकि दैत छियैन सूति रहू।

(चलितरा सेहो आबि क' सूति रहैत अछि। कने कालक बाद नीलो उठैत छथि आ एम्हर-ओम्हर देखि भोजन बहार करैत छथि आ किछु निकालि मुँह लग ल' जाइत छथि कि पार्श्व आवाज...)

पार्श्व सँ : नीलो तौं ई की क' रहल छ'? एतेक रास लोकक विश्वासकेँ तोड़ि रहल छ'? छीः छीः छीः! एहेन पवित्र कार्यकेँ अपवित्र क' रहल छ'?

नीलो : *(स्वतः)* त' हम की करी? हम की भुखले मरि जाई? हम भूखल नइ रहि सकैत छी। हम एना प्राण नइ द' सकैत छी! ई शाला सभ हमरा जबर्दस्ती भूख-हड़तालपर बैसा देलक अछि।

पार्श्व सँ- जबर्दस्ती नइ! ई तोहर कर्त्तव्य छ', तौं एतेक रास जनताक नेता भ' चुकल छ'। एम.एल.ए. छ'। तोरा जिता क' ई लोक सभ देशक इतिहासकेँ बदलि देलक अछि। आब तोहर धर्म छ' जे एहि क्षेत्रक जनताक मांग

पूरा करेबाक लेल सभ किछु कर'!

नीलो : ईह...! सभ किछु कर'! तौं के छ' हमरा उपदेश दै बला? एम.एल.ए. छी त' छी! तैं, हम मर' नइ चाहैत छी!

पार्श्व सँ- तोरा चाहने की हेतह? क्यो अमर नइ भेल अछि! एक दिन सभ मरैत अछि। परन्च, देशक लेल, समाजक लेल जे प्राण दैत अछि, तकर नाम अमर भ' जाइत छै! जेना-महात्मा गांधी, नेहरू, सुभाष, आजाद, इन्दिरा गांधी! कतेक नाम गिनबियह! चोरा-चोरा क' खेबह त' काल्हि नइ त' परसू लोककेँ पता लगबे करतै! तखन त' सभ तोरा नामपर थू-थू करत'...थू-थू करत'....थू-थू ..!

नीलो : नइ ..नइ...न...इ...न...इ...

(भोजन उठा क' एक दिस फेकि दैत छथि)

(मंचपर प्रकाश बन्न होइत अछि)

अंतिम-दृश्य

(मंच पूर्ववत। नीलोक हालत बहुत बिगड़ि चुकल छनि। ओ मात्र लीलावती -लीलावती क' रहल छथि। गुलाब परेशान भ' एमहर-ओमहर टहलि रहल छथि। आन व्यक्ति सभ सेहो परेशान छथि, किओ नीलोकेँ पंखा होंकि रहल छनि त' किओ पैर दबा रहल छनि।)

पार्श्व स्वर : पन्द्रह दिन भ' गेल। नीलो काकाक स्थिति दिनो दिन खराब भेल चलल जा रहल अछि। डाक्टर अपन रिपोर्ट सरकारकेँ पठा चुकल छथि जे नीलो काकाकेँ आब जँ' भोजन नइ भेटतैन त' कखनो किछु भ' सकैत छनि। परन्च, सरकार चुप अछि। एकदम चुप। बहीर सरकार...आन्हर सरकार...!

(चलितराक प्रवेश)

गुलाब : चलितरा, की भेलौ? काकी एलखुन कि नइ?

चलितरा : नइ! मलकिनी नइ एली!

गुलाब : ई बड़ अनर्थ भेल! देख, कका खाली लीलावती...लीलावती क' रहल छथि। कका'क स्थिति बड़ खराब छनि। कखनो

किछु भ' सकैत छनि। कलक्टर पटनासँ सम्पर्क बनौने अछि। तों एक बेर फेर जो, कहियौन एहेन अनर्थ नइ करथि। हुनका कका'क सप्पत द' दिहुन। जल्दी जो...

(चलितराक प्रस्थान आ नीली'क प्रवेश)

नीली : नीलो काका...मिस्टर नीलो काका...कैसे हैं आप?

नीलो : के? के? ...लीलावती...लीलावती अहाँ आबि गेलौं! लीलावती, हमरा किछु नइ सूझि रहल अछि।

नीली : नीलो काका! मैं नीली हूँ, नीली!

नीलो : ओह...नीली तौं छ'। हमरा त' भेल जे लीलावती आबि गेली।

नीली : यू आर रियली ग्रेट नीलो काका! रियली ग्रेट! आपने समूचे देश की आँखें खोल दी है।

नीलो : नीली...हमर त' अ...अपने आँ...खि ह...रा... गेल अछि। हमर लीला...वती...हेरा गेली। लीलावती...ली...लीला...वती...

नीली : मिस्टर नीलो काका, होश में आइये। सब ठीक हो जायेगा। आपकी मिसेज भी आ जायेंगी।

(चलितराक प्रवेश)

गुलाब : तौं गेलैं नइ?

चलितरा : बौआ! मलकिनी अपने आबि रहल छथि। जहिना सड़क पकड़लौं कि देखलौं जे मलकिनी टैर गाड़ीपर आबि रहल छथि। ई देखि चट्ट द' आपस भ' गेलौं कहबाक लेल...!

गुलाब : थैंक गॉड! चल, आब कका ठीक भ' जेथुन!

चलितरा : लेकिन बौआ, मलकिनी त' फेर ई गरिजम्मा वाली छौंड़ीकेँ देखितहि पड़ा जेती। ई कहाँसँ आबि गेल हे भगवान!

गुलाब : चुप...चुप...!

(लीलावतीक प्रवेश)

नीली : मिस्टर नीलो काका! मिस्टर नीलो काका! देखिये, आपकी मिसेज आ गयी। आँखें खोलिए...!

नीलो : अँय...कत'...कत' छथि ली...लीलावती...!

लीलावती : बाप रौ बाप! ई केहेन हाल भ' गेल अहाँकेँ?

नीलो : ली...लीला...वती... ई छौंड़ी कहैत छलैक जे हम सौंसे दे...देशक आँखि खोलि देलियै त' हम कहलियै जे हमर त' अ...अपने आँखि हरा गेल अछि। आब...आब...हमर आँखि भेट गेल...हमर लीलावती आबि गेली...हे...जगदम्बा. ..लीलावती...लीलावती...भरि जिनगी अहाँकेँ कष्ट देलौं... धिया-पुता नइ भेल...लीलावती...ई छौंड़ी बड़ बुधियारि...बड़ नीक...एकरे अपन...बे...बेटी बूझब!

लीलावती : बेटी? ई की कहैत छी?

नीलो : ठी...ठीके कहैत छी। एकरा हमसदिखन बेटिये बुझलियै। आ...आ' ईहो हमरा बा...बापे बुझलक। ओहि दिन जे ...क...कहल...सभ...हँसीमे...सभ फू...फूसि...आह...आह... *(छटपटाय लगैत छथि। सभ पकड़ैत छनि। रमेशक हहायल-फुफआयल प्रवेश)*

रमेश : नीलो काका...नीलो काका...!

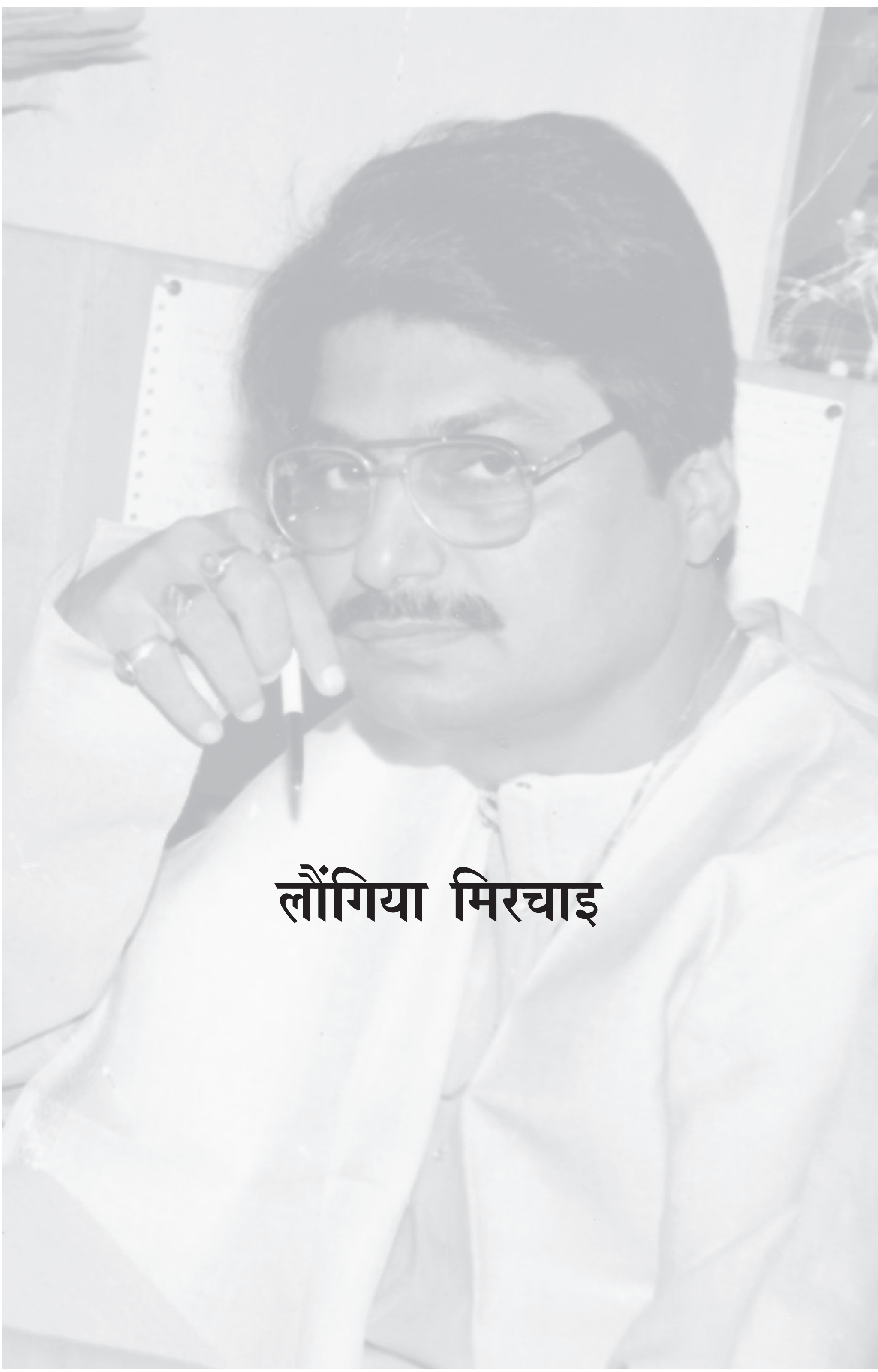
नीलो : की...की भेलह? एना...एना बताह किएक भेल छ'?

रमेश : कका! सरकार सभ मांग मानि लेलक अछि। प्रधानमंत्रीक निर्देशपर मुख्यमंत्री एत' आबि चुकल छथि। ओ कलक्टर साहेबक संग अहाँक भूख-हड़ताल तोड़ेबाक लेल आबि रहल छथि!

नीलो : ओह...ओह...हौ...आ...आब की कर' आबि रहल अछि...ई. ..ई...शाला...मुख्यमंत्री...आब...आब त' चलला नीलो....हे.. .हे...जगदम्बा...!
(प्राण त्यागि दैत छथि। मंचपर सभ स्थिर अवस्थामे। पार्श्वसँ नीलो काका जिन्दाबादक नारा गूँजय लगैत अछि। मुख्य पर्दा खसैत अछि।)

समाप्त

●



लौंगिया मिरचाइ

लौंगिया मिरचाइ

पुरुष पात्र

घूटर : पचास बरखक ग्रामीण
चन्द्रकान्त : चालीस बरखक प्रोफेसर
फूकना : चालीस बरखक मास्टरक जऽन
मास्टर : चालास-पैंतालिस बरखक व्यक्ति
नरेन्द्र : पचीस-छब्बीस बरखक युवक
मेना : आठ-दस बरखक बालक
दिवाकर : चालीस-पैंतालिस बरखक व्यक्ति

स्त्री पात्र–

मास्टरक स्त्री : पैंतीस बरखक ग्रामीण महिला
रीता : बाइस बरखक मॉर्डन युवती
रश्मियाँ : दस-बारह बरखक नौकरानी

मंच निर्देश एवं आवश्यक सामग्रीक सूची

ओना तऽ पर्दा उठा-खसा (दृश्य बदलि)क' नाटकक मंचन भ' सकैत अछि। तथापि जत' नीक मंच हो, आलोकक नीक व्यवस्था हो (स्पाट लाइट ई.), नाटक केँ दू भागमे बांटल जा सकैंछ। पहिल भाग जे गामक दृश्य अछि (दृश्य छठम् धरि) सम्पूर्ण मंचक प्रयोग कैल जा सकै'छ। मात्र प्रथम् एवं तेसर दृश्यक हेतु मंचक अगिलका भाग के स्पाट लाइटक सहायता सँ पोखरिक भीड़ लेल प्रयोग कैल जा सकै'छ। दोसर भाग जे शहरक दृश्य अछि ताहिमे मंचके दू भाग (Zone) मे बांटल जा सकै'छ। पहिल ड्राईंग रूमक होयत ओ' दोसर सर्भेन्ट रूमक। स्पाट लाइटक द्वारा दूनू भागमे दृश्य सभ देखाओल जा सकै'छ।

आवश्यक सामग्री–

टाट सँ बनल दुरुक्खाक संग फूसक घर, खाट 2, पटिया, एकटा पुरान कुर्सी भीजल घोती, छिट्टा-हाँसू, ब्रीफ केश-3-दू सय टाका पत्र, लोटा-गिलास (पितड़िया), झोड़ा, अन्तर्देशीय पत्र, फोटो, परिचय पत्र, दू हजार टाटाक लिफाफ, किताब, कापी, पेन, अटैची, वेडींग, बैग ई., पिकदानी चेक बुक–पास बुक, तेलक बाटी, गमछा, जलक बाल्टी, टिनही गिलास, सोफा सेट, टेलीफोन, टूल, पोस्ट कार्ड, दू कम चाह, घूटरक बैग–चादर, गिलास, झोड़ा (माछक), दू थारी भात, दूबाटी माछ, बाढ़नि, दू तीन टा नव कपड़ाक पैकट, ई.।

लौंगिया मिरचाइ

पहिल दृश्य

(स्थान पोखरिक भीड़)

(घूटर बाबू पोखरि सँ स्नान केने खूब जोर-जोर सँ दुर्गा पाठ करैत चलल आबि रहल छथि। कारक हार्नल स्वर सुनि चौंकि पड़ैत छथि।)

घूटर : अँय...इ कार सँ के आबि रहल अछि? आइ-काल्हि एहि गामक तऽ भाग्ये बदलि गेल छैक। रोज क्यो ने क्यो कार कि जीप सँ अबिते रहैत अछि...आ' इ मास्टर अछि जे नाकपर माछी नहि बैसऽदैत छै (जोर सँ चिकड़ि कऽ) औजी...गाड़ी ओतहि छोड़ि दियौ...आगू रस्ता नहि छैक... हँ...ओतहि कात मे लगा दियौ...। *(पुनः जोर-जोर सँ दुर्गापाठ करऽ लगैत छथि। दोसर दिससँ दिवाकर बाबूक एक हाथमे ब्रीफ-केस नेन प्रवेश।)*

दिवाकर : नमस्कार पंडित जी।

घूटर : नमस्कार। कहल जाओ...ककरा ओतऽ जेबाक अछि? रघुन. न्दन मास्टरक ओतऽ की?

दिवाकर : जी...हम...घू... (मोन पारऽ चाहैत छथि...फेर जेबसँ एकटा चिट्ठी निकालि ओहिपर लिखल नाम पढ़ैत छथि) धू...टर...टर बाबू ओतऽ जाय चाहैत' छी।

घूटर : दुर्गा...दुर्गा...औजी...एहि गाममे इ धू आ टर माने कि घूटर तऽ मात्र हमही छी...

दिवाकर : ओह...चिन्हि नहि सकलौं...नमस्कार...नमस्कार...

घूटर : औजी ई नमस्कार नमस्कार तऽ कैक बेर भऽ गेल परन्च,

हम तऽ अपने केँ चिन्हल नहि?

दिवाकर : जी पहिल बेर जे भेंट भऽ रहल अछि...दरअसल हम अपनेक सार...

घूटर : दुर्गा...दुर्गा...औजी अपने हमर सार कोना? हमर तऽ मात्र एकेटा सार छथि...फ...दन्न ऽऽऽ माने कि फूदन बाबू...अरिरिया मे पी डब्लू डी आफिसमे बड़ा बाबू छथि...खूब पाइ कमाइत छथि...गाममे कोठा पिटने छथि...बेटीक बियाहमे पचास हजार टाका गनलनि अछि। औजी दू मास पहिने तऽ भेट भेल छल...तऽ कहैत छलाह हम तऽ मात्र ईमानदारीक पाइ-घूसमे लैत छी। आ कहैत छलाह जे हुनकर जे साहेब छथिन... कोनदन इन्जीयर तऽ कहलनि।

दिवाकर : जी एक्जक्युटिभ इन्जिनिरयर।

घूटर : हँ—हँ वैह...हुनका दऽ तऽ कहैत छलाह जे एक नम्बरक घूसाह छथि। ठिकेदार सभक खून चूइस लैत छथि। सरकारी सिमटी लोटा सब बेच कऽ खा जाइत छथि।

दिवाकर : जी? फूदन बाबू ई सभ कहैत छलाह?

घूटर : हँ यौ ई सभ तऽ वैह कहैत छलाह। हम की जानऽ गेलियै। औजी। आहिरेबा हमहूँ कतऽ भसिया गेल रही...औजी हम पुछैत रही जे अपने...सार...

दिवाकर : जी अपने तऽ हमर पूरा गप सुनबे नहि कैल...खैर इ पत्र पढ़ल जाओ (चिट्ठी दैत छथि)।

घूटर : औजी हमरा लऽग मे कि चश्मा अछि जे चिट्ठी पढ़व। अपनहि पढ़ि कऽ सुनाउ...दुर्गा...दुर्गा...।

दिवाकर : जी. वेश। (चिट्ठी पढ़ैत छथि) प्रिय घूटर बाबू, नमस्कार।

घूटर : नमस्कार...नमस्कार

दिवाकर : जी?

घूटर : आगू पढ़ल जाओ।

दिवाकर : जी...। पत्रवाहक हमर एक्जवयूटिव इन्जिनियर साहेब श्री दिवाकर बाबू छथि।

घूटर : जी! अपने दिवाकर बाबू...दुर्गा...दुर्गा जी हम चिन्हि नहि

सकलौँ अनाप-सनाप बजा गेल।

दिवाकर : कोनो बात नहि। आगू सुनल जाओ (पुनः पत्र पढ़ैत छथि) हिनकर सज्जनता भलमनसाहतक कोनो दोसर उदाहरण नहि भऽ सकैत अछि। साहेब अपन बेटीक लेल मास्टर साहेबक भाई नरेन्द्रपर कथा लऽ कऽ जा रहल छथि। नरेन्द्र इनकम टैक्स आफिसर भऽ रहल छथि। हुनको लेल अहि सँ बढ़ियाँ आओर कोनो कथा नहि भऽ सकैत छनि। हमर साहेबक बेटी रीता परम शुशीला, गृह कार्यमे दक्ष एवं बी.ए. पास छथि। कन्याक लेल हम गरेन्टी लैत छी। आशा अछि अपने ई कार्य सम्पन्न कराय पुण्यक भागी बनब। हमर साहेब लऽग पाईक कोनो कमी नहि। कार्य भऽ गेला पर साहेब अहाँके उचित कमीशन देता।

अहाँक;

फूदन

घूटर : हें हें हैं की कहू हमर जे ई एक मात्र सार छथि से एक नम्वरक पाजी। कमीशन देताह...हूँ...

दिवाकर : घूटर बाबू एहि लेल तामस जुनि कैल जाय।

घूटर : औजी ई सार तऽ इहो लिख सकैत छलाह जे कार्य भऽ गेला पर उत्तम स्वागत सत्कार करताह...।

दिवाकर : सैह बुझल जाय...उचित स्वागत सत्कारे बुझल जाय *(जेब सँ दू सय टाका बहार कऽ दैत)* ताधरि ई राखल जाओ।

घूटर : *(टाका लैत)* दुर्गा...दुर्गा या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मी रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः। आब सऽ दुर्गाक आशीर्वाद भऽ गेल अछि आब तऽ अपनेक लेल किछु ने किछु करऽ पड़त...

दिवाकर : जी किछु नहिं...कार्य अवश्य भऽ जाय सैह कैल जाओ।

घूटर : औजी...ई मास्टर घाघ अछि...कतेको लोक आ'बि कऽ चलि गेल...केकरो नहि सुनलकनि। मुख्यमंत्रीक आदमी सेहो हुनकर भतीजीक लेल आयल छलनि...

दिवाकर : ओह! सुनैते छी जे मास्टर साहेब एकोटा पाइ नहि लेथिन

भाईक विवाहमे।

घूटर : औ कहेत तऽ सैह छैक सभकेँ। परन्च हमने चिन्हैत छियै ओकरा। बड़का भितर धुइयाँ अछि ई मास्टर...खैर बचि कऽ जैत कतऽ दुर्गा दुर्गा...अच्छा दिवाकर बाबू अपने कतेक टाका तक गनि सकैत छियै।

दिवाकर : जी पाइक कोनो चिन्ता नहि...काज जैना हेतै तेना कैल जेतै कथुक कमी नहि रहतनि।

घूटर : अँय...तथापि कतेक तक...?

दिवाकर : डेढ़-दू लाख कैश लऽ लौथ...तकरा बाद तऽ बिदाईमे आधुनिक सभ समान मोस्ट माडर्न एण्ड मोस्ट सफिस्टीके टेड...

घूटर : डेढ़ दू लाख! दुर्गा दुर्गा औजी दिवाकर बाबू एकटा बात पूछू अधलाह तऽनै मानव?

दिवाकर : पूछू—पूछू

घूटर : अपनेक विषयमे हमर सार जे कहने छलाह से तऽ सत्ते बुझाइत अछि...

दिवाकर : जी...अहिना चलैत छै। अपने ध्यान कार्य दिस लगायल जाओ। लाख-दू लाखक चिन्ता जुनि करू...

घूटर : दुर्गा...दुर्गा हे माँ दुर्गा...अहि जनममे तऽ जरलाहा कप्पार देलह अगिला जनममे हमरे पी.डब्लू.डी. क इनजियर बना दिहऽ...

दिवाकर : हें हें हें अपने तऽ अद्‌भुत लोक छी यौ घूटर बाबू...

घूटर : अद्‌भुत लोक की? औजी अपनेक गप सुनि कऽ हमर तऽ हदासे उड़ि गेल अछि...अँयलो एकटा गप हमरा नहि बुझायल? अपने एतेक टाका लगान सकैत छी...खर्च कऽ सकैत छी...तखन फेर एहन दरिद्र छिम्मरि बर अपना बेटी लेल तकैत छी? औजी मास्टर दूनू भाईक माथपर इस कट्‌ठासँ बेसी जमीन नहि...एकटा छोटछीन टाटक धर। जाहिमे अपनेक बैसबोक स्थान नहि तऽ ओहिमे अपनेक बेटी कोना रहतीह? मास्टर ओ' ओकर घरबाली कोना कोना अपन पेट काटि कऽ नरेन्द्रके पढ़ौलक अछि से पूरा गाम जनैत अछि।

औ एतेक टाकामे तऽ अपने कोनो जमीनदारक बेटा।...

दिवाकर : अपनै बूझबै औ। घूटर बाबू...। ट्रेनिग खतम भेलापर नरेन्द्र भऽ जेतह इनकम टैक्स आफिसर...आ तीन चारि बरखक बाद ओ हमरा सन-उन कैक्टा इन्जीनियर के कीन कऽ अपन पाकेट मे राखि सकैत छथि...

घूटर : तेहेन साहेब भऽ गेल अछि नरेन्द्र?

दिवाकर : जी...

घूटर : तै ने, एतेक लोक मारि कऽ रहल अछि परन्च एकटा बात...लाख-दू-लाखक गप बिसरियोकऽ दोसरा लऽग नहि बाजब। हे, हम मात्र 40-50 हजारमे ई काज करा देब... लाख-दू-लाख सुनितहि मास्टर तऽ पागल भऽ जैत।

(फूकनाक छिट्टा आ हाँसू' नेन प्रवेश)

फूकना : गोर लगै छी लौंगिया मिरचाइ पंडित। बलु के पागल भऽ जेतै?

घूटर : हे रे फूकना तो ँ मुँह सम्हारि कऽ बाजल कर, नहि तऽ कोनो दिन टाँग हाथ तोड़ि कऽ धऽ देबौ...

फूकना : गलती भऽ गेलै माफी दऽ दिय, बलु ई मोटरगाड़ी बला पाहुन कतऽसँ एलाह अछि?

घूटर : कतौ सँ एलाह अछि ताहि सौ तोरा की? जो अपन काज कऽर (फूकनाक मुँह बिचकाबैत प्रस्थान) हें हें हें ई सभ अपने जन-बनिहार थीक।

दिवाकर : से तऽ हम बूझि गेल। परन्च, ई तऽ अपने के ँ अद्भुत संबोधन देलक ''लौंगिया मिरचाइ पंडित''।

घूटर : जी...जी...दर असल हमरा बाड़ीमे ततेक ने लौंगिया मिरचाइ फडैत अछि जे गामक सभ तोड़ि-तोड़ि कऽ लऽ, जाइत अछि। हें...हें...हें... मिरचाइये छैक, ककरा रोकबै, लऽ जो जतेक लऽ जेबै, कड़ू तऽ तोरे लगती...हें...हें...हें...खैर आब चलल जाओ पूजा पाठ कऽ लैत छी तखन मास्टरक ओतऽ चलल जेतँ...चलल जाओ— घबराऊ जुनि...घूटर अपनेक संग छथि माने दुर्गा अपनेक संग छथि। अपनेक काज हेबे

करत।

दिवाकर : दुर्गा संग छथि कि लौंगिया मिरचाइ?

घूटर : हें...हें...हें...अपने तऽ हमर सारे जकाँ मसखरी करऽ लगलौं, हें...हें...हें...चलल जाओ।

(दूनूक प्रस्थान। प्रकाशन बन्न)

दोसर दृश्य

(मास्टरक घरक दलान। एकटा फूसक धर। एकटा टूटल कुर्सी आ एकटा खाट। मास्टर प्रवेश करैत छथि। आबि कऽ झोड़ा कुर्सीपर टंगैत छथि आ कुर्सीपर बैसि रहैत छथि)

मास्टर : फूकना...फूकना...

मास्टरक स्त्री : *(प्रवेश)* फूकना तऽ भोरे जे घास काटऽ गेल से कहाँ आयल अछि।

मास्टर : इहो फूकना हद्दे अछि। एकर बेटा के हम पढ़ा की दैत छियै ई तऽ भरि दिन हमरे सभक काज करैत रहैत अछि। एकर घर कोना चलैत छै से नहि जानि।

स्त्री : सैह तऽ...कतेक इच्छा छै एकरा जे बेटा पढ़ि-लिख कऽ पैघ आदमी बनई। नेना त' छैहो बड़ तेज...

मास्टर : ताहिमे कोन सन्देह...एहन संस्कारी बच्चा तऽ बहुत कम देखबामे अबैत अछि। हे...एकटा बात गिरह बान्हि कऽ राखि लिय जे जँ भगबतीक कृपा रहलनि तऽ ई छौंड़ा हमर नाम रोशन करत। नरेन्द्र जे नहि कऽ सकलाह से करत ई छौंड़ा।...कोनो चिट्ठी तिट्ठी।

स्त्री : नहि कहाँ आयल अछि।

मास्टर : नरेन्द्र केँ चिट्ठी लिखना तऽ कतेक दिन भऽ गेल। जबाव किएक नहि दऽ रहल छथि...कन्यागत सभ तंग कऽकऽ छोड़ि देने अछि। लाख कहैत छियै जे हम पाइ नञि लेब से कथी लेल-मानत क्यों...लगैत अछि जेना जबर्दस्ती जेबमे ठूसि देत, पचास हजार, साठि हजार...लाख...दू लाख...

स्त्री : तऽ, नहि जानि कतऽमँ एतेक पाइ आबि गेल छै लोक सभकेँ? तैयो तऽ सभ दिस हाहाकार मचल अदि। दहेजसँ लोक तबाह अछि।

मास्टर : यै तबाह अछि निर्धन सभ...तबाह अछि इमानदारीक पाइ खायबला सभ। ओ किएक तबाह रहत जकरा घूसक पाइ अफरात भेटैत छैक...ओ किएक तबाह रहत जकरा ठिकेदारी मे कि व्यापार मे दू नम्बरक पाइक ढ़ेर लागन रहैत छैक? अहि देशमे एकटा एहन बर्ग तैयार भऽ गेल अछि जकरा लऽग दू नम्बरक पाइक कोनो हिसाब नहि आ वैह सभ ई दहेज के एतेक बढ़ा चढ़ा देलक...। जहाँ कोनो नीक लड़का निकलल कि बोली लागऽ लगैत अछि...लाख दू लाख नहि जानि आओर कतेक। ओकरा सभक सोंझा मे ई गरीबहा सभकतऽ सकत। भलेही ओकर बेटी कतबो सुन्नरि किएक नहि हो, कतबो पढ़ल-लिखल, शुशील किएक नहि हो। जनैत छी आइ जे हम डिक्लेअर कऽ दियै जे नरेन्द्रक विवाहमे हमरा पाइ तऽ डेढ़दू लाखों तक दै बला सभक लाइन लागिन जायत...

स्त्री : दूर...एहनो क्यो काज करया।

मास्टर : अरे हमतऽ एकटा गप कहले। हम तऽ विवाहमे लेन-देनक घोर विरोधी छी...। नरेन्द्रक चिट्ठी आबि जाइत तऽ कोनो नीक ठाम विवाह स्थिर कऽ दितियैन। मात्र एकेटा इच्छा अछि जे विवाह कोनो पैघ आफिसरक ओतऽ होनि।

स्त्री : हे...हम तऽ कहब जे अहाँ इहो पाग पिन छोड़ि दिय। कोनो गरीब घरक बेटी ताकि कऽ बौआक विवाह कऽ दियौन।

मास्टर : जतबे बुझबै ततबे ने बाजव...यै, विवाहदानमे स्टेटस देखल जाइत छैक। नरेन्द्र पैघ अफसर छथि तऽ हुनकर स्त्री पढ़ल-लिखल, तौर-तरीका बाली, सभा-सोसाइटीमे नरेन्द्रक संग देवयवाली होयबाक चाही। ओ कि हमरा जँका मास्टर छथि जे कोनो मास्टरक बेटी सँ ठीक कऽ दियनि।

स्त्री : हमर बाबूजी मास्टर नै हेड मास्टर छथि।

मास्टर : ओफ्फो—अरे जहिया ओ नोकरी पकड़ने हेता तहिया तऽ मास्टरे ने रहल हेता कि सोझे हेडमास्टरे भऽ गल छलाह?

स्त्री : से तऽ हमरा नहि बूझल अछि।

मास्टर : जहाँ बकलेल छी... जाउ एक कप चाह बनाकऽ नेने आउ....

स्त्री : हँ हँ...हम तऽ बकलेल छी। बौआ तऽ अहाँक ने भाई छयि। तैं सभ अधिकार अहींके...

मास्टर : आ-हा-हा, अहाँ तऽ खिसिया गेलहुँ। नरेन्द्र जे आदर जे सम्मान अहाँके दैत छथि ओ तऽ...हमरा तऽ मात्र पैघ भाई बुझैत छथि परन्च अहाँके तऽ सदिखन भाय समान पूजा करैत छथि। अहाँ जतऽ कहबै तत्ते हेतैन नरेन्द्रक विवाह। हम तऽ मात्र नरके स्टैटसक हिसाबे...

स्त्री : हम की बूझबै ई सभ बात। अही सोचि बिचारि कऽ तय करब। हम चाह नेने अबैत छी (प्रस्थान)

(गेना लालक प्रवेश)

गेना : *(चिट्ठी दैत)* मास्टर साहेब प्रणाम! पोस्टमैन साहेब ई चिट्ठी देलनि अछि।

मास्टर : चिट्ठी ला-ला हँ ई तऽ नरेक चिट्ठी अछि *(फाड़ैत)* गेना, तोँ कने अपने बाबू के बजौने तऽ ओ...

गेना : जी...*(प्रस्थान)*

मास्टर : *(चिट्ठी पढ़ैत)* यै सुनैत छी...अरे जल्दी आउ

(स्त्रीक प्रवेश)

नरेन्द्रक चिट्ठी आबि गेल, जनैत छी की लिखने छथि...? लिखलनि अछि अहि मासक अँत धरि हमर पोस्टिंग भऽ जैत। आब हमर विवाह निश्चित कऽ सकैत छी। भाई अहाँ तऽ पिता तुल्य छी आ भौजी तऽ माया सँ बढ़ि कऽ। अहाँ लोकनि हमर विवाहक लेल हमरा सँ पूछी से उचित नहि। जतऽ उचित बूझी, जहिया उचित बूझी निश्चित कऽ दिय। देखू अहाँक बौआ कतेक आज्ञाकारी छथि।

स्त्री : से अहाँ ने देखे। तैं खूब सोचि-बिचारि कऽ विवाह ठीक करियौन। जाहि सँ नीक जँका जिनगी बीत जाइन...

मास्टर : हँ से तऽ ठीके कहैत छी...अहि पत्रके पढ़लाक बाद तऽ जिम्मेदारीक बोझ आओर बढ़ि गेल अछि। खैर, बाबा वैद्यनाथ सभ नीके करताह...

(नेपथ्य सँ घूटरक स्वर)

घूटर : दुर्गा...दुर्गा... ई बाबा बैद्यनाथ के किएक तंग कऽ रहल छहुन हौ मास्टर?

मास्टर : घूटर भाई आबि रहल छथि *(स्त्रीसँ)* अहाँ आङन जाउ। *(स्त्रीक प्रस्थान)* आउ-आउ घूटर भाई...*(घूटर आ दिवाकर बाबूक प्रवेश। दिवाकर बाबूक संगमे ब्रीफकेश छनि। ओ मास्टर साहेब के नमस्कार करैत छथि।)*

मास्टर : नमस्कार नमस्कार...एतऽ बैसल जाओ। *(आ अपने खाट पर घूटरक संग बैसि जाइत छथि)*

घूटर भाई हिनका चिन्हलियैन नञि?

घूटर : हौ, आइ काल्हि तोँ ककरो चिन्हैत छहक। हमरा चिन्हैत छह कि नञि?

मास्टर : कहू तऽ भला...अहाँ तऽ...

घूटर : तऽ बूझि लऽ जे हिनका आ हम रामे कोनो फर्क नञि। हमर सार के चिन्हैत छहुन ने?...हुनके ई साहेब दिवाकर बाबू एजकूटी इनजीयर पी डब्लू डी। हुनके पत्र लऽ कऽ आयल छथि। कार सँ अयलाह अछि। पोखरिक भीड़ लऽग छोड़ि देने छथिन कार के। हमर सार तऽ अपने आबयबला रहथि हिनका संग परंच ओ अकस्मात बीमार पड़ि गेलाह...हे नरेन्द्रक हेतु अपन कान्याक प्रस्ताव लऽ कऽ आयल छथि।

मास्टर : ओ...

दिवाकर : जी ई हमर परिचय थिक *(जेबसँ कागत बहार कऽ दैत छथि)*

घूटर : परिचय की देखैत छहुन...एहन सुन्नर परिचय कतऽ भेटतह?

दिवाकर : मास्टर साहेब दरअसल हम भाया मिडिया बला गपमे विश्वास नहि करैत छी। आ नञि तऽ दस-बीस आदमीक भीड़ जमा

करबामे। चाही तऽ जत्तै कथामे जाइ दू-चारिटा गाड़ी आ दस बीस नीक व्यक्ति केँ लऽ कऽ जा सकैत छी परन्च, हम बुझैत छियै जे...

मास्टर : जी ई तऽ बड़ उत्तम गप। कन्यागत आ बरागत सोझा सोझी बैसि कऽ गप करथि तऽ ई जे पचास तरहक प्रेसर, कि सम्बन्धी वर्ग सँ मनमुटाव से सब काफी हद तक दूर भऽ सकैत अछि।

दिवाकर : वाह। बहुत उत्तम विचार। तखन हम तऽ अपने लऽग अर्जी दऽ देल...आब अपनेक जे विचार...

घूटर : जे विचार की? अहिसँ बढ़ियाँ कथा कतऽ भेटतऽ? कान्याक विषय मे हमर सार गरेन्टी लिख कऽ पठौलनि अछि। परम शुशीला, गृह कार्यमे दक्ष, बी.ए. पास बढ़ियाँ रिजल्ट...देखबामे अति सुन्नरि...बाप के देखिते छहुन...बड़का आफिसर...कथुक कमी नञि, जे मंगबहुन से सभ देबाक लेल तैयार...

मास्टर : *(तमसाइत)* घूटर भाई...अहाँ तऽ जनैत छी हमर कोनो माँग नञि हम दहेजक एकदम विरुद्ध छी।

दिवाकर : जी हमर एहन कोनो अभिप्राय नहि, मात्त अननेक आशीर्वाद चाही *(जेबसँ फोटो बहार कऽ दैत छथि)* ई हमर बेटी रीताक फोटो अछि...राखि लेल जाओ, रीता केँ देखबाक विचार हो तऽ...

मास्टर : छीः छीः छीः केहेन गप करैत छी, ई देखा देखी, दहेजक माँग...ई सभ तऽ समाजके गर्तमे ढकेलने जा रहल अछि आ अपने सभ सन विद्वान उच्च घरक व्यक्ति सभ सेहो...

दिवाकर : जी की कैल जाए। बेटी बला छी। जतहि जाइत छी दहेजक माँग, कन्या देखेबाक प्रस्ताव, हम जँ अड़िकऽ रही जे पाइ नहि गनब...बेटी के नहि देखायब तऽ हमर बेटीक विवाहे नञि हैत।

मास्टर : हँ सेहो ठीके कहैत छी। पता नहि कोना एहि सभक अन्त होयत।

(फूकनाक घासक छिट्टाक संग प्रवेश)

फूकना : की यौ लौंगिया मिरचई पण्डित जी, तखन पुछलहुँ जे कतऽ सँ पाहुन आयल छथि तऽ बलु बजैत की भेल छल?

घूटर : मास्टर एकरा मना कऽ दहक जे हमरा से नञि भिड़य...तोँ एकरा बहसा कऽ राखि देने छहक।

मास्टर : फूकना...खैर बाद मे गऽप्प करब...पहिने आँगन सँ जलपान आ चाहक

दिवाकर : मास्टर साहेब आइ ई सभ छोड़ि देल जाय...

मास्टर : आह से कोना हैत अपने पहिल बेर...

घूटर : अरे आब तऽ अबिते रहथुन। पहिने गप्प तऽ फाइनल करह...

मास्टर : दिवाकर बाबू हमरा किछु समय देल जाय। हमरा लोकनि विचारि कऽ अपने के सूचित करब।

घूटर : सूचित करब? दुर्गा-दुर्गा एतेक अगधैल जकाँ किएक गप्प करै छह हौ? जे फाइनल करबाक छह से अखने करह।

दिवाकर : घूटर बाबू रहऽ दियौन...किछु समय तऽ आवश्यक छैक, विचार विमर्श करबाक लेन। नरेन्द्रजी सँ पत्राचार करबामे किछु समय तऽ लगबे करतैन।

घूटर : ओ की समय लगतैन? हम नहि जनैत छी की? हिनकर बात के नरेन्द्र कहियो टारि नहि सकैत छनि।

दिवाकर : आह से तऽ छोट भाईक धर्मे आ नीक कुल-शीलक यैह तऽ परिचय...तथापि मास्टर साहेब जहिया आज्ञा करता हम पहुँचि जैब। *(मास्टर सँ)* मात्र एकटा अनुरोध से जँ अपने वचन दी जे मानि लेब तऽ हम हिम्मत करी...

मास्टर : दिवाकर बाबू वचन होइते छैक पूरा करबाक लेल। हम कोनो तरहक वचन अखन नहि दऽ सकैत छी।

दिवाकर : अपने हमरा गलत बूझि रहल छी। हम विवहदानक विषयमे कोनो वचन नहि मांगि रहल छी। दरअसल अपनेक व्यक्तित्व, एहि इलाकामे अपनेक शिक्षाक लेल समर्पण, छात्र लोकनि के अपने पाइ दऽ कऽ मदति करब, ई सभ हमरा चारू दिससँ पता लागि गेल अछि। हमहूँ किछु तेहने घरसँ आयल

छी...एक साँझ घरमे भोजनक ठेकान नहि। परम आदरणीय शिक्षक छलाह महेशबाबू...आजीवन विवाह नहि कयलनि।...अपन कमाइक सभ धन निर्धन मेधावी छात्रक पाछाँ खर्च कऽ देलनि। हमहूँ जे छी से हुनके कृपा सँ। परन्च, जहिया हमर स्थिति नीक भेल महेश बाबू नहि रहलाह।...अपने केँ देखिकऽ हुनके स्मरण भऽ गेल।...एहि बैगमे पचास हजार टाका लऽ कऽ निकलल रही जे कतहु आवश्यकता परल त' गनि देब।...हमर निवेवन यै जे ई टाका अपने राखि लेल जाय।

मास्टर : *(तमसाइत)* दिवाकर बाबू।...होश मे बात करू। अपने जनैत छी हम दहेजक एकदम विरुद्ध छी, अपने जा सकैत छी।

दिवाकर : हमरा गलत नहि बूझी मास्टर साहेब। अहि टाका के विवा. ह-दान सँ कोनो मतलब नहि। हम तऽ मात्र ई चाहैत छी जे अहि टाका सँ अपने निर्धन छात्रक लेल कोष बनाबी आ कतेको नरेन्द्र के पैदा करी...अपने विश्वास करू नरेन्द्रक संग हमर बेटीके विवाह हो अथवा नहि हो हमरा एकोरत्ती दुःख नहि हैत *(पैर पकड़ैत)* कृपया हमर अनुरोघ नहि ठुकराबी।

मास्टर : ई की कऽ रहल छी...अपने?

दिवाकर : मास्टर साहेब हम अपनेक पैर ताधरि नहि छोड़ब जा धरि अपने अहि टाकाके स्वीकार नहि करब। अपनेक रूप मे हमरा साक्षात महेश बाबूक दर्शन भऽ रहल अछि...हम हुनकर ऋणसँ उऋण होमय चाहैत छी *(कानऽ लगैत छथि)*।

घूटर : इनजीयर साहेब सपने ई की कऽ रहल छी? विवाह दानक कोनो गप्पे नहि आ पचास हजार टाका क्यो अहिना...।

दिवाकर : अपने चुप्प रहल जाओ...अहि मे विवाह-दानक कोनो प्रश्न नञि...ई हमर पाप पुण्यक हिसाब अछि। जँ मास्टर साहेब हमरा एतेक कृतघ्न बुझैत...

मास्टर : नहि-नहि उठल जाओ...अपने सन व्यक्तिक हृदय तोड़ब महापाप हैत...अहि टाका के अपनेक इच्छानुसार खर्च कैल जायत।

दिवाकर : हम अपनेकेँ कोना धन्यवाद दी से नहि जनैत छी। हे भगवान महेश बाबूक आत्मा आइ कतेक प्रसन्न होइत हेतन्हि। बेश मास्टर साहेब, आबजाइत छी। आब आज्ञा देल जाओ।

मास्टर : जी बेश।

घूटर : हौ देखिहक जल्दी सँ नरेन्द्रकेँ...

दिवाकर : *(तमसाइत)* घूटर बाबू हम एक बेर कहलहुँ ने जे अहि सभसँ विवाह दानक कोनो संबंध नहि...मास्टरो साहेब के दुःख हेतैन्ह आ' महेश बबूक आत्मा तऽ कलपि जेतैन, चलू...। (दूनू क प्रस्थान)

(फूकनाक लोटा गिलास नेने प्रवेश)

फूकना : आहिरेबा, ई सभ तऽ चलि गेला तऽ फेर ओ हलुआ ककरा लेल बनै छैक...नीके भेल चलि गेला। मलिकिनी मलिकिनी ओ सभ तऽ चलि गेला।

मास्टर : फूकना ई जे दिवाकर बाबू आयल छलाह

(स्त्रीक प्रवेश)

अहूँ आउ,...देखू ई फोटो पसिन्न अछि?

फूकना : मास्टर साहेब...एगोबात कहू? बलू ई काज मे घूटर पण्डित परल छथि, हमरा तऽ मोन नहि मानैऽ है–।

मास्टर : तो तऽ बेकार मे बदनाम करैत रहैत छहुन। हुनका हमरा सँ कतेक प्रेम छनि। सभ दुःख सुख मे उपस्थित रहैत छथि।

फूकना : अहाँ कहियो नञि बूझि सकब बलू। सोझ आदमी केँ टेढ़ बात बुझेनाई मोश्किल। मुदा एगो बात सुनिलिय बलू विवाह अपने जैसन आदमी के ओतऽ करक चाही...।

ई कारबला, पेंट सूटबला आदमी आ संग मे लौंगियामिरचाइ, एक बेर खा लेब तऽ पानि पिबैत-पिबैत...।

मास्टर : अच्छा अच्छा। जो तोरा के बुझाबय, जो अपन काजकर...।

(फूकनाक प्रस्थान)

(स्त्री सँ) कहू पसिन्न परल फोटो?

स्त्री : फोटे मे तऽ बड़ सुन्नरि लगैत छथि, परंच ई फूकनाक

गप्प...एहेन-एहेन पैघ लोककेँ देखि कऽ डरऽ लगैत अछि। ई बेक्सा केहेन छै। हुनकर छुटि गेलनि की?

मास्टर : हा...हा...हा छूटि नञि गेलैन। अहि मे पचास हजार टाका छैक। एकरा नीक जकाँ राखि दियौक; काल्हि-भोर मे मधुबनी बैंक मे जमा कऽ देबै।

स्त्री : पचास हजार टाका? अहाँ...अहाँ पाइ लऽ कऽ बौआक विवाह...

मास्टर : ओफ्फो...ई से पाइ नहि-थीक। अहाँ के कि विश्वास होइत अछि जे इम पाइ लऽ कऽ भाईक विवाह करायब? एकरा राखि दियौक, हम आबैत छी तऽ स्थिर भऽ कऽ बुझा देब। *(मास्टरक प्रस्थान)*

(प्रकाश बन्न होइतअछि)

दृश्य तेसर

(पोखरिक भीड़। दिवाकर बाबू का घूटर बाबूक प्रवेश)

घूटर : अपने तऽ हद् कऽ देलौ। बाप रे बाप पचास हजार टाका अहिना दऽ देल...ई मास्टर तेहेन सनकी अछि से...

दिवाकर : पंडितजी अपने नहि बूझबै ई तऽ बोर देलियैक अछि...आ अहि मे मास्टर के फँसयऽ पड़तैन। अपने स्थिर भऽ कऽ तमाशा देखू। मात्र अपनेक ई काज जे धीरे-धीरे सौसे गाममे प्रचार करा दियौक जे नरेन्द्रक विवाह एक लाख टाकामे हमरा ओतऽ निश्चित भऽ गेल छन्हि प्रचार तेना कऽ होयबाक चाही जे अपनेक नाम नहि आबय। (जेबसँ टाका बहार करैत) ई दू हजार टाका आओर राखल जाय, विवाह भेलाक बाद पाँच हजार टाका आओर अपनेक कमीशन माने कि अपनेक स्वागत सत्कार मे...।

घूटर : हें...हें...हें...। अपने निचिंत रहल जाओ। ओब हमरा सभटा बुझा रहल अछि।

दिवाकर : बेश तऽ आब आज्ञा दिय। परंच जे कहल से मोन राखब। बीच बीच मे मास्टर साहेब सँ भेंट कऽ-कऽ पत्र द्वारा सभ सूचित करैत रहब। बेश नमस्कार।
(दिवाकर आगू बढ़ि जाइत छथि। घूटर रुपैया गनऽ लगैत छथि। प्रकाश बन्न होइत अछि)

दृश्य-चारिम

(मास्टरक घरक दलान। गेनालाल पटिया पर बैसिकऽ पढ़ि रहल अछि। चन्द्रकान्तक प्रवेश।)

चन्द्रकान्त : मास्टर साहेब, मास्टर साहेब, विद्यार्थी, मास्टर साहेब घरमे छथि?

गेना : आउ ने, बँसू ने। मास्टर साहेब कतौ गेल छथि अबिते हेतां।
(चन्द्रकान्त कुर्सीपर बैसि जाइत छथि)

चन्द्रकान्त : की नाम अछि विद्यार्थी? केकर बालक छी?

गेना : जी हमर नाम गेनालाल, हमर बाबूके नाम फूकन मरर।

चन्द्रकान्त : ओह, फूकनाक बेटा! ओह विश्वास नइ होइत अछि, हमरा चिन्हैत छी?

गेना : हँ। अहाँ चन्द्रकान्त बाबू, पटनामे प्रोफेसर छियै।

चन्द्रकान्त : वाह। अहाँ तऽ बड़ सुन्दर बजैत छी। अच्छा ई तऽ कहू जे पटना की छै?

गेना : पटना शहर छै आ बिहारक राजधानी छै।

चन्द्रकान्त : बाह-बाह अहाँ तऽ बड़ तेज छी।

मास्टर : *(प्रवेशक संग)* के? भाई! कहिया एलौं?

चन्द्रकान्त : आइये भाई, कहू की हाल चाल?

मास्टर : सभ ठीक ठाक। कहू कतेक दिनक छुट्टी मे आयल छी।

चन्द्रकान्त : आब परमानेन्ट छुट्टी मे...

मास्टर : से की?

चन्द्रकान्त : भाई रिजाइन कऽ देलौं। तंग आबि गेल छी, ई युनिवर्सिटीक वातावरण सँ। एतेक दुषित, छीः, छीः, छीः, मात्र पालिटिक्स, पढ़ाई लिखाई सँ कोनो सरोकार नहि। भगवानक कृपा सँ बाप पित्ती बहुत छोड़ि गेल छथि, आब गामे रहब, अपन लिखा पढ़ी करब।

मास्टर : ओह।

चन्द्रकान्त : भाई, ई फूकनाक बेटा तऽ बड़ संस्कारी बुझाइत अछि।

मास्टर : बड़ तेज, डिस्ट्रीक्ट स्कौलरशीप भेटलैक अछि। आब एकरा नेतरहाटक टेस्ट दियाकऽ ओतहि पठेबाक विचार अछि।

गेना : हम कतौ नै जैब, हम तऽ अहीं लऽग पढब मास्टर साहेब।

मास्टर : रौ एना जिद्द नहि करबाक चाही, ओहि इसकुल मे तोहर जितगी बेनि जेतौ।

गेना : नहि नहि हम कतौ नै जायब। हम अही लऽ पढ़ब, हम कतौ नै जैब।

मास्टर : अच्छा-अच्छा ठीक छै जो अखैन आब काल्हि अबिहें...

(गेना बस्ता समेटिकऽ प्रस्थान करैत अछि)

चन्द्रकान्त : भाई पढ़बियौ एकरा हम चलैत छी, आबतऽ भेंट होइते रहत।

मास्टर : अरे बैसू भौजी सँ भेंट भेल की नहि? हे यै सुनैत छी, देखू के आयल छथि।

(स्त्रीक प्रवेश)

चन्द्रकान्त : गौर लगै छी भौजी।

स्त्री : कोना छी?

चन्द्रकान्त : कहुना जीबि रहल छी। अपन कहू।

स्त्री : हमर की?

चन्द्रकान्त : अहाँ के की? अहींक तऽ दुनियाँ अछि। देखैत नै छी सेठानी जकाँ चतरल जा रहल छी।

स्त्री : धुर...अहाँ के ठठ्ठा सुझैत अछि, आब तऽ बूढ़ भेलौं...आबो तऽ।

चन्द्रकान्त : बूढ़? हा हा हा, हे यै भौजी, भाइ छथि एहिठाम तऽ की

कहू...कहियो असगर मे भेंट हो तखैन ने बुझबै हम केहेन बूढ़ छी।

मास्टर : हा हा हा, भाइ एकटा गप्प तऽ कहबे नहि केलौ। नरेन्द्रक विवाह स्थिर कऽ देलियैन। दिवाकर बाबू ओतय। अररिया मे पी. डब्ल्यू. डी. मे एजक्यूटिव इन्जिनियर छथि। अहूँके बरियाती चलऽ पड़त।

चन्द्रकान्त : वाह, उत्तम गप्प। परंच, भाइ बरियाती हम नहि जा सकब।

मास्टर : से कियैक?

चन्द्रकान्त : भाई अहाँ तऽ जनिते छी जे हम स्पष्टवादी छी। हम ई सिद्धान्त बनौने छी जे जाहि विवाहमे लेन-देन भेल हो हम ओहि मे सम्मलित नहि हैब, आ' अहाँ अहि विवाहमे टाका लेलियैक अछि।

मास्टर : भाई के कहलक इ गप्प?

चन्द्रकान्त : के कहत। साँसे गाम जनैत अछि जे अहाँ एक लाख टाका गनेलियैक अछि।

स्त्री : आब बुझियौ। हम तऽ पहिने कहैत रही जे ई आदमी ठीक नहि अछि।

मास्टर : अहाँ चुप रहूँ। एहेन सभ्य आदमीक विषयमे अनुचित गप नहि बाजी।...भाई हम सत्ते कहैत छी, एकटा पाइ नरेनक विवाहक लेल नहि लेने छी। ओ तऽ दिवाकर बाबू पचास हजार टाका जबर्दस्ती...

चन्द्रकान्त : जबर्दस्ती की? आब हम चलैत छी, काल्हि भेंट हैत। *(प्रस्थान)*

(मास्टर माथपर हाथ धऽ कऽ बैसि रहैत छथि)

स्त्री : ई सभ घूटर भाईक काज छी। सौंसे गाम मे हल्ला करबा देलैनि...अहाँ हुनकर टाका आपस कऽ दियौन।

मास्टर : नै...नै...ओ एतेक नीक काजक लेल, कतेक नेहोरा कऽ कऽ ई टाका देलैनि अछि, हम कोना आपस कऽ सकैत छी। ई घूटर भाई केर कोनो दोष नहि। हम तऽ अपने कैक गोटा के कहलियैक जे पचास हजार टाका दिवाकर बाबू, गरीब

छात्रक हेतु दऽ गेल छथि, आब लोक दोसरे माने लगा दिए तऽ हम की कऽ सकैत छी। खैर, हमरा सभहक आत्मा पवित्र अछि लोक के जे मोन होइ से बाजऽ दियौक।

स्त्री : हमरा तऽ डऽर लगैत अछि। कहीं बौआ सेहो इ सूनिकऽ तमसा ने जाथि। हे, हम तऽ फेर कहब जे कोनो गरीब घरक सुशील कनियाँ...

मास्टर : *(तमसाइत)* अहाँ बेर-बेर एके रट किएक लगौने छी? अरे स्टेटस कोनो चीज होइत छैक। सज्जन व्यक्ति के हम बचन दऽ देने छियैनि...विवाहक दिन निश्चित भऽ गेल, आब अहाँ इ तेसरे राग अलापि रहल छी।...आब अहि विषयमे कोनो गप नहि हेबाक चाही।

स्त्री : जहाँ किछु बाजू कि तमसा जाइत छी, पढ़ल-लिखल नहि छी तँऽ किनै...जे मोन हुए से करु..

(बजैत प्रस्थान प्रकाश बन्न होइत अछि)

दृश्य पाचम

(एकटा कुर्सीपर मास्टर साहेब बैसल छथि आ नरेन्द्र बगलने ठाढ़ छथि। फूकना घरसँ अटैची बेडिंग आदि समानसभ आनि आनिकऽ सखि रहल अथि। मास्टर साहेब रहि-रहि कऽ चश्मा निकालि आँखि पोछि रहल छयि। दरवज्जाक पाछू नरेन्द्रक नव विवाहिता आ मास्टर साहेबक स्त्री ठाढ़ छथि)

फूकना : *(ऊच्च स्वर मे)* सभटा समान बहार भऽ गेलै, मिलाकऽ देखि लिय बलू। कथू छूटि जैत तऽ फेर कहब जे बलू फूकने चोराकऽ अपन घर लऽ गेल।

नरेन्द्र : *(जेब सँ एक्टा पुर्जी बहार कऽ समान मिलबैत)* हँ सभटा समान तऽ आबि गेलौ खाली एकटा श्रृंगारदानी रहि गेलौ जो नेने ओ...

(फूकनाक प्रस्थान)

मास्टर : नरेन्द्र

नरेन्द्र : जी।

मास्टर : अहाँक विवाह भेना अखैन मात्र बारह दिन भेल अछि आ द्विरागमनक मात्र पाँच दिन। काल्हि भरफोड़ी छल आ आइ जा रहल छी, कोना-दल लगैत अछि...विवाह आ द्विरागमनक गहमा गहमी सँ आइए सभ निवृत भेल अछि। वौआसिन हाथक बनाओल भोजनो नहि केलहुँ किछु दिन रहि जैतों तऽ...

नरेन्द्र : भाई...छुट्टी...एतेक पैघ रिस्पॉसिवलीटी...

मास्टर : हँ से त' ठीके जतेक छुट्टी लऽ कऽ आयल छी ताहि सँ बेशी नहि बढ़ेबाक चाही। अनुशासन एकरे कहैत छैक। परन्च, कनियाँ के जँ छोड़ि दितियैनि...
(पर्दाक दोसर दिस)

स्त्री : कनियाँ भाई तऽ ठीके कहैत छथि...अखन तऽ ठीक सँ हम सभ अहाँ के देखबो नहि केलहुँ अछि।

रीता : नहि-नहिइ नहि बुझथिन जे हमरा बिना नरेन्द्र के कतेक दिक्कत भऽ जेतैन, नहि रहबाक ठेकान ने खेबाक ठेकान।

फूकना : *(हाथमे पिकदानी नेने प्रवेश)* बलू एगो बात पूछू छोटकी मालकिनी...जे बलू आइ सऽ बारह दिन पहिने नरेन बौआ के तऽ बलू कोनो दिक्कते नै होइ छलैनि बलू इ बारह दिनमे ई कतऽ सऽ दिक्कते-दिक्कत...।

मास्टर : फूकना...वेशी बकर-बकर नीक नै अपन काज कर...

फूकना : ठीके तऽ हमरा बकर-बकर करबाक कोन काज हे लिय नरेन बौआ अपन पिकदानी बलू।

नरेन्द्र : पिकदानी। फूकना तोरा ई पिकदानी आन' के कहलकौ?

फूकना : अहीं तऽ बलू कहलौं जे एगो इएह बँचि गेल अछि...

नरेन्द्र : ओफ्फ हम कहलियौ शृंगारदानी शृंगार वक्सा आ तो...

रीता : ओ तऽ हम लेने छी *(पर्दाक पोछुसँ बजैत छथि। मास्टर साहेब अवाक भऽ जाइत छथिः फेर अपना के ँ संयत करैत...)*

मास्टर : फूकना देख तऽ इ रमुआ लऽ कऽ नञि एलौ अखन धरि। ट्रेनक टाइम भेल जा रहल छै।

घूटर : *(प्रवेशक संग)*...अधैर्य जुनि होअह हौ मास्टर। रमुआ आ' सौखिया दूनू क रिक्सा आबि रहल छै। दोकान लऽग रिक्सा ठाढ़ कऽ कऽ चाह पिबैत छल। पुछलियै तऽ कहलक जे नरेन बौआ सकरी जेथिन टिरेन पकड़ऽ लेल। हौ नरेन्द्र दू टा रिक्सा किएक मंगौने छह। हौ मारते समान देखैत छियह।

नरेन्द्र : भाई असल मे...

घूटर : ओ हो हो बुझलिय, बुझलिय सपरिवार जा रहल छह किने?

नरेन्द्र : जी।

घूटर : जेबेक चाही...जेबेक चाही...आब मास्टरके कथीक कमी...तोरा पढ़ा लिखाकऽ बड़का हाकिम बनाइये देलखुन आ' तोहर विवाहमे पचास हजार टाका भेटलैनि ताहि सँ बाँकी जिनगी...

मास्टर : घूटर भाई...

घूटर : तमसाइत किएक छह? हमरा सँ कोनो गलत गप बजा गेल की?

फूकना : अहाँ सँ बलू गलत गप किएक बजाएत...हरिश्चन्द्रक बाद तऽ अहि न जनम लेलौ यौ लौंगिया मिरचाइ पण्डित।

घूटर : देख रे फूकना, तोहर दिमाग बहुत बढ़ि गेल छौ, तोरा इ मास्टर माथपर रखने रहैत छौक तऽ जुनि बूझ जे...। रौ, तोरा सन-सन के हिम्मत नहि होइत छलै जे हमर बाप दादाक डयोढी पर पैऽर धरैति।

मास्टर : फूकना

फूकना : जी मास्टर साहेब।

मास्टर : जो अपन काज कर। सुन...आँगन सँ पासबुक आ चेकबुक मँगने आ...हमर इसकूल बला झोड़ामे हैत।

(फूकनाक प्रस्थान संगमे मास्टरक स्त्रीक प्रस्थान)

घूटर : ई नीक केने छह जे पाइ पासबुकमे रखने छह। आइ कालिक जमाना तऽ...अँय हौ मास्टर तोरा इनजीयर साहेब सँ पचास हजार दिया देलियह परंच, तों तऽ एकटा छदाम

विवाह मे खर्च नञि केलहक, सबटा डकारि लेलहक...बाह रे इनजीयर साहेब कथी लेल एक पाइ तकर चिन्ता...आ केहेन बढ़ियाँ इन्तजाम बाह...घर नञि भेटलैन ताहि सँ की बर तऽ फस्ट क्लास प्राप्त भेलैनि।

(फूकना पासबुक आनिकऽ दैत अछि)

मास्टर : *(चेकपर हस्ताक्षर करैत)* नरेन्द्र राखू इ पासबुक। अहि मे सभटा पाइ जमा करा देने छी-मधुबनी स्टेट बैंक मे। ट्रान्सफर करालेब *(पासबुक नरेन्द्रक हाथमे दऽ दैत छथि। नरेन्द्र पासबुक उनटा-पुनटा कऽ देखैत छथि)*

नरेन्द्र : पचास हजार! भाई पूरा पचास हजार! भाई विवाहमे जे खर्च भेल?

फूकना : से हमरा स' ने पूछू बलू...मास्टर साहेब अपन बलू किदेन तऽ कहै छै जे परमिडेंट फण्ड सँ बहार कऽ कऽ बलू अहाँक वियाहमे खर्च केलेनि।

नरेन्द्र : अँय, भाई ई अहाँ की केने छी प्रभिडेन्ट फंड सँ...

मास्टर : नरेन अहाँ हमर भाइये नहि बेटा सेहो छी। अहाँ नै तऽ माय के देखलौ आ ने बाबू के...

(रिक्सा आबि गेल अछि फूकना समान सभ उठा कऽ लऽ जा रहल अछि)

नरेन्द्र : भाई इ पासबुक अहाँक थीक अहाँ राखू। इ हम नञि लऽ सकैत छी।

मास्टर : नरेन जिद्द नञि करी...

नरेन्द्र : नञि भाई नञि ई हम नञि लऽ जा सकैत छी।

घूटर : केहेन असभ्य छह। मास्टर तोरा पढ़ा-लिखाकऽ एतेक पैघ आफीसर अही लेल बनेलखुन जे हिनकर आज्ञा के उलंघन करऽ मास्टर कहै छथुन्ह तऽ पासबुक राखि लह।

नरेन्द्र : *(भौजी लऽग जाईत छथि)* भौजी...भौजी अहीं भैया के बुझबियौन...ई पासबुक राखि लिय भौजी...

स्त्री : बौआ राखि लिय आ' हमरा सभ के अहिठाम पाइक काजे कोन हैत।

नरेन्द्र : नञि भौजी नञि ई हम नञि कऽ सकैत छी। ई पासबुक अहाँ लऽ लिय भौजी। एतेक छोट जुनि बनाउ हमरा।

रीता : *(नरेन्द्रक हाथसँ पासबुक छिनैत)* बहिन तऽ ठीके कहैत छथि। एतऽ पाइक कोन काज हेतै। ओतऽ नव घर बसेबाक अछि। पचीस तरहक खर्च हैत...तऽ कतऽ सँ आनब?...आब की बुझैत छियै जे हमर पापा फेर देबऽ औता?

नरेन्द्र : रीता...

रीता : चिचिया किएक रहल छी...?

मास्टर : नरेन समय भऽ गेल, अहाँ सभ रिक्शा पर बँसू।

(नरेन्द्र आ रीता बढ़ैत छथि, प्रकाश बन्न होइत अछि।)

छठम् दृश्य

(मास्टर माथपर हाथ धऽ कऽ बैसल छथि। स्त्रीक आँङ्गन सँ प्रवेश)

स्त्री : आब उठू ने। स्नान कऽ कऽ पूजा पाठ कऽ लिय ने। कतेक अबेर भेल जा रहल अछि।

मास्टर : हँ....बारह बाजि गेल अछि...। आइ मोन कोनादन लागि रहल अछि। 14-15 दिन सँ कतेक रमन-चमन छल। आइ घर एकदम उदास लागि रहल अछि। नरे जखन सोझामे रहैत छथि तऽ कतेक मोन प्रफुल्लित रहैत अछि...हे यै हमर झोड़ामे एकटा पोस्ट कार्ड हैत...नेने तऽ आउ, नरे के चिट्ठी लिख दैत छियैन...

स्त्री : चिट्ठी लिखबँइ...? अहाँके की भऽ गेल अछि आइ? बौआ तऽ अखन आधे रस्तामे हेता, समस्तीपुर सेहो नहि पहुँचल हेता आ। अहाँ चिट्ठी लिखबैनि?

मास्टर : ठीके कहैत छी। भोरेमे तऽ गेलाह अछि लगैत अछि जे कतेक दिन भऽ गेलैनि हुनका गेना...यै अहाँके उदास-उदास नहि लागि रहल अछि?...किछु कहलौं...नहि...अरे अहाँ तऽ कानि रहल छी?...पता नहिं आइ हमर दिमागके की भऽ गेल अछि...अन्ट-सन्ट बजने चलल जा रहल छी...अरे अहाँ

के उदास नहिं लागत तऽ बेकरा लगतै...अहाँ तऽ मायो सँ बढ़िकऽ छियैनि नरे के...जन्म नञि देलियैन...परंच

(गेनालालक बस्ता टँगने प्रवेश)

गेना : मास्टर साहेब प्रणाम।

मास्टर : के गेना...आ बैस...पटिया बिछा ले...

स्त्री : गेना...आइ जो...काल्हि सँ पढ़ऽ अबिहें...आइ हिनका अराम करऽ दहुन।

मास्टर : नहि-नहि...पढ़ऽ दियौ एकरा...ताधरि हम स्नान कऽ लैत छीं...गेना पटिया बिछा ले...

(गेना पटिया बिछा कऽ बैसैत अछि आ पढ़ैत अछि)

गेना : ई सबाल-नहिं-बुझाइत अछि...*(मास्टर साहेब एकटक आकाश दिस देखि रहल छथि)*

गेना : *(पुनः)* मास्टर साहेब...मास्टर साहेब ई सवाल नहि बुझाइत अछि...

मास्टर : हूँ...ला...देखियो तऽ...

गेना : मास्टर साहेब...आइ अहाँ के मोन खराब अछि की? अहाँ एतहि पड़ि रहू...हम पैर जाँति दैत छी...

मास्टर : नहि-नहि कोनो खास बात नहि तो अपन पढाई कर...

गेना : नहिं मास्टर साहेब...हम अहाँक पैर जँतबे करब

(जबर्दस्ती कुर्सीपर सँ उठेंबाक प्रयास करैत अछि)

मास्टर : हा...हा...हा बड्ड जिद्दी भ' गेल छै रे नेना...हा...हा...हा यै...सुनैत छी इ गेना ओहिना जिद्द करैत अछि जेना नरे बच्चा मे करैत छलाह...आइ आइ हम अहाँक पैर जँतबे करब...हा...हा...हा...

गेना : *(पैर जँतैत)* मास्टर साहेब। छोटका मालिक अहाँ सँ झगड़ा कऽ कऽ किएक चलि गेलाह?

मास्टर : झगड़ा...नहि तऽ। के कहलकौ तोरा?

गेना : बाबू कहैत रहै जे छोटका मालिक अपन कनियाँक डरे झगड़ा कऽ कऽ चलि गेलाह।...मास्टर साहेब लोक बियाह किएक करैत छै?

मास्टर : गेना भगवानक एहि सृष्टि के चलेबाक लेल लोक के विवाह करऽ पड़ैत छैक। परन्च कहियो काल इ विवाह बड़ दुःखदायी होइत छै—अपनो लेल आ समाजोक लेल...

(स्त्रीक कड़ू तेलक बाटी आ गमछा नेने प्रवेश)

गेना : मास्टर साहेब हम बियाह नहि करब आ कहियो अहाँके छोड़ि कऽ नञि जैब।

स्त्री : हँ रौ...दौड़ते बियाह करबें-फेर के पुछैत अछि एहि बुढ़वा मास्टर के?

मास्टर : अरे जाय दियौ...अखैन बच्चा छै...अखैन की बुझऽ गेलै...

गेना : मास्टर साहेब...हम सब बुझैत छियै...बियाहक बाद लोकके घरबाली सँ डऽर होइत छै...घरबाली जैह कहैत-छै सैह करऽ पड़ैत छै।

स्त्री : बाप रौ बाप...रौ केकरा देखलहीए घरबाली सँ डरैत? तोरा मास्टर साहेब के हमरा सऽ डऽर होइत छनि की?

गेना : मलिकिनी...अह! दूनू गोटे तऽ देवता छी। आन सभके तऽ सँह हाल छै...हमरा बाबू के सेहो माय सँ बड़ डऽर होइत छै छोटको मालिक तऽ छोटकी मालिकिनी के डऽरे—

स्त्री : गेना खबरदार जे बौआक विषयमे एहन गप्प बजलैं। के कहलकौ तोरा ई सभ...?

गेना : बाबू कहैत रहै...

स्त्री : इ फूकना अपना के ही बुझैत अछि? अनाप सनाप *(फूकनाक प्रवेश)* फूकना बौआक विषयमे तों सभ की बजैत घुरैत छैं?

फूकना : ठीके तऽ बजै छी बलू...अहाँ दूनू गोट तमसायब तऽ तमसाउ...मुदा छोटका मालिक आ छोटकी मलिकिनी जे केलैन दलू से हमरा एको पाइ नीक नञि लागल...

स्त्री : तोरा नीक लगला सँ कोन फर्क...बेशी...काबीलतीक दाबा छौ तऽ जो अपन घरक रस्ता पकड़...हमरा कोनो जरूरत नहिं अछि तोहर...

फूकना : नै मलिकिनी...एना नञि निकालू बलू।

मास्टर : जाय दियौ...ई अनपढ़ अछि...हरेक बात के अपना हिसाबे लैत छै...फूकना जो अपन काज कर...गेना जो काल्हि सँ अबिहें...

गेना : *(सकुचाइत)* मास्टर साहेब अहाँक मोन खराब अछि...अहाँ कतौ नञि जाउ। घरे मे आराम करू...

मास्टर : गेना एमहर सुन *(अपना लऽग बजा ओकर माथ पुर हाथ राखि दैत छथि)*

...नहि जायब कतौ नहि जायब...घरे मे रहब...आब तो ँ...जो...

(गेना अपन बस्ता उठा कऽ जाइत अछि)

(प्रकाश बन्न)

(एतऽ 'मध्यान्तर' देल जा सकैत अछि)

दृश्य सातम

(नरेन्द्रक शहरक डेरा'क ड्राइंग रूम। साधारण। एकटा सोफा सेट। रूममे एकटा टूल पर टेलिफोन। नरेन्द्र आफिस जेबाक लेल तैयार छथि।)

नरेन्द्र : रीता...रीता...

रीता : *(प्रवेशक संग)* अरे एतेक चिचिया किएक रहल छी...?

नरेन्द्र : रीता हमर जेबमे पाँच सय टाका छल?

रीता : हँ...ओ तऽ हम पछिला मास जे साड़ी उधार लेने रही तेकरे देबाक लेल निकालि लेलौं।

नरेन्द्र : ओह...ओ तऽ हम भैया के पठेबाक लेल रखने रही आ।...

रीता : घरक तऽ खर्च नीक जकाँ चलिते नहि अछि आ अहाँ के भैया भौजी सुझैत छथि—हूँ....अहाँक पोस्ट पर जे सभ छथि हुनकर सभक रहन-सहन देखैत छियैनि। बगले मे तऽ श्रीवास्तव साहेब छथि...

नरेन्द्र : ओफ ओ रीता...अहाँ बुझैत किएक नहि छी जे अनकर देखा-देखी करबामे लोकके गर्तमे डूबऽ पड़ैत छैक।

रीता : के कहैत अछि गर्तमे डूबऽ? नहि डूबू...तखन भैया भौजीक चिन्तो नहि करू...

नरेन्द्र : केना नहि करू— ओ हमर भाई-भौजीयेटा नहि छथि। ओतऽ हमर मायो-बाप सँ बढ़ि क' छथि...आइ आठ मास भऽ गेल हमरा सभके गामसँ एना...हरेक मास दरमाहा सँ पाइ पठबऽ चाहलौ परन्च,...जे अपन पेट काटि कऽ काटि हमरा पढ़ौलक प्राभिडेन्ट फन्डक पाइसँ हमर विवाहमे खर्च केलक तकरा हमर दरमाहाक मधुरो नसीब नै...

रोता : हूँ। नसीब नै...दरमाहाक सम पाईमे मधुर कीन लिय आ' जाउ अपन भाई भीजी के खुआ दियौन...सैह रहय तऽ हमरा कियैक अनलहुँ।

नरेन्द्र : तमसाउ जुनि...कने स्थिर मोन सँ सोचू कि हमरा सबहक ई कर्त्तव्य नहि जे हुनका लोकनि के खुश रखबाक प्रयास बरी, हुनका लोकनि लेल चिन्तित रही—

रीता : चिन्ता खाली हमही सब करी। हुनका लोकनि के हमरा सभक कोनो चिन्ते नहि। आइ धरि एकटा पोस्टकार्डो नहि लिख भेलैन जे हमरा लोकनि कोना छी?

नरेन्द्र : हमहूँ तऽ एकोटा पत्र लाजे नहि लिखलियैनि अछि। सभ बेर सोचैत छी जे पाइ पठेबनि तऽ सगे चिट्ठी लिखबनि परञ्च...खैर हम चलैत छी...आफिसक समय भऽ गेल... *(प्रस्थान)*

(प्रकाश बन्न होइत अछि)

(पुनः मंच पर प्रकाश। रीता एकटा पत्रिका पढ़ि रहल छथि पार्श्व स' दरवाजा ढ़कढ़केबाक एवं पोस्टमैनक स्वर। रीता बढ़ि कऽ दरबज्जा फोलैत छथि आ पोस्टमैन सँ चिट्ठी लऽ लैत छथि)

रीता : ओफ्फ फेर चिट्ठी...पता नहि ई चिट्ठी एनाइ कहिया बन्द हैत *(फोलिकऽ पढ़ैत छथि।) पार्श्व सँ मास्टरक स्त्रीक स्वर मे चिट्ठी पढ़ल जाइत अछि)*

प्रिय बौआ,
शुभाशीष।

अहाँक भैया कतेको पत्र दऽ चकल छथि परञ्च एकोटाक जबाव नहि। आई दू मास सँ बिछाओन पकड़ने छथि अहाँक भैया। स्कूल सँ छुट्टी नेने कतेक दिन चलत? पोद्दार डाक्टर कहैत छथिन जे टी.वी. भऽ गेल छनि। हमरा तऽ किछु नहि फुराइत अछि। घरक खर्च, दवाईक खर्च चलब आब बहुत मोशकिल भऽ गेल अछि। बौआ अहाँ एना किएक तमसाएल छी हमरा सब सँ कोनो गलती भऽ गेल हो तऽ क्षमा करब। परन्च कम सँ कम एक बेर अपन भाई के देख जाउ। ओ तऽ मात्र अहाँक नाम लैत रहैत छथि।

अहींक,
भौजी

रीता : हूँ...अहींक भौजी *(चिट्ठी फाड़ि कऽ टुकड़ा-टुकड़ा कऽ दैत छथि)*
रश्मियाँ...रश्मियाँ

रश्मियाँ : *(प्रवेशक संग)* जी मेम साहेब।

रीता : *(फाड़ल चिट्ठी दैत)* एकरा बाहर मे फेंक दही–
(रश्मियाँ लऽ कऽ चलि जाइत अछि, प्रकाश बन्न)

दृश्य आठम

(भोरका समय। नरेन्द्र सोफा पर बैसल एकटक उपर देखि रहल छथि। रश्मियाँ चाह राखि जाइत अछि। कनेकाल बाद)

रीता : *(प्रवेश)* अरे...सामने चाह राखल अछि अहाँ एकटक छत के निहारि रहल छी?

नरेन्द्र : अय रीता...भरि राति निन्न नहि भेल...तेहेन-तेहेन सपना बेखलहुँ अछि भैया-भौजीक विषय मे।

रीता : बस फेर शुरू भऽ गेलो–भोर होइते भैया-भौजी।

नरेन्द्र : रीता...रीता कनेकाल हमरा असगरे छोड़ि दिय।

रीता : बाह असगरे छोड़ि दियऽ तऽ हम की देबाल सँ गप्प करी। भोरे-भोर लोक नीक-नीक गप्प करैत अछि आ अहाँ के तऽ बस असगरे छोड़ि दिय...सुनु आइ रवि अछि...चलू कतौ घूमऽ चलैत छी...

नरेन्द्र : आई? नहि...फेर कोनो दोसर दिन...

रीता : हूँ। अच्छा आई बजार चलू फ्रीज किनबाक अछि...

नरेन्द्र : फ्रीज? फ्रीज कीनब से पाई कतऽ अछि?

रीता : पाई! पाई Installment मे देबै—कौन एहन बोकानदार अछि जेकरा अहाँ कहि देबै आ ओ Intallment पर नहि दैत...आखिर अहाँ Income Tax Officer छी...

नरेन्द्र : रीता अहाँ हमर स्वभाव जनैत छी तखन फेर एहन एप्प करैत छी...

रीता : राखू, अपन स्वभाव अपने लऽग। हमरो लोक चिन्हैत अछि हम अपने जा कऽ आई फ्रीज अनबे करब...

नरेन्द्र : रीता खबरदार जे एहन काज केलौ तऽ ठीक नहि हैत।

रीता : किएक ठीक नहि हैत...अहाँ जे करी से सभ ठीक आ हम गलत। हमर पापा देबऽ चाहैत छथि से नै लेब। अपनो नै कीनब...हूँ हमर पापा वला पचास हजार टाका बैंक मे रखने छी दुनू भाई मिल कऽ आ हमर घर...

नरेन्द्र : रीता हमर भाई पर कलंक जुनि लगाउ ओ तऽ पासबुक दऽ देने छथि...परन्च ओ हुनकर पाई छनि। ओ एकटा नीक काजक लेल अहाँक पापाक अनुराध स्वीकार कऽ ओ पाई लेलनि। हम ओहि मे सँ नहि छू सकैत छी...अहाँ के फ्रीज ने चाही ठीक छै पन्द्रह दिनक भीतर फ्रीज आबि जैत

रीता : सत्ते...सत्ते कहैत छी?

नरेन्द्र : हाँ...आबि जैत...

(पार्श्व सँ घूटरक स्वर—नरेन्द्र हौ नरेन्द्र)

नरेन्द्र : अरे ई तऽ घूटर भाई बुझाइत छथि *(दरबज्जा फोलि)* अरे घूटर भाई अहाँ...आउ-आउ...रीता अहाँ भीतर जाउ घूटर

भाई आबि रहल छथि

रीता : के घूटर भाई? ओहो वैह ने जे हमर विवाह मे पापा के मदत केने छलथिन...आ जे पचास हजार टाका वला पासबुक दिया देने रहथि।

नरेन्द्र : *(तमसाइत)* रीता...

(घूटर प्रवेशक संग)

घूटर : दुर्गा...दुर्गा...हौ एना क्यो घरवाली पर तमसाय—घरवाली पर तामसक अर्थ अपना आप पर तामस...हौ घरवाली होइत छै, अर्द्धगिंनी...ताहि हिसाबे तामस तऽ अपने आधा अंग पर...कह' कोना छह?

नरेन्द्र : नीके छी। घूटर भाई, भैया आ भौजी कोना छथि?

घूटर : हौ हम तऽ मास भरि सँ बाहर छी नूनू कतऽ चाईबासा गेल रही...आब' तऽ नहि दैत छलाह। आ तेहने आवेशी हमर पुतोहु...आब आपस होइत रही तऽ सोचल हुँ दू चारि दिन तोरो अन्न खेने चली...बौआसीन एक गिलास जल चाही।

रीता : जी तुरत...*(प्रस्थान)*

घूटर : हौ नरेन्द्र एतेक पढ़ि लिख गेलह। एतेक पैघ पोस्ट पर छह तथापि ई दकियानूसी विचार। हौ हम तऽ पहिल बेर जखन चाईवासा गेल रही तऽ नूनूक घरवाली के कहि देलियैन जे हे बौआमीन ई गाम नहि छैक, शहर छैक...अहिठाम पर्दा करबाक कोनो औचित्य नहि आब देखह वेटा पुतोहु पोता, पोती सब संगे बैसि कऽ खाईत छी...

नरेन्द्र : परन्च भाई, ई उचित नहि...

रीता : *(जलक संग प्रवेश)*— की उचित नहि? घूटर भाई दस दिन एतऽ रहताह— अहाँ चलि जैब आफिस...हम ओहि घर मे आ घूटर भाई एहि घर मे माथ पर हाथ धऽ कऽ की बैसल रहब?

नरेन्द्र : ओफ्फ...*(उठैत)* अहाँ के के बुझाबय। घूटर भाई, हम कने अबैत-छी।

(घर चली जाइत छथि)

घूटर : बड़ तमसाह भऽ गेलाह अछि नरेन्द्र बौआसीन प्रसन्न छी किने।

रीता : की प्रसन्न रहब। हिनका तऽ भोर सँ साँझ धरि भैया-भौजी भैया-भौजी जपबा सँ फुर्सते नै...

घूटर : ओह! तऽ इ मास्टर अखन...धरि...सैह तऽ कहैत रही जे एतेक पैघ अफसर आ घर मे किछु नहि। इं जीयर साहेब तऽ कहैत छलाह नरेन्द्र दू-तीन साल मे कैकटा इंजीयर के कीन सकैत छथि।

रीता : हूँ...। पापा कत' हमरा धकेल दैलैनि!...! दरमाह सँ संतोष करऽ पड़ैत अछि...। चाहथि तऽ की नहि कऽ सकैत छथि। लाख-दू लाख तऽ मास दू मे...मुदा ई तऽ हरिश्चन्द्रक...

घूटर : भाई छथि...सैह ने।...मुदा मास्टरो के तऽ हालत बड़ खराब छै। आई दू मास सँ टी.वी. लऽ कऽ घरमे पड़ल अछि...पोद्दार डॉक्टर कहैत छल जे आरो कोनो...कोनो बीमारी छै...नरेन्द्र के नहि कहलियैन जै...

रीता : नीके कैल।... आ हे हिनका किछु कहबो जुनि करियौन नहि ते'।

घूटर : मुदा मास्टर तऽ कैकटा चिट्ठी लिखलकै अछि। नरेन्द्र के... पता तऽ हेबे करतैन...भऽ सकैत अछि अहाँ के नहि कहने होथि...।

रीता : *(लऽग आबि)*...घूटर भाई हिनका किछु बुझल नहि छनि, सभटा चिट्ठी घरक पता सँ अबैत छै। ओ' हिनका हम एकोटा नै देलियैनि अछि...।

घूटर : बाह...बाह...खूब नीक काज केने छी...आब बुझाइत अछि अहाँ इनजीयर साहेबक असली बेटी छी...हमर सार अहाँक विषयमे लिखने छलाह जे खूब पढ़ल-लिखल, गृह कार्यमे दक्ष चतुर...से सभ उचिते...परन्च, बौआसीन...हम घूटर। कने हमरो पर खेयाल राखब असलमे घूटर के पेटे बलाय। घूटर के जँ नीक-नीक व्यंजन सँ पेट नहि भरैत छनि तऽ पेट मे बात पचबे नहि करैत छनि...

नरेन्द्र : *(प्रवेशक संग)* की नहि पचैत अछि घूटर भाई?

घूटर : हौ बौआसीन माउस मंगेबाक गप करैत छलीह तऽ सैह कहलियनि जे बाहरक माउस तऽ हमरा पचिते नहि अछि। नीक हेतह जे माछे लऽ आबह...आहे...अहि सभ ठाम मोशकिल सँ तकला पर जमीरी नेबो भेटैत छैक, से अवश्ये नेने अबिअह...ता हम कने डोल-डाल सँ निवृत होइत छी...केमहर अछि बाथ रूम बौआसीन?

रीता : हँ...हँ अबियो ने एमहर ओहि दिस...

(घूटरक प्रस्थान)

नरेन्द्र : आइ रवि कऽ इँ माछ माउसक गप किएक उठेलहुँ...अखन तऽ रहबे करताह दोसर दिन अनितहुँ...

रीता : ओ बेचारे एतेक दूर सँ एलाह अछि...हमर की अहीं के ने भाई छथि।

नरेन्द्र : भाई...ओह...हँ भाई छथि...लाउ झोड़ा...

रीता : अपने किएक जैब...चपरासी...

नरेन्द्र : ओ हमर बापक नोकर नहि अछि...जहिना हम सरकारी नोकर तहिना ओहो...लाउ झोड़ा...

(रीता झोड़ा आनिक' दैत छथिन नरेन्द्रक प्रस्थान)

नवम दृश्य

(घूटर स्नान क' क' खूब जोर-जोर सँ दुर्गाक पाठ करैत सोफा पर बैसैत छथि। दुर्गा पाठ चलि रहल छनि— बीच-बीच मे माछक सुगंध लेबाक अभिनय करैत छथि)

रीता : घूटर भाई...भोजन परोसी ने?

घूटर : हँ-हँ अहि मे किएक बिलम्ब? नरेन्द्र स्नान कलैन?

रीता : हँ ओहो तैयार भऽ गेल छथि।

घूटर : बौआसीन अहाँक घरमे ओ की कहैत छैक डानी टेबुल नहि देखँत छी? हमर नूनू तऽ किरनिये छथि परन्च ओहो डानी टेबुल रखने छथि...डानी टेबुल पर खेबाक मजे किछु

आओर होइत छैक। सभटा चीज वस्तु सामने राखल रहल जेकरा...जे...जतेक खेबाक हो खाय...

रीता : हमरा ओतऽ की देखब...किछु नहि हमर पापा की नहि खरीद कऽ रखने छथि हमरा लेल...फ्रीज, टी.भी., पलंग, ड्रेंसींग टेबुल कार तक खरीद कऽ दै लेल तैयार छथि। परन्च, ई तऽ तेना कऽ ने हमर पापा के बाजि उठैत छथिन जे...की कहू घूटर भाई...आब बहुत दिन तक नहि रहि सकैत छी हिनका संग...।

घूटर : दुर्गा-दुर्गा...अहुना क्यो सोचय...बौआसीन भगला सँ काज चलत? खैर...आब हम आबि गेल छी...सब ठीक भऽ जैत...होउ...भोजन परोसू...।

(रीताक प्रस्थान...नरेन्द्रक प्रवेश)

घूटर : आबह...आबह...हौ मुँह किएक लटकल छह?

नरेन्द्र : नहि तऽ, कहाँ?

घूटर : तो कहबह से हम मानि जेना लेब। हौ मैथिलक घरमे जहिया-जहिया माछ बनैत छैक तहिया-तहिया तऽ ओकरा चेहरा पर सौंसे संसारक खुशी रहैत छै...तोरा जकाँ अकाश काँकोर बनल नै रहैत अछि...वैह देखह आबि रहल छह...

(रीता टेबुल पर भात माछक थरी-बाटी रखैत छथि। संग मे नोकरानी रश्मियाँ गिलासमे जल अनैत अछि।)

घूटर : शुरू करह...*(किछु मंत्र बुदबुदा कऽ भोजन आरम्भ करैत छथि)*

...बाह-बाह रहु ताहु पर जमीरी नेबो—बाह बड़ दिव...बहुत स्वादिष्ट...बाह बौआसीन अहाँ तऽ अपूर्व भोजन बनबैत छी...बाह...बाह...

रीता : घूटर भाई। अहि मे हम किछु नहि केलौ...ई सभ अहि छौं डीक बनायल अछि।

घूटर : अँय...ई छौड़ी के?

रीता : हमर पापाक जे भंसिया छथि तकरे बेटी छै रश्मियाँ...हे गै रश्मियाँ जो जऽग मे पानि नेने आ।

घूटर : संस्कारक असर छै— संस्कारक असर छै...

(ओमहर रश्सियाँ जऽग लऽ कऽ आबि रहल अछि कि जगह खसि पड़ैत छै। रीता बढ़ि कऽ ओकर केश पकड़ि कऽ गाल पर थापर सँ मारैत)

रीता : तोरा सूझैत नहि छौ। खाली बदमाशी। तेहेन मारि मारबौ ने...सौंसे घर गंदा कऽ देलक...

रश्मियाँ : हम की कोनो जानि कऽ खसेलौ ए?

रीता : फेर मुँह लागल जबाव...*(तरा तर मारऽ लगैत छथि)* *(रश्मियाँ कानऽ लगैत अछि)*

नरेन्द्र : अरे किएक बेचारी के मारि रहल छियै?

रीता : मारियै नै तऽ की? कोरा मे लऽ कऽ दुलार करियै? ई सब लातक देवता अछि...बात सँ सुनि नहि सकैत अछि...

नरेन्द्र : ओफ्फ...करू जे मोन हुए से...

रीता : *(रश्मियाँ सँ)* चल आब मुँह की देखैत छै? जो कपड़ा आनि क' पोछ सौ से घर...

घूटर : बौआसीन— नरेन्द्र के मांछ दियौन— एक आध कुटिया हो तऽ हमरो देब...।

रीता : हँ-हँ रहतै किएक नञि *(जाइत छथि आ माछ आनि कः दैत छथिन)*

घूटर : बाह...अहि ठाम तऽ माछ बड़ सुन्नर भेटैत छह तोरा सभके ँ...हौ एतहि एकटा बढ़ियाँ घर बना लैह...हमहूँ सबऽ कहियो काल मास दू मास आबि कऽ रहब।

नरेन्द्र : भाई घर बनेनाई एतेक आसान नहि—अखन तऽ हम नौकरी शुरुये कलौ अछि...पहिने गामक घर...।

घूटर : छीः छीः। गामो आब रहबाक जोगरक रहि गेल अछि हौ बनेबाक छ तऽ एतऽ बनाबह। तोरा कथिक दिक्कत...अपने एतेक पैघ आफिसर छह...आ ताहू सँ नहि तऽ इनजीयर साहेब जँ चाहथि तऽ आइए बनबा देथुन।

रीता : पापा...हूँ...कोन मुँह सँ पापा के कहबनि...पहिने ओ पचास हजार...

नरेन्द्र : रीता...अहाँ नै चाहैत छी जे हम भरि पेट भोजन करी? बेर-बेर पचास हजार...(उठि कऽ भीतर चलि जाइत छथि फेर हाथ धो कऽ बाहर अबैत छथि। संग मे चेक बुक आ पास बूक छनि)। लियऽ ई पास बूक आ बैस कऽ चाटू... *(बाहर दिस प्रस्थान)*

रीता : नरेन्द्र...सुनु तऽ...ओफ्फ...हमर तऽ करमे जरल अछि...भरि पेट भोजनो नै केलनि...।

घूटर : आ...हा...हा अपन कर्म के दोष जुनि दी...दुर्गा...दुर्गा जे होइत छैक से ठीके होइत छैक...।

(फोनक घंटी टनटना उठैत अछि। रीता बढ़िकऽ फोन उठबैत छथि।)

रीता : हेलौ। Mrs. Narendra-speaking.

... ...

ओहो...नमस्ते

... ...

जी

... ...

जी हाँ। वे तो अभी-अभी बाहर निकले है।

... ...

जी कह दूँगी।

... ...

जी चार-पाँच दिन के लिए

... ...

हूँ

... ...

जी नमस्ते।

रीता : नरेन्द्र के चारि पाँच दिन के लेल टूट मे जाय पड़तनि। हिनकर साहेबक फोन छलनि...

घूटर : अच्छा बौआसीन घबरेवाक कोनो बात नै। ता धरि हम तऽ रहबे ने...करब...एक आध कुटिया...

रीता : हँ हँ नेने अबैत छी...
घूटर : बौआसीन माछक मूड़ा तऽ कतहु देखबा मे नहि आयल
रीता : मूड़ा खाइत छी अपने की?
घूटर : दुर्गा-दुर्गा बौआसीन हमर सार करै छथिन जे जेने खाय मूड़ा तकरा माथ मे भरल कूड़ा...जतेक हो सभ नेने ने आउ...
(रीताक प्रस्थान...प्रकाश बन्न)

दसम दृश्य

(भोरका दृश्य। रश्मियाँ घरमे बाढ़नि दऽ रहल अछि। दोसर रूम सँ घूटरक आँखि मिरैत प्रवेश।)

घूटर : दुर्गा-दुर्गा...गै रश्मियाँ एक गिलास जल पियो।
(रश्मियाँ जाइत अछि आ जल आनि कऽ दैत छनि)
घूटर : दुर्गा-दुर्गा...रश्मियाँ मेम साहेब उठलखुन?
रश्मियाँ : नै...सुतले छथिन। आई साहेब नै छथिन ने तऽ दस बजे सँ पहिने नै उठथिन।
घूटर : ओ...रश्मियाँ...
रश्मियाँ : जी,
घूटर : एमहर सुन।
रश्मियाँ : जी...कहू
घूटर : बैस...एहिठाम...
रश्मियाँ : कहू ने की कहै छो...
घूटर : अरे...एहि ठाम बैस ने...हमरा लऽग
घूटर : अरे सैह देख कऽ तऽ हमर करेज फाटि जाइत अछि। आ हा-हा फूलसन बच्ची के कोना चाण्डालिन जकाँ मारैत अछि ई मौगी। एकटा हमर नूनूक स्त्री छथि...अपनो बाल बच्चा सँ नीक जकाँ नोकर-चाकर के रखैत छथि।
रश्मियाँ : साहेब ई नू नू के छथिन?
घूटर : नू नू? हमर बेटा चाईबासा मे छथि। जहिना तोहर साहेब छथुन ताहू सँ पैघ साहेब सुन एकटा बात कहैत छियौ...

केकरो कहियही नै...नै तऽ मेम साहेब फेर मारतौ...नै नै कहबही।

रश्मियाँ : नै

घूटर : सुन तोहर ई दशा देखि कऽ बड़ दुःख होइत अछि। तों जँ तैयार हो तऽ तोरा हम चुपचाप नूनू क ओतऽ पहुँचा दियौ...ओना तऽ नू नू के नोकर चाकरक कोनो कमी नै परन्च हमरे बेटा थिकाह...कहबनि तऽ तोरो राखि लेथुन... दोसर के भले हटा देथिन...आराम सँ रहबे खूब नीक नीक कपड़ा-लत्ता सभक संग डानी टेबुल पर भोजन ने मारि ने पीट...बाज चलबै चुपचाप नूनूक ओतऽ चाईबासा–

रश्मियाँ : लेकिन हमर बाबू...ओकरा पता लगतै तऽ मारत

घूटर : पता लगतै कोना...हम थौड़े कहऽ जेबै...आब तो सोचि ले...एहिठाम आधा पेट पर मारि पीट खाइत रहबाक इच्छा हो तऽ बड़ बेश...

रश्मियाँ : नै हम चलब...मुदा हमर बाबू के साहेब मासे मास पचास टाका दैत छथिन–

घूटर : हमर नूनू सय टाका देथुन। से सब हम बाद मे ठीक कऽ देबोने...तों अखन चुपचाप रहियै...हम जाय लागब तऽ तोरा चुपचाप ने ने चलबौ...ठीक...।

रश्मियाँ : ठीक...कहिया जेबै?

घूटर : गै एतैक अगुता किएक गेलै। स्थिर रह। सभ हमरा पर छोड़ि दे...जौ अखन अपन काज कर...दुर्गा...दुर्गा *(रश्मियाँ बाढ़नि देबऽ लगैत अछि, बाहर सँ दरवज्जा ढ़कढ़केबाक स्वर।)*

घूटर : गै रश्मियाँ देख तऽ...के छौ।

रश्मियाँ : दूध बला हेतै...*(बढ़ि कऽ दरवज्जा खोलैत अछि फेर आ. बिकऽ)* देखियौ दू तीन गोटे छै। *(घूटर बढ़िकऽ दरवजजा लग जाइत छथि फेर)*...

घूटर : अरे अरे मास्टर...चन्द्रकान्त बाबू...आउ आउ मास्टर की हाल केहा छह...(*रोगियाह मास्टर साहेब के चन्द्रकान्त बाबू*

पकड़ने भीतर अनैत छथिन। पाछाँ-पाछाँ गेनालाल समान लऽ कऽ अबैत अछि)

चन्द्रकान्त : भाई एतहि...ताधरि...एहि सोफा पर पड़ि रहू *(मास्टर के उकासी आ दर्द परेशान केने छनि। ओ सोफा पर पड़ि रहैत छथि। गेना समान राखि कऽ मास्टरक पैर दबाबऽ लगैत अछि।)*

मास्टर : गे...ना...। भरि राति तों ट्रेन मे जगले छैं। कोनो कोना मे चुपचाप पड़ि रह...। घूटर भाई...नरेन्द्र कतऽ छथि? *(गेना जा कऽ एककात मे पड़ि रहैत अछि)*

घूटर : नरेन्द्र तऽ टूर पर गेल छथि। हमरो कि भेट भेल नीक जका नुनुक कऽ ओतऽ सँ आपस होइत रही तऽ सोचलहुँ हिनको सभ सँ भेंट केने चली। हम एमहर एलौं आ' ओ ओमहर टूर पर। जर्बदस्ती हमरा रोकि लेलनि जे हम आपस अबैत छी तखन-जायब। तोरो हाल कहितियनि ततबो समय नै भेटल।

चन्द्रकान्त : घूटर। हाल समाचार कहबा मे मात्र एक सँ दू मिनट लगैत छैक...खैर, नरेन्द्रक आङ्गन, सँ तऽ छथिन ने?

घूटर : हँ...हँ सूतल छथिन...हम अखने उठा दैत छियनि।

चन्द्रकान्त : अहाँ उठेबनि?

घूटर : नै...नै हमर कहबाक माने ई जे-उठबा दैत छियनि...रश्मियाँ...

रश्मियाँ : जी...

घूटर : जी अपन मेम साहेब के उठा दहुन। कहुन ग'जे गाम सँ मास्टर साहेब आ चन्द्रकान्त प्रोफेसर आयल छथि।

(रश्मियाँ भीतर जाइत अछि आ कनेकाल मे रीता के नाइटगाउन पहिरने प्रवेश)

रीता : घूटर भाई किएक हमरा उठबा देलहुँ...के आयल अछि?

घूटर : अरे रे बौआसीन भीतरे रहू मास्टर आयल अछि।

(रीता हड़बड़ा कऽ पर्दाक अढ़ जाइत छथि)

चन्द्रकान्त : बौआसीन। हम प्रोफेसर चन्द्रकान्त। हिनकर भैंसूर के जबर्दस्ती गाम सँ उठा कऽ अनने छी। नरेन्द्र तऽ नञि छथि। ताहि

हेतु ई कने नीक जकाँ सुनि लेथु। मास्टर साहेबक स्थिति आइ कैक मास सँ बद सँ बदतर भेल गेलैनि अछि। पोद्दार डाक्टरक हिसाबे ई टी.बी. थीक। परन्च, हमरा इ विश्वास नहि। भाई के कोनो आओर गंभीर रोग छनि तकर शंका अछि। तैं जबर्दस्ती हम लऽ अनलियनि अछि...। भाई हम युनिभर्सीटी मे अपन मित्रक ओतऽ चलैत छी हुनको सँ परामर्शकऽ कोनो नीक डाक्टर सँ देखेबाक व्यवस्था करब।

मास्टर : भाई अहाँ किएक एतेक परेशान भऽ रहल छी। बौआसीन छथिहे...दू एक दिन मे नरेन्द्र सेहो आबि जेताह...

चन्द्रकान्त : ठीक छै भाई...हम संध्या काल आयब...। बौआसीन हिनकर भोजन भात मे काफी संयम आवश्यकता छनि...बेश, भाई तऽ हम चलैत छी...हँ घूटर, अहाँ तऽ एतहि रहब...भाई के बेशी दुर्गापाठ जुनि सुनैबैनि। *(प्रस्थान)*

घूटर : दुर्गा...दुर्गा...कने पढ़ि लिखि की गेल ई परफेसर अपना के सभसँ काबिल बुझैत अछि।

(रश्मियाँक प्रवेश)

रश्मियाँ : साहेब—अहाँ के ममे साहेब बजबैत छथि।

(घूटर भीतर जाइत छथि आ' फेर कनेकाल मे आपस अबैत छथि।)

घूटर : मास्टर...उठह...बौआसीन कहैत छथुन जे पाछुबला घर मे अपन बोरिया बिस्तर लगेबाक लेल। उठह...रे गेना...गेना... केहेन मिसम येड़ भऽ कऽ सूति रहल तुरत्ते...*(पैर सँ ठेलैत)* रे गेना...गेना।

मास्टर : पैर सँ नहि घूटर भाई...पैर सँ नहि। ओकरा फूकनाक बेटा जुनि बूझू...ओ हमर बेटा सँ कम नञि...गेना...गेन।

गेना : *(हड़बड़ाइत उठैत)* जी...जी मास्टर साहेब

मास्टर : उठ चल...।

गेना : कतऽ मास्टर साहेब?

मास्टर : चल ने पाछू बला घरमे हमरा पहुँचा दे। तकरा बाद तों मुँह हाथ धो कऽ बौआसीन सँ जलखै लऽ कऽ खा

लिहें...*(गेना मास्टर के सहारा दऽ उठबैत अछि घूटर-दुर्गा करैत छथि कोनो सहारा नहि दैत छथि)*

घूटर : रश्मियाँ, तो ँ मास्टर के पाछू बला घर मे लऽ कऽ चल... हम अबैत छी।

(मास्टर, गेना आ' रश्मियॉक प्रस्थान। रीताक प्रवेश)

रीता : घूटर भाई...आब की करी हम?

घूटर : बौआसीन अहाँ निश्िंचत ने रहू। नरेन्द्र के आबऽ दियोन, ओ डाक्टर, ताक्टर सँ देखेथिन...तकरा बाद ने किछु...

रीता : हँ...सैह। अहाँ जे नहि कहितहुँ तऽ आइ हम हुनका अही घर मे राखि लितियैनि...बाप रे तखन तऽ बड़ा अनर्थ हो. इत...हमरो सभके टी.बी. भऽ जाइत।

घूटर : दुर्गा-दुर्गा बौआसीन...मास्टरक थारी-बाटी गिलास सभ अलग कऽ दियौन।

रीता : घूटर भाई!...परन्च नरेन्द्र के तऽ तामस भऽ जेतैनि।

घुटर : अरे अहाँ निश्चित ने रहू। हम सब सम्हारिक देब। हे बौआसीन...एमहर सुनू...अहाँ के कहि दैत छी...मास्टर के टी.बी.ती.बी. नहि छैक पोद्दार डॉक्टर हमरा गामे मे कहने छल जे मास्टर के कैंसर छै।

रीता : कैंसर।

घूटर : हँ, ताहि दुआरे ओ चन्द्रकान्त परफेसर के जोर दऽ कऽ एतऽ पठबेलकँनि अछि। परफेसर के सेहो बुझल छै, परन्च, मास्टर के टी. बिये कहने छै पोद्दार डॉक्टर...।

रीता : बाप रे...हमर तऽ करमे जरल अछि...कत पापा बियाह कऽ देलनि...अखन बियाह भेना सालो नहि पुरल अछि आ ई, कैंसर बला सभक फेरा मे पड़ि गेलहुँ...हम आब एतऽ नहि रहब। आइये पापा लऽग चलि जैब।

घुटर : दुर्गा-दुर्गा...बौआसीन एतेक अगुताइ जुनि। नरेन्द्र के आबि जाय दियौन...तखन कोनो फैसला करब। जाउ भोजन भातक ओरियाओन करबाउ मास्टर आ' ओकरा संग एकटा टेलहा जे छै गेना, तकरो ने भोजन बनबऽ पड़त आइ सँ।...हम

कने मास्टर के देखने अबैत छियै, दुर्गा-दुर्गा *(प्रस्थान)*

रीता : *(किछु सोचि कऽ फोन लगबऽ लगैत छथि)*
हेलो...हेलो...हँ पापा...हँ...अहाँ जल्दी एतऽ आउ...नै आउ तखन कहब...कहिया...? परसू...अवश्य।
(प्रकाश बन्न होइत अछि)

ग्यारहम दृश्य

(सर्भेन्ट रूमक दृश्य। एकटा खाटपर मास्टर परल छथि। गेना पैर जाँति रहल छनि। रश्मियाँ ठाढ़ अछि)

घूटर : *(प्रवेशक संग)* की हौ मास्टर,...जगह पसिन्न छह कि नै?

मास्टर : घूटर भाई, ई तऽ...

घूटर : हँ हौ मास्टर ई तऽ नौकर-चाकर केऽ रहयवला घर छै। बौआसीन के कोन ज्ञान छनि से नहि जानि। लाख बुझे. लियैनि जे मास्टर के कतेक दुःख हेतैनि तऽ ओ कहऽ लगली जे अई घरमे कोना रखियैनि। टी.बी. छनि आर नहि जानि कोन-कोन बिमारी छनि। डऽर होइत छनि कहीं हुनको सभके ने पटि जाइन।...हमर तऽ करेज फाटल जा रहल अछि...दुर्गा...दुर्गा *(प्रस्थान)*

मास्टर : ओह...घूटर भाई...पता नहि आब कतेक दिन रहब एहि संसार मे...एबाक, एक्कोरती इच्छा नहि छल। नरेक भौजी आ ई चन्द्रकान्त भाई ठेलिठालि कऽ जबरदस्ती पहुँचा देलनि...आह...आह...
(खूब जोर सँ पेट मे दर्द उठैत छनि)
गेना...गेना...पानि...पानि

गेना : मास्टर साहेब...मास्टर साहेब
(ता धरि रश्मियाँ भीतर सँ जल आनि कऽ दैत छनि। मास्टर जल पिबैत छथि। कने काल बाद शान्त होइत छथि)

मास्टर : गेना...रौ ई दर्द...ई दर्द प्राण लऽ कऽ छोड़त...

गेना : मास्टर साहेब...अहाँ आराम करू...हम माथ दबा दैत छी *(माथ दबाबऽ लगैत अछि)*

रश्मियाँ : तोहर नाम गेना छौ?

गेना : हँ।

रश्मिया : आब तों सभ एऽत रहबी...? हम एहि घर मे रहै छी...। केहेन छै मेम साहेब जे भाई के नौकर बला घर मे ठेल देलकै यै...*(कहैत प्रस्थान)*

गेना : हम मास्टर साहेब के एतऽ नहि रहऽ दैबैनि। मास्टर साहेब...मास्टर साहेब।

मास्टर : हूँ...।

गेना : चलू एतऽ सँ। गाम बलू अहाँक बैजती हमरा नीक नहि लगैत अछि।

मास्टर : गेना...गेना तोहीं हमर सभ किछु छै...गेना, भगवान तोहर सभ मनोकामना पूरा करथुन...

गेना : मास्टर साहेब...हम अहाँक खूब सेवा करब भगवान के कहबैन अहाँ गामे मे नीके भऽ जैब।

मास्टर : गेना...आबि गेलहुँ तऽ दू चारि दिन रुकि जो...नरे आबि जाइत छथि तऽ भेंट भऽ जायत। *(प्रकाश बन्न)*

बारहम दृश्य

(सर्मेंट रूम में प्रकाश, रश्मियाँक संग नरेन्द्रक प्रवेश। रश्मियाँ हाथ सँ इशारा कऽ कऽ देखबैत छनि। गेना मास्टरक पैर दबबैत रहैत छनि। नरेन्द्र बढ़ि कऽ पैर पकड़ि लैत छथि।)

नरेन्द्र : भाई,...भाई हमरा माफ कऽ दिय भाइ...ई की हाल भऽ गेल अहाँक भाई...?

मास्टर : नरेन्द्र...नरेन्द्र...

नरेन्द्र : भाई अहाँके एहिठाम के रखबेलक? हम ओकरा कहियो क्षमा-नहि कऽ सकैत छी। भाई...

मास्टर : नरेन्द्र होश मे आब...हम...हम तऽ कष्ट मे छीहे... अहाँ एना करब तऽ हमरा बड़ दुःख हैत।

नरेन्द्र : भाई...अहाँ एतेक बीमार छी...एकोटा पत्र नहि...

मास्टर : नरे...हम आ' अहाँक भौजी तऽ कम सँ कम दखटा पत्र देने होयब...अहींक जबाब नहि भेटल...।

नरेन्द्र : दसटा पत्र! सत्ते कहैत छी भाई...हमरा हाथ मे एकोटा पत्र नहि भेटल...भाई पहिने उठू घर मे चलूँ...।

मास्टर : नहि नरेन्द्र...हम एतहि ठीक छी...

नरेन्द्र : नहि भाई नहि...एतेक पैघ दण्ड नहि दिय हमरा।

मास्टर : नरे...बच्चा जकाँ जुनि करू...बौआसीन जे केलनि से नीके केलनि अछि हम एतहि ठीक छी आब अहाँ आबि गेलहुँ.. .कोनो नीक डाक्टर सँ देखा दिय जे जल्दी सँ आपस गाम चलि जाइ।

नरेन्द्र : ई की कहि रहल छी भाई?...हम जनैत छी अहाँ हमरा सँ बड़ तमसायल छी...परन्च, आब जा धरि अहाँ पूर्णरूप सँ ठीक नै भऽ जैब...हम नहि जाय देब...भाई उठू...चलू घर मे...

मास्टर : नरे...जिद नहि करी...आह...आह...हम एतहि ठीक छी...

नरेन्द्र : ठीक छै...तऽ हमहूँ एतहि रहब...जतहि अहाँ रहब...सैह हमरो घर थीक।...भाई...अहाँक मोन एतेक खराब...

मास्टर : धीरे-धीरे भऽ गेल...ई खोंखी आ पेटक दर्द तऽ बुझाइत अछि प्राण लऽ लेत...हमरा तऽ अयबाक ईच्छा नहि छल परन्च अहाँक भौजी आ चन्द्रकान्त भाई...

(चन्द्रकान्तक प्रवेश)

चन्द्रकान्त : की यौ भाई...हमरा किएक याद कऽ रहल छी? ओह नरेन्द्र अहाँ आबि गेलहुँ।

नरेन्द्र : जी आबिए रहल छी। *(चन्द्रकान्त के एक दिस लऽ जा कऽ)* चन्द्रकान्त भाई...भाई के की भऽ गेल छनि? किछु...

चन्द्रकान्त : घबराउ जुनि...कोनो खास नहि। गाम घरक भय, ने नीक डाक्टर, ने नीक दबाई...धीरे-धीरे रोग बढ़ि गेल छनि...अहाँ

जाउ फ्रेश भऽ जाउ तकरा बाद विचार-विमर्श कऽ कऽ नीक डाक्टर सँ कन्सल्ट कैल जेतै।

नरेन्द्र : हम की फ्रेश हैब...हम ठीके छी...

मास्टर : नरे...जाउ कपड़ा लता बदलि कऽ आउ...जाउ

नरेन्द्र : जी जी *(प्रस्थान)*

तेरहम दृश्य

(नरेन्द्र आबि कऽ अपन ड्राइंग रुममे बैसैत छथि। हुनकर ब्रीफकेश ड्राइंग रुम मे राखल छनि। रश्मियाँ जल आनि कऽ दैत छनि। ताधरि रीताक घूटर भाईक संग हँसैत प्रवेश। संग मे दू चारिटा पैकेट जे सूचित कऽ रहल अछि जे ओ मार्केटिग कऽ कऽ आबि रहल छथि नरेन्द्र पर दृष्टि पड़ैत छनि)

रीता : हाय नरेन्द्र...बुझाइत अछि अहूँ आबिये रहल छी...देखू ने आइ पापा आबये बला छथि तऽ साचलहुँ मम्मीक लेल आ' गीताक लेल किछु कपड़ा खरीद कऽ राखि ली। पापाक संग पठा देबै। अहाँक घूटर भाई के लेल सेहो एक जोड़ धोती खरीदलौं अछि— देखू ने कपड़ा सभ पसिन्न अछि? *(कपड़ाक पैकेट बढ़ा दैत छथि)*

नरेन्द्र : रीता...। हमर देवता सन भाई के सर्भेन्ट क्वार्टर मे रखबा मे अहाँके एको पाइ लाज नहि भेल? हमर अनुपस्थितिक एहेन नाजायज फायदा। अहाँ...?

रीता : नाजायज फायदा की? आ अइ मे लाज केहेन। हुनका जेहेन जेहेन बिमारी छनि...एहिठाम रखबा मे हमरा भऽ जाइत तऽ?

नरेन्द्र : रीता...अहाँ एतेक हद तक नीचाँ खसि सकैत छी से हम सपनो मे नै सोचने छलहुँ। हमर भाई सर्भेन्ट क्वाटर मे दर्द सँ तड़पि रहल छथि आ' अहाँ अपन माय आ' बहिनक लेल कपड़ा खरीदऽ लेल गेल रही...छी-छी-छी।

घूटर : गुर्गा...दुर्गा...हौ नरेन्द्र कने शांत भऽ जाह।

नरेन्द्र : की शान्त भऽ जाउ। हमरा देहमे तऽ आगि लागल अछि...हिनकर तऽ बुद्धि मारल गेलैनि अछि...परन्च, घूटर भाई अहाँ तऽ एतऽ रही...अहाँ तऽ हिनका बुझा सकैत छलियैनि

रीता : हँ...हँ...हमर बुद्धि मारल गेल...तैं हम कैन्सर आ टी.बी. बला के अपन घरमे नै रखबै आ नै तऽ अहाँ के ओतऽ जाय देव।

नरेन्द्र : कैन्सर?

रीता : हँ...हँ कैन्सर...

नरेन्द्र : हे भगवान। ई की सुनैत छी। हमर देवता सन भाई के कैन्सर...। *(रीता सँ)* अहाँ चाण्डालिन छी...हमर भाईके एहि स्थितिक लेल अहीं जिम्मेवार छी...कहू हमर भाईक चिट्ठी सभ हमरा किएक नहि देलहुँ...बाजू— बजैत किएक नहि छी...?

(घूटर चुपचाप खसकि जाइत छथि)

रीता : चि...टठी...को...न...चि...ट्ठी?

नरेन्द्र : झूठ नहि बाजू...रश्मियाँ सँ पता लागि गेल अछि बराबर चिट्ठी अबैत छल परन्च आइ धरि...आइ धरि हमरा हाथ मे एकोटा चिट्ठी नहि भेटल...किएक...बाजू...कतऽ अछि चिट्ठी सभ?

रीता : चिट्ठी सभ के हम फाड़ि देलौं—

नरेन्द्र : हमर भाईक जिनगी आ मृत्युक सबाल छल आ' अहाँ चिट्ठी सभके फाड़ि देलहुँ...।

रीता : हूँ जिनगी आ मृत्यु...अहाँक भाई जिबथि या मरथि ताहि सँ हमरा की?

नरेन्द्र : रीता...*(कसिकऽ गालपर थापर मारैत छथि)।*

रीता : अहाँ...अहाँ हमरा थापर मारलहुँ...अहाँक ई मजाल जे हमरा थापर मारब *(खूब जोर सँ कानऽ लगैत छथि। नरेन्द्र निकलि कऽ चलि जाइत छथि। प्रकाश धीरे-धीरे बन्न होइत अछि।)*

चौदहम दृश्य

प्रकाश सर्भेन्ट रूपमे। नरेन्द्र अबैत छथि आ' आबि कऽ मास्टर लऽग बैसि रहैत छथि। ओतऽ घूटर पहिने सँ रहैत छथि।

नरेन्द्र : *(चन्द्रकान्त सँ)* भाई कने...एमहर सुनू तऽ...भाई कि ई कैंसर...?

चन्द्रकान्त : नरेन्द्र...एतेक हतोत्साहित जुनि होउ...हँ पोद्दर डाक्टर के सत प्रतिशत शँका छनि जे ई कैंसर थीक। तै हम मास्टर के जबर्दस्ती उठा कऽ लऽ अनलियनि। अहाँक एबसेंस मे हम कोनो डाक्टरसँ देखा सकैत रहियैनि परन्च हम अहाँक प्रतीक्षा करब उचित बूझल।
(रश्मियाँक हाँफैत प्रवेश)

रश्मिया : साहेब...साहेब...मेमसाहेब...मेमसाहेब

नरेन्द्र : अखन हमरा फुर्सत नहि अछि। जो कहि दिहुन जे हम भाई के लऽ कऽ डाक्टर के ओतऽ जा रहल छी।

रश्मिया : साहेब...मेमसाहेब शीशी मे सँ कौनदन दबाई खा लेलखिन...आ'...आ' एकदम दर्द सँ छटपटा रहल छथिन...कहैत छथिन हम मरि जैब हम मरि जैब।

नरेन्द्र : की?

मास्टर : नरे जल्दी जाउ...पहिने बौआसीन के देखियौन (नरेन्द्र आगाँ आगाँ आ पाछाँ सऽ चन्द्रकान्त आ घूटर सेहो आइत छथि)
(प्रकाश बन्न)

पन्द्रहम दृश्य

(सर्भेन्ट रूममे प्रकाश, चन्द्रकान्त सेहो बैसल छथि)

चन्द्रकान्त : भाई बुझू तऽ आइ बौआसीन बचि गेली आ' प्रतिष्ठा सेहो बचि गेल। कहुँ तऽ बौआसीन ई की केलैनि। पति-पत्नी मे झगड़ा झंझट कतऽ नै होइत छै जे बौआसीन छोट-छीन बात लऽ कऽ सोझे जहर खाऽ कऽ आत्महत्या करऽ गेलह।

गनीमत छलै जे ओ मच्छर मारऽ बला दबाई रहै सेहो पु. रान, बेसी स्ट्राँग नहि तऽ आइ जुलुम भऽ जाइत। आ' ई नरेन्द्र के सेहो नेनमति नहि गेलनि अछि। मारि...पीट...छी... छी...छी...

मास्टर : भाई...भाई...भाई बड़-दर्द करैत अछि आह गेना...गेना... गेना पानि पिओ...*(गेना पानि आनि क दैत छन्हि)* आह... भाई...भाई एहि सभ फसादक जड़ि हम छी...हमरा... हमरा...आइये गाम पहुँचा दिय...

चन्द्रकान्त : भाई...अहाँक स्थिति ई नहि अछि जे अहाँ गाम जाइ...

मास्टर : नहि भाई...नहि आब हम अहाँक गप्प नहि सुनब। आब जे हैत से गामे मे हैत—

चन्द्रकान्त : काण्ड...हूँ...मास्टर एहि सभ फसादक जड़ि अहाँ अपनाकेँ बुझैत छी, परन्च वास्तव मे फसादक जड़ि छथि...यैह घूटर...

घूटर : दुर्गा...दुर्गा...ई की कहैत छी यौ परफेसर?

चन्द्रकान्त : ठीक कहैत छी...पहिने तऽ मास्टर के पोटि पाटि कऽ इंजिनियर साहेबक ओतऽ विवाह करवौनाई। झूठ-मूठ सौ से प्रचार जे एक लाख टाका मास्टर लेलनि भाईक विवाह मे।...आ'ताहू सँ अहाँक पेट नहि भरल तऽ एहिठाम बौआसीन के बुद्धि देनाइ...

घूटर : झूठ...एकदम झूठ...अहाँक सत्यानाश हो जे हमरा पर एहन कलंक...

चन्द्रकान्त : सत्यानाश तऽ सौंसे गामक कऽ रहल छियँ अहाँ। ठीके अहाँके लोक लौंगिया मिरचाई कहैत अछि...बापरे एहन कड़ू जे सोझे करेजा तक के बेध दिए...

घूटर : देखू परफैसर...अहाँ हद सँ आग। बढ़ि रहल छी। मास्टर अपन मोन सँ भाईक विवाह ठीक केलनि पैघ आदमी कतऽ। आब ओकर फल भुगति रहल छथि तऽ हमर कोन दोष...?

चन्द्रकान्त : हँ...ई दोष तऽ मास्टरक अवश्य छनि जे ओ स्टेट्स ताक'

लगलाह...इ नहि बुझलनि जे स्टेट्स बलाक बेटी हिनकर टुटली मरैया मे कोना कऽ रहतैनि...आइ कालि...दहेजक एकटा इहो रूप अछि जे कतेको घर के बर्बाद कऽ दैत अछि...परन्तु घुटर अहाँक प्रतिभा विलक्ष अछि...

मास्टर : भाई चुप भऽ जाउ...

चन्द्रकान्त : नहि भाई...आइ बहुत दिन सँ हिनकर चालि हम गाम सँ एतऽधरि देखैत चलि आबि रहल छी...ओहि दिन जखन रश्मियाँ सँ पता लाँगल जे यैह घूटर बौआसीन के समझा बुझा कऽ अहाँ के एहि सर्भेन्ट क्वाटरमे रखबेलैनि तऽ हमर तऽ देह जरि गेल... मोन तऽ होइत अछि हिनका तत्त मारि मारी जे...

घूटर : परफेसर...तोरो देख लेबौ...बड़ जे काबिल...

चन्द्रकान्त : खबरदार जे फेर आगू बजलौ...अरे अहाँ हमरा की देखब? गामक कतेको घरमे अहाँ आगि लगौने छी...हमरो घर बर्बाद करऽ चाहब से नहि हैत...परन्च, आब जँ अह। एको शब्द बजलौ तऽ हम अहांक टाँग तोड़ि देब भागू...भागू एतऽ सँ...

(घूटर के धक्का दऽ कऽ बाहर करैत छथि)

मास्टर : भाई नाहक मे...

चन्द्रकान्त : किछु नाहक नहि...ई एहि पात्रक छथि। भाई नरेन्द्र के आबऽ दियौन...हम अहाँके एतऽ सँ लऽ चलव...नर्सिंग होम मे राखब...यैह नै हैत जे एकाध बिगहा गामक जमीन बेचऽ पड़त...बेचब...मित्रक लेल तऽ लोक की की नञि करैत अछि...

मास्टर : भाई...भाई

(पेट मे दर्द उठि जाइत छनि...चन्द्रकान्त आ गेना सम्हारैत छथिन। प्रकाश बन्न होइत अछि)

सोलहम दृश्य

(ड्राइंग रूमक दृश्य घूटर अपन कपड़ा लत्ता सरिया रहल छथि। जयबाक उपक्रम छनि...दिवाकर बाबुक रीता...रीता करैत प्रवेश घूटर के देखितहि...)

दिवाकर : आ-हा-हा-हा नमस्कार—नमस्कार घूटर बाबू बहुत दिन पर भेंट भेल। अरे अपने इ झोड़ा झपटा...।

घूटर : बहुत भऽ गेल...बहुत भऽ गेल...आब हम आओर बैजती बर्दास्त नहि कऽ सकैत छी...हमरा जाय दिय...*(जेबाक उपक्रम मे)*

दिवाकर : अरे...एना कोना चलि जायब। हम एलौं आ' अहाँ चलि जायब...के केलक अहाँक बैजती? की रीता सँ कोनो...?

घूटर : दुर्गा...दुर्गा ओ बेचारी तऽ साक्षात् दुर्गा छथि।...कतेक खातिर केलनि परन्च...

दिवाकर : कतऽ छथि रीता? रीता...रीता...

घूटर : इनजीयर साहेब...एहिठाम घोर अनर्थ भेल अछि। बौआसीन जहर खा लेलनि...

दिवाकर : की? की कहैत छी? जहर...?

घूटर : जी! ओ तऽ बुझु जे हम एतऽ रही जे सभ बचि गेल... डाक्टर भोर सँ एतऽ रहथि...आव सुतय बला सूइ दऽ कऽ गेल छथि...बौआसीन ओहि घरमे सूतल छथि...(दिवाकर ओह भाई गॉड कहैत भीतर जाइत छथि। घूटर दुर्गा-दुर्गा करैत रहैत छथि। कनेकाल मे दिवाकर भीतर सँ अबैत छथि)

दिवाकर : घूटर बाबू...हमरा सच-सच कहू...इ कोना भेल?

घूटर : आब जाय दियौ इनजीयर साहेब। भगवान के धन्यवाद दियौन जे बेटी बचि गेलीह...

दिवाकर : घूटर बाबू हमरा सच सच कहू इ कोना भेल? के एहि लेल जिम्मेदार अछि...नरेन्द्र कतऽ छथि? अहाँ बजैत किएक नहि छी?

घूटर : की बाजू? नरेन्द्र तामसे बौआसीन के दू चारि थापर लगा देलनि। बौआमीन बर्दास्त नहि कऽ सकलीह आ' मच्छर

मारऽ बला दबाई...

दिवाकर : नरेन्द्र के ई हिम्मत! ओ हमर फूल सन बच्ची के (मारल. नि?...कतऽ छथि नरेन्द्र?

घूटर : धैर्य राखू...इनजीयर साहेब नरेन्द्र के कोन दोष...पता नहि मास्टर की सभ सिखा पढ़ा देल कैनि...

दिवाकर : मास्टर...घूटर बबू...अहाँ पहेली जुनि बुझाऊ। हमर देह मे आगि लागन अछि...पूरा गप्प कहूँ...

घूटर : सैह तऽ कहि रहल छी...नरेन्द्रक परोक्ष मे मास्टर एतऽ चारिम दिन आयल...बौआसीन ओकर रहबाक व्यवस्था पाछूबला घरमे करबा देलखिन...ताहि लेल...।

दिवाकर : ओ...तऽ मास्टर ओतऽ छथि...ओ की बुझैत छथि अपना कें? (बजंत प्रस्थान। पाछू पाछू घूटर सेहा जाइत छथि। प्रकाश बन्न)

सत्रहम दृश्य

(सर्भेन्ट क्वाटर। मास्टर पड़ल छथि। चन्द्रकान्त। गेना बिछाओन समेट कऽ बान्हि रहल अछि। दिवाकर बाबूक हहायल फुफिआयल प्रवेश)

दिवाकर : मास्टर, अहाँ के हम नीक लोक बुझैत रही, परन्च अहाँ अप्पन स्वार्थक लेल हमर बेटीक घर उजाड़ऽ पर लागि गेलहुँ...छी...छी...छी...

मास्टर : दिवाकर बाबू...

दिवाकर : खबरदार...अपन गन्छा जुबान सँ हमर नाम नहि लिय... आइ जँ हमर बेटी के किछु भऽ गेल रहैत तऽ हम अहाँ के गोली मारि दितहुँ। आब नीक अही मे अछि जे अहाँ अपन रस्ता पकड़ू आ' भविष्य मे फेर कहियो हमर बेटीक घर दिस जुनि ताकू...

घूटर : दुर्गा...दुर्गा...दिवाकर बाबू? एतेक तामस ठीक नहि। मास्टर अपनेक कुटुम्ब अछि...

दिवाकर : की कुटुम्ब यौ घूटर बाबू? कुटुम्बक इएह काज जे हमर बेटीक घर उजाड़य?

चन्द्रकान्त : दिवाकर बाबू...बहुत काल सँ हम सुनि रहल छी...अहाँ पैघ लोक भऽ सकैत छी परन्च बुद्धि निम्न स्तरक अछि एकटा बीमार व्यक्ति सँ कोना गप कैल जाइत छैक से हो ज्ञान नहिं अछि...

दिवाकर : अहाँ हमरा ज्ञान सिखायब? हम अहाँके नहि जनैत छी परन्च अहाँ जे क्यो होइ, हमर बेटीक घर सँ तुरत निकलि जाइ...अन्यथा

मास्टर : *(उठिकऽ ठाढ़ होइत)* भाई चलू...आब बहुत भऽ गेल... दिवाकर बाबू हमरा गलत जुनि बूझू...अपनेके हम बहुत आदर करैत छी...आ' तहिना बौआसीन आ नरेन्द्र सँ स्नेह अछि...

दिवाकर : अरे आउ जाउ बहुत स्नेह देखलौं। सौंसे इलाकामे प्रचार केने छी...बहुत नीक मास्टर...बहुत दयाबान...हूँ...हमर बेटीक लेल तऽ हैवान...

मास्टर : दिवाकर बाबू...अहाँ हद सँ आगाँ बढ़ल जा रहल छी... आह...आह...*(दर्द उठि जाइत छनि)*

चन्द्रकान्त : भाई...पड़ि रहू...

मास्टकर : नहि भाई...आब की पड़ऽब...चलू। अहि ठाम आब एक-एक क्षण पहाड़ बुझाइत अछि...

दिवाकर : हँ...हँ...जाउ। मुदा कहि दैत छी...भविष्य मे फेर कहियो हमर बेटीक घर दिस नहि ताकब...

चन्द्रकान्त : दिवाकर बाबू अहाँ जे कऽ रहल छी तकर फल एक दिन अहीं भुगतब...अहूँ सँ बेसी अहाँक बेटी भुगतती...। परन्च, एकटा कान खोलि कऽ सुनि लिय...अहि घूटर सँ सावधान रहब। हिनका गामक लोक लौंगिया मिरचाई कहैत छनि। लौंगिया मिरचाई जेकरा खेबाक इच्छा तऽ सभके होइत छैक...परन्च खेलाक बाद तेहेन कड़ु लगैत छैक जे लोक के कना दैत छै...

घूटर : दिवाकर बाबू...देखि लिय...ई प्रोफेसर अहाँक सोझा ये हमर केहेन बैजती कऽ रहल अछि...हमर नून जँ एतऽ रहितथि तऽ हिनकर टाँग हाथ तोड़ि कऽ घऽ दैतथि...*(बजैत प्रस्थान)*।

दिवाकर : शान्त होउ...घूटर बाबू कने शान्त होउ...*(चन्द्रकांत सँ)* अहाँ हमरा कि लोक के चिन्हायब? पहिने अपना के चिन्हू...के लौंगिया मिरचाइ अछि से हमहूँ बुझैत छी...आ' हे हमरा कि हमर बेटी के एतेक कमजोर जुनि बूझी...

चन्द्रकान्त : हँ ठीक कहैत छी...अहाँक बेटी कमजोर किएक रहती...ओहो तऽ लौंगिया मिरचाइ सँ कम नहि छथि...

दिवाकर : जुआन सम्हारि कऽ बाजू...नहि तऽ आइ एतऽ...

चन्द्रकान्त : दिवाकर बाबू हमर गप अपने केँ अधलाह लागि रहल अछि...परन्च बादमे बुझबै जे हमर गप्पक की अर्थ।...ई घूटर सनक व्यक्ति जे प्रायः प्रत्येक माम मे रहैत छथि...ककरो नीक नहि देखि सकैत छथि...आइ ई अहाँक प्रिय पात्र छथि परन्च, काल्हि इ अहीक जड़ि खोदऽ लगताह। एकटा जोर पर जेहेन लड़का चाहैत छी उठा अनैत छी...' आ ओ लड़का आ जँ संस्कारी रहल तऽ दू तरहक...स्टैन्रक बीच भरि जिनगी पिसाइत रहैत अछि...ओर वैवाहिक जीवन सुखमय नहि रहैत छैक। आशा अछी अहाँ अपन दोसर बेटीक विदाह मे अहि बातक ध्यान राखब...

मास्टर : भाई...शांत रहू...बहसक कोन आवश्यकता...चलू... *(नरेन्द्रक प्रवेश)*

नरेन्द्र : भाई चलू...टैक्सी लऽ अनलहुँ...डाक्टर सँ समय *(ससुर पर दृष्टि पड़ैत छनि)* ओह अपने एतऽ...

दिवाकर : हँ हम एतऽ...हमरा देखि हदास किएक उड़ि गेल...हमरा देखि कऽ अहाँ दूनू भाईक प्लान गड़बड़ा गेल की?

नरेन्द्र : प्लान...केहेन प्लान?

दिवाकर : वाह केहेन अनजान बनि रहल छी? दूनू भाइ मिलि कऽ हमर बेटीक प्राण लेवापर लागल छी आ' कहैत छी कौन प्लान?

नरेन्द्र : दिवाकर बाबू...होश मे बात करू। हमर देवता सन भाई पर एहन कलंक...

मास्टर : *(डँटैत)* नरेन्द्र सभ शिक्षा घोड़ि कऽ पीबि गलेहुँ छीः छीः छी...ससुर पिता तुल्य होइत छथि...अहि तरहक व्यवहारक अहाँ सँ आश नहि छल...

नरेन्द्र : भाई...भाई हमरा क्षमा कऽ दियऽ

मास्टर : क्षमा हमरा सँ नहि...अपन ससुर सँ माँगू...(चन्द्रकान्त सँ भाई चलू...गेना उठा समान...।

नरेन्द्र : भाई ई की? अहाँके डाक्टर ओतऽ लऽ जेवाक लेल हम टैक्सी अनने छी।

मास्टर : ओहि टैक्सी सँ हम स्टेशन चलि जायब...

नरेन्द्र : नहि भाई नहि ई नहि भऽ सकैत अछि...हम अहाँके एहि हाल मे नहि जाय देब...*(पैर पकड़ि लैति छथि)*।

मास्टर : नरेन्द्र होश मे आउ..हमरा जयबाक अछि...गाम मे अहाँक भौजी प्रतीक्षा करैत हेतीं...

नरेन्द्र : नहि भाई नहि...

मास्टर : अहाँके अहाँक भौजीक सप्पत। हमरा जुनि रोकी...

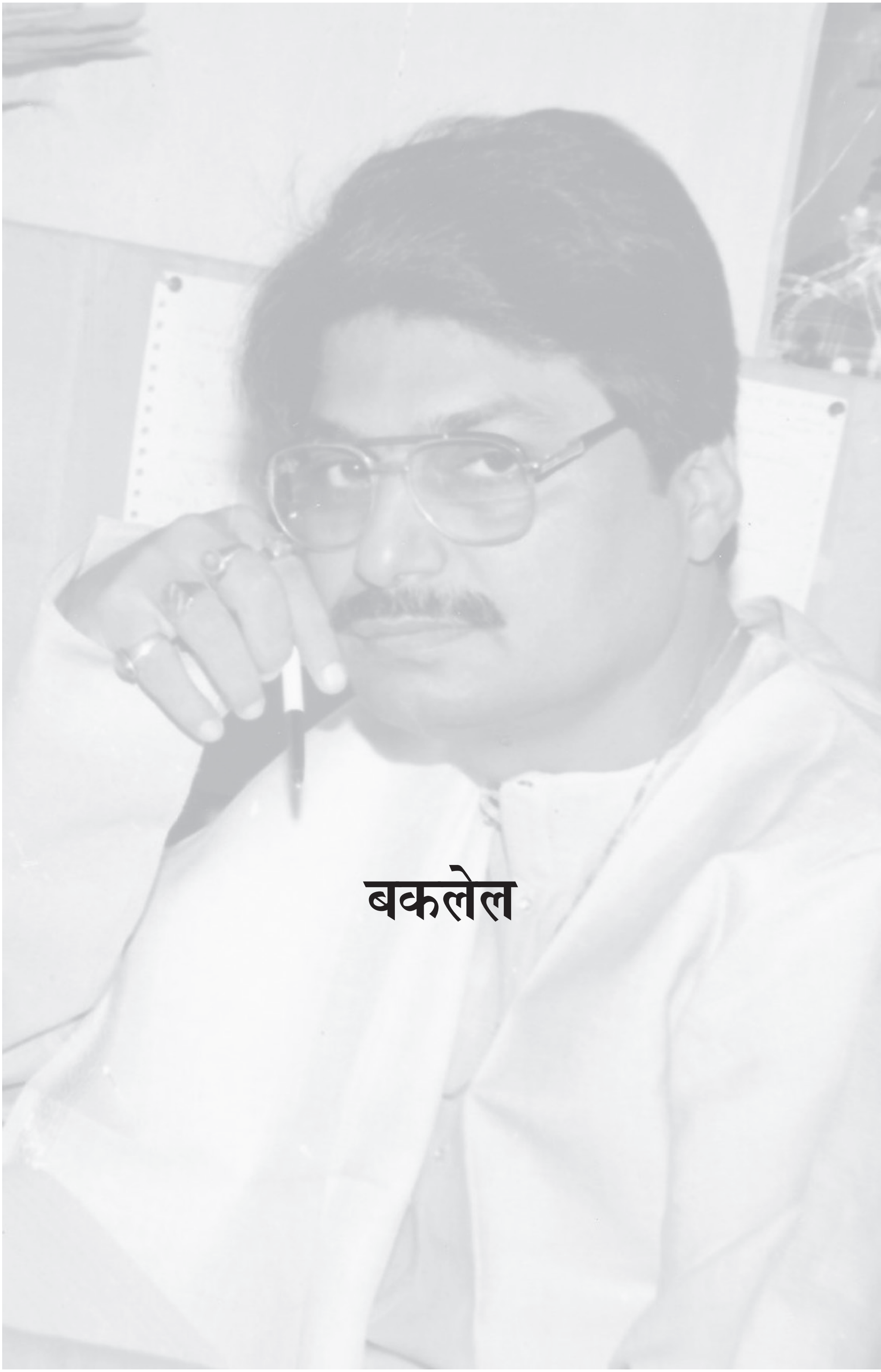
नरेन्द्र : भाई!

मास्टर : हँ...अहाँ जाउ बौआसीन के देखियौन...हुनका हमरा अएला सँ बहुत कष्ट भऽ गेलनि...। गेना...गेना...कने हमरा सहारा दे *(गोनाक कन्हा पर हाथ राखि बढ़वाक उपक्रम)*

नरेन्द्र : *(मास्टर के पकड़तै)* भाई हम अहाँके पहुँचा दैत छी...

मास्टर : नहि नरेन्द्र अहाँ जाउ आब तऽ इएह गेना हमर सहारा थीक...भाइ चलू...(गेनाक कन्हाक सहारा लैत मास्टर आ' पाछू पाछू चन्द्रकान्तक प्रस्थान करबाक मुद्रा। नरेन्द्र खाट पर बैसि कानय लगैत छथि...सभ पात्र स्थिर...प्रकाश बन्न होइत अछि।

●



बकलेल

बकलेल

पात्र परिचय

पुरुष पात्र

सद्दू (बालक)	:	12-14 बरखक मेधाबी छात्र
जद्दू (बालक)	:	11-12 बरखक मेधाबी छात्र
गन्नू (बालक)	:	8-9 बरखक बालक 'बकलेल
मुरारी	:	50-55 बरखक किरानी
दया बाबू	:	65 बरखक गृहपति
गोली जी	:	45 बरखक दया बाबूक टहलुआ
सद्दू (युवक)	:	28-29 बरखक डाक्टर
जद्दू (युवक)	:	26-26 बरखक इंजिनियर
गन्नू (युवक)	:	23-24 बरखक 'बकलेल'
घटकराज	:	50 बरखक व्यक्ति
ढेपा लाल	:	40-45 बरखक ग्रामीण महाजन
विश्वनाथ	:	30-35 बरखक दिल्ली सँ आयल हाकिम

स्त्री पात्र

मुरारीक स्त्री	:	35 बरखक दुब्बर-पातर गृहणी

17-18 बरखक ग्रामीण नवविवाहिता

पहिल एवं दोसर मंचनक कलाकारगण

महिल मंचन–16-1-1988		**दांसर मंचन–29-4-1988**
रवीन्द्र भवन, जमशेदपुर		प्यारेलाल भवन, नई दिल्ली
पात्र		प्रथम मंचन/दोसर मंचन
सद्दू (बालक)	:	पारस नाथ झा 'कौशल'
जद्दू (बालक)	:	कुमार भास्कर
गन्नू (बालक)	:	कुमार मयूर
मुरारी	:	मोहन झा
दया बाबू	:	लल्लन प्रसाद ठाकुर
गोली जी	:	प्रेम चन्द्र झा
मुरारीक स्त्री	:	कुमारी मनीषा
गन्नू (युवक)	:	रतीश चन्द्र मिश्र
घटकराज	:	पूर्णानन्द झा/लल्लन प्रसाद ठाकुर
ढेपालाल	:	रूप नारायण झा
विश्वनाथ	:	जी. विश्वनाथ
गन्नूक स्त्र	:	कुमारी उमा
सद्दू (युवक)	:	सोमनाथ मिश्र/बाल मुकुन्द चौधरी
जद्दू (युवक)	:	वसंत कुमार मिश्र/पारस नाथ झा

निर्देशक–लल्लन प्रसाद ठाकुर

सह-निर्देशक–रतीश चन्द्र मिश्र

आलोक–पूर्णानन्द झा, बाल मुकुन्द चौधरी/जी. विश्वनाथ

मंच निर्देशिका–श्रीमती कुसुम ठाकुर

संगीत–राजा

पार्श्व–देव चन्द्र झा

मंच निर्देश एवं आवश्यक सामग्रीक सूची

साधारण मंच। एक दिस बाहर जयबाक हेतु दरबज्जा, दोसर दिस मुरारीक घरमे जयबाक हेतु दरबज्जा। दरबज्जा सभ मे परदा लागल अछि। बाहर जायबला दरबज्जामे नीक परदा आ' दोसरमे साधारण परदा। बाहर जायबला दरबज्जा स' पाछू मंचपर सीढ़ी बनल। जाहिसँ चढ़ि कऽ उपरका मंजिल अर्थात दया बाबूक घरमे जयबाक अयबाक छैक। मंचपर मात्र एकटा साधारण खाट एकटा बेंच आ' दू टा पुरान-धुरान लकड़ीक कुर्सी। मध्यांतरक बादक दृश्यक हेतु परदा सभ बदलि देल जाइत अछि। मुरारीक घरक दरबज्जामे एकदम फाटल चिटल परदा। खाट आ' कुर्सी सभ बदलि कऽ टुटलाहा खाट आ' कुर्सी राखि देल जाइत अछि। बेंच हटा देल जाई'छ।

आवश्यक सामग्री : 2 खाट, 4 कुर्सी, बेंच, किताब, कापी, पेन्सिल, शीशाक गिलासमे कनी जल, चाकलेट, औजार बवस, 5—प्लेटमे हलुआ, 2 स्कूलक बस्ता, गुल्ली डंटा, सूप, खुद्दी, अखबार, बैग, चाभी, दबाइ पुर्जा किछु रुपैया दया बाबू लडंग, 3 रिपोर्ट कार्ड, माटिक बासनमे तरकारी, रोटी ई; रजीस्टर सभ बान्हल मोटरी, घटकराजक झोड़ा पत्र, छोटका बाल्टीमे जल, अलमु, नियमक बाटी, ढ़ेषा लालक लाठी, पत्र, गन्नू लऽग 60 टाका, मनी-आर्डर फार्म, मलहमक शीशी, मडुआक रोटी, प्याज ई, थारी, बाढ़नि, त', तीन हजार टाका, 2-अटैची, आला, सिरिंज ई., उतरीक कपड़ा, बन्दूक।

बकलेल

प्रथम दृश्य

पर्दा खुजबाक संग-संग पार्श्व गीत :

"त्याग तपस्या मोह ओ माया
केकरा लेल - केकरा लेल
पढ़ल लिखल बुझनुक जे छथि
वा जे छथि बढ़का बकलेल
हाय बकलेल हाय व कलेल।"

(सदानन्द (सद्‌दू) जयानन्द (जद्‌दू) आ गुणानन्द (गन्नू) पटियापर बेसिकऽ पढ़ि रहल छथि सद्‌दू हिसाब बना रहल छथि, जद्‌दू विज्ञानक पाठ जोर-जोरसँ पढ़ि रहल छथि, आ गन्नू जे मात्र 9-10 वर्षक छथि पेन्सिल कागतपर किछु कऽ रहल छथि। गन्नू अपन दूनू अग्रज के तंग करबाक ताकमे रहैत छथि।)

गन्नू : सद्‌दू भैया। सद्‌दू भैया।

सद्‌दू : हूँ...

सद्‌दू : सद्‌दू भैया...दू आ दू चारि किएक होइत छै, पाँच

सद्‌दू : *(आंगुरपर गनवंत)* गन्नू दू आ दू चारिये होएत छै, देखियो, एक-दू-तीन आ चारि।

गन्नू : से तऽ बुझलौं...मुदा...चारि के जँ हम पाँच कहिऐ - तऽ की हेतै?

सद्‌दू : गन्नू...अहाँ फेर उल्टा-सीधा गथ करऽ लगलौं।

गन्नू : नञि, हम कहैत छी जे क्यो ने क्यो तऽ एकरा चारि कहने हेतै। तै' ने हम सब आई एक दू तीन चारि पाँच...कहैत छियै। जँ ओ एना कहने रहितै। एक-दू-तीन पाँच चारि छ

तऽ आइ दू आ दू पाँच होइतैक...किने...

सद्दू : गन्नू अहाँ चुप रहब कि नञि? हमरा हिसाब बनाबऽ दियऽ *(गन्नू मुँह बनबैत जद्दू दिस बढ़ैत छथि जे कि जोर-जोर सँ विज्ञान पढ़ि रहल छथि)*

गन्नू : जद्दू भैया।

जद्दू : गन्नू...अहाँ चुपचाप बैसि कऽ पढ़ैत छी कि हम बाबू के सोर करियौन?

गन्नू : हम तऽ चुप्पचाप छी।

जद्दू : तऽ चुप्पे रहू, हमरा दिक् जूनि करू। हमर आइ विज्ञानक क्लास टेस्ट अछि।

गन्नू : विज्ञानक? जद्दू भैया...जद्दू भैया ई विज्ञान केकरा कहैत छै?

जद्दू : ओफ...अहाँ नञि मानब? गन्नू...कोनो वस्तुक विशेष ज्ञान कैँ विज्ञान कहैत छै।

गन्नू : तखैन तऽ हमहूँ विज्ञान भऽ गेलहूँ एक दू तीन के तऽ हमरो पूरा ज्ञान भऽ गेल अछि।

जद्दू : गन्नू...अहाँ विज्ञान नञि...प्रकांड विद्वान भऽ गेलौं, आब कथी लेल पढ़व लिखव, जाउ बाहरमे खेल-धूप करू जाऊ हमरा सभ के पढऽ दीयऽ।

गन्नू : गन्नू बाबू मारता।

जद्दू : किएक...किएक बाबू हमरा मारता?

गन्नू : अहाँ के नञि...हमरा मारता...हमरा। एक सऽ सय तक लिखऽ कहलैन अछि। अहाँक कहला सँ जँ हम खेलऽ धूपऽ चलि जैब तऽ बाबू हमरा मारता नञि? खूब हमरा अहाँ बुद्धि सिखा रहल छी....कहुना हमरा मारि खुआ दी तकरे चलाकी, हम सऽब बुझैत छी।

जद्दू : *(तमसाइत)*—गन्नू...अहाँ चुप्प रहैत छी कि नञि। पढ़बाक अछि तऽ चूपचाप पढू नञि तऽ जाउ।

गन्नू : पढ़ैत तऽ छी...अहाँ सभ किछु बतबैइते नञि छी, आ सद्दू भैयासँ पुछलियैन जे दू आ दू पाँच किएक नञि हेतै से।

जद्दू : हम बताउ जे दू आ दू पाँच किएक नञि होइत छै?

गन्नू : हँ बताउ ने।

जद्दू : *(गन्नूक कान पकड़ि दू थापर पीठपर आ दू थापर गालपर मारैत छथि। गन्नू कानऽ लगैत छथि)*।

सद्दू : जद्दू...किएक मारैत छियैन गन्नू कें छोड़ू हिनकर कान छोड़ू।

जद्दू : सद्दू भैया...हम कहाँ मारलियँन अछि गन्नू कें।

गन्नू : *(हिचकैत)* ईह, नञि मारलनि अछि...सद्दू भैया ई हमरा चारि थापर मारलनि अछि।

जद्दू : चारि थापर? कोना?

गन्नू : दू थापर पीठपर आ दू थापर गालपर।

जद्दू : दू थापर पीठपर आ दू थापर गालपर माने कुल मिला कऽ चारि थापर। आब बुझलियँ गन्नू। दू आ दू चारि किएक होइ छै?

गन्नू : *(कनैत)* माने किछु पूछब तऽ अहाँ हमरा मारब हम जाइत छियैन बाबू के कहऽ। बाबू...बाबू (घर दिस प्रस्थान सद्दू, जद्दू बैसि कऽ पढ़ऽ लगैत छथि।

(मुरारी बाबूक गन्नूक संग प्रवेश)

मुरारी : जद्दू...जद्दू।

मुरारी : अहाँ गन्नू के किएक मारलियैन अछि?

जद्दू : बाबू...ई अपने तऽ नहिये पढ़ैत छथि। हमरो सभकें दिक् करैत छथि...सद्दू भैयासँ पूछि लियौन केहेन उल्टा सीधा सवाल पूछि कऽ तंग करैत छथि। दू-आ दू पाँच किएक नञि हेतै ताहि तंग-तंग कऽ घऽ देलैनि हमरा दूनू गोटा के।

मुरारी : ई गन्नू बकलेल छथिए...अहाँ सबत' बुझनुक छी...नीक विद्यार्थी छी, छोट भाइ छथि, बुझा-सुझा कऽ प्रेमसँ रहबाक चाही ई मारि-पीट तऽ शोभा नञि दैत अछि...जाउ...स्कूल जेबाक तैयारी करू। माय जे किछु बना रखने छथि से लिय खाऽ लियऽ आ स्कूल जाउ।

सद्दू : जी...बाबू एकटा Instrument Box,

मुरारी : हँ...कतेक दाम हेतैक?

सद्दू : पन्द्रह टाका।

मुरारी : पन्द्रह टाका! सद्दू...किछू दिन आओर कहुना काज चला लियऽ...फैक्ट्रीक हड़ताल आब समाप्त हेबाक चाही...दू मास सँ हड़ताल अछि। खैर हड़ताल खुजितहि कीन देब।

सद्दू : जी बाबू...*(सद्दू आ जद्दूक प्रस्थान)*

मुरारी : गन्नू...आउ...एम्हर आउ, हमरा कोरामे बैसू *(गन्नू कूदि कऽ बापक कोरामे बैसि जाइत छथि)* गन्नू पैध भाइ सबकेँ तंग नञि ने करबाक चाही। हुनका सभ संग बैसि कऽ खूब मोन लगा कऽ पढ़ू। हुनके सब जकाँ क्लासमे फस्ट करू। स्कॉलरशिप लियऽ...तखन ने पैघ हाकिम बनब। जिनगी भरि मौज करऽब। नञि तऽ हमरे जकाँ कोनो फैक्ट्रिक किरानी भऽ कऽ जिनगी भरि सड़ैत रहब।

गन्नू : *(बापक देह के एक दू ठाम सूँघि कऽ)* ईह झुठ्ठे।...अहाँक देह गन्ध करिते नञि अछि आ कहैत छी जे सड़ैत रहऽब।

मुरारी : *(खूब जोर सँ ठहाका मारैत)* हा...हा...हा। अहाँ असली बकलेल छी...हा...हा...हा। हमर बकलेलहा बेटा...बकलेल नहि तन...। हा...हा...हा। *(दया बाबू सीढ़ीसँ उतरैत)*।

दया : बड़ा ठहाका मारि रहल छी, मुरारी बाबू की बात? ओ हो...हो...गन्नू महाराज छथि कोरामे। तैं ने।

मुरारी : *(गन्नूकेँ कोरासँ उतरैत कुर्सी स' उठैत छथि)* आउ-आउ, दया भाइ...एतऽ बैसू।

दया : *(बेंचपर बैसैत)* अरे हम एतहि ठीक छी। अरे बैसू... बैसू...अहाँ ठाढ़ किएक छी। *(मुरारी बैसि जाइत छथि)* कहू मुरारी बाबू...इ कथीक ठहाका होइत छलैक?

मुरारी : हा...हा...हा की कहू दया भाई ई जे हमर गन्नू छथि ने सै असली बकलेल...तेहेन...तेहेन काज करता—तेहेन-तेहेन गप्प बजता जे कखनो तऽ तामस होइत अछि या कखनो हँसी लगैत अछि।

गन्नू : बाबू, अहाँ ककाजी लऽग हमरा बकलेल किएक कहलहुँ—हम अहाँ के मारब *(बापक छातीपर मुक्का मारऽ लगैत छथि)*।

मुरारी : अहाँ तऽ छीहे असली बकलेल तऽ अहाँके बकलेल नञि कहू तऽ की कहू?

गन्नू : बुधियार......ककाजी के कहियौन जे गन्नू बड़ बुधियार छथि।

दया : हँ...हँ हँ...अहाँ तऽ वास्तव मे बड़ बुधियार छी, अहाँक बाप तऽ फुसिये अहाँके बकलेल कहैत छथि। एम्हर आउ। *(गन्नू लगमे जाइत छथि)* हँ आब हमर टैक्स दियऽ। *(गन्नू अपन एक गाल बढ़ा दैत अछि, दया बाबू चुम्मा लैत)* बाह-बाह गन्नूक गाल तऽ चाकलेट सन मधुर छनि। की गन्नू?

गन्नू : ककाजी...आब हमर टैक्स दियऽ।

दया : हँ...हँ...हँ (जेबसँ चाकलेट बहारकऽ दैत) लिय'...गन्नू कनेक जल तऽ पिआउ।

(गन्नू दौड़ि कऽ घर दिस जाइत छथि)

मुरारी : दया भाइ, ई चाकलेट दऽ-कऽ।

दया : की हेतै मुरारी बाबू, हिनके सब लऽग रहैत छी, तऽ मोन लागल रहैत अछि।

भगवान एकेटा बेटा देलनि, सेहो अमेरिका जाकऽ बैसि गेलाह...पोता-पोती-पुतोहु सभ कतेक आवेशी मुदा भेंट तऽ होइत अछि बैह 2 वर्ष, तीन वर्ष पर, बेटा-पुतोह कहैत छथि अमेरिकेमे आबिकऽ रहू, मुदा हम गाम-घर एहि समाजके छोड़ि कऽ कोना जा सकैत छी, ई जे एतेक सम्पत्ति अछि से के देखत।

मुरारी : से तऽ ठीकै दया भाइ—मुदा एक बेर कम सँ कम विदेश घुमि आउ, रंग-बिरंगक चीज सब देखबाक अवसर भेटत।

दया : हा...हा...हा...आब एहि वयसमे की रंग-बिरंगक चीज देखब। हँ, सोचैत छी जे अगिला बेर बौआ औताह तऽ हुनके संग चलि जाइ, देखि आबी विदेश।

(एकटा गिलास मे गन्नूक जल नेने प्रवेश)

गन्नू : लियऽ ककाजी...

दया : *(गिलास लैत)*...ओफो...एहिमे जल कतऽ अछि?

गन्नू : छै नञि? हे देखियौ *(गिलास उनटि दैत छथि कनेक जल खसेत अछि)*।

मुरारी : गन्नू...ककाजी, अहाँकेँ जल पियेबाक लेल कहलैन आ अहाँ के हरदम बदमासिये सूझैत रहैत अछि?

गन्नू : जल तऽ आनि देलियैन पीबाक लेल।

दया : अँय यौ हम की एतबे जल पियब?

गन्नू : अहीं तऽ कहने रही जे कने जल पिआउ आब उनटे दूनू गोटे हमरा डेंटैत छी।

दया : हा...हा...हा...कनी जल...हा...हा...हा। अहाँ वास्तवमे बकलेल छी, बाप तऽ अहाँके कखनो-कखनो बकलेल कहैत छथि, मुदा हम अहाँक नाम बकलेल राखि देलौं। हा-हा...हा *(हँसी मे मुरारी बाबू संग दैत छथिन)*।
(प्रकाश नहू-नहू बन्त होइत अछि)।

दोसर दृश्य

(गन्नू आ गोलीजी, गुल्ली डंटा बेला रहल छथि)

गोली : आहिरेबा, एना किएक मारै छियै गन्नू ...एना कतौ खेल भेलैए?

गन्नू : आहिरेबा, एना कतौ खेल भेलैए? *(नकल करैत छथि)* ईह एना नै खेल होइत छै तऽ कोना होइत छै?

गोली : अहिरेबा...ठीक सँ मारबै तखैन ने हम लपैक कऽ घरऽब।

गन्नू : ईह बड़ चलाक...तखैन तऽ हमरा दंड लागत खेलऽ-तेलऽ तऽ अबिते नै छनि आ' हमरा सिखाबऽ चललाए...भुसकौल नहि तन।

गोली : देखू गन्नू हमरा भुसकौल नञि कहू, अपने तऽ बकलेल छथि आ हमरा भुसकौल कहैत छथि, आहिरोबा देखू तऽ ने।

गन्नू : *(डण्टा लऽ कऽ मारऽ दौड़ैत छथि)* गोलीजी अहाँ हमरा बकलेल कहऽब?

गोली : देखू गन्नू खेलेबाक अछि तऽ खेलाउ। हमरा मारब तऽ हम अहाँक संग नहि खेलायब।

गन्नू : अहाँ हमरा बकलेल कहऽब?

गोलीजी : अहिरेबा, हम की, सब तऽ अहाँ के बकलेले कहैत अछि...अहाँक बाबू कहैत छथि, आ' काकाजी तऽ नामे बकलेल धऽ देने छथि। इनका सभके किएक नै मारैत छियनि?

गन्नू : बाबू हमरा दुलार करैत छथि आ' ककाजी बड़ चाकलेट दैत छथि, अहाँ तऽ अपने ढ़हलेल छी....

गोली : देखू गन्नू...ठीक नञि हैत...अहाँ हमरा ढ़हलेल कहऽब? हम जाइत छियनि अहाँ के बाबू के कहैक लेल जे आहिरौबा...देखू तऽ नान्हिटाक गन्नू हमरा ढ़हलेल कहैत छथि।

गन्नू : गोलीजी...अहाँ बाबू के कहि देबनि।

गोली : आहिरोबा...अहाँ एना करऽब तऽ हम कहबनि नञि की?

गन्नू : *(लऽग जाकऽ)* गोलीजी...गोलीजी.....

गोली : हूँ।

गन्नू : गोलीजी अहाँ तऽ बड़ नीक लोक छी...गोलीजी अहाँ जे ओहि दिन हलुआ बनौने रही बाह ओहेन हलुआ तऽ हमर माँ के सेहो नै बनबऽ अबैत छै।

गोली : हें-हें-हें गन्नू नीक लागल छल हलुआ?

गन्नू : आ-हा-हा-गोलीजी, सच्चे कहैत छी हमरा तऽ बुझाइत अछि जे ओहेन हलुआ अहि संसारमे आओर क्यो नञि बना सकैत अछि।

गोली : हें-हें-हें गन्नू आब जहिया हम फेर बनायब हलुआ तऽ अहाँ के खुआयब।

गन्नू : सच्चे गोलीजी।

गोली : आहिरौबा...सच्चे नञि तऽ की झुठ्ठे चलू खेले.बाक लेल। *(गन्नू आ गोली पुनः खेलाय लगैत छथि)*

(सीढ़ी स’ उतरत दया बाबू प्रवेश)

दया : बकलेल ई आँगनमे गुल्ली डंटा खेलायल जाईत छै? आड़ अहाँ स्कूल किएक नञि गेलो अछि?

गन्नू : ककाजी...आई हमर मोन नहिं ठीक अछि।

दया : अच्छा...की होइए?

गन्नू : कहलों ने जे आइ हमर मोन ठीक नञि अछि, तऽ बुझिते नञि छियै अहाँ।

दया : हूँ हमरा बुझबामे किछु समय लगैत अछि, आब बूढ़ भऽ गेलौं किने। मुदा ई गुल्ली डंटा खेलेवामे अहाँक मोन खराब नञि अछि खाली स्कूल जेबामे मोन खराब अछि...अच्छा हमरा तऽ कहू जे की होइए?

गन्नू : हैत की...जहाँ स्कूलक बस्ता कनहापर रखैत छी कि मोन घूमऽ लगैए बुझाइत अछि जेना बड़ जोरसँ बोखार भऽ गेल हुए।

दया : अच्छा बस्ता कनहापर रखिते अहाँ के बोखार भऽ जाईत अछि। मोन घूमऽ लगैत अछि...किने?

गन्नू : हँ।

गोली : आहिरो’बा तखैन तऽ अहाँ बस्तासँ दूरे रहू गन्नू। बस्तामे जरूर कोनो मरलाहा मास्टरक भूत घुसि गेल अछि।

दया : अहाँ चुप रहू गोलीजी...ई तऽ बकलेल छथिए अहूँक पावर कम नञि। हँ तऽ गन्नू बकलेल लालजी हम ई कहैत रही जे अहाँके कनहापर बस्ता रखितै बोखर भऽ जाइत अछि...। त’ एकटा काज करू वस्ता के एना क’ मोड़ि लिय आ’ स्कूल चलि जाउ। अखनि दूइये तीनटा घंटी भेल हैत जाउ।

गन्नू : स्कूल जाउ... स्कूल जाउ... स्कूल जाउ... हम कि भूखले स्कूल जाउ?

दया : भूखले... भोजन नञि केलौं अछि की?

गन्नू : नञि...रातियो नञि केलौं... अखनो नञि केलौं...घर मे क्यो नञि बाप रे...।

दया : की भऽ गेल?

गन्नू : ककाजी, माँ कहने छलए केकरो नञि कहबाक लेल। हम तऽ अहाँके कहि देलौं।

दया : ओह...तऽ ई स्थिति भऽ गेल। गन्नू बाबू छथि घरमे?

गोली : आहिरौबा ओ तऽ भोरे जे गेलखिन से नहि एलखिन

दया : ओह...गोलीजी अहाँ उपर जाउ

(गोलीजी "जी भाइ" कहैत प्रस्थान करैत छथि।)

(फेर सोर पाड़ैत)—भौजी...भौजी।

(मुरारी बाबुक स्त्रीक प्रवेश)

स्त्री : आउ बैसू ने। *(दया बाबू बैसि जाइत छथि)* बौआ आ बौआ-सिनक कोनो चिट्ठी-तिट्ठी आयल कि नञि?

दया : ओह...कहाँ? बड़ चिन्तित छी...किएक नञि पत्र दऽ रहल छथि से किछु पता नञि। *(पार्श्व सँ दरबज्जा ढ़कढ़केबाक संग गन्नूक स्वर)*

गन्नू : बाबू आबि गेला...बाबू आबि गेला।

(मुरारी बाबूक प्रवेश मुह उत्तरल छनि)

बाबू किछू नै अनलों? हमरा बड़ भूख लागल अछि बाबू।

मुरारी : (गन्नू के एक कात लऽ जा कऽ धीरे स' कहैत छथि, अच्छा-अच्छा...ककाजी के जाय दियौन हम किछु व्यवस्था करत छी जाउधरि खेलाउ...जाउ *(गन्नू एक कात जा कऽ गुल्ली डण्टा खेलाय लगैत छथि)* ओह...दया भाइ। बड़ी काल सँ बैसल छी की। *(पत्नी दिस)* दया भाई के किछु चाह ताह।

दया : अरे नञि नञि भौजी।

मुरारी : आह...से केना हैत...सुनै छी...कने चाह....*(असमंजसमे स्त्रीक प्रस्थान करबाक उपक्रम)*

गन्नू : हे गे माँ झुठ्ठे कथी ले जाइ छै...घरमे किछु घौ नहिए आ'।

स्त्री : *(तमसाइत)* गन्नू।

गन्नू : तमसाइत किए छैं...उ जे बात हमरा ककरो कहबा सँ मना

केने छलै से तऽ हम ककाजी के कहि देलियनि।

स्त्री : कहि देलियनि...की कहि देलियनि?...हँ...हँ...जाउ सौंसे दुनियाँ के कहि दियौ जाउ *(कनैत प्रस्थान)*

दया : अरे ई की कहताह ई तऽ बकलेलक बकलेले छथि...हा...हा...हा। बुझलौं किने, मुरारी भाइ आइ हम हिनका कहलियनि जे गन्नू आह अहाँ के हमरा ओतऽ पार्टी अछि तऽ कहैत की छथि बुझलों जे हम असगर अहाँ ओतए पार्टी नहि खैब...आओर की कहलनि से ने सुनू, जे अहाँ अपना के बढ़ चलाक बुझैत छियै ककाजी...खाली हमराटा खुआक' अहाँ बचि जाय चाहैत छी...हा...हा...हा।

मुरारी : दया भाइ ई कथीक पार्टी?

दया : आइ बौआक जनम दिन छियनि किने।

मुरारी : मुदा बौआक जनम दिन तऽ मार्चमे होइत छनि।

दया : अरे हाँ हुनकर तऽ 5 मार्च कऽ जनम छनि ओ हो...हो...हो...आइ तऽ हमर अपने जनम दिन अछि...मुरारी भाइ आब हमहूँ सठिया गेलहुँ बुझाइत अछि जनम...दिन अछि अप्पन आ मथिमे घूसि गेल जे बौआक छनि। हा-हा-हा-आइ तऽ हमर अपने जनम दिन अछि, तखन तऽ ठीके हमरा तऽ सभकेँ पार्टी देबऽ पड़त।

मुरारी : अरे नञि-नञि दया भाइ...ई सब कथी लेल।

दया : अरे नहि। आइ हमर जनम दिन अछि आ अहाँके एकोरत्ती प्रसन्नता नञि?

मुरारी : अरे-अरे अहुना कतौ...ई कि गप्प कऽ रहल छी दया भाई?

दया : तखैन आइ चुप्पे रहू। अहाँ सभ के आइ हमरा दिस सँ पार्टी *(सोर करैत)* गोलीजी...गोलीजी...*(गोलीजीक प्रवेश)* बकलेल कहू की खयाब? हलुआ कि पूरी तरकारी, मिठाई की खायब?

गन्नू : गोलीजी जल्दी की बना सकै छी अहाँ?

गोली : आहिरौबा, ई तऽ क्यो कहि सकैत अछि जे हलुआ जल्दी बनतै आ पूरी तरकारीमे कने टाइम लगतै।

गन्नू : अच्छा तऽ गोलीजी जाधरि पूरी तरकारी बनत ताधरि हलुका बना कऽ नेने आउ।

गोली : अच्छा गन्नू *(जयबाक लेल घुमैत छथि....पुनः घूमि कऽ)* माने कि हमरा हलुओ बनाबऽ पड़त आ पूरियो तरकारी? हम दूनू नै बनायब। *(दया बाबू ठहाका मारि कय हँसैत छथि। गन्नू गोलीजी लऽग जाइत छथि आ स्थिर सँ कहैत छथि)*

गोली : हम तऽ पूरियो तरकारी बढ़ियाँ बनबैत छी।

गन्नू : हँ...से तऽ अहाँ जे बनबैत छी से सब सँ बढ़ियाँ। हमरा दूनू चीज खुआयब ने?

गोली : हँ...हँ...गन्नू अहाँ चलू हम तुरते हलुआ बना कऽ नेने अबैत छी...तकरा बाद पूरी तरकारी खुआयब।

दया : ई की कनफुसकी भऽ रहल छै गोलीजी?

गोली : किछु नञि...भाइ...हम तुरत्ते बना कऽ नेने अबैतछी। *(प्रस्थान)*

दया : *(ठहाका मारैत)* हा...हा...हा गोलियोजी एकटा चीजे छथि। *(दरबज्जा ढ़केलि कऽ सद्दू जद्दूक प्रवेश)।*
जद्दूक हाथमे एकटा नऽव औजार वकस छनि। दूनू घर दिस बढ़ैत छथि)।

मुरारी : जद्दू ई औजारबक्श?
(जद्दू चुप रहैत छथि)

मुरारी : जद्दू हम पूछली जे ई औजरबक्स कतऽसँ अनलौं?

सद्दू : बाबू ई हेडमास्टर साहेब देलखिन अछि।

दया : बाह-बाह...पुरस्कार...कथी लेल इ पुरस्कार?
(जद्दू कनैत घर दिस जाइत छथि)

सद्दू : बाबू...जद्दू के Half yearly परीक्षामे हिसाबमे मात्र 85 नम्बर अयलनि अछि। ओना तऽ इहो फस्ट केबे केलनि अछि। मुदा हेड मास्टर साहेब हिनकर हिसाबक कापी मंगाकऽ देखलखिन आ’ फेर हिनका बजाकऽ पुछलखिन जे Geometry क सवाल सब इ किएक ने बनौलनि? तऽ

जद्दू जोर-जोर सँ कानऽ लगलखिन। फेर हेड मास्टर साहेब हमरा सँ पुछलनि तऽ हम कहि देलियैन जे बम्बूक फैक्ट्री मे हड़ताल चलि रहल छनि। तैं अखैन पाई छनि कि तुरत्ते ओ अपन जेबीसँ पाइ निकालिकऽ चपरासीके देलखिन बजारसँ कीन कऽ अनबाक लेल।

दया : बाह, तऽ अइमे कनबाक कोन गप्प। जाउ कपड़ा लत्ता बदलू।

(सद्दूक प्रस्थान)

बाह-बाह बड संतोष भेल जे आइयो कालिक जमानाम एहन उच्च विचारक नीक शिक्षकसभ छथि।

मुरारी : भाइ नीक आ अधलाह तऽ सब कालमे होइत आयल अछि। मुदा आजुक जमानामे नीकके नीक बनल रहबाक प्रयासमे मरन भऽ रहल छै, आ अधलाह...दिन प्रतिदिन आओर अघलाह भेल चलल जा रहल अछि।

(सीढ़ी सँ उतरैत गोली आ गन्नूक प्रवेश)

गन्नू : गरमा गरम हलुआ ककाजी।

दया : लाउ-लाउ जल्दी लाउ बड़ भूख लागल अछि। गोलीजी भौजीक थारी एतहि राखि दियौन आ बजौने अबियौन। गन्नू जाउ अहाँ तीनू भाइ घरेमे खा लिय। *(गोलीजी आ गन्नूक प्रस्थान। मुरारीक स्त्रीक प्रवेश, पाछू पाछू गोलीजीक प्रवेश)*

दया : होउ भाइ, भौजी लियऽ।

(सब थारी उठबैत छथि) बाह-बाह गोलीजी बड़ स्वादिष्ट बनौलौए। भाइ अहाँ गोलीजी के जश नञि दऽ रहल छियनि। भौजी...अहूँ...हे...अहाँ एहन हलुआ नञि बना सकैत छी।

स्त्री : से तऽ ठोके। बढ़ स्वादिष्ट बनल अछि, हलुआ गोलीजी।

दया : मुदा भाइ कहाँ जस दऽ रहल छथिन?

मुरारी : नञि-नञि ठीके नीक बनलनि अछि।

दया : भाइ, गोलीजी हलुए नञि...मलपूआ सेहो बड़ बढ़ियाँ बनबैत छथि। भाइ गोली जी जँ मोगी रहितथि तऽ हिनकर घरवाला

बड़ प्रसन्न रहितथिन।

भाइ बुझल किने...फगुआमे इ अपने मलपूजा छानि-छानि कऽ घरवालीके खुअबैत छथि। की गोली जी कहियो भाइ या भौजीके नै खुएबनि मलपूआ?

गोली : आहिरौबा, अहिमे की लगै छै, जहिया कहबै तहिये बना देबनि...हम कने आओर हलुआ नेने अबै छी।

दया : गोलीजी के कने हाबिस कऽ ने दियौन फेर तऽ गोलीजी गोलियेजी छथि...अपन बनाओल भोजनक प्रसंशा सुनि कऽ फूलिकऽ कुप्पा भइ जाइत छथि।

स्त्री : बनबैतो छथि बढ़ियाँ गोली जी....

दया : खाख बनबैत छथि। एहन सड़ल हलुआ बनौलनि अछि आ अहाँ कहैत छी जे बढ़िया बनौलनि अछि। अरे भौजी...जहाँ जेहेन भोजन बनबैत छी तेहेन सौंसे मिथिलामे क्यो नहि बना सकैत अछि।

स्त्री : दुर...जाऊ...खूब चिन्हैत छी अहाँ के। सभक मुँहपर ओकरे सनक गप्प कहैत छियै...जाउ (प्रस्थान)

(दया बाबू ठहाका मारैत छथि)

(प्रकाश बन्न होइत अछि)

दृश्य तेसर

(मुरारी बाबूक स्त्री खुद्दी बीछ रहल छथिन। मुरारी बाबू बेचैन एमहर सँ ओमहर टहलि रहल छथि)

स्त्री : अहाँ के किछु भऽ रहल अछि की? मोन नञि नीक लगैत अछि तऽ कने पड़ि रहू...चाहक पत्ती तऽ नञि अछि...हम तुलसीक काढ़ा बना दैत छी...*(उठबाक उपक्रम)*

मुरारी : नञि-नञि अहाँ अपन काज करू।

(जा कऽ खाटपर पड़ि रहैत छथि)

स्त्री : ...हड़ताल...हड़ताल......हड़ताल...पेट जकर भरल रहैत छैक से हड़ताल करबैत अछि आ' आधा पेट खायबला सभके

भूखले सुतबाक लेल बाध्य करैत अछि...ई भरल-भरल, फूलल-फूलल पेट बला नेता सभ...हे भगवान लोकक पेट किएक नै हड़ताल करैत छैक जे सभ झंझटसँ मुक्ति भेटि जयतैक लोक सभ के...रिक्शा हड़ताल, बसक हड़ताल ट्रेनक हड़ताल, स्कूल कॉलेजक हड़ताल, फैक्ट्रीक हड़ताल...चारू दिस हड़ताल हड़ताल, हड़ताल, नञि भऽ गेल जे....

स्त्री : कथी लेल अपन मोनके अशान्त कऽ रहल छी। कने काल सूति रहू निम्न भऽ जैत तऽ मोन शान्त भऽ जैत।

मुरारी : की निन्न हैत...आ की मोन शांत हैत...एतेक तेज बच्चासभ जे प्रत्येक साल स्कूलमे रेकर्ड बनबैत अछि...से भोर साँझ दुपहर खुद्दीक भात नोन संग खाइत अछि से देखि कऽ हमरा देहमे...ई भूसकौलहा सभ राज करत, शासन चलाओत, हूड़ि-हूड़िक पूआ पकबान खाओत आ' मेधाबीसभ कहने पढ़ि लिख कऽ हमरा जकाँ कोने फैक्ट्रीमे, कि ऑफिसमे कलर्की करत...आइ छः मास सँ फैक्टरीमे हड़ताल करौने अछि ई नेता सभ...लोक सभक घरमे चूलहा नै जरैत छैक...भीख मंगबाक स्थिति आबि गेल छैक...क्यों जे काज पर आपस जाय चाहैत अछि तऽ नञि जाय दैत छैक...जान सँ मारि देबाक धमकी दैत छैक...आब हमरासँ बर्दास्त नञि भऽ रहल अछि...आइ हम अपन काज पर जेबे करब...देखैत छियै जे के की करैत अछि....

(जयबाक उपक्रम)

स्त्री : *(बढ़ि कऽ रोकैत)*...नञि...नञि...अहाँ ओतऽ नञि जाउ...अहाँ के हमरे सप्पत...

मुरारी : नञि जाउ तऽ की करू? पागल भऽ जाउ कि आत्महत्या कऽ ली?

स्त्री : एहन अशुभ गप्प नहि बजबाक चाही....

मुरारी : की शुभ आ' की अशुभ तीन-तीनटा बच्चाके भुखले सुतैत देखैत रहैत छी...घरबालीके फाटल बस्त्रम देखैत रहैत छी...अहू सँ बेसी किछु अशुभ भऽ सकैत अछि? मोन होइत

अछि जे हड़ताल करय बला सभ कें ठोंठ दाबि कऽ मारि दी।

स्त्री : की करबै...सभ कर्मक फल छैक। केकरा-केकरा मारबै। गरीब लोकक लेल जखैन भगवाने हड़ताल केने रहैत छथिन तऽ ई सभ हड़तालक कोन गऽप...आउ मोन के शान्त करू...आइ बौआ सभक रिजल्ट निकलबाक छनि...रिजल्ट लऽ कऽ ओ सभ आबिते हेता।

मुरारी : की रिजल्ट? केहेन रिजल्ट? हुनकर सभक रिजल्ट हमरा सोंझा घूमि रहल अछि। कहना I-A- B-A- तक पढ़ि लेता...फेर....सोर्स-पैरवी तऽ छन्हिऐ नञि, जे कतौ चपरा. सियोक नौकरी भेटतनि...बापक सम्पत्ति तऽ येह छन्हि जे खुद्दीक भात आ नूनो भेटब दुर्लभ भऽ जेतनि दू-चारि दिन बाद सँ...फेर की करता...चोरी डकैती मारि पीट....।

स्त्री : नै-नै एहन अशुभ गप्प जुनि बाजू...हमर हृदय। ...मायक हृदय अछि...हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे हमर बच्चा सभ खूब पढ़ि लिखि कऽ पैघ-पैघ हाकिम बनत....

मुरारी : फुसिये अपन हृदयके भरोस जुनि दी...दिवा स्वप्न जुनि देखी...धरातलपर उतरि कऽ सोचू....

स्त्री : की सोचू...अहाँ तऽ सोचि-सोचि कऽ अपन देहके गलौने चलल जा रहल छी आ हमरो सभकें....

मुरारी : हँ...हँ...सभहक दोषी तऽ हमही ने छी। हमरे कोनो दुष्कर्मक फल थिक जे अहाँ सभ भोगि रहल छी। आय हमरा सँ ई सभ नहि देखल जाइत अछि...हम आइए गाम जाइत छी आ' जे डीह डाबर बचल अछि तकरा बेचि दैत छी।

स्त्री : नञि...नञि? हम अहाँ के डीह नञि बेचऽ देब...कोनो हालत मे नञि बेचऽ देब...अहाँक बाप-पुरखाक देल ओतबे तऽ बचल अछि...ओकरा हम नञि बेचऽ देब...हाँफऽ लगैत छथि...देह घूमऽ लगैत छनि। मुरारी बढ़ि कऽ पकरैत छथिन)

मुरारी : ओह...हो...हो...एतह...बैसू...जखनि बुझैत छियैक जे बेसी बजला से अहाँक मोन खराब भऽ जाइत अछि तऽ कथी लेल बजैत छी—सभ हमरे पेड़ऽमे लागल छी...*(भीतर स'*

जल आनि कऽ दैत) लियऽ पीबि लिय—

स्त्री : *(जऽल पिबैत)* नञि...नञि...हम अहाँके डीह नै बेचऽ देब....

मुरारी : नञि बेचऽ देव तऽ हम की करी से ने कहू...बच्चा सभके भुखले रहऽ दियै...अहाँ के ई फाटल वस्त्र...ओफ.

स्त्री : किछु दिनक तऽ गऽप्प अछि...हड़ताल खत्म भेलापर सभ ठीक भऽ जैत....

मुरारी : हँ...सभ ठीक भऽ जैत मुदा...इ हड़ताल खत्म हो तखनि ने...हे भगवान....केहेन परीक्षा लऽ रहल छी...पत्नी के एकटा दबाइ नहि कीन कऽ दऽ सकैत छी...एकटा वस्त्र नहि दऽ सकैत छी—

स्त्री : हमरा नञि चाही वस्त्र...कहूना काज चलि रहल अछि...बच्चा सभकेँ पढ़ेबाक लेल जँ हमरा दोसराक घरक चौका-बासनो करऽ पड़त तऽ करब...मुदा...भगवानक लेल डीह बेचबाक नाम फेर नञि लियऽ....

मुरारी : यै...हमरा कि सौख अछि जे डीह बेचि कऽ मौज-मस्ती करी. ..अहाँ जखन स्त्रीगण भऽ एतेक त्याग करबाक लेल तैयार छी...तऽ हमहूँ किछु कऽ सकैत छी...मोटियाक काज कऽ सकैत छी...पीठपर सामान उठा सकैत छी। मुदा ताहि सँ की हैत। आइ ने काल्हि दया भाड़ गामसँ आपस औताह। हुनका सोझाँ हम कोन मुँह लऽ कऽ जायब। आई छः मास सँ घरक किराया नञि देलियनि अछि...।

स्त्री : दया भाइ नीक लोक छथि...ओ किछु दिन आओर प्रतीक्षा कऽ सकैत छथि....

मुरारी : नीक लोक छथि तँ हमरो सँ नीक व्यवहारक आशा रखैत हैताह। ओहुना तऽ ओ कोना-ने-कोनो बहाने सदिखन मदत करिते रहैत छथि...बच्चा सभ के तऽ....

(दरबज्जा ढ़कढ़केबाक स्वर। मुरारी बढ़ि कऽ दरबज्जा फोलैत छथि)

मुरारी : ओह दया भाइ। आबि गेलियै...अखने अहीक चर्च हमरा

लोकनि करैत छलहुँ।

दया : अच्छा। गोलीजी जाउ अहाँ घर खोलि कऽ साफ सुथड़ा करू...

(गोलीजी उपर चलि जाइत छथि)

कहू मुरारी भाइ अपन की हालचाल?

मुरारी : की कहू...एखनि घरि हड़ताल चलिए रहल अछि...फैक्टरी कहिया फुजत से नञि जानि....

दया : भाइ-भाइ अहाँ के किछु बुझल नै अछि की?

मुरारी : से की?

दया : आब अहाँक फैक्टरी कहियो नञि फूजत....

मुरारी : की कहैत छी दया भाइ...!

दया : अहाँक फैक्टरीमे लॉक-बाउट भऽ गेल...आ हमरा जनैत मैनेजमेंट आब इ स्वबा-वनज कहियो नञि उठाओत....

मुरारी : स्वबा वनज नञि-नञि ई नञि भऽ सकैत अछि....हमर बच्चा सभ बिलटि जैब...हमर बच्चा सभ बिलटि जैत...दया भाइ ई झूठ बात अछि....

(ओमहर मुरारीक स्त्रीक देह घुमऽ लगैत छनि)

दया : ई झूठ नञि अछि मानि...लियऽ ई अखबार पढ़ि लियऽ।

स्त्री : *(कम स्वरमे)* नञि-नञि....*(अचानक दयाक नजरि मुरारीक स्त्रीपर पड़ैत छनि)*

दया : भौजी...भौजी *(बढ़ि कऽ हुनका पकड़ैत छथि मुरारी सेहो पकड़ैत छथिन)*।

दया : भाइ...ई अचानक भौजी के की भऽ गेलनि...अहाँ हिनका लऽ कऽ घरमे जाउ...हम डाक्टरके बजबैत छी...गोली जी. ..गोली जी....*(मुरारी स्त्रीके लऽ कऽ जाइत छथि)*

गोलीजी : *(पार्श्वसँ कहैत प्रवेश)*...अबै छी भाइ...की कहैत छी...

दया : गोलीजी...कनी जल्दीसँ डाक्टर बर्माक ओतऽ जाउ...हुनका हमर नाम कहबनि आ तुरंत आबऽ कहबनि...

गोलीजी : आहिरौबा...अखने तऽ अहाँ ठीक-ठाक छलों आ' तुरन्तेमे डाक्टरक आवश्यकता भऽ गेल...आहिरोबा....

दया : आहिरौवा...आहिरोबा...जे कहैत छी से करू ने....जल्दी जाउ डाक्टरके लऽ कऽ आउ–

गोली : तमसाइत किएक छी भाइ...जाइते तऽ छी...*(प्रस्थान एवं प्रकाश बन्न)*

चारिम दृश्य

(दया बाबू चिन्तित अवस्थाम एमहरसँ ओमहर टहलि रहल छथि। गोलीजी के दबाई आ पूर्जाक संग प्रवेश)

गोलीजी : भाइ। डाक्टर साहेब ई दवाइ सभ देलनि अछि। *(दया दवाइ एवं पुर्जा लऽ कऽ देखैत छथि)*

दया : की कहेत छलाह?

गोलीजी : भाइ कहैत छलाह जे मात्र कमजोरी छनि। हुनका तऽ बुझाइत छनि जे भौजी 7-8 दिन सँ किछु खेबे नञि केने छथि।...कहलनि जे हुनका नीक सँ भोजन करबियौन। ई दवाइ-तवाइ कोनो काज नञि करत।

दया : की? 7-8 दिन सँ किछु ने खेने छथि।...हे भगवान की भऽ रहल छैक एहि परिवारमे...गोलीजी अहाँके भोजन बनेबामे समय लागत...ई पाइ लियऽ आ जल्दीसँ होटलसँ किछु खय-बाक समान नेने आउ जल्दी जाउ।

(गोलीजीक प्रस्थान आ दोसर दिससँ मुरारी बा बूक प्रवेश। दया दवाइ जल्दी सँ नुका लैत छथि।)

दया : भाइ आब केहन हाल छनि भौजी के...

मूरारी : अखनि धरि तऽ बेहोशे छथि। भाइ डाक्टर साहेब की कहलनि?

दया : किछु ने मात्र कमजोरी छनि....

मुरारी : भाइ...अहाँ किछु छुपा तऽ नञि रहल छी?

दया : अरे नञि...हमरापर विश्वास नञि अछि की....*(कने कालक चुप्पी)*

मुरारी : ...कमजोरी...कमजोरी...हे भगवान....

(तीनू बच्चाक प्रसन्न मुद्रामे प्रवेश—तीनूक हाथमे रिपोर्ट कार्ड छनि)

सद्दू : बाबू...बाबू....

गन्नू : ककाजी आबि गेलखिन *(कहैत दया बाबूक कोरामे बैसि जाइत छथि)*

सद्दू : बाबू जद्दू के 95% नम्बर अयलनि अछि...आ' हमरा 91% आ' बाबू हमरा दूनू गोटे के District scholarship सेहो भेट गेल। ओकरा रिजल्ट आइये एलै अछि....

मुरारी : हूँ...*(सद्दू रिपोर्ट कार्ड मुरारीक हाथमे दैत छथि....कार्ड नीचा खसि पड़ैत अछि। दया उठबैत छथि)*

दया : बाह-बाह...अहाँ सब तऽ कमाल कऽ देलौं। 91% आ; 95% अरे बाप एतेक नम्बर आ' संग मे District scholarship! अहाँ दूनू मोटे के हमरा दिससँ पुरस्कार भेटत....

गन्नू : आ हमरा नञि?

दया : अरे हँ...अहाँक Report Card तऽ देखबे नञि केलौं।... देखू....

गन्नू : हमर कार्ड सभसँ बढ़िया अछि कका जी...सद्दू भैया आ' जद्दू भैया के कतौ लाल रोशनाइ सँ लिखलखिन अछि मास्टर साहेब।...हमर देखू...*(कार्ड दैत छथि)*

दया : *(देखैत)* वास्तवमे अहाँक तऽ सबसँ बढ़ियाँ अछि—हिसाब मे लाल लाइन हिन्दीमे लाल लाइन...इतिहासोमे त, भूगोलोमे. ..बाह...बाह...मुदा गन्नू मास्टर साहेब लिखलनि अछि जे अहाँके एहि क्लासमे एक वर्ष आओर पढ़ऽ पड़त...हा... हा...हा....

(सद्दू आ जद्दू सेहो हँसैत छथि)

मुरारी : *(डैटैत)* सद्दू....

सद्दू : जी बाबू....

मुरारी : अहाँक माइक मोत बहुत खराब अछि...जाउ हुनके लऽग बैसू...जद्दू...गन्नू...अहूँ सब जाउ....*(तीनू भाइक प्रस्थान)*

दया : भाइ कथी लेल बच्चा सभके डाँटि देलियैक कहू तऽ कतेक

प्रसन्न मुद्रामे आयल छल ओ सभ। एतेक बढ़िया Result आ' ताहू परस District scholarship भेटबाक समाचार...की अहाँके कोनो प्रसन्नता नै भेल?

मुरारी : दया भाइ...आब की प्रसन्नता...आब तऽ सभ किछु बर्बाद भऽ चुकल अछि...सभ किछु....

दया : भाइ एतेक हतोत्साह नहि होउ...भगवान कृपासे सभ ठीक भऽ जैत।

मुरारी : आब की ठीक हैत।...भाइ आब की ठीक हैत। दया भाइ अहाँक बहुत उपकार अछि...हमरा पर...एकटा आओर उपकारक भीख मांगि रहल छी।

दया : ई की कहि रहल छी मुरारी भाइ...अहाँक मोन अखनि अशांत अछि...जाउ कने काल आराम कऽ लियऽ....

मुरारी : नञि भाइ...हम ठीक छी...भाइ...छः मास सँ अहाँक घरक किराया नञि दऽ सकलौं...हमरा किछु दिनक मोहलत दी...जँ जिवैत रहलहुँ तऽ अपने आबि कऽ पाइ-पाइ चुका देब।

दया : आबि कऽ...चुका जैब...अहाँ की कहि रहल छी? हमरा किछु नञि फुरा रहल अछि....

मुरारी : भाइ हम निश्चय कऽ लेलहुँ अछि जे सद्दूक मायक मोन ठीक होइतहि हमरा सभ गाम चलि जायब...ओतहि कोनो ना जीवनयापन चलायब....

दया : गाम चलि जैब...ई की कहि रहल छी?

मुरारी : ठीक कहि रहल छी भाइ...आब एतऽ राखले कि अछि...फै. क्टरीक फुजबाक कोनो आश नञि...दोसर के हमरा नौकरी देत एतऽ.

दया : बाह-बाह...कतेक आसानी सँ कहि देलौं...सोचि लेलौं...मुरारी बाबू...एको बेर इही सोचलिये जे एतेक मेधाबी बच्चा सभ के की हैत? गाम आब गाम नहि रहि गेल अछि...झगड़ा-झंझट...गारि-गलौज, मारि-पीट उकटापैची इएह सब बाँचि गेल अछि गाम मे....District Scholar-ship भेटलैक अछि दुनू के...कहू तऽ की दशा हेतैक ओकर सबहक?

मुरारी : भाइ....District Scholarship सँ पेट नै चलतनि। घरक किराया नञि देल जा सकैछ...किताब कॉपी खरीद सकैत छथि बहुत सँ बहुत...भाइ दिन बितेबाक लेल...अन्न चाही अन्न....हम कतऽ सँ आनब...(कानऽ लगैत छथि) ई अन्न. ..भाइ कतऽ सँ आनब?

दया : भाइ...कानू नञि...अहाँक परेशानी हम बुझैत छी। मुदा, दुःख अहि बातक अछि जे हमरा अहाँ अपन नञि बुझलौं, भाइ हमरा अहाँ अपन पैघ भाइ बूझू...हमरा जे अछि...तकरा अपन बूझ...

मुरारी : नञि भाइ नञि...आब हम अहाँ के आओर कष्ट नहि देव...पहिनहि सँ छः मासक किराया....

दया : किराया...किराया...किराया...तखनि सँ रट्ट लगौने छी। केहेन किराया? कथीक किराया? अहाँक दिमाग भ्रष्ट भऽ गेल अछि....अहाँ गाम नञि जा सकैत छी...हम...एहि बच्चा सभकेँ बरबाद न होमय देबै...बुझलौं...आब हम एक शब्द नैहि सुनि सकैत छी...जाउ...विश्राम करू....

मुरारी : भाइ....

दया : हँ...हम जे कहलौं तकरा हमर आज्ञा बूझू...भाइ हमर के अछि...बेटा छथि विदेशे बसि गेल छथि...जिनका लेल एतेक पाप केलौं...सैह सब संग नञि देलनि....पैतृक सम्पतिक कोनो कमी नञि तथापि आओरक लोभमे बैइमानी करैत गेलौं... कतेको लोकक हृदयकेँ दुःखी केलौं...घूस बैइमानी सँ अपन सम्पत्तिके बढ़बैत गेलौं। मुदा...आब पश्चाताप होइत अछि किएक केलौं एहन जुर्म....किएक केलौं लोकक संग, समाजक सग देशक संग इ विश्वास धात...भाइ तकरे इ फल थीक जे एकमात्र बेटा एतेक दूर चलि गेला...मरि जायब तऽ...तऽ के आगि दैत...भाइ कमसँ कम एहि बच्चा सभके जँ हम आदमी बनेबामे किछुओ मदत करबै...तऽ हमरा संतोष हैत... भाइ...हम एतै...अहाँके कोनो छोट-मोट नौकरी अवश्य लगा देब...हमरा वचन दियऽ...जे अहाँ गाम नञि जैब...एहि

बच्चा सभके पढ़ेबा लिखेबाक पूर्ण जिम्मेवारी हमरा दियऽ भाइ...भाइ अहाँ बजैत किएक नञि छी....

मुरारी : पाप?

दया : हँ...पाप...कतेक पैघ सरकारी अफसर छलौ।

मुरारी : अहाँक जे आज्ञा...हमतऽ...हमतऽ

(सद्दूक हड़बड़ायल प्रवेश)

सद्दू : बाबू...बाबू देखियौ ने माँ के की भऽ गेलैए.....

मुरारी : की...*(दौड़िकऽ भीतर जाइत छथि...पाछू-पाछू दया सेहो जाइत छथि। किछु क्षण उपरान्त पार्श्व सँ मुरारीक स्वर...सद्दूक माँ...सद्दूक माँ...हे भगवान...अहाँ...कतऽ चलि गेलौं...फेर बच्चा सभक माँ...माँ कऽ कऽ कनबाक स्वर—दया बाबू परम उदास मुद्रामे मंच पर अबैत छथि। कना रोहट चलिएर हल अछि। दया बाबू घरसँ आबि मंच पर ठाढ़ छथि...गोलीजीक प्रवेश...एक हाथमे माटिक बासनमे तरकारी...दोसर हाथमे कागजमे मोरल रोटी किछु दबाइ...गोलीजी ठमकि जाइत छथि...)*

गोलीजी : भाइ?

(दया बाबू...हँ'क मुदामे माथ डोलबैत छथि। गोलीजीक हाथक समान खसि परैत छनि...रोटी-तरकारी सभ मंचपर पसरि जाइत अछि...एहि पदार्थ सभपर प्रकाश...)

(दूनू पात्र स्थिर...प्रकाश नहूँ-नहूँ बन्न होइत अछि...संग-संग पार्श्व गीत)—

उड़ि गेल चिड़इ अपन खोंता सँ
आब के चुगाओत दाना
बिलखि-बिलखि माँ-माँ करय
तीन अबोध अज्ञाना
अन्न बिना कटय नञि जीवन
जरय कोना बाती बिनु तेल
हाय बकलेल—हाय बकलेल....

(द्रष्टव्य—एतऽ मध्यान्तर देल जा सकैत अछि।)

पाँचम दृश्य

(करीब 15 वर्ष समय बीत चुकल अछि। सद्दू आ' जद्दू एतऽ नञि छथि। मंच बैह। थोड़ेक परिवर्तन। दया बाबू; मुरारी बाबू आ' गोलीजीक मेकअपमे वृद्धावस्थाक लक्षण ईत्यादि। गन्नू 25 वर्षक जुआन भ' चुकल छथि। हाफ पैट पहिर क' दण्ड घीच रहल छथि। पर्दा फुजैत अछि। गोलीजी सेहो संग-संग गनैत छथि।)

गन्नू : *81...82......83...78...96...100....*

गोलीजी : आहिरौबा...थाकि गेलौं गन्नू...एना कोना अहाँ पहलबान बनबै......कम सँ कम दू सय धरि....

गन्नू : नञि...नञि...आब नञि...आब दोसर व्यायाम....
(खाटक तऽरमे घूसिकऽ खाट उठबैत छथि आ' चलैत छथि)

गोलीजी : हँ...ई ठीक अछि...एहिसँ पीठ मजबूत हैत। क्यो कतबो लाठी पीठपर मारत...किछु बुझेबे नञि करत...देखू गन्नू... हम मुरारी भाइ के बचन देने छियैन जे गन्नू तऽ पढ़लनि लिखलनि नहिये...हिनका हम पहलवान बना देबनि...आहिरौबा अहाँके जे दूनू भाइ डाक्टर, इंजिनियर भऽ कऽ ढ़ेर पाइ कमौता...तऽ ओकर रक्षा के करतै....

गन्नू : *(खाटक तऽर सँ बाहर निकलैत)*...हँ...गोलीजी अहाँ ठीके कहैत छी। भैया सभ जे सम्पत्ति बनौता तकर रक्षा तऽ हमहीं ने करबनि....

गोलीजी : आहिरौबा...मुदा गन्नू...अहाँक अप्पन परिवारक रक्षाके करत।

गन्नू : हा-हा-हा...हम वियाहे नञि करबै तऽ परिवार कतऽ सँ?

गोलीजी : आहिरौबा...वियाहे नञि करबै...तऽ बना-बना कऽ खेबाक लेल के देत....

गन्नू : आ भौजी सभ नहि रहथिन की?

गोलीजी : हँ...से तऽ ठीके कहैत छी गन्नू...मुदा लोक से मानत? वियाह तऽ कराइये देत...भौजी सबहक भरोसे नञि रहऽ देत...हमरो तऽ एहिने वियाह करा देलक सभ...घरवाली एकदम पहलवान ...आहिरौबा एक मुक्का मारती तऽ हड्डी-पसली एक भऽ

जैत....

गन्नू : ओ हमरा एक मुक्का मारती तऽ हम तीन मुक्का मारबनि।

गोली : माने कि अहाँ हमर घरवाली के मारब?

गन्नू : मारबनि नञि तऽ की? ओहिना छोड़ि देबनि...इह बड़ चलाक...ओ हमरा मारती आ' हम ओहिना छोड़ि देबनि...

गोली : अहाँ कनी मारि कऽ तऽ देखियौन...हम भाइके कहि देबनि...हम मुरारी भाइके कहि देबनि *(हिचकैत)* आहिरौबा देखियौन तऽ इ अपना के केहेन पहलबान बुझैत छथि... जाउ...आब हम अहाँके पहलबानी नञि सिखायब...*(कहैत उपर मंजिल दिस प्रस्थान)*

गन्नू : नञि-नञि गोलीजी...अच्छा...चलू हमरासँ गलती भऽ गेल— *(कान पकड़ि कऽ)* हमरा आब ओ कतबो मुक्का मारती हम नञि मारबनि....

(मुरारी बाबूक प्रवेश)

(एकटा बड़का मोटरी पीठपर टंगने अबैत छथि। बैसैत छथि पसीना पोछैत छथि)

मुरारी : गन्नू...एहि कागजक मोटरीके स्थिर सँ उठा कऽ घरमे धऽ दियौ...आइ राति भरिमे सभटा कागज तैयार कऽ कऽ काल्हि भोरे सेठजी के देबाक अछि...किछु भोजन बनौने छी कि नञि....

गन्नू : जा...बाबू हम तऽ खेनाइ बनौनाइ बिसरिऐ गेलिए...बाबू हमरा तऽ आब बड़ भूख लागल अछि....

मुरारी : भूख लागल अछि तऽ बना कऽ खा किएक नञि लेलौं... जाउ एकरा ठीकसँ राखि दियौ...कने सुस्ता लैत छी...तकरा बाद हमहीं किछु बना लैत छी।

(गन्नू वस्ता उठा कऽ लऽ जा रहल छथि कि सभटा रजीष्टर पोटरीसँ खसि पड़ैत छनि)

मुरारी : *(तमसाइत)* एकटा काज अहाँ ठीकसँ नहिं कऽ सकैत छी...एकटा मोटरी ठीकसँ नञि राखि सकैत छी...

गन्नू : हम की करितियै...अपने सभटा खसि पड़लै।

मुरारी : हँ...अहाँ की करितियै...अहाँ कैयो की सकैत छी...जिनगी भरि लेल बकलेल रहि जैब...हे भगवान...दूटा केहेन तेजस्वी पुत्र देलौ हमरा...आ संग-संग एकटा एहेन किएक?

गन्नू : बाबू-बाबू सद्दू भैया आ जद्दू भैया आब नौकरी करथिन? बड़का डाकडर आ बड़का इनजीयर बनथिन?

मुरारी : अहाँके के कहलक?

गन्नू : गोली जी।

मुरारी : हँ...इएह तऽ दुःख रहि जैत...दूनू पैघ भाइ एतेक सुखी रहता...आ...उपर जखौन जैव...त' अहाँक माय पुछती तऽ हम की कहबनि...की कहबनि जे गन्नू के हम किछु नञि बना सकलियनि...बकलेलक बकलेले रहि गेला...कहू...कोना चलतक अहाँक जिनगी?

गन्नू : बाबू...भैया सभ नौकरी करथिन...खूब पाइ कमौथिन तऽ तकर रक्षा के करतै...कहू...हयही ने करबै....

मुरारी : हँ...सैह ने करऽ परत...अहाँ के भगवान तेहने भाइ सभ देने छथि जे अहाँ के कहियो कष्ट नहि होमऽ देता...परञ्च... हमरा तऽ मरलाकबादो...खैर...जाउ एकरा सभके ठीकसँ राखि दियौ। हम कने दोकान सँ समान नेने अबै छी...*(प्रस्थान)* *(कने काल मंच खाली रहैत अछि। फेर दरबज्जासँ पार्श्व स्वर...घटकराजक। गन्नू निकलि कऽ दरबज्जा फोलैत छथि। घटकराजक प्रवेश)*

घटकराज : मुरारी बाबू एतहि रहैत छथि किने?

गन्नू : हँ...एतहि रहैत छथि।

घटकराज : ठीक बात...ठीक बात...कने बजबियौन तऽ.....

गन्नू : अहाँ एतऽ बैसियौ ने सेठ जी...दोकान गेलखिन अछि अखने आबि जेथिन....

घटकराज : ठीक बात...ठीक बात...*(कहैत बैसैत छथि)* मुदा अहाँ हमरा सेठजी किएक कहलौं?

गन्नू : हें-हें-हें...आओर के एतऽ आबि सकैत अछि? अहीके ने ओ रजीस्टर सभ छल जकरा हम खसा देने छलौं....

घटकराज : रजीस्टर...रखसा देने छलौं....

गन्नू : हँ...लेकिन फटलै एकोटा पन्ना नञि...सेठजी जँ रजीस्टर सभ फाटि जाईत तऽ अहाँके बड़ नुकसान होइत ने?

घटकराज : नुकसान...*(स्वतः)* हे भगवान कतऽ आबि गेलौं...*(प्रगट...)* विद्यार्थी...अहाँक की नाम अछि?

गन्नू : हम विद्यार्थी नञि छी....

घटकराज : विद्यार्थी नञि छी।...तऽ की छी?

गन्नू : पहलबान...गन्नू पहलबान...*(अपन बाँहि देखबैत)*

घटकराज : ठीक बात-ठीक बात...अहाँ पहलवान छी...कने ई हाथ तऽ हटाउ...हँ...तऽ अहाँ पढ़लौं-लिखलौं नञि?

गन्नू : पढ़लिये की...पचमी तक—हरेक किलासमे तीन बरख...

घटकराज : हरेक किलासमे तीन बरख...माने 15 बरखमे अहाँ पँचमा तक पढ़लौं...बाह...बाह

गन्नू : हँ तकरा बाद मास्टरजी हमरा स्कूलसँ छुट्टी नञि दैतथि तऽ ओ बेचारे की करितथि। अहाँ सन मेधाबी विद्यार्थी कैं पढ़ौनाइ हुनकर बशक बात नहि छलनि...अच्छा...पहलबानजी ई तऽ कहू जे अहाँ मुरारी बाबूक के छियनि....

गन्नू : के छियनि?...हम बेटा छियनि....

घटकराज : बेटा...अहाँ बेटा छयनि...हम कही गलत जगह पर तऽ नञि आबि गेल छी....

गन्नू : जी?

घटकराज : किछु नञि...किछु नञि...बड़ जोरसँ पियास लागल अछि जल तऽ पियाउ।

गन्नू : अखने नेने अबैत छी....

घटकराज : कने बेसिये कऽ जल आनब...*(गन्नूक प्रस्थान)*...हम अवश्य गलत जगहपर आबि गेल छी...बुझाईत अछि प्रोफेसर साहेब हमरा गलत पता दऽ देने छथि...केइन बूड़ि-बकलेल सँ भेंट भऽ गेल *(गन्नूक छोटका बाल्टीमे जल नेने प्रवेश)*

गन्नू : लियऽ सेठजी...पानि....

घटकराज : आ' लोटा गिलास कतऽ अछि?

गन्नू : बाल्टिए सँ पीब ने लिय सेठजी।

घटकराज : बाल्टी सँ?...हेरे राम-हरे राम....

गन्नू : हँ तऽ की हेतै...हमरा घरमे लोटा-गिलास नञि अछि। हम सब बाटीसँ पिबैत छी....

घटकराज : तऽ बाटिये नेने आउ बाल्टीसँ नीक तऽ बाटी किने....

गन्नू : *(नकल करैत)* ठीक बात...ठीक बात...नेने अबैत छी.... *(प्रस्थान)*

घटकराज : हे भगवान! ई तऽ महाक पागल सँ भेंट भऽ गेल। केकर मुँह देखि कऽ चलल रही से नञि जानि एतऽ सँ पड़ा जेबाक चाही नञि तऽ ई कहीं जबदैस्तिये भरि बाल्टी जल ने पिया दियऽ...*(अपन झोड़ा तोड़ा समेटैति भगैत छथि। तखने गन्नूक प्रवेश)*

गन्नू : अरे-अरे सेठ जी अहाँ तऽ जा रहल छी...जल तऽ पिबि लिय...बाबू के बजा दैत छीः

घटकराज : *(घुमैत)*...ठीक बात-ठीक बात : *(बैसैत छथि। आ बाटी सँ जऽल पिबैत छथि)*

गन्नू : सेठ जी अखैन तऽ हमरा घरमे एकटा लोटो गिलास नञि अछि...किछु खेबा पिबाक सेहो नञि अछि। अहीं जे पाइ दैत छियनि तही सँ कहुना हमर आ बाबूक पेट चलैत अछि...मुदा अखैन भइया सभ कमाय लगथिन तखैन तऽ फेर...कोनो कमी नञि रहतै....

घटकराज : भइया सभ?

गन्नू : अहाँकेँ नञि बूझल अछि की? हमर बड़का भइया डाकडर छथिन...बिलेंत गेलखिनएँ आर पढ़वाक लेल-आ' जद्दू भैया....पटनामे इनजीयर पढ़लखिनए आब ओहो नोकरी करथिन...तखेन जे आयब ने तऽ हम अहाँके खाली रसगुल्ला खुआयब आ चमचम करैत लोटा गिलासमे पानि पिआयब....

घटकराज : ओह...तखनि तऽ हम ठीके स्थानपर आयल छी...

गन्नू : हँ...अहाँ ठीके स्थानपर आयल छी आब हम बाबूके बजौने अबैत छी।

घटकराज : ठीक बात-ठीक बात...जाउ कहबैन जे घटकराज आयल छथि....

गन्नू : घटकराज?

घटकराज : ठीक बात-ठीक बात। हम घटकराज छी कोनो सेठ नञि जे अहाँ बुझैत छलौं....

गन्नू : *(सोचौत)* घटकराज...ई बाबूक मुँह सँ अंगरेजी राज, कंगरेसी राज...दरभंगा राज तऽ सुनैत छलियनि मुदा घटक राज?

घटकराज : हा...हा...हा...बुझलौं......बुझलौं......जे डूटा महान बुधियारक बीच एकटा बकलेलछी नहीं हा...हा...हा...जाउ बाबूके बजौने अवियोन...बहुत समय लागि गेलनि।

(मन्नूक प्रस्थान...प्रकाश बन्न होइत अछि)

छठम् दृश्य

(घटकराज ऊँघि रहल छथि : ढ़ेपा लालक प्रवेश। पैघ-पैघ मोंछ हाथमे लाठी प्रवेशक संग ओ घटक के देखेत छथि)

ढ़ेपा : *(स्वतः)* अँय। मुरारी बाबूक घरमे इ के बैसल अछि? *(प्रगट)*...यौ...हे यौ...अहाँ के छी यौ?

घटक : *(बड़बराइत उठैत छथि...फेर ढ़ेपा लाल के देखि)*। *(स्वतः)* प्रका : बाप रे एहेन मोंछ है भगवान ई त' कोमो डाकू लगैत छथि प्रोफेसर साहेब एहेन भयंकर व्यक्तिक संग कुटमैती कोना करता...

ढ़ेपा : औजी हम पुछले जे अहाँ के छी तऽ ओमहर की ताक चलि गेलों?

घटक : जी हमरा लोक सभ घटकराज कहैत अछि।

ढ़ेपा : घटकराज कहैत अछि कि सटकराज कहैत अछि ताहि सं हमरा कोनो मतलब नञि हम पुछत छी जे अहाँ एते किएक आयल छी?

घटक : *(स्वतः)* इ त' बड़ा असभ्य व्यक्ति छथि। बजबाक लूरि नहि छनि। बेटा बकलेल आ बाप मोचंड। हे भगवान इ कत

हमरा प्रोफेसर साहब फंसा देलनि....

ढ़ेपा : औजी अहाँ एकबेरे बात न सुनैत छी की? जहाँ किछु पुछैत छी कि अहाँ ओमहर नहि जानि की ताकऽ चलि जाइत छी हम पुछल जे अहाँ एतऽ की करे आयल?

घटक : जी जी हम त' अपने सँ भेंट करबाक लेल आयल छी।

ढ़ेपा : हमरा सँ? अच्छा मुदा अहाँ के कोना पता लागल जे हम एतऽ....

घटक : जी...जखैन घटकैतिए करतै फिरैत सब खबरि राख पड़त अछि जी, दरअसल हम अपनेक दोसर बालकपर कथा लऽ कऽ आयल छी।

ढ़ेपा : ओह बुझलो मुदा एकटा गऽप सुनि लिय...25000 टाका लागत...ताहि सँ एको ढ़ेला नञि...बड़का गामवाला 25000 तक दैत छल...नञि केलिऐ हँ....

घटक : *(स्वतः)* 25000, मात्र 25000 प्रोफेसर साहेब के तऽ ई कथा बड़ सस्त पड़तैन तऽ लाख देबाक लेल तैयार छथि। मुदा हम घटक छी...किछु मोल-मोलाइ केनाइ तऽ आवश्यक अछि। *(प्रगट)* जी 25000 तऽ किछु बेसी बूझि पड़ैत अछि....

ढ़ेपा : बेसी बुछाईत अछि? यौ की कमी अछि हमर बेटामे जे अहाँके बेसी बुझाइत अछि? हूँ बेसी बुझाइत अछि।

घटक : जी अपने त' तमसा गेलियै....

ढ़ेपा : तमसाएब नहि तऽ की? एहेन गुणी हमर बेटा....आ' अहाँके 25000 बेसी बुझाइत अछि भरि दिन मे दू कनस्तर मटिया तेल बेचि लैत अछि....

घटक : जी!

ढ़ेपा : आर की...डंडी मारि-मारि कऽ कम सऽ कम दस किलो चीनी बचा लैत अछि भरि दिन मे।

घटक : जी!

ढ़ेपा : जी...लाइफ बुआई साबुन से रोज नहाइत अछि गमकौमा तेल लगवैत अछि टेरलिनक बूसट पहिरैत अछि एकटा फूल पैन्ट सेहो कीन कर देने छिटी। अहाँके 2500 बेसी बुझाइत

अछि?

घटक : *(स्वतः)* हे भगवान बुझाइत अछि हम पागलखाना मे आबे गेल छी जॅ किछुओ काल घरि आओर रहब ते हमहूँ पागल भ' जेव *(अपन झोड़ा उठवैत छथि आ प्रस्थान कर लगैत छथि)*

ढ़ेपा : ओ अहाँ भागल किए जा रहल छी?

घटक : जी हम फेर बाद मे आयब...नमस्कार....

(गन्नू प्रवेश करैत छथि)

गन्नू : अरे अरे घटकराज जी अपने जा रहल छी? बाबू से भेंट. ..घटक : भऽ गेल भेट। मेल हम फेर बाद मे आयब।

गन्नू : बाबू अखनि आबिए रहल छथि तऽ भेंट कोना भऽ गेल?

घटक : आबिए रहल छथि?...तऽ ओ?

गन्नू : ओ हो-हो ...(बढ़ैत) ठेपा लाल जी....

ढ़ेपा : गन्नू फेर अहाँ बदमासी कऽ रहल छी...हमर नाम ढ़ेपा लाल अछि ठेपा लाल नञि।

घटक : ढ़ेपा लाल?

गन्नू : हँ घटकराज जी...देखै नै छियैन केहेन ढ़ेप सन लगैत छथि...मुदा हमरा हिसाबे हिनकर नाम मोंछालाल रहबाक चाही।

ढ़ेपा : गन्नू...देख लिय...हमर हँसी उड़ायब तऽ अही लाठी सँ अहाँक टाँग तोड़ि देब...*(ताधरि मुरारी बाबूके करैत देखैत छथि)* मुरारी बाबू देखि लिय अपन बेटा केँ।

मुरारी : ढ़ेपा लालजी...अहाँ तऽ जनिते छी जे इ बकलेल छथि...गन्नू अहाँ जाउ भीतर...*(गन्नूक प्रस्थान) (घटकराज के देखैत)* जी अपने घटकराज नमस्कार अपने - ठाढ़ किएक छी बंसल जाओ...

घटक : जी बैसबे करब - पहिने अपने इ ढ़ेपा लालजी से निवृत भऽ जाउ...

मुरारी : ढ़ेपा लालजी - अखैन हमरा ओतऽ पाहुन आयल छथि हम दू चारि दिनमे गाम आबि कऽ अहाँसे भट करब *(एतबा*

मे दया बाबू सीढ़ीपर ठाढ़ भऽ जाइत छथि)

ढ़ेपा : मुरारी बाबू-आब ई सब नहि चलत दू दिन चारि दिनकका अहाँ दू साल बिता देलों-आब हम एक दिनक मोहलत नहि दऽ सकैत छी।

मुरारी : *(ढ़ेपालाल कें कात ल जाकऽ)* देखू ढेपालालजी अखन हमरा ओत पाहुन आयल छथि। हमर दूनू बेटा आब नोकरी कर' लगलाइ अछि-हम दू चारि मासक भीतर अहाँक 3000 टाका दऽ कऽ अपन डीह आपस लऽ लेब अखैन तऽ किछु हमरो प्रतीष्ठाक ध्यान रखू....

ढ़ेपा : *(जोर से)*—प्रतीष्ठा—? केहेन प्रतीष्ठा यौ...औजी अहूँ सुनि लिय...हिनकर प्रतीष्ठा...जेकरा एक घूर जमीन नञि छै... जेकर बाप दादाक डीह 3000 मे हमरा लऽग आइ पाँच बरखसँ भरना राखल छै तेकर प्रतीष्ठा...हूँ...देखू मुरारी बाबू...आ जँ पाइ देबाक हो तऽ अखैन दिय...नञि तऽ हम नालिश करब आ बूझू जे डीह अहाँक हाथ सँ गेल।

मुरारी : *(हाथ जोड़ैत)*...ढ़ेपालाल जी...एहेन जुलूम नञि करू...हमरा मात्र दू-तीन...मासक मोहलत दिय...हमरा-हमरा सद्‌दूक माय सप्पत दऽ कऽ गेल छथि जे बाप पुरखाक डीह कोनो हालत मे नञि वेचब.....

ढ़ेपा : हूँ...सप्पत दऽ कऽ गेल छथि...सप्पत दऽ कऽ गेल छथि तऽ अहूँ चलि जाउ सद्‌दूक माय लऽग आ हुनकेसँ आनि कऽ हमर 3000 टाँका दऽ दिय....

दया : *(चिकड़ैत)* ढ़ेपा एहि सँ आगू जॅ एक शब्द बजलौं तऽ हम अहाँक जीभ काटि कऽ अहींक हाथमे द' देव कोर्ट कचहरी दिस जॅ टाँग बढ़ेलौं तऽ हम अहाँक सौंसे खानदान के वरबाद करबा देव। अहाँके ३००० टाका ने चाही काल्हि आबि के ल' जाउ हमरा से जाउ आब हम अहाँके एक सेकेण्ड एते नहि देखऽ चाहैत छी जाउ ....

ढ़ेपा : ठीक छै एक दिन आओर *(प्रस्थान) (मुरारी बेसि कऽ कान लगैत छथि। दया बढ़ि को पीठपर हाथ धरंत छथि)*

दया : मुरारी भाइ ई की? देखू घरमे पाहुन आयल छथि आ' अहाँ....

मुरारी : भाइ भाइ अहाँ देवता छी हमरा लेल आ हमर बच्चा सभक लेल अहाँ देवता छी जेहने अहाँक नाम अछि तेहने अहाँ दयाक मूर्ति छी...

दया : अरे-रे अहाँ त' हमरा बजरंगवली बना देलों। हा हा हा अरे मुरारी भाइ हिनकास हमरा परिचय ते कराउ....

घटक : जी हमरा लोक सभ घटकराज कहैत अछि हम हिनक दोसर बालकक लेल प्रोफेसर साहेब त्रिपुरारी बाबूक दिस से कथा ल' कऽ आयल छी।

दया : त्रिपुरारी बाबू अरे वैह ने जे जद्दूक इन्जिनियरींग कालेजक प्रोफेसर छथि।

घटक : जी,

दया : ओतऽ बड़ पैघ लोक छथि जमीन्दार परिवारक छथि....

घटक : जी खूब बढ़ियाँ मेल रहतै प्रोफेसर साहेब मुरारी बाबूके कथुक कमी नै रहै देथिन आ सबसे पैघ बात ई जे वर कनियाँ एक दोसरा सँ खूब परिचित छथि....

मुरारी : अपने हमर हालत त' देखिए चुकल छी आ सबसँ पैघ गप्प ई जे पहिने त' जयानन्दक पैघ भाइ सदानन्दक बिवाह हेतैन तखने आ' दोसर बात ई जे हमरा एकटा पाइ नञि चाही- हम बेटा सभक आदर्श विवाह करायब मुदा अपने सब स्थितवला व्यक्तित्व ओतऽ। प्रोफेसर साहेब पैघ लोक छथि हुनका ओतऽ कदापि नञि...दया भाइक सेहो यैह विचार छनि....

घटक : ठीक बात...ठीक बात......मुदा अपने के किछु बुझल नहि अछि की? आहिरेबा...हम तऽ अपनेक बालकक पत्र दनाइ कि बसरिए गेलहुँ...*(पत्र बहार कऽ कऽ दैत छथि)*

मुरारी : *(पत्र पढ़ैत...)* नञि नञि नञि...इ नञि भऽ सकैत अछि...भाइ...भाइ इ नञि सकैत अछि...हमर बेटा सभ इ नञि कऽ सकैत छथि।

(खसऽ लगैत छथि...दया आ घटकराज हुनका पकड़ि कऽ कुर्सी पर बैसबैत छथि)

घटक : ई की भऽ गेल मुरारी बाबू *(मुरारी मात्र...नञि...नञि...इ नञि भऽ सकैत अछि...इएह बजैत छथि कनैत छथि। दया पत्र उठा कऽ पढ़ैत छथि)*

घटक : देखल जाओ दया बाबू...जे भऽ गेलै से भऽ गेलै...आब तऽ बुधि-यारी बहीमे अछि जे नीक जकाँ काज के संपन्न होमय दियै...आ' एहिमे खराबी की? लड़की पढ़ल-लिखल अति सुन्दरि सर्वगुण संप.न्न...प्रोफेसर साहेब एक लाख टाका देबाक लेल तैयार छथि संगहि लड़का के आधुनिक सुख सुविधाक सभ समान जेना स्कूटर, फौज, टेलीभीजन आदि.....
आदि.....

दया : घटकराज जी

घटक : जी....

दया : अहाँ आदमी छी की जानवर?

दया : घटकराज...अहाँ जँ हमर क्रोध सँ बचऽ चाहैत छी तऽ एतऽसँ तुरत खिसकि जाउ...अन्यथा....

घटक : अन्यथा?

दया : अन्यथा...अहाँ नञि...अहाँक लहास एतसँ जायत
...बेशर्म नहि तन ...घटकैती करऽ अयलाह अछि...मुरारी भाइक की स्थिति कऽ देलियैन अहाँ से नञि देखैत छी...आ' ताहि परसँ लाख टका देखा रहल छी....जाउ......एतसँ...
(घटकराजक झोढ़ा उठाकऽ दरबज्जा दिस केक दैत छथि)

घटक : ठीक बात...ठीक बात...अहाँ लोकनि समय रहैत जँ नञि...चेतऽ चाहैत छी तऽ कोना बात नञि...हमरो नाम घटकराज अछि....हम तऽ जा रहल छी मुदा ईहो अपन बेटासँ हाथ धो लेथि...वेस नमस्कार...*(प्रस्थान)*

दया : हूँ...भाइ...शान्त रहू...की भऽ गेल...कने धैर्य रख-बाक चाही भाइ...अही उतार-चढ़ाबक नाम जिनगी छै...सभकेँ सभ किछु

नञि भेटैत छै....

मुरारी : भाइ...हमरा तऽ किछु नञि भेटल...भाइ...भाइ....हमर वाम पैर सुन्न भेल जा रहल अछि...एको रत्ती सक नहि लगैत अछि....

दया : की?...गन्नू...गन्नू...गोलीजी...गोलीजी.....

(गन्नू आ' गोलीजीक प्रवेश!)

गोलीजी जल्दी आउ आ' डाक्टर साहेब के बजौने आउ....

(गोलीजीक 'जीभाइ' कहैत प्रस्थान)

गन्नू अहाँ बाबू लऽग बैसू...धीरे-धीरे कने अपन

बाबू के पैर हाथ दया दियौन। *(गन्नू बाबू लऽग जाइत छथि)*

मुरारी : चलि जाउ...हमरा सोंझा सँ चलि जाउ...हमरा....सोंझा सँ चलि जाउ....

गन्नू : बाबू....

मुरारी : जुनि कहू हमरा बाबू...हम केकरो बाबू नञि हमर क्यो बेटा नञि....

दया : भाइ...हतोत्साहित जूनि होउ...ई गन्नू तऽ अपने बकलेल छथि...हिनकर कोन दोष?

मुरारी : दोष...दोष...तऽ हमर कर्मक अछि जे तीन-तीन टा कुपुत्र के जन्म दैलों...सदूक माय...सदूक माय नीक भेल जे अहाँ चलि गेलौं...इ दिन देखबाक लेल जीवित नञि रहलौं...सदूक माय हमरो आब अपना लऽग बजा लिय...सदूक माय...

दया : मुरारी भाइ...मुरारी भाइ....

गन्नू : बाबू...बाबू....

दया : मुरारी भाइ देख देख ई बेचारा गन्नूक की हाल भ' रहैन जिनगीन एक सुखे-दुःखे से लड़ैत अहाँ के कहियो भय नहि अहाँ कहियो नहि घबरेलौ मुदा आइ की भ रहल' अछि अहाँ जे एना करब ते एहि बेचारा बकलेल के-के देखते?

मुरारी : दुनियाँ बहुत पैघ छै कतौ ने कतौ पेट भरबाक जोगार भऽ जेतैन...नञि किछु तऽ भीख मांगि लेता।

गन्नू : नञि बाबू नञि हम भीख नजि माँगब।

मुरारी : भीख नै माँगव की करब? हम कता से खुआयब वहाँ के हमर त' सभ किछु बरबाद भ' गेल हम अपंग भ गेली। आब चलि फिर सकब कि नहि से भगवान जानथि एकटा एकटा चिट्ठी हमर सपना के चूर-चूर क' देलक... *(चिठीक नाम मुनि का गन्नू चिट्ठी दिस बढ़त छथि जोकरा उलट-पुलट कऽ देखैत छथि)।*

दया : भाइ सभक सपना सच नहि होइत छैक सभक सपना जे स होम लगतैक तै इ संसार एहन नजि रहितै अहाँ धैर्य राखू अहा के किछु नहि भेल अछि डाक्टर साहेब आबिए रहल हेता *(ई दूनू पात्र स्थिर भ' जाइत छथि। मध्यम प्रकाश। मंचक दोसर भाग मे गन्नू गोलीजी...)*

गन्नू : *(हाथ पकड़ि कऽ)* गोलीजी...कने ओमहर चलू तऽ...

गोली : अहिरौबा एना किएक घीच रहल छी...

गन्नू : चलू ने ओमहर चलू ने...*(दूनू मंचक एक भागमे अबैत छथि)*

गन्नू : गोलीजी। अहाँ के तऽ पढ़ऽ अबैत अछि...कने इ चिट्ठी पढ़ि तऽ दिय....

गोली : पढ़ऽ किएक ने आओत...अठमा तक पढ़ने छी....
लाउ....
आदरणीय बाबू,
सादर प्रणाम।
हमर ई पत्र पढ़िकऽ अहाँकेँ कष्ट तऽ होयत मुदा हमर किछु मजबूरी छल जे हम अहाँक आदेश लेबऽ नञि आबि सकलौं।
श्री त्रिपुरारी बाबू हमर कालेजक प्रतिष्ठीत प्रोफेसर छथि। हुनकर हमरा उपर बहुत उपकार छनि हनकर पुत्री शुशील पढ़-लिखल नीक विचारक छथि। ताहि पर से प्रोफेसर साहेब अकि एक लाख टाका सेहो देता जाहि सँ अहाँक सभ कष्ट दूर भऽ जैत हमरो घरक सुख सुविधाक सभ समान देता - हुनका कथूक कमी नहि छनि ताहि हेतु हम हुनका अपन

सम्मति दे देलियन अछि। २५ तारिखका विवाहक दिन निश्चित भेल अछि घटकराज जी मात्र औपचारि कता पूरा कर जा रहल छथि। आशा अछि हुनक उचित स्वागत आ सत्कार अहाँ अवश्य करबैन एवं विवाहमे सम्मलित होयवाक लेल अवश्य आयब। काकाजी जे आवड चाहथि त' हुनको आनि छी हँ, गन्नू नहि आवथि से ध्यान राखव ओ बकलेल छथि हुनका अयला स' प्रोफेसर साहेबक प्रतीष्ठा पर पड़तैन आ हमरो दोस्त महीम मे हँसी होयत दूसय टाका सेहो पठा रहल छी विवाह मे अयवाक लेल बड़ियाँ घोती कुरता कीन लेब....

सद्दू भैयाक विषय मे तऽ आहाँ सभकेँ पता लागि चुकल होयत। आशा अछि जो अवश्य पत्र देने हेताह। सद्दू भैया लंदन मे एकटा नर्सक संग विवाह कऽ लेने छथि आ अपन पढ़ाई पूरा कऽ अगिला मास धरि दिल्ली अओताह....

विशेष कुशल अछि...हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे समधि आ पुतोहु दूनू अहाँके खूब पसिन्न परताह...हँ...गन्नू नहि आबथि तकर ध्यान राखब....एकरा खराब जुनि मानब....

अहाँक पुत्र

गन्नू : बाबू बाबू अहाँ धवराउ जुनि हम अहाँक सेवा करब ककाजी हमरा कोनो नोकरी दिया दिय....

दया : नोकरी

गन्नू...अहाँके के नोकरी देत पढ़ल-लिखल जं ''रहितों ''आ'' अहाँ से ते कोनो काज न' भ' सकैत अछि।

गन्नू : नहि ककाजी नहि हम किछुओक सकैत छी हम जन बनिहारक काज करव मुदा मुदा बाबू के हम भैया सभपर निर्भर नै रह देवैन हम जे कमा का आनब बाबू सेह खेता ककाजी अहाँ मात्र किछु दिन बाबूके देखियौन...

दया : शाबास गन्नू के कहैत अछि जे अहाँ वकलेल छी अरे बकलेल ते ओ अछि जेकरा पढ़ियो-लिख कऽ समाजिकताक ज्ञान नहि भऽ सकलै। बकलेल ते ओ अछि जे देशक प्रति,

समाजक प्रति, परिवारक प्रति अपन दायित्व निर्वाह नहि करत अछि। शावास जकरा मुरारी माई कोयला बूझैत छलाह से हीरा निकलल। गन्नू अहाँ रामपुर चलि जाउ हमर सार रमेश बाबू ओत कानट्रक्टर छथि ओ अहाँके किछु ने किछु काज अवश्य देताह हमर नाम कहबैन....

मुरारी : भाइ भाइ ई की काज करताह जिनगी भरिक बकलेल भ' ई कोन काज करता कहियो घरसे बाहर नहि निकलल छथि रस्ते मे कोनो बस कि ट्रक से चिपा जेताह हिनका न जाय दियौन भाइ।

दया : नहि भाइ आइ हिनका नहि रोकियौन। आइए ते हिनका ज्ञान भेलनि अछि। जाय दियौन जाउ' गन्न जाउ' *(गन्नूक ककाजी के बाबाबूके प्रणाम कऽ कऽ अखिक नोर छैत प्रस्थान कर मुद्रा सभ पात्र स्थिर)*

सातम दृश्य

(गोन्नूजी मुरारी के पकड़ि कऽ चलबा मे मदैत कऽ रहल छथि फेर हुनका कुर्सीपर बैसा कऽ हुनकर पैरक किछु व्यायाम करबा रहल छथि गन्नूक कुली मजूरक भेषमे प्रवेश)

गन्नू : बाबू...बाबू...।

मुरारी : गन्नू अहाँ आबि गेलौ। गन्नू ई केहन हाल बनौने छी?

गन्नू : बाबू आब हम काज करैत छी रमेश बाबू बड़ नीक लोक छथि तीन टाका के रोज दैत छथि....

गोलीजी : आहिरौबा तखैन तऽ अहाँ ६० टाका मास कमाय लगलौ गन्नू- हम भाइके कहने अबै छियैन (प्रस्थान)

गन्नू : हँ...हँ...देखू ६० टाका बाबू ३० टाका हम खर्च क लेलौं...बढ़ महग भऽ गेलैए जमाना बाबू।

मुरारी : *(कनैत)* गन्नू गन्नूई केहेन हाल बनौने छी ई ३० टाकामे की खेने हैब भरि मास अहाँ? की काज करैछी अहाँ गन्नू?

गन्नू : बाबू अहाँ चिंतित किएक छी बाबू हम खूब खाइत छी देखू

केहेन मस्त भऽ गेल छी।

मुरारी : से ते देखिए रहल छी गन्नू से ते देखिए रहल छी मुदा मुदा अहाँ काज की करैछी?

गन्लू : बाबू ठीकेदार साहेब बड़का का मकान बनवैत छथिन ओहिमे हम मजूर छी गिट्टी बालूमाथ पर उठा कऽ एकटा मशीनमे दैत छियै फेर पानि मिलैल जाइत छै तखैन ओहि सँ ढलाई होइत -

मुरारी : आओ गन्नू भोजन?

गन्नू : खूब खाइत छी बाबू कखनो सतुआ...कखनो भात

मुरारी : हे भगवान अहूँक लीला विचित्र अछि हमर फूल सन बच्चा...। गिट्टी बालू उठत छथि आ भाई केहन मजा गन्नू बाबू भैया सभक नाम न लिय हमरा लग अहाँके जड हुनके सभल जेबाक मोन होइत हो तऽ जाउ हम कहुना जीवि लेव' *(प्रवेशकसंग)*

(दया प्रवेशक संग)

दया : ठीक कहैत छथि गन्नू ठीक कहैत छथि.....

मुरारी : भाइ गन्नू हमरा गलत जुनि बूझू हम ते अपने अपाहिज छी हम कते जेब हम कतऽ जैव....

: की गन्नू-मोन लगैत अछि ओत?

दया : बाह गन्नू बाह टूटा पाई कि देखलिये जे अपनाके जहाँ तीस मार खां बूझ लगल वियाह करताह यो-ई ६० टाका मे अहाँक अपन पेट तक चलबे नहि करत ते बापक सेवाक ओहि दिन लेक्चर कि देने रही आ ताहि परस' विवाह करता अहाँ त स अ जग नूक कान काटि लेल छी-छी छी।

गन्नू : ककाजी हमरा गलत जुनि बुझू....

दया : की गलत नञि बूझू हमरा होइत छल जे छहाँ के किछु ज्ञा भेल बछि मुदा नाव बुझाइत अछि जे अहाँ बकलेल नहि छी- अहाँ बुधियार बकलेल छी

गन्नू : ककाजी

दया : की ककाजी......ककाजी...कड रहल छी यो यो जहाँसे कोन

लड़की विवाह करत?

गन्नू : ककाजी- हमरा एहन लड़की नगि चाही जे मात्र हमरा स बियाह करऽ चाहय।

दया : वाह वाह एहन लड़की न चाही जे अहाँ से बियाह कर बो-ते केकरा से विवाह करते ओ लड़की?

गन्नू : ककाजी- हमरा एहन लड़की चाही जे हमर बाबूके अपन बाबू बूझय हमर बाबूक बिमारी के अपन बापक विमारी बूझय द्य हमरा एहेन लड़की चाही जे हमरासे विवाह संग-संग हमर बापक बिमारीसँ ओतबे अपनत्व राखय जतेक हमरा संग...

दया : *(आश्चर्यसँ)* गन्नू गन्नू गन्नू एतेक बुद्धि कतऽसँ आयल गन्नू। एहन उच्च विचार कतर सँ आयल अहाँके गन्नू गन्नू हमरा क्षमा कऽ दिय' हमरा क्षमा के दिय' अहाँ त महान छी गन्नू अहाँ ते महान छी *(हृदयसँ लगा कर कान लगैत छथि)*

(नहू-नहू प्रकाश बन्न होइत अछि)

आठम दृश्य

(गन्नूक स्त्री मुरारी बाबूक सेवा कऽ रहल छथि। भीजल-गमछासँ हुनकर पैर हाथ पोछि रहल छथि। पैरमे मलहमसँ मालिश कऽ रहल छथि)

मुरारी : बौआसिन अहाँ कथी लेल हमर एतेक सेवा कऽ रहल छी हमरा सन अभागल लोक।

स्त्री : बाबूजी फेर वैह गप्प हमरा बौआसिन किएक कहलौं?

मुरारी : ओ-हो-हो गलती भऽ गेल हे लिय हम अपन कान पकड़ैत छी...अहाँ ते हमर बेटी छी बेटी अहाँ जहिया से अयलौंऐ हमर ते दुनिये बदलि गेल अछि। कतेक मेहनत करैत छी अहाँ हमरा पाछाँ मुदा मुदा हम अहाँक की देलों-? कनिया के की-की उमंग रहैत छै सदिखन लाल पीयर वस्त्र छम छम करत मुदा हमरा चलिते अहाँक सब सौख मनोरथ...

स्त्री : बाबूजी एहिसँ बढ़िके मनोरथ की हैत हमर जे हमरा अहाँक सेवाक मौका भेटैत अछि हमरा आशीर्वाद दिय जे हमर मोन कहियो विचलित नहि हो।

मुरारी : अहाँ महान छी बेटी अहाँ महान छी मुदा ई अहाँक कर्मक दोष छल जे गन्नू सन बकलेलक संग भाइ अहाँक वियाह करा देलनि।

स्त्री : बाबूजी फेर अहूँ हुनका बकलेल कहलियैन ओ बकलेल नहि छथि ओ बकलेल नञि छथि जाउ आब हम अहाँ से गप्प नञि करब....

मुरारी : अरे नहि नञि हमर वेटी जं हमरा से गप नञि करती तब हम कोना जीव बच्चेसँ बकलेल कहैत आयल छियेन से... बेटी....गन्नूक हालत देखेत छियैन। मजूरी करैत छथि देह सुखायल चलल जा रहल छनि जरूसैन अद्वैत छथि बोंबी स तबाह रहैत छथि कोना रहैत छथि कोना खाइत छथि पता नञि बेटी हमर विचार जे अहू रामपुर चलि जाउ गन्नू जे किछु कमाइत छथि ताहिमे दूनू गोटा....

स्त्री : बाबूजी रहि-रहि कऽ अहाँके की फुराईत रहैत अछि हम भोजन नेने अबैत छी।

मुरारी : ठहरू बौआसिन हम अपन सुखक लेल अहाँ दूनू गोटेक भवि श्यक बलि नहि द सकैत छी भरि दिन भरि रात जे अहाँ हमर सेवामे लागल रहैत छी ताहि सेवाक अधिकारी गन्नू छथि हम नञि स्त्रीक लेल, ओकर पति परमेश्वर होइत छैक।

स्त्री : आ’ ससुर परमेश्वरो स’ पैघ बाबूजी अहाँके अइ बेटीक सप्पत जे फेर कहियो इ सब बजलों....

(दरबज्जा ढ़क ढ़केबाक स्वर)

मरारी : के के?

स्त्री : हम देखैत छिये...*(जाइत छथि फेर आपस अबैत छथि। हाथमे मनीबार फार्म छनि।)* बाबूजी पोस्ट मैन छथि पटनास मझिला भैया ५०० टाकाक मनीआर्डर पठौलनि अछि....

मुरारी : मनीआर्डर जदूक मनीआर्डरइ मनीआर्डर नहि थी इ हमरा संग उपहास थीक एहि अपंग अपाहिजक जीवनक संग - एकटा कठोर मजाक थीक। आपस कर दियो कहि दियौन - पोस्टमैन साहेब लिख देथिन जे मुरारी नामक व्यक्ति कहिया ने मरि चुकल अछि मरि चुकल अछि....

बेटी - भुखले मरि जायव मंजूर अछि मुदा ई दूनू व्यक्ति जे हमर बेटा कहबैत छथि जे देवी सन मायक कोख से जन्म ल' राक्षस भ' चुकल छथि हुनकर सभक देल एकटा पाई हमर मृत्युक कारण बनि सकैत अछि आपस क' दियो आपस क' दियो *(कानऽ लगैत छथि)*

स्त्री : गुदा, बाबूजी

मुरारी : हम कहैत छी ने आपस क' दियो आपस...।

स्त्री : जी बाबूजी *(जाइत छथि फेर आपस)* बाबूजी हम भोजन नेने अबैत छी *(जहिना बढ़ैत छथि कि फेर दरबज्जा, ढक ढ़केबाक स्वर)*

मुरारी : फेर आबि गेला इ पोस्टमैन *(चिकठि कऽ)* पोस्टमैन साहेब हम कहलौ ने जे लिख दियौ जे मुरारी मरि चुकल छै आपस कऽ दियो आपस क' दियौ *(पार्श्वसँ मुरारी बाबू है- मुरारी बाबू स्त्री बढ़ि कर देखैत छथि। दरबज्जा लंग एकटा सूटेड-बूटेड व्यक्ति ठाढ़ छथि। स्त्री हुनका देखिते साडीक आचरर्स मुह झपि लैत छथि था एक दिस भऽ जाइत छथि)*–

जे. विश्वनाथम : ये मुरारी बाबू इधर ही रहता - मैडम मै पूछता कि मुरारी इधर ही रहता?

मुरारी : बेटी के छथि -?

स्त्री : बाबूजी - देखियो ने सूट-बूट टोपी लगैने एकटा मनसा ठाढ़ छै- सिकरेट पीवी सेहो

मुरारी : सूट-बूट सिगरेट अच्छा बजौने अवियौन बेटी - मैडम मुरारी बाबू घरमे है क्या?

स्त्री : जी छथिन- अबियो?

विश्वनाथ : Thank you – Thank you किधर हैं।
मुरारी बाबू *(स्त्री)* हाथक इशारास देखबैत छथिन आ घरक भीतर चलि जाइत छथि) ओ हो हो नमस्कारम् मुरारी बाबू नमस्कारम्।

मुरारी : जी हम अपने के चिन्हल नहि बैसल जाओ- बेसल जाओ- बैठिये बैठिये।

विश्वनाथ : Oh Thank you & Thank you हम इधर डेल्ही से आया मेरा नाम जी विश्वनाथम् है। इधर सरकार एक नया factory बनाने का सोचा है हम सरकार का तरफ से investigation का बास्ते आया डा० सदानन्द आपका लड़का होता ना जी जी।

मुरारी : जी।

विश्वनाथ : डॉ सदानन्द हमारा फ्रॉड है हमको मालूम था वो इधर का रहने वाला है। आते समय हम बहुत पूछा- आपका address मांगा, वो टालता रहा पर हम जब इधर आया तो एक डॉ वर्मा से मिला वो हमको आपका पत्ता दिया और और सब कुछ बताया How sad आप इतना ग्रेट आदमी - और आपका वेटा नालायक।

मुरारी : विश्वनाथ बाबू- आप मेरे अतिथि है परन्तु आपको मेरे बेटे को गाली देने का कोई हक नहीं।

विश्वनाथ : Sorry, I am sorry मैं भूल गया था कि मैं एक Great आदमी से बात कर रहा हूँ...पर, आपका बेटा इतना बड़ा डाक्टर, हजारो की कमाई, क्लब होटल और पप इधर Paralyse होकर इस हालत म पड़े हैं। ये किधर का Justice है, मैं उधर जाकर, सदानन्द का खबर लगा हम आपका www वास्ते Justice माँगेगा।

मुरारी : विश्वनाथ बाबू Justice करने का अधिकार सिर्फ भगवान को है। और वो मेरे साथ जो भी Justice कर रहा है हमको मंजूर है।

विश्वनाथ : You are really great sir, really great Ok sir, अब हम

चलेगा हम इधर जब भी आयेगा आपसे अवश्य मिलेगा।

मुरारी : अरे बैठिये-बैठिये—पहली बार आये हैं बिना कुछ खाये-पिये कैसे जाइएगा।

विश्वनाथ : धन्यवाद फिर कभी आयेगा तो अवश्य खायेगा -

मुरारी : नहीं-नहीं ऐसा कैसे होगा मैं लाचार आदमी आपका स्वागत क्या कर सकता हूँ फिर भी जरा बैठिये।

विश्वनाथ : वा हम जानता है मिथिला का आदमी बहुत Request करता है इतना खाता है और इतना खिलाता है - OK मंगाइये।

मुरारी : बौआसिन बौआसिन -

स्त्री : *(प्रवेशक संग)* जी बाबूजी।

मुरारी : पाहुनक लेल जल लाउ - किछु जलखै लाउ।

स्त्री : बाबुजी *(असमंजस मे)।*

मुरारी : जे हौं से ने आउ।

स्त्री : बाबूजी-पाहून के जलखै।

मुरारी : एहि मे परेशानीक कोन काज जे बनल अछि सेह लाउ

स्त्री : बाबूजी ओ...ओ...

मुरारी : अरे-हम अहाँक स्थिति बूझि रहल छी। मुदा पाहून बिना खेने कोना जेता जे अछि से नेने बाउ...

(स्त्री जाइत कृषि एवं एक बारीमे मड़आक रोटी नोन तेल प्याज नेने अवैत छथि)

मुरारी : विश्वनाथ बाबू जो भी रुखा-सूखा उपलब्ध है।

विश्वनाथ : Don't worry हमको सब चलता है मगर ये तो एकदम से नया कॉर्प लगता है- (खाईत छथि) वी Tasty अच्छा very good. इस डिश को क्या बोलता है मैडम?

स्त्री जी इ मड़बाक रोटी छ?

विश्वनाथ : मन्डुआ रोटी very good - मडुआ रोटी मगर ये मन्दुका रोटी तो हमारे देश म नहीं होता....

मुरारी : विश्वनाथ बाबू ये गरीब देश का भोजन है अमीरों का तो शायद कुत्ता भी इसे नहीं पूछे।

विश्वनाथ : But it is very tasty - हम इसमें से थोड़ा तोड़कर रख लेता

है - Delhi ले जायेगा। अपना wife को खिलायेगा वो बहुत खुस होगा। आप बुरा तो नहीं मानेगा मुरारी बाबू....

मुरारी : अरे नहीं नहीं इसमें बुरा मानने कि क्या बहुत है - यह तो हमारा सौभाग्य है -

विश्वनाथ : मैडम थोड़ा सा रोटी और मिलेगा....

स्त्री : जी......*(जाइत छथि)*।

विश्वनाथ : इधर मिथिलामे आकर हम भी पेटू हो गया है हा-हा- हा *(मुरारी बाबू सेहो हँसैत छथि)*
(प्रकाश बन्न होइत अछि अछि)

नवम् दृश्य

(गन्नूक स्त्री मंचपर बाढ़नि दऽ रहल छथि। गन्नू दरवज्जा पर छथि। स्त्री दरवज्जा फोलैत छथिन गन्नूक गंजी पर खून लागल छनि जकरा ओ गमछा से झपने छथि। बहुत जोर स' ओकासी भऽ रहल छनि। आबिकऽ सोझे कुर्सी पर बेसैत छथि। हाँफि रहल छथि।)

स्त्री : की भऽ रहल अछि अहाँके देखू त' बेहेन हालत बनैने छी अपन...।

गन्नू : किछु नञि-किछु नजि 'कने थाकि गेल अछि। ओकासी होइत अछि आ मुँह स' खून बहार होइत छनि)

स्त्री : खून हे भगवान ईई मुह से खून हम ककाजी के बज -

गन्नू : *(स्त्रीक हाथ पकड़ कऽ)* नञि नञि कोनो खास बात नञि छंकफ जमिगेल अछि त खून बहार भ रहल अछि काजी के कयी लेल तंग करवे....
(स्त्रीक नजरि गंजी पर पड़ै त' छनि)

स्त्री : हे भगवान सोसे गंजीमे खून लागल अछि आ अहाँ कहैत छी खास बात नञि।

गन्नू : अरे अहाँ एतेक किएक घबरा रहल छी-अहूँ हमरा ततवे बकलेल बुझैत छी जे हम इ नञि बुझवै जे इ खून। हे

लिए गंजी के साफ कऽ दियौ- आ तुलसीक काढ़ा बना कऽ दियं बस सब बिमारी दूर...

स्त्री : हे अहाँ अपन देह पर कनेको ध्यान नवि दैत छी। अहाँ ज' पड़ि रहब ते बाबू के के देखतैन?

गन्नू : अहाँ जे छी हम त' कुली मजदूर बकलेल।

स्त्री : जुनि कहू अपना के बकलेल हमरा एहि शब्दसँ घृणा अछि अहाँ की छी से क्यों हमर हृदय से पूछय, अहाँ अहाँ तऽ हमर देवता छी...।

गन्नू : नञि-नञि हम देवता नहि हम त' पापी छी। जे अहाँ सन देवी के एतेक कष्ट दऽ रहल छी कोनो सुख नहि मात्र दुःख...

स्त्री : हमरा कोनो दुःख नहिं प्रसन्नता अछि जे पिता सन ससुरक सेवामे समय बीतैत अछि।

गन्नू : तौँ हम अहाँके देवी कहैत छी आहि रेबा हमरा त' घ्याने नहि रहल पुछबाक बाबू कतऽ छथि?

स्त्री : हे, नीके भेल जे अहाँ आइ चलि एलौं।

गन्नू : से की?

स्त्री : बाबू के आइ चारि पाँच दिनसँ बहुत मोन खराब छनि। आब त' पूरा बायाँ अंग- चारि दिनस' बहुत खोखार छनि. ..अखने डाक्टर देखि कऽ गेलखिन अछि। बड़ी काल घरि बाबू आक काजी गप्प करैत छलखिन।

गन्नू : अएँ मुदा बाबू–

स्त्री : घरमे छथिन बोखार भऽ गेलैन त' डॉक्टर साहेब घर लऽ जेबाक लेल कहलखिन।

गन्नू : *(उठैत)* हम बाबू के देखने अवैत छियैन–

स्त्री : अखैन सूतल छथिन- कने सूते दियौन ता घरि अहू आराम कऽ लिय

गन्नू : हे हेथे एकटा दैज बुझली किने जब कन्ट्रक्टर साहेब हमरा मजूर सभक मुखिया बना देलनि एहि माससे हमर द्य २०० टाका कऽ भेटत।

स्त्री : अच्छा—

गन्नू : हँ—अगिला मास मे आयब त' बाबू लेल एकटा कुरता आ' अहाँ लेल एकटा बढ़िया साड़ी नेने आयव। अहाँके इ फाटल साड़ी- हम बाबू के कहने अवैत छी *(प्रस्थान) (स्त्री पुनः बाढ़नि उठा देम लगत छथि गन्नूक प्रवेश)*

गन्नू : बाबू बाबूत' बजिते नहि छथि देखियौन ने बाबू के - जल्दी आउ।

(दूनू भीतर जाइत छथि लबाबू के जोर दूनू कान' लगैत छथि दयाबाबू हडबडायल अवैत छथि। घर मे मतम छथि पुनः बाहर अवैत छथि बांखिक नोर पोत छथि कुर्तास एकटा पत्र बहार का लिफाफ फाड़ लगैत छथि स्थिर भऽ जाइत छथि (पार्श्वगीत)

"पूत जेकर कपूत भेल, दु.ख अहिस' बढ़िक' कोन छाउर जकाँ बुझाइत छै, जेकरा सोचलक सोन पूतक करनी सहि नहि सकला प्राण पखेरू उड़िए गेल हाय बकलेल हाय बकलेल *(गीतक संग-संग नहू-हू प्रकाश बन्न होइत अछि)*

दशम् दृश्य

(सद्दू आ' जद्दू बैसल छथि। कानि रहल छथि। दयाबाबू एमहरसं ओमहर टहलि रहल छथि। रहि-रहि के दरबज्जा दिस देखैत छथि)

दया : सद्दू

सद्दू : जी ककाजी.....

दया : एतेक दिन तऽ अहाँ दूनू भाइ के जे मोन भेल से केलों एक बेर घुरिकऽ नहि देखऽ अयलौं जे बाप कोन स्थितिमे जीबि रहल छथि मुदा हुनका मुइलाक बादो परिवार लऽ कऽ ऐलौं कहू त' की कहत ई समाज मुरारी भाइक की सपना छल ओ सभ सपना अपन आँखि मे बन्द केने चलि गेलाह आब त' हमहूँ असगर भऽ गेलौं एकदम असगर...।

सट्टू : ककाजी ककाजी बाबू त' हमरा सभके घरस' निकालि देने छलाहने तऽ पत्र लिखौत छलाह आ ने मनीआर्डर छोड़ बैत छलाह।

दया : बाप कतौ अपन बच्चा के घरसं निकालैत छै क्षणिक तामस रहैत छैक ताहूमे मुरारी भाइ सन कर्मठ सहृदय लोक अहाँ। लोकनि कहियो आबि क' क्षमा माँगबाक प्रयास नञि केलौं....

जद्दू : ककाजी जे गलती भऽ गेल हमरा सभसँ से आब त' भेल जे कोना की कैल जाय।

सद्दू : हँ ककाजी बाबूक श्राद्ध कर्म हमरा लोकनि धूम-धामसँ करब अहाँ खाली आदेश दिय।

दया : हूँ *(स्वतः)* लोक जीबैत रहैत अछि त' की स्थिति रहैत छै आ मुइलाक बाद सभ सम्मान सभ बड़प्पन *(प्रगट)* सदूदू अहाँ सभ आबि गेलौं सौह बहुत अहाँ लोकनिके किछु नञि करबाक अछि जे करता से गन्नू करता...।

सद्दू : ई कि कहैत छी ककाजी? इ-इ गन्नू से की भऽ सकत ओ त' कुली मजूरक काज करैत छथि कोनो टा लूरि नहि छनि...

जद्दू : हँ ककाजी ई बकलेल से की भऽ सकतैन...

दया : खबरदार जे हुनका बकलेल कहलियैन बकलेल के से' दुनियाँ देखि चुकल अछि। बकलेल शब्द प्रयोग गलत करैत अछि लोक आजुक जमानामे कहक चाही बुधियार बकलेल जे कि अहाँ दूनू भाइ छी...

सद्दू : कका जी...

दया : जोर से जुनि बाजू...हम अपन क्रोधके पीवि गैल रही। मन चाहैत रही जे भाइक श्राद्ध धरि अपन मोन के अशान्त नहि करी मुदा मुदा गन्नू के बकलेल कहि अहाँ लोकनि हमर क्रोध के निमन्त्रण दऽ देलों। खैर सट्टू अहाँक बापक अन्तिम इच्छाक मोताबिक अहाँ दूनू भाइ के त' खबरि सेहो नञि करबाक छल। मुदा एकरा हम उचित नै गुमलों आ

टेलीग्राम क' देलौ पर श्राद्ध कर्म बैह हेतैन ओतवे हेतैन जतेक गन्नू अपन तक' सकता लिय बापक चिट्ठी पढ़ लिय दूनू गोटे *(सद्धू आ. जदूत पत्र पढ़ि रहल छथि पार्श्व से मुरारी बाबू स्वरमे पत्र पढ़ल जा रहल अछि)*

भाइ,

आब हम बेसी काल घरि नहि जीव हमर अन्त आबि गेल अछि। कहुना कहुना इ पत्र लिख रहल छी एकेटा हाथ तऽ...किछु वाँचल अछि सेहो काँपि रहल अछि किछु बजवो मे आब बहुत कष्ठ भ' रहल अछि गन्नु आ' बौमासिन के जतबे बकलेल बुझैत छलियैन ततबे बापो के अपन बेटा सभके चिन्हवामे कतेक गलती होइत छैक। अ' बौआसिन ते देवी छथि - हम हुनक ऋणी भ' कऽ जा रहल छी...
भाइ मात्र एकटा अनुरोध हमर श्राद्धमे जे किछु करथि जतबे भ' सकैन ततबे करथि हमर दूनू कुपुत्रके हमर मृत्युक खबरि तक नहि होयबाक चाही। एहन कुपुत्र सभ आओर केकरो नहि देथिन सैह भगवान से प्रार्थना अगिलो जन अही सन देवताक छोट भाइ भ' जन्म ली सैह अभिलाषा...

सद्दू : नञि...बाबू......नञि...एतेक पैघ दंड? नञि बाबू नञि....

जद्दू : ककाजी...हमरा सभकें क्षमा क' दिय...अहाँ तऽ कमसँ कम एतेक पैध दंड नञि दिय...।

सद्दू... : हँ ककाजी...हमरा सभके क्षमा क' दिय...बाबू....बाबू...के हम सभ बहुत कष्ट देलियैन...आब...आब कम सँ कम... हमरा सभकें श्राद्ध कर्म तऽ नीक जँका करबाक आज्ञा... दिय...इ...गन्नू सँ की भ' सकतैन...आ' लोक सभ की कहत हमरा सभके...।

दया : अहाँ सभके आब लोकक चिन्ता भ' रहल अछि...बापक... भाइक चिन्ता कहियो ने भेल...आब लोकक चिन्ता भ' रहल अछि? यौ...मुरारी भाइक श्राद्ध तऽ हम अप्पन बलबूता पर खूब धूम-धामस। करा सकैत छलौं...मुदा मुरारी भाइक आज्ञा...कम सँ कम हुनकर अंतिम इच्छाक पालन तऽ अहाँ

लोकनि करू।

जद्दू : नञि ककाजी नञि।

सद्द : एहन जुल्म नञि करू ककाजी...*(दूनू कनैत छथि)।*

दया : गन्नू आइयो आपस नञि अयलाह...उतरी गरदनिमे छ'न पाइक लेल बेचारा कतऽ कतऽ बौआइत हैत...हे भगवान...केहने परीक्षा लऽ रहल छियै ओहि बेचारक...*(बढ़ि कऽ घरक दरवज्जा लऽग जाइत छथि...)* बौआसिन...की कहि कऽ गेलाह अछि गन्नू...।

स्त्री : कहि कऽ तऽ गेलखिन...जे आइ कोनो हालतमे अवश्ये आबि जायब...ककाजी...बड़ चिन्ता भ' रहल अछि...।

दया : चिन्ताकें गऽपे तऽ अछिये बौआसिन...मुदा अहाँ तऽ धैर्य राखू...अहींक धैर्य देखि तऽ हमरो नोर आँखिएमे रुकल अछि...।

स्त्री : ककाजी...ककाजी....।

दया : हँ...हूँ कहू बौआसिन...।

स्त्री : ककाजी...हुनको मोन बहुत खराब छलनि...ओकासी करैत...करैत...मुँह सँ खून खसऽ लगैत छलनि...कहीं बिमार...तिमार....।

दया : की कहलहुँ...मुँह सँ खून...हे भगवान...हमरा पहिने किएक नञि कहलौं बौआसिन....।

सद्दू : ककाजी ई...मुँह सँ खून आयब नीक लक्षण नञि...।

दया : हँ...हँ...हम अखने गोलीजी के रामपुर पठवैत छिथैन किछु केनाइ आवश्यक गोलीजी-गोलीजी।

(दरवज्जाक स्वर जदू बढ़ि का दरवज्जा फोलैत छथि गन्नू गंजी धोतीमे जून लागल छनि ओकासी करैत रहेत छथि अन्तिम क्षणक लक्षण छैन। सब बढ़ि का इनका पकड़ै छथि। गन्नू नीचा खसि पड़त छथि)

दया : गन्नू...गन्नू ई की भऽ रहल अछि?

गन्नू : ककाजी...क...का...जी...ई...3000 टाका लिय बाबूक घाटक लेल एहि सँ बेसी हमरा से नहि भ' सकल। ककाजी भ'

सकल....*(सद्दू अपन बैग से सिरिज दबाइ निकालि के गन्नू लग जाइत छथि)।*

स्त्री : हे...भगवान......साँसे खून ककाजी....।

गन्नू : हे यै कानून कानू ने सभ ठीक भ' जैत सभ ठीक भ' जैत *(उकासी करैत छथि मुँह मे खून बहार होइत छनि...आ' उनटि जाइत छथि स्त्री जोर-जोर से कान लगैत छथि सद्ध हुनक परीक्षण कऽ कऽ मृत्यु भऽ जेवक संकेत देत छथि। (सभ पात्र स्थिर।)*

पार्श्वगीत

जे चमकय सोना नञि; कोयला मे हीरा रहय
'ठाकुर' एहेन बकलेल के बेर बेर नमन करय
संग अपन क्यों ने ल जाई. छ,
जे छलै देने चलि गेल
हाय बकलेल हाय बकलेल....
(गीतक संग नहु-नही प्रकाश बन्न होइत अछि)

एगारहम् दृश्य

(जद्दू बैसल छथि सद्दू सीढ़ी सँ उत्तर का अवैत छथि आ परेशान एमहर ओमहर टहलि रहल छथि...)

सद्दू : सद्दू....

जद्दू : हँ भैया....

सद्दू : बाप हमर अहाँक मुइलाह अछि...भाइ हमर सभक मुइलाह अछि इककाजी जे बीच मे टांग अड़ा रहल छथि से कि नीक लगत अछि अहाँके...।

जद्दू : भैया नीक तऽ नहिये लगैत अछि मुदा कैल की जाय- क काजी के हमरा सभ पर बहुत उपकार छनि....

सद्दू : की उपकार, केहेन उपकार हुनकर जे उपकार छलैन से बाबू पर हमरा अहाँ पर कोन उपकार। हम सभ जे पढ़लों से अपन मेहनत से आइ जे एतेक पैघ ओहदा पर छी- एतेक

सुखी छी से अपन मेहनत से हुनके उपकार से जे होमय बाला रहैत तऽ गन्नू किएक ननि पढ़ि सकला....

जद्दू : से ते ठीके कहैत छी भैया मुदा...

सद्दू : मुदा की? जद्दू की अहाँ नञि सोचैत छियै जे हुनका-? उपकारे करबाक रहितनि तऽ गन्नू कुली कवारीक क न करितथि बाबू के paralys's नहि होइतनि-ज काज ६ बूझि लिय जे बाबू आ' गन्नूक मृत्यूक लेल ककेजी जिम्मेवार छथि-

जद्दू : भैया कने धीरे बाजू कहीं काजी सुनि लेता तऽ?

सद्दू : सुनऽ दियौन...हमर की बिगाड़ि लेता। जद्दू हमरा तऽ चिन्ता लागल अछि जे गन्नूक कनियाँ के आव की हेतैन कहू ते ई गन्नू सन बकलेलक वियाह करायब कोन आवश्यक छलैन....

जद्दू : जे भऽ गेल छे से भे गेल छै आब की कैल जाय? भैया जे हमर मिसेज त' बहुत तमसेती हमरा पर ४-५ दिनक लेल आयल रही- मुदा इ, गन्नूक मृत्युक कारण त भाव १०-११ दिन रह, परत।

सद्दू : अहाँके मिसेजक डर भऽ रहल अछि आ' हमर जे रोज हजारोक प्रोक्टीस मारि खा' रहल अछि से किछु नञि जऽ दु' अहाँके ते छुट्टीक कोनो प्रोक्लेम नञि हम जाइत छी दिल्ली फेर श्राद्धक एक दिन पहिने आवि जायव अहाँ एतड रहू...

जद्दू : नञि भैया इ कोना हैत उतरी तऽ अहींक गदरनिमे अछि अहाँ कोना जा सकैत छी। हमरों छुट्टीक ते बहुत तंगी रहैत अछि अहीं कोनों ताहे एत' रहू हमरा जाय दिय' हम मिसेज के रिक्वेस्ट करबैन तऽ भऽ सकैत अछि ओ मानि जाथि आ ओहो हमरा संग आबथि देखैत नञि छियै लोक कतेक तरहक बात कहैत अछिजे कनियों के किएक नञि अनलियैन ससुर से झगड़ा छलैन फनियाँके की वगैरह-वगैरह।

सद्दू : कहऽ दियो लोक के, लोक कि हमरा सभके खाय लेल दैत

अछि नहि दकियानूसी विचारक लोक एहि समाजक उन्नति नहि होइत छै जा कऽ देखियो बेस्तर्न कन्ट्रीजके कतेक प्रगतिशील विचारक छै एहिठाम ते अपना मोन से बियाह की के लेली बवंडर मचा देत अछि लोक सभ। *(एतबामे दया बाबू जो सीढ़ी से उतरि रहल छथि हिनकर सभक गडप सुनि उमकि जाइत छथि)* मा सबसे वेसी बवंडर ककेजी मचने हेता नहि ते बाबूक एहन न छलाह' जे हमरा सभसँ एतेक।

जद्दू : ठीक कहैत छी भैया। बाबू हमर वियाहो मे न गेलाह' तेहेन चिट्ठी लिखने छलाह जे की कहू पाइ पठबैत छलिपैन आपस कऽ दैत छलाह ''बाबू अपना मोन से इसभ करत हता से हमरो विश्वास नञि अछि पैरे लाइसिस भ' गेलैन एतबा खवर इमरा सभके नञि...।

सद्दू : जद्दू....

जद्दू : जी भैया....

सद्दू : आब हम ककाजीक एकोटा बात न सुनवैन। बाप-भाइ हमरा सभक छलाह हुनकर तइ क्यो नहि हुनकर सभक काज हमरा लोकनि अपना मोनस करब जेना मोन हैत तेना करब हमरा सभक की कोनो कर्तव्य न एतेक जे पाइ कमौने छी से कि बाबूक काज/ मे खर्च न कऽ सकैत छी गन्नूक आनल ३००० टाकामे की होमयबाला अछि। खूब धूम धाम काज करब हजारो लोक नोति खुआयब बढ़िया दान करब...गामक सभ लोकके बजायब। कहू अहाँक की विचार।

जद्दू : से तऽ ठीक मुदा कने हम मिसेज से विचार क' लितों ठीक....

सद्दू : मिसेज मिसेज मिसेज अहाँक अप्पन कोनो जुति नञि? हमर मिसेज त अग्रेज छथि मुदा हमरा त' हुनकर कोनो डऽर नञि...

जद्दू : भैया इन्गलेन्डक छथि त' एहि ठामक रहितथि तन बुझितिऐ।

सद्दू : हूँ। हद भऽ गेल। ठीक अहाँ जाउ अपन मिसेज लग ''आ'' परमीशन SIS आउ मुदा दू तीन दिन मे मुदा जद्दू ई गन्नूक कनियाँक लेल की कल जाय...।

जद्दू : भैया एकेटा बात कहू...।

सद्दू : हँ-हँ कहू...।

जद्दू : अहाँ अपना संग नेने जइयौन। अहाँके ते बड़का टा घर अछि...।

जद्दू : नञि-नञि जद्दू....जो दिल्ली छै...ओतऽ हुनकासन अनपढ़ लोकके एडजस्ट कैनाई मुश्किल आ हमर High society हमर प्रोस्टजज अहाँ ते कहैत रही जे अहाँके नोकर-चाकर नहि अछि जहाँ नेने जइयौन रहती ते घरक काज ताजक देती।

दयाबाबू : *(तामस सँ सीढ़ी परसी उतरैत)* सद्दू अहाँ सब नीच भऽ गेल छी से सबके ज्ञात छलै मुदा एतेक नीच भऽ जेबसे हमरा सपनोमे विश्वास नजि छल

सद्दू : ककाजी

दयाबाबू : खवरदार जे हमरा अहाँ सब ककाजी कहल। जे अपन खून के, अपने छोट भाइके, अपन छोट भाइके स्त्री के देवी सब स्त्री के जे नोकर चाकर से तुलना करैत अछि तकरा मुँह से ककाजी सुनव हमरा बर्दास्त नै ओ बेचारी जेकरा अपन विवाहक कोनो मनोरथ पुरा नहि भेलै अपने पति के दिखे, अहाँक अपाहिज बापक सेवामे दिन-राति लागल रहैत छल पैखाना-पेसाब उठबैत छल-ताहि देवीक लेल एहन विचार छी छी छी

सद्दू : ककाजी ......बहुत भऽ गेल आब बहुत भऽ गेल। अहाँ हरेक बातमे टांग अड़ा रहल छी। ई हमर सभक परिवारक मामिला अछि। अहाँ बीचमे बजे वला के होइत छी? हम सब खूब धूमधाम से बाबूक आ' गन्नूक श्राद्ध करवनि देखत छी अहाँ की कऽ लैत छी....

जद्दू : भैया....

सद्दू : अहाँ चुप रहू आई किछु फैसला भइए जाय.....

दया : परिवारक मामिला, परिवारक मामिला सद्‌ दू आइ घरि हम अपना के अहि परिवारस' अलग नञि बुझलों ''आ'' ने इ परिवारे बझलक ''मुदा आइ आइ, अहाँ अहाँ अहाँ भगवान मद्दू बाइ बुझाइत अछि जे हम गलती केलों जे अहाँक बाप के गाम जेवा से रोकलौं गलती केलों जे अहाँ सभके पढ़वा लिखवा मे मदत केलौं.......

सद्‌दू : बेर-बेर अहाँ ''ओहि मृदतक गप करैत छी अहाँ हमरा सभक की मदत केल अहाँ मदत केलियेन बाबू के आ' जँ अहाँ ओहि उपकारक बदला चाहै छी तऽ जाउ बाबू सँ लिय...

दया : सद्‌दू *(एक थापर मारत छथि)*

सद्‌दू : इ. पहिल थापर छल दोसर बेर जँ हाथ उटायब ते हाथ तोड़ि देव ....दया बाबू।

दया : सद्‌दू नीच, आइ यह एहि दया बाबूक हृदय से दया शब्द के हटा देली आब अहाँ देखब जे हम की छी।

सद्‌दू : अरे जाउ जाउ दया हमरा सभके काज कर' दिय आ देखियो जे केहेन धूमधामस' काज होइत छै।

करू खूब धूम धाम से करू अवश्य करू मुदा ताहि से पहिने आइ २ वर्षक घरक किराया सूद समेत हमरा लग जमा कऽ दिय तकरा बाद किछु करू।

जद्‌दू : 22 वर्षक किराया भैया ई ते बहुत भऽ जैत....।

सद्‌दू : जद्‌दू अहाँ चुप रहू दया बाबू किराया केहेन किराया.? बाबू अहाँके कहिया तक देलैन की देलैन से हम सब की जानी ...लिखा पढ़ीमे कतऽ अछि हिसाब देखाउ....।

दया : हिसाब देखाउ हिसाब देखाउ अहाँ हिसाब देखब चलि जाउ अहाँ दूनू गोटे अखने चलि जाउ हमरा घरसँ I sa' get out....

सद्‌दू : चिचिआउ जनि हम सभ अहाँक घरे छोड़ि देब मुदा बाबूक काजक बाद और अहाँ कतबो चिचिआयब हम सब नञि जैब अहाँके जे मोन हुए से कडू' लिय।

दया : नञि जैब की कहलों नञि जीब गोली जी गोली जी।

गोली : जी भाई (प्रवेश)

दया : हमर बन्दूक लाउ...

गोली : बन्दूक...

दया : हँ बन्दुक जल्दी सॅ. लाउ *(गोली जी जाइत छथि)* दयाक दया दुनियाँ देखि चुकल अछि आइ दयाक घृणा सेहो देखि लेत अड़ दूनू राक्षसक बघ आई हमरा हाथे लिखल अछि *(गोलीजी बन्दूक आनि कऽ देत छथिन)*

सद्दू : दया बाबू...इ बेकारक गऽप छोड़ू आ' जाउ उपर जा क आराम करू...

दया : Set up and get वनपऽ आब जॅ एक सेकेण्ड अही दूनू गोटे एत आओर रहलो ते हम गोली से उड़ा देव *(बन्दूक तानि दैत छथि)*

स्त्री : *(दीड़ि कऽ कनेत अवैत छथि)* नत्रि कका जी नलिइ बन्दूक राखि दियो कका जी इ बन्दूक राखि दियो।

दया : अहाँ शान्त रहू बौबासिन ''यहाँ सब गेली नबि *(निशाना लगबैत छथि)*

जद्दू : भैया भैया चलू चलू एतड सँ''

सद्दू : अँए....

जद्दू : चलू एतऽ सँ....

दया : खबरदार जे बौमासिनक नाम लेली. आइ से जो हमर बेटी छथि हमरा लग रहती हमज out I say get out *(बन्दुक से धकेलि कऽ बाहर कर दंत छथि)*

स्त्री : कका जी..

दया : बेटी......बेटी......अहाँ घबराउ जुनि इ सभ अही लायक छथि एहन पहल लिबल राक्षस सब से ते हमर बकलेलहा गन्नू कतेक बढ़ियाँ *(गन्नूक स्त्री के अप्पन हृदय सं लगबैत)* हमर अनपढ़, गंगार बेटी कतेक बढ़ियाँ।

स्त्री : कका जी कथी लेल अहि अभाग के अपन बेटी कहैत छी...

दया : बेटी-आब अहाँ हमर बेटी छी। हम अहाँ के बंधव्यक जीवन

नहि बिताबा देव हम अहाँ के नव जीवन देव बेटी नइब जीवन देव।

स्त्री : बाबू जी।

दया : कानू ने बेटी अहाँ कानू नै मुरारी भाई आ गन्नूक काज हम करबैन - खूब धूमधाम से करबैन चलू उपर चलू अपन घर चलू बेटी अपने घर चलू *(उपर सीढ़ी दिस बढ़त स्थिर)*

पार्श्व गीत

चलली अबला जनक घर
काटि जीवनक सब दुःख भोग
के बकलेल के अछि ज्ञानी,
के समाजक बनल अछि रोग
केकरो उजड़ गेल अछि जीवन,
केकरो लेल बनल ई खेल
हाय बकलेल हाय बकलेल

(गीतक संग-संग प्रकाश नहूँ-नहूँ बन्त्र होइत अछि)

●



आदि वा अंत

आदि वा अंत

प्रथम दृश्य

(मंच ड्राइंग रुम। साधारण मुदा सभ किछु। सोफासेटः शोकेस, रेडियो साधारण कालिन आदि-आदि। करुणेहा बाबू डेरा। स्वयं इंजिनियर, ईमानदार एवं कर्मठ। एकटा बालक मुन्ना एवं एक कन्या डौली । धर्म पत्नी कंचन नोकर-शनिचरा। आई द्वितिया दिन अछि। सभ ओरिआओन भेल अछि। मंचपर प्रकाश अबैत अछि। सोफा पर कंचन बैसैल छथि। कंचनदरबज्जा दिस तकैत छथि। प्रतिक्षा छथि। डौलिक घरसँ प्रवेश)

डोली : माँ केकर आश लगौने छै। भाई नञि एथुन।

कंचन : तों चुप रह। हमर भाई एहन नै छथि जे भरदुतियामे नै ओता।

डौली : गै माँ – कहल गेल छै कवि आ ओकिल दुनू झूठक खेती करैत अछि। आ तोहर भाई दुनू छथुन तैं...

कंचन : अच्छा-अच्छा जो अपन काज कर।

डौली : खिसिया किएक रहल छै... मामा लय ने सबूत।

कंचन : फेर वैइ *(पार्श्व सँ मामाक श्वर)*

मामा : कंचन-कंचन (प्रवेश करैत) कत छै गै कंचन।

कंचन : *(प्रसन्नटाके संग पैर-छुबैत)* भईया, बहुत लेट भ' गेल।

मामा : बड़ी काल तक देखै छलियै जे कोनो मुल्ला फँसि जाय मुदा नाञि फसलौ। समटा खर्चा हमरा अपने ऊपर खसलौ।

डौली : चुँ चुँ चुँ बड्ढ जुलुम भऽ गेल मामा... बड़ा जुलुम मामा।.. बिना मुल्ला के... आठम कार्लायल।

कंचन : डौली... तों चुप रहबें कि नञि...

मामा : कह' दही... एकरा कह' दही... तो तऽ एकर सिंगल मदर छहि... हम तऽ डबल मदर... मा...मा...

डौली : बाह मामा बाह... ई गप्प देला सँ काज नञि चलत-पहिने त' कहियौ जे भरदुतिया मे माँ लेल की-की अनलियै यै?

मामा : हा... हा... हा... आब एलैं तो रास्ता पर...। देख एही झोड़ा मे तोहर मामीक बनाओल ठकुआ अनलियौ यै...। ठकुआ।

डौली : तखन त' सड़ल होयत ठकुआ...

मामा : सड़ल... कियैक?... गै।

डौली : मामी जे बनौलनि अछि तें

मामा : देख गै डौलिया... हमरा जे कहबे से कह मुदा हमर आ. रणियाँ धर्मपत्निक...।

डौली : आदरणिया नै मामा जी पूजनियाँ...

मामा : हँ हँ... हमर पूजनियाँ धर्मपत्निक विषयमे जे बजलैं तकरा आपस ले... ने तऽ हम कोर्टमे केस क' देबौ...।

डौली : Ok मामा, ओके हम आपस लैत छी...

मामा : Than You very much that you have respeacted my respectable wife.

कंचन : दुर भइया... अहूँ कि एकरा सभक संग मसखरी कर' लगैत छी... चलू पैर हाथ धो... के नोत ल' लिय... तखन *(मामाक झोड़ा उठा क' प्रस्थान)*

डौली : एखने नै गै पहिने समटा चीज ल' लेब दे... हँ त' मामा आओर की अनलियै यै माँ के लेल?

मामा : गै डोलिया फँसलौ ने मुल्ला, जे अनितियौ रसगुल्ला हमर आ बहिन बीचक बात थिक तो जुनि कर हल्ला-गुल्ला...।

डौली : *(मुँह बिचकाबैत)* ई कविता छलै कि मामा?

मामा : तऽ तोरा कि भैलो जे चुटकुल्ला छलै?...

डौली : ओह त' कविता छलै *(जोर-जोर सँ थपरी पारैत)* बाह मामा बाह... की सुन्दर कविता बाह... रसगुल्ला...हल्ला-गुल्ला... बुलबुला...दुछल्ला पंडित मुल्ला...बाल...बाह...।

मामा : गै डौलीदाई तो हमर प्रशंसा क' रहल छै कि हँसी उड़ा

रहल छै?

डौली : हे लिय' .... एतेक जोर-जोर सँ थपरी पारि रहल छी आ आहाँ के होइयै जे हँसी उड़ा रहल छी?

मामा : नञि – नञि तो तऽ हमर गुड... गुड... बेटी छैं। हमर हँसी कोना उडैब'...। कने थमहि जो कोनो मूल्ला के फँस, दे... फेर तोरा लेल ड्रेस खारीद कऽ आनब जे...।

डौली : बाह मामा...मुल्ला फँसत त' हमर कपड़ा खरीदब बाह।... खैर ई त' कहू जे माँक साड़ी खरीदना लेल कोनो मुल्ला फँसक कि नञि?

मामा : नै... फँसलौ त'... साड़ियो कीन लियौ... मुदा...

डौली : मुदा की मामा....

मामा : मुदा देख तों हँसी तऽ नै करबै?

डौली : कहू त' भला... हम आ अहाँ सँ हँसी करब।

मामा : हे गै... ओ साड़ी तोहर मामी के बड़ पसिन्द पड़लैनि... राखि लेलखुन...।

डौली : *(जोर सँ चिचिया कऽ)* सुन गै माँ साड़ी तोहरा लेल... आ हड़पि लेलखुन मामी... वाह वाह।

कंचन : *(प्रवेश)* तों चुप रहलें की नञि... की हैतै जँ भौजी राखिये लेलखिन तऽ?

मामा : देख गै छौड़ी... देख अपन माय के। कतेक संतोषी छौ। आ एकटा तों छै... चमगादर...

कंचन : भैया। अहूँ की एकरा सभ सँ... चलू नोत लऽ लिअ... शनिचरा शनिचरा...

शनिचरा : *(पार्श्व सँ)* जी अबैत छी *(मंच पर आबि)* की कहैत छी मेम साहेब। *(पुनः मामा के दखि)* गोर लगै छी मामा जी।

मामा : हूँ...

कंचन : शनिचरा भैयाके पानि आनि कऽ दहुन। हम ता धरि ओ. रिआओन करैत छी। चलू डौली...।

शनीचरा : जी मलकिनी... *(प्रस्थान शनीचराक जल ल'क' पुनः प्रवेश)* लिय' मामा जी....

मामा : रे तों हमरा मामा जी किएक हैत छै?

शनीचरा : सब तऽ आहाँ के मामे जी कहैत हे...

मामा : गुण्डा नहितन रे तोहर माय के हम भाई छियौ की रे...। खबरदार जे हमरा मामा जी कहलैं...

शनीचरा : तऽ की कहू मामा जी...

मामा : फेर... अच्छा सुन तों अपन मालिक के की कहैत छहुँन अँय...

शनीचरा : साहेब...

मामा : तऽ हमरो सैह कह....

शनीचरा : इह... आहाँ साहेब थोड़े छी... जे हम साहेब कहब...

मामा : की कहलें... हम साहेब नञि छी... रौ साहेब के कोनो नङरि लटकल रहैत छै जे हमरा ने अछि, अच्छा सुन तों हमरा ओकिल साहेब कह... बुझलै... ओकिल साहेब...

शनिचरा : ठीक छै...

मामा : की ठीक छै...?

शनीचरा : मोकिल साहेब...

मामा : खच्चर नहि तन... ओकिल सँ तों हमरा मोकिल बना रहल छै? तत् मारि मारब जे...

शनीचरा : हूँ हम कतेक दिन सँ आहाँक बाट ताकैत रहि... आ आहाँ अबितहि तमसाय लगलौ।

मामा : बाट तकैत रहि... कियैक रौ... कियैक हमर बाट तो तकैत रहि... कोनो मामला मोकदमा फँसलौए की?

शनीचरा : नै।

मामा : तऽ कथि लेल हमर बाट तकैत रहै?

शनीचरा : हमहूँ एकटा कविता बनेलियै यै... सैह सुनेबाक लेल।

मामा : कविता? भगै छें कि नहि एतह सँ... मारब से थापर जे. .. गुण्डा नहितन कविता बनबैत छथि?

शनीचरा : सुनाऊ?

मामा : अच्छा-अच्छा सुनो?

शनीचरा : *(गरदनि साफ करैत)*

आम पाकल, जामुन पाकल,
पाकल बुढियाक गाल
पाकल पाकल गाल देखि कऽ
बुढ़बा करै कमाल।

मामा : जोगिरा सारारारा - जोगिरा सारारारा।

शनीचरा : *(खुसी होईत)* हें-हें हें....

मामा : खच्चर नहि तन कविता बनबैत छथि... भगै छै कि नहि एतए सँ....

शनीचरा : तमसाइत कियैक छी? अहुँक कविता सभ तऽ अहिना रहैए...

मामा : कि कहलै... हमर कविता सभ अहिना रहै यै... थम्हि जो आई तोहर हड्डी-गुड्डी तोड़िक क' राखी देबौ।
(अपन चप्पल उठा कऽ खेहारैत छथि। शनीचरा रुम मे एमहर ओम्हर दौड़' रहल अछि। मामाजी दरवज्जा दिस कऽ चप्पल फेकैत छथि। चप्पल शनिचरा के नै लगैत छै। ओ भागि जाईत अछि। चप्पल चपरासी रामदीन कवि लोकि लैत छथि। मामा जी शनिचरा के ताकि रहल छथिन)

रामदीन : *(प्रवेशक संग)* हुजूर एक चप्पल और फेंका जाय।

मामा : *(ओकरा घुमि कऽ देखैत छथि)*... आप... आप कौन है?

रामदीन : हुजूर इस नाचिज को रामदीन कवि कहते हैं।

मामा : हे भगवान ई एकटा कवि और कहाँय सँ आबि गेलाह।

रामदीन : आपने कुछ फर्माया हुजूर?

मामा : नहीं-नहीं... मगर क्या आप भी कवि हैं?

रामदीन : हुजूर... रामदीन कवि...

मामा : *(स्वतः)* बापरे एकटा और कवि कतेक पतरा सभ रखने अछि... जरुर कोनो पहुँचल कवि हैत...ठीक है ठीक है मगर आप यहाँ?

रामदीन : हुजूर साहब को ये कागजात देने आया था।

मामा : *(स्वतः)* साहब को... ई श्रीमान जी के कहिया सँ कविताक शौक भेलैय ताहू मे एतेक कविता पढ़ता ओ *(प्रगट)* ठीक है ठीक है... मगर क्या ये सब आपका है?

रामदीन : हुजूर .... यहाँ तो ना कुछ मेरा है ना आप का है... सब कुछ तो उपर वाले का है। *(कंचन का प्रवेश)*

कंचन : के रामदीन ... की बात छै।

कंचन : ठीक छै... ओत' राखि दिऔ....

(रामदीन फाईल राखि कऽ जाय लगैत अछि)

रामदीन : *(घुरिकऽ)* हुजूर ओ दूसरा चप्पल?

मामा : हूँ *(बढ़ि कऽ रामदीनक हाथसँ चप्पल झटकि लति छथि)*

रामदीन : *हुजूर रामदीन कवि मोन रखिएगा प्रणाम। (हा-हा-हा करैत प्रस्थान एम्हर एक हाथमे चप्पल नेने प्रणामक' जवाब दैत मामाजी अबाक।)*

कंचन : की भेल भईया... अहाँक चप्पल रामदीन लगऽ...।

मामा : अँय कंचन ई रामदीन...?

कंचन : चपरासी छै...दोसर ठाम सँ ट्रांसफर भ' कऽ एलैये ... मुदा अहाँक चप्पल?

मामा : किछु नै... किछु नै चल नोत ल'ली *(प्रस्थान प्रकाश बन्द होईत अछि)*

दोसर दृश्य

(करुणेश बाबू बैसि क' किछु कागज पतरपर हस्ताक्षरक' रहल छथि। मामा जी अखबार ल'ऽ बैसल छथि। बीच-बीचमे करुणेश बाबू क' ध्यान बहकेबा लेल खखसैत छथि मुदा करुणेश बाबूपर कोनो असर नै होईत छैनि।)

मामा : यौ श्रीमान हम एतय बैसल छी...

करुणेश : हूँ...

मामा : हूँ की?

करुणेश : हूँ...

मामा : हूँ... कहैत छै जे सारी खुदाई एक तरफ आ जोरु का भाई एक तरफ... मुदा एहि ठाम तऽ सारी खुदाई एक तरफ आ सरकारी कागज एक तरफ आ जोरू का भाई कोनो तरफ

नै। ओ श्रीमान हम... अपने आदर नीय कन सार ओकिल साहेब कवि घनश्याम...।

करुणेश : हूँ...

मामा : वेस... हूँ कही कि हाँ कही...हम तऽ सार छी *(सुनबैक अछि।)*

शनिचरा : *(दू कप चाहक संग प्रवेश करैत)* राधेश्याम...राधेश्याम मामा जी

मामा : *(घुरैत)* की बजलैं?

मामा : मामा जी... रे खचरहबा अपन बापक सार बनेंबा पर किऐल तुलल छै। रे पीसा कहैत की लाज लगैत छौ?

शनिचरा : पीसा कोना कही मामा के
धोती कोना कही पाजामा के

मामा : अरे तोरी के... रे नंगट फकड़ा पढ़ै छै...
रे तत मारि मारबौ जे बिसरी जेबै मामा के... बाप-बाप कऽ कऽ बजेबैं नाना के

करु : अँय की भेलै नाना के?

मामा : तै सँ आहाँ के की... आहाँ मूरी गोति कऽ अपन सरकारी काज... आहाँक ई मुँहलग्गू नोकर हमरा पर फकड़ा पठय आ...

करुणेश : शनिचरा ...

शनिचरा : जी साहेब *(शनिचराक प्रस्थान)*

करुणेश : जों अपन काज कर... जाय दिऔ वकिल साहेब... शनिचरा अखैन बच्चा छै... चाह पिबू।

मामा : हूँ! शनिचरा अखैन बच्चा छै...यौ ओ बच्चा नहि असली शनिक बच्चा अछि।
(कंचनक प्रवेश)

कंचन : भऽ गेल खतम आहाँक काज?

करु : हँ... आब बाँकि ऑफिसो मे देख लेबै...।

कंचन : भैया आयल छथि... तऽ डौलीक विवाहक किछु गप्प-सप्प...

करुणेश : हँ से त' ठिके.... की यौ ओकिल साहेब आहाँक बहिन पर

त’ डौलीक विवाहक भूत सवार छैनि।

कंचन : भूत की सवार नै रहत... भैया हिनका मोने तऽ डौली एखन बच्चे अछि।

मामा : ठिके तऽ श्रीमान जी कहैत छथुन डौली अखन बच्चा नै त’ की? गै कंचन जै लड़की क’ बाप के अखन छठिहारो नै भेलैय से लड़की बच्चा नै त’ की?

कंचन : दूर भैया...आहाँ के त’ सदिखन...
आब किछु जोगार तऽ करियौ? जे नीक वर भेटै ओकरा।

मामा : अवश्य भेटतै ... अवश्य भेततै ... नीक सँ नीक घर हतै नीक सँ नीक वर भेटतै...

कंचन : से कतौ जेबो करथिन तखन ने... ऐना घर बैसल रहला सँ की बेटीक विवाह होइत छै।

करुणेश : अवश्य हेतै .... कथी नै छै हमर बेटीमे... कमी कथिक अछि... देखै मे सुन्दर तऽ अछियै First Class मे Honours पास केलक अछि...कोनो कम्पीटिशन कम्पीट करबे करत...

मामा : यौ श्रीमान एकटा बात पूछू–?

करुणेश : पुछू-पुछू जै टा मोन हो तैटा पुछू।

मामा : आहाँक माय के आ बाबू जी के अहूँ बड़ सुन्दर लगैत हेबैन?

करुणेश : ई की पुछि रहल छी आहाँ?

मामा : यौ कहियो ऐनामे अपन मुँह देखलौए की नहि? हूँ... यौ आई कल्हि केकरो सुन्दरता पर कि गुण पर विवाह नै भऽ जाईत छै... दौड़ैत-दौड़ैत जूता खिया जायत।

करुणेश : अहाँ सब ततेक भरिया रहल छी जे यौ आब जमाना बदलि रहल छै... सभ ताकऽ लगलै अछि पढ़ल-लिखल कमेनिहार लड़की...

मामा : तै बेटी के एतेक पढ़ा रहल छी?

करुणेश : और नै त’ की अपन पैर पर ठार हेबाक योग्यता तऽ अवश्ये ऐबाक चाहिए।

मामा : बड़ उत्तम... बड़ उत्तम श्रीमान बहिनोई महोदय अपने एक

पेरे पर ठाढ़ हेबाक योग्यता माने की अभ्यास अछि की नञि?

करुणेश : अर्थात्?

मामा : अर्थात् जँ नै अछि तऽ आईए सँ प्रैक्टिस आरम्भ कऽ दिअ... दरवज्जे दरवज्जे एकटँगा दैत-दैत जखन थाकि जायब तखन बुझबै जे अपनेक ई सार कन्यादान कहने छलाह।

कंचन : ओह भैया ई हंसी मजाक छोड़ू कने सीरियस होऊ...

मामा : ठीक छै भऽ गेलियौ सीरियस अच्छा त' बता जे टाका कतेक तक गनि सकैत छहि?

करुणेश : टाका ....?

मामा : हा-हा-हा अहाँ त' एना कहि रलह छी जेना एहि शब्दसँ पहिल बेर भेंट भेल हो...। और हम पुछल जे टाका माने की रुपैया कतेक धरि गनबै?

करुणेश : देखू वाकिल साहेब ... हम विवाह दानमे लेन-देनक घोर विरोधी छी...

मामा : अवश्य रहू मुदा बेटाक विवाहमे' बेटीक विवाहमे ई हरिश्चन्द्री फिलॉसफी देबै तऽ बेटीक विवाह नै हैत...

करुणेश : खबरदार जे फेर एहन गप्प बजलौ। डौली जँ हमर बेटी अछि त' अहूक भगिनी अछि एहन गप्प बजैत कनेको संकोच नै भेल आहाँके...

मामा : हे लिअ... हम उचित गप्प बाजल।

करुणेश : की उचित यौ। कि बिना दहेजक विवाह नै होईत छै। अपन समाजमे कतेको एहन लोक छथि जे एकर घोर विरोधी छथि।

मामा : शान्त...शान्त हमर आदरणीय बहिनोईजी कनेक शान्त...चलू हम अपनेक गप्प मानि लेल। हम हारल, अपने जीतल... अर्थात् अपन समाज नीक-निक लोकसँ भरल अछि। सम्पूर्ण देशमे एकटा यैह समाज थिक जे दहेजक नामों निशां नै छै। आदर्शवादी हरिश्चन्द्र सभ आदर्श विवाह करबैत छथि बेटा-बेटी कें...

करुणेश : ई तऽ हम नै कहल जे सभ आदर्शे विवाह करबैत छथि... मुदा बहुत लोक छथि जिनका लेन-देन सँ कोनो सराकार नै छैनि।

आमा : अच्छा एकौ गोटे के नाम तऽ कहू?

करुणेश : एकटा की कतेको नाम अछि जिनका विषयमे हमरा पता लागल अछि जे एकदम आदर्श विवाह करता अपन बालक सभक। ठहरु हम डायरी ने ने अबैत छी (प्रस्थान)

कंचन : भैया आँहि कने हिनका ठीक सँ बुझबियौन।

मामा : कि बुझबियौक...ई त' सदिखन तेसरे राग अलापैत रहैत छथि... पाई जँ नै गिनथिन तऽ...

कंचन : पाई कतऽ सँ अनथिन। कहला लेल Excutive Enginer मुदा अहाँ त' जनिते छी जे एकटा एमहर ओमहरक पाई के छुबि नै सकैत छथि। Department मे मिनिस्टर सँ चपरासी तक नाखुस रहैत छैनि। दस साल पर Design सँ work मे ट्रांसफर भेलैन अछि... एहिठाम अबिते सभ ठिकेदार के बिल रोकि देलखिन जे एकाटा काज ठीक नै केलकैए ई ठिकेदार सभ... ओ सभ की छौड़तनि। फेर ट्रांसफर करबा देतैन।

मामा : हँ गे से सब बुझले अछि... नै तऽ Excutive Engineer के की ठाठ रहैत छै... गाड़ी-घोड़ा नोकर चाकर ऐश-मौज... *(करुणेश बाबूक डायरीक संग-प्रवेश)*

करुणेश : सुनू ई पहिल छथि... अपने मास्टर आ बेटा 4th year Medical मे छैनि।

मामा : मास्टर आ बेटा Medical 4th year मे माने 5 लाख सँ शुरु हैत तीन लाख मे पटत...

करुणेश : हम पहिने कहलौ ने जे ई सभ आदर्श...

मामा : हा-हा-हा मास्टर आ आदर्श खाली ब्लैक बोर्ड तक खैर आगू पढ़ू।

करुणेश : ई हैड क्लर्क छथि... बेटा इंजीनियर पास क कऽ Tisco जमशेदपुरमे काज करैत छथिन।

मामा : हैड क्लर्क, टैस्को मे बेटा खतरनाक... महान खतरनाक कतेक माँगी से हुनको नै बुझाईत हेतन। यौ एहि पर डाक लगतै.. दू लाख... तीन लाख संगमे मारुती कार...

करुणेश : फेर वैह बात। यौ हिनका विषयमे हमरा खूब नीक जकाँ पता अछि जे बस बेटा के एक खंड धोतीमे आ पुतोहु के एक खण्ड साड़ी... बस...।

मामा : कोन गामक छथि औ... कनी देखी तऽ *(डायरीमे देखैत)* बाप रे एहि गामक छथि... यौ श्रीमान एहि गाममे तऽ बकरी आ बोतूक विवाह होईत छै ताहूमे दहेज लगैत छै। आ ई आहाँक आदर्शक सूचीमे छथि?

कंचन : ओफ्फो भैया आहा सब जे एहिना धोंधाऊज करैत रहब त' कि हैत जाधरि दुचारि ठाम धुमि फिरि कऽ नै देखबै ताधारि कोना पता लागत?

मामा : गै हमरा घुम' मे कोन आपत्ति नहि TA-DA खाली भेटैत रहय बस।

करुणेश : बाह ओकिल साहेब भगिनिक विवाहमे घुम'ब ताहूमे TA-DA चाही। हा-हा-हा... कहू कहिया चलबाक अछि।

करुणेश : अरे चलबे करब अखैन हड़बड़ी नहि छै...

कंचन : फेर वैइ बात... आहाँ तऽ अलगे राग अलपैत रहैत छी। एक बेर घुमि फिर कऽ देख तऽ लिऔ।

करुणेश : अच्छा बाबा... आहाँ कहैत छी तऽ देखिये आबी... ठीक छै ओकिल साहेब काल्हिए चलू भोड़का बस सँ...

मामा : बस सँ ... यौ ई दू दू टा जीप...

करुणेश : सरकारी जीप छै... बेटीक लेल बर तकबाक लेल नै देने छै सरकार। ठीक छै त' भोरे *(प्रस्थान)*

मामा : हे भगवान एहन हरिश्चन्द्र हमरे बहिनोई किए भेला। सरकारी जीप सँ तऽ साहेब सबहक... पुत्र नदी फिर' जाईत छै आ हिनका... तों नै किछु बुझबै छहुन हिनका गै कंचन...

रामदीन : *(पार्श्व सँ)* हुजूर-हुजूर...

कंचन : के....?

रामदीन : हुजूर हम रामदीन कवि...

मामा : बाप रे फेर आबि गेल ई कवि। गै कंचन तोही एकरा सँ

निपट हम भितर जाईत छियौ... *(दौड़ेत प्रस्थान)*

(कंचन हँसैत बाहर दिस जाईत छथि प्रकाश बन्द होईत अछि)

दृश्य तेसर

(वकिल साहेब धुमि-धुमि कऽ कविता बना रहल छथि)

मामा : ये मौसम रंगीन शमा...वाह...वाह...
ये मौसम रंगीन शमा... वाह...वाह...
तेरा...मेरा...मेरा प्यार है
फिर कैसा शर्माना...
धत् तेरि भला के ई त' फिल्मी गीत छै... हिन्दीमे हमरा सँ कविता बनि नञि सकैत अछि। जहाँ बनबैत छी त' कोनो फिल्मी गीत बनी जाईत अछि। मैथिलिए मे बनेबाक चाही... अँय ई ऋतु बसंतक अहाँ बिनु सुन्न लगैये। राति कऽ जगे' छी आ दिन मे नींद अबैये।
(पार्श्व सँ दरवज्जा ढकढकेबाक श्वर) ओफ मुड ऑफ क' देलक... के छी...के ... छी भीतर चलि आऊ।

गुलाममल : *(प्रवेशक संग)* हुजूर हम छी... गुलाबमल गेंदामल Construction Co. क हुजूर...

मामा : गुलाममल गेंदा मल Construction Co. of... हँ त' गेंदामल जी...

गुलाब : गुलाबमल - गुलाबमल हुजूर...

मामा : हँ...हँ गुलाममल जी कहल जाओ अपनेक की सेवा करी

गुलाब : हुजूर कने हुजूर सँ भेंट करबा दिअ हुजूर

मामा : हुजूर-बूजूर ई Dable हुजूर... ओह बुझलौ गेंदामल जी।

गुलाब : गुलाबमल हुजूर...

मामा : हँ-हँ-एँह सैह...अहाँक हुजूर घरमे नै छथि बाहर गेल छथि. ..साँझ धरि औता...

गलाब : एक बेर, सिर्फ एक बेर भेंट करा दिय' हुजूर। हम तऽ

बर्बाद भऽ गेल छी हुजूर बर्बाद भऽ गेल छी...एक बेर भेंट करबा दिअ हुजूर...

मामा : अरे-अरे कने शांत होऊ गेंदामल जी।

गुलाब : गुलाबमल हुजूर, गुलाबमल...

मामा : ओफ्फो एते छोट गप्प हमरा किएक नै मोन रहैत अछि... आ आहुँ तऽ हदे करैत छी आखिर गुलाब आ गेंदामे कि फर्क छै?

गुलाब : बाप-बेटाक हुजूर...गेंदामल हमर बेटा अछि हुजूर...

मामा : ओफ सॉरी गेंदा ... नै नै गुलाबमल जी आई. एम. सॉरी. आब कने ई नोर पोछि लिअ' कहू की बात...

गुलाब : हुजूर अहाँ हुजूर के के छियैन हुजूर...?

मामा : हम...हम वकिल घनश्याम। अहाँक हुजूर के सार छियैन।

गुलाब : सार-तखन तऽ हमर काज बनि गैल...

मामा : से कोना?

गुलाब : हमरो एकटा सार छै हुजूर ओकर बात हम कखनो नै टालै छिय हुजूर सार होईते ने छै बड़ा दुलरुआ हुजूर....

मामा : हा-हा-हा गुलाब मल जी एहि बातपर सुनू एकटा कविता ...

बाँकी सब सम्बन्ध बेकार छै
सभ सम्बन्ध बेकार छै कहन वकिल कविराज छै।
किएक एतय आयल छी से कहू
आ कहु जल पीयब की चाह।
शनिचरा दू कप चाह बना कऽ नेने आ...

शनिचरा : *(प्रवेशक संग)* चाह मे चीनी बेसी लेब आ कि ब्लड प्रेशरक बीमारी अछि-अछि फुलैये दम?

मामा : शनिचरा ....

शनिचरा : जी मामा जी...

मामा : मामाजीक बच्चा फेर जँ तुकबन्दी कलै तऽ टांग हाथ तोरी कऽ ध' देबौ...जो दू कप चाह बना कऽ नेने आ...।

शनिचरा : संगमे बिस्कुटों ने लाऊ मामा जी?

मामा : भगै छै कि नञि *(शनिचरा पड़ा जाईत अछि)*

गुलाब : हुजूर ई चाहक कोनो आवश्यकता नै। हुजूर खाली हमर काजटा करा दिअ हुजूर। दस लाखक बिल हुजूर रोकने छथि...हुजूर पहिने लाख टाका एतय सँ मिनिस्टर तक खर्च कऽ क' ई ठेका ने ने रही...ई दस लाख हम तऽ, हम तऽ बर्बाद भऽ गेलौ हुजूर *(टाँग पकड़ैत)* हमरा बचा लिअ हुजूर हमरा बचा लिअ...।

मामा : ओह तऽ ई बात छै... दस लाख... उठू-उठू गुलाबमल जी उठू... काज तऽ बड़ मुस्किल अछि। हमर जे बहिनोई छैथि बड़ टेढ़ आदमी...

गुलाब : मुदा हुजूर आहाँ तऽ सार छियैन आहाँक सोझा तऽ एकदम सिधा भऽ जाईत हेता....।

मामा : हँ-हँ... एकदम सीधा कहैत छिथैन उठू ता ठाढ़ बैसू त' बैस....

गुलाब : हँ हुजूर हमर सार अहिना उठा बैसी करबैत रहैत अछि। हुजूर...हुजूर तऽ हमर काज भऽ जेतै ने हुजूर...

मामा : भऽ जेतै...मुदा...

गुलाब : मुदा की हुजूर?

गुलाब : जे कहबै सभ मंजूर छै हुजूर ... ई रुपैया हमरा भेटत तकर एकौ रत्ती आशा नहि छल। मिनिस्टर साहेब तक सं हुजूर के कहबा देलियैन मुदा हुजूर एतेक दिन सं' बिजनेस करैत छी मुदा नै बुझल छल जे कहनो काज करेबाक हो त' हुजूर के सार के पकड़ी हुजूर...

मामा : खाली हुजूर कऽ रहल छी गुलाबमल जी स्पष्ट बाजू कतेक...

गुलाब : हुजूर 20 लाख के

मामा : 20% माने दए लाख

गुलाब : हँ हुजूर

मामा : आ हमरा

गुलाब : अहुंके 5% हुजूर...

मामा : 5% माने 5000 ट...

गुलाब : जी हुजूर ई बिल के कॉपी छै हुजूर एहि पर सिग्नेचर करबा दिऔ हुजूर। जहिये कहबै वहियै हम पाई ल' क' हाजिर हैब हुजूर...

(मामा अवाक छथि)

हुजूर-हुजूर की भऽ गेल हुजूर...

मामा : अंय किछु नै किछु नै ... ठिक छै। ई आहाँ हमरा द' दिअ साइन की' कऽ हम आहाँ सं भेंट करब।

गुलाब : मुदा कने जल्दी हुजूर...। वेश त' हम जाई छी हुजूर *(प्रस्थान करबाक मुद्रा)*

मामा : गुलाबमल जी हम सारक संग-संग वकिल सेहो छी।

गुलाब : जी हुजूर...

मामा : औ ओकिल के किछु फिस सेहो होईत छै। एतेक काल से आहाँक संग मगज मारी केलौं तेकर।

गुलाब : जी हुजूर... हम तऽ बिसरिये गेल रही हुजूर...

मामा : ओहू काल मे नै बिसरि जेबै...

गुलाब : हे-हे हुजूर... केहन बात करैत छी... अपने हमर प्राण आपस करब आ हम बिसिरि जेबै....हे ई 500 राखल जाय फिस। बेस प्रणाम हुजूर...। *(प्रस्थान)*

मामा : प्रणाम... ई... 500 हमर फीस। हमर फिस 500 वजन एतेक त' बड़का-बड़का वाकिल के सेहो नै भेटैत छै... बेकारे हम कोर्टमे प्रैक्टिस करैत छी... एतै करी संगीक (पार्श्व सं कंचनक शनिचरा - 2 कहैत प्रवेश। मामा जल्दी - 2 रुपया। जेबमे धरैत छथि। कंचन देख' लैत छथि। हाथमे किछु झोड़ा वगैरह। पाछु-सं डौली संग अरुणक प्रवेश। हिनको सभक हाथमे सामान छैनि)

डौली : माँ भऽ गेलौ ने तोहर मार्केटिंग। आब हम सब जाई छी लाइब्रेरी।

कंचन : ठीक छै... जो मुदा जल्दिये आ बि हे। हैं ई ले रिक्शा बला के देने जाहिहें।

डौली : ओके सॉरी मामाजी... अरुण ई हमर मामाजी आ मामाजी

ई अरुण कंचनक दोस्त हमर क्लास फोलो।

अरुण : प्रणाम मामाजी।

डौली : बाई मामा जी *(दुनुक प्रस्थान)*

मामा : प्रणाम, बाई...ई छौड़ी त' हमरा सौंसे शहरक मामा बना कऽ राखि देत। कंचन डौली आब पैघ भ' गंलौ ऐना सबहक संग...?

कंचन : ओफफो भैया इ अरुण बड़ सुशील लड़का छै। एकर पापा हिनकर घनिष्ट मित्र छनि। बड़ तेज छै। बैंकमे पी.ओ. मे भऽ गेलै। आ अरुण के सेहो भऽ गेल रहै। मुदा नै गेलै।

मामा : अंय ...सभ फीट... घरमे लड़का छौ त' एम्हर ओम्हर की तकैत छै।

कंचन : के अरुण दऽ कहै छी की?

मामा : और नै तऽ की गे जखन सब फीट छै। त' फेर विलम्ब किथक थिकै।

कंचन : ओफ्फो भैया... बिना बुझने आहाँ ई सब दोसर जातिक छथि...।

मामा : ओह... ई त' हमरा ध्याने नै रहल।

कंचन : शनिचरा शनिचरा ... नञि जानि कत' मरि भेल छैड़ा।

शनिचरा : *(प्रवेशक संग)* जी मैम साहेब।

कंचन : की करै छलै रे एतेक काल स' चिचिया रहल छी।

शनिचरा : चाह पिबैत रही...

कंचन : की? चाह पिबैत रहें?

शनिचरा : नहि...नै चाह बनबैत रहियै मामाजी लेल आ ओ जे ठिकेदार... अरे ओ तऽ चलि गेल...।

कंचन : ठीकेदार... ओ हाँ तों ई समान सब उठा क' राख भितर... भैया ई ठिकेदार कियैक आयल छल... आ अहाँके की देलक?

मामा : हमरा अरे हमरा की देत ओ तऽ अपन हुजूर सं' भेंट करय आयल छल तऽ हम चाह दऽ पुछि देलियै।

कंचन : भैया हिनका ठिकेदार सभ के घरमे आयब एकदम पसिन

नै' छनि। से त' आहाँ के बुझले अछि तैं फेर जं केओ आबय तऽ ऑफिसमे भेंट करबाक लेल कहि देबै।

मामा : ऑफिसमे गे कंचन तैं ई स्थिति छौ ने। जे अपने बाजार जाय पड़ैत छौ रिक्सा पर चाऊर दालि कीन क' अनैत छै। छी-छी-छी... जे देखैत हैत से कि कहैत हैतौ?

कंचन : कहऽ दिऔ अनका कहला सं कि होईत छै। हिनकर जे आदर्श छैनि ताहि सं हमरा सभ कें पसिन अछि बड़ संतोषक निन्द होइए।

मामा : संतोषक निंद होईत छौ तऽ भरि दिन सभ गोटे सुतले रह हुँ ... गै ऐ समाजमे एहन एहन संतोषानन्द सभक कोनो पूछ नै छै...पुछ छै पाई बला सबहक। चाहे ओ पाई कोनो कर्म वा कोनो कुकर्म सं किएक ने आयल हो।

कंचन : भैया आहाँ कह' की चाहैत छी?

मामा : हम किछु नै कहऽ चाहै छी। एक बेर श्रीमान जी के घुमि क' आब' दहुन। जखन नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे छिछिया कऽ आजिज भऽ जेता...जखन तीन लाख चारि लाख सुनैत-सुनैत कान पाकि जेतैन तखन बुझथिन जे कोन बांसक दाहा बनैत छै।

कंचन : हम की करी हमरा तऽ किछु नै फुराईत अछि। घरक सब के हिनका सँ उम्मीद छलैनि जे इंजिनियर छैथि... खूब घूस कमेता खूब देता...मुदा...

मामा : मुदा ई भऽ गेला गांधी बाबाक चेला...गै आब ओ जमाना नै छै जे क्यों सत्य बाजै। देख बेटीक विवाह जँ निक ठाम करेबाक छौ तऽ तोड़ा किछु करऽ पड़तौ...अन्यथा...

कंचन : अन्यथा!

मामा : अन्यथा बेटी के बैसा क' राखिले। पढ़ि लिखि गेले छौ। कतौ नौकरी करतौ... फेर अपने कतौ...कोकरो संग...

कंचन : नञि-नञि इ नञि भऽ सकैत अछि। हमर बेटी एना नै कऽ सकैत अछि।

मामा : सभ के अपन बेटी एहिना प्रिय होईत छै। हूंः एहन कोन

प्रिंसिपल भेले' जे पाई गनि क' नै करब।

कंचन : भैया ई त' किछु बुझिते नै छथिन। अहीं कोनो रास्ता निकालू।

मामा : देख रास्ता इएह टा छौ... एक तऽ मुन्ना के विवाह करा दहि। बढियां पाई भेटतौ आ ओहि पाई सँ डौलिक विवाह।

कंचन : नै भैया ई नै भऽ सकैत अछि। जाहि बच्चा केँ सदिखन दहेजक विरुद्ध शिक्षा देल गेलै आ तकरे विवाहमे पाई ली। ई नै भऽ सकैत अछि।

मामा : ई नै भऽ सकैत अछि...ओ नै भऽ सकैत अछि तऽ की भऽ सकैत अछि। जो अपन काज कर हमर दिमाग जुनि खराब कर। हम कतौ जेबौ तेबौ नञि। काल्हि भोरे हम चललियौ। कतेक मुल्ला सभ छुटल जा रहल अछि।

कंचन : भैया अहूँ, जखन तमसा जेबै...तऽ कोना हेते। अहाँक तऽ भगिनी अछि डौली...

मामा : गै सुन ... हम छी ओकिल एतेक मगजमारी करबाक बहसक फिस लैत छियै। साफ-साफ बात कर सुन बेटीक विवाह जँ नीक सँ करेबाक हो तऽ 4-5 लाख रुपैया बहार कर...तखैन बेटी लायक उपयुक्त बर भेटतौ।

कंचन : 4-5 लाख...एतेक...एतेक टाका ... हे भगवान... भैया एक दिन ई हमरा कहैत छलाह जे Provided fund, Lic सभ स' लोन लऽ ली तँ एक सँ सवा लाख धरि रुपया भेटत।

मामा : नै हेतौ और आगू बढ़...

कंचन : आहाँक विश्वास किऐक नै होई अछि...

मामा : कोकरो विश्वास नै हेतै। करोड़ों रुपया Payment जेकर दस्तखत सँ होईत छै...तकरा लेल...

कंचन : ओफ...अहाँ एके बात के बेर-बेर...

मामा : नै कहबौ बेर-बेर... मुदा सुन-बेटीक विवाह बिना पाईए नै हेतौ। ई गुलाबमल गेन्दा मलक बिल छै। ऐहि बिल पर श्रीमान जीक दस्तखत तोहर बेटीक नीक सँ नीक विवाह करा देतौ।

कंचन : की... नै-नै हम हुनका भ्रष्ट हेबाक लेल प्रेरित नै कऽ सकैत छिथैन। ई-ई नै भऽ सकैत अछि। हिनकर जन्म भरिक तपस्या कें हम भंग नै कऽ सकैत छी।

मामा : तऽ ठिक छै। हम एकरा फारि कऽ फेक दैत छियै। हमरा की अईमे हमरा थोड़बे किछु भेटऽ बला अछि...तोरे बेटीक विवाह। अरे लोक कहबे करत तऽ सुनि लेब। हम कए की सकैत छी। *(फाड़य लगैत छथि)*

कंचन : ठहरु भैया *(हाथ सँ बिल लऽ लैत छैथि। प्रकाश बन्द होईत अछि)*

मामा : शाबास ई भेलै समझदारीक गप्प। जखन चारि दोकानक मोल भाव बुझैतैनि तखन श्रीमान जी दौड़ले दस्तखत कऽ देथुन।

चारिम दृश्य

(मंचक दोसर भाग एक शिक्षक कुर्सीपर बैसल छथि चारी-पाँच टा चटिया सभ कें पढ़ा रहल छैथि। बिच-बिच मे मच्छ (मारबाक उपक्रम)

शिक्षक : तऽ बुझि जाय गेलै...जे ई सवाल कोना बनतै...

विद्यार्थी : जी सर...

शिक्षक : अच्छा बाज आब कोन विषय पढ़वै-मुदा जाई सं पहिने ई सुनि लै जो जे आई 09 तारिख म' गेलै। काल्हि सब पाई नेने अबिहें। रौ तो सब बुझैत कियै नै छै जे एहिन टियूशन पर हमर नोन-तेल चलैत अछि।

पहिल निक्षक : आ सर, सरकार जे दरमाहा दैए से?

शिक्षक : रौ सरकार नामक चीज आब रहि गेल छै देशमे? शिक्षक देशक भावी कर्णधार के बनौनिहार, मुदा सब स' कम बेतन हमरे सबकें हूँ। सरकार।

दोसर : मुदा सर, बाबू तऽ कहैत छथिन जे आब सबस' बढ़ियाँ दरमाहा शिक्षक आ प्रोफेसर के भेटैत छै।

शिक्षक : बाबू, कहैत छथुन किने...रे तोहरि बाप सन-सन लोक एहि शिक्षक समुदायक दुश्मन अछि दुश्मन। हमर जँ बस चलऽ तऽ...

तेसर : आहे सर कथि ले तमसाइत छी। हम सब काल्हि टयूशन पाई नेने आयब।

सब एके संग : हँ, हँ सर काल्हि हम सब पाई लेने आयब।

शिक्षक : ई भेलै ने...तऽ काल्हि अवश्ये... बजै, जो आब की पढ़बे?

चरिम : सर हमरा सबकेँ दहेज पर लेख लिखा दिअ।

शिक्षक : दहेज छी-छी-छी ऐहि से घृणित दोसर कोनो शब्दे नै भऽ सकैत अछि। समाज के नाश कने जा रहल अछि। देश के गर्त मे ढकेले जा रहल अछि। ओ नारी जे हमरा सब कें जन्म दैत अछि, ओ नारी जे बहिन, माय अर्ध गृहिणी होईछ-तकरा संग पुरुष द्वारा घोर अत्याचार।

दोसर : सर अहाँ त' भाषण द' रहल छी हमरा सब लेख लिखेबाक लेल कहलहुँ।

शिक्षक : भाषण... रौ ई भाषण नहि थिक। ई सत्य गप्प थीक। एहि शब्द के सुनिते हमर रोआ-रोआ सिहरी उठैत अछि। माने होईत अछि...

(एक व्यक्तिक हकमैत प्रवेश)

पलटू : काका...काका...

शिक्षक : कोन बज्र खसि पड़ल जे एना कका कऽ रहल छह।

(व्यक्ति मास्टरक कानमे किछु कहैत अछि)

शिक्षक : की Excutive Engineer छथ रौ तों सब एखन जाई जो काल्हि हम लेख लिखा देबौ मुदा पाई अननाई नै बिसरहें। नै तऽ।

सब एक संग : अहाँक नोन तेल बन्द भऽ जायत।

शिक्षक : हं-हं सैह-सैह जो-जो-जो...।

(सब चटियाक प्रस्थान)

अंय हौ कि कहल Excutive Engineer?

पलटू : हँ मुखिया जीक दलानपर बैसल छथि। हमरा मुखियाजी

कहलैनि पूछि अबै लेल। तखन ओ सब औताह।

शिक्षक : कै गोटे छैथि हौ?

व्यक्ति : दू गौटे....

शि. : कार सँ आयल छथि?

व्यक्ति : नई ....

शिक्षक : जा एहन कोन Excutive Engineer छथि जे ने कार सं आ ने जीप सँ भऽ सकैत अछि कोनो खराबी आबि गेल हैतेन गाड़ी मे पलटू, जो हुनका सब के बजौने अबहुन। हाँ! हे, सब सँ पहिने मंगल कका ओहि ठाम सँ दूटा बढ़ियाँ कुर्सी ने ने आबह। आहे चौक पर सँ दु खिल्ली पान सेहो।

व्यक्ति : बेस ... *(प्रस्थान)*

शिक्षक : हे बाबा वैद्यनाथ कृपा करियह। हे यै सुनैत छी कने चाहक कप-डीस के नीक जहाँ धो माजी लिअ। घटक सब आबि रहल छथि। हे बाबा वैद्यनाथ एहने लोक सब चाहि। मुदा-मुदा ई सब गाड़ी सं कियैक नै अयलाह लोको सब तऽ बुझैत जे... खैर *(एमहर ओमहर झाड़ पोछ करैत छैथि। पलटू दुटा कुर्सी अनि कऽ रखैत)*

पलटू : कका ओं सब आबि रहल छथि। हे हम तऽ जाईत छी कोनो काज हो तऽ बजा लेब।

शिक्षक : ठिक छै-ठिक छै।

: *(करुणेश आ मामाजीक प्रवेश पलटूक प्रस्थान)*

मामा : नमस्कार मामा ...

शिक्षक : नमस्कार बैसल जाओ...

मामा : *(बैसेत)* मास्टर साहेब ई करुणेश बाबू Excutive Engineer आ हम हिनक सार वकिल, वकिल घनश्याम।

शिक्षक : वाह-वाह बड़ा प्रसन्नता भेल अपने लोकनिक दर्शन पाबि।

मामा : आहा ई की कहि रहल छी अपने। प्रसन्नता तऽ हमरा लोकनि के अछि अपने सन शिक्षकक दर्शन पाबि कऽ । ई त अपने के ज्ञात भैये चुकल अछि जे हमरा लोकनि कथावार्ता मे आयल छी। हमरा मात्र एकटा भागिन आ

एकटा भागिनी। भागिन बैंक मे पी.ओ. के Compition Corrupt केलक आछि ओ त' ततेक तेज अछि जे कोनो निक Compition compit करबें करत।

शिक्षक : वाह-वाह एक बेटा आ मात्र एक बेटी वाह सोना मे सुगन्ध।

करुणेश : जी!

शिक्षक : तै नै हमरा कहबाक तात्पर्य ई जे आई काल्हिक जमाना मे बेसी बाल-बच्चा भेनाईयो नै ठीक। त' कहल जाओ हमरा की हुक्म।

करुणेश : अरे-रे हुक्म त' हमरा पर करु। हम तऽ बहुत उम्मेद लकऽ आयल छी। अपनेक बालक सँ हम मैडिकल कॉलेज जा कऽ भेंट कऽ चुकल छी औ हमरा पसिन्न छथि।

शिक्षक : वाह-वाह अपने के पसिन्न तऽ हमरो पसिन आगू गप्प कैल जा सकैत अछि।

करुणेश : आगू गप्प?

मामा : मास्टर साहेबक कहबाक तात्पर्य कोना कहिया हो विवाह सैह किने...

शिक्षक : छी-छी-छी एहि शब्द सँ हमरा घृणा अछि। राम राम गर्त मे ढकेलने जा रहल अछि ई शब्द देश के।

करुणेश : वाह-वाह केहन उच्च विचार। तखैन की हुक्म होईत छै।

शिक्षक : हेबे करतै-हेवै करतै हे हम चाइ जलैखक व्यवस्था केने अबैत छी। *(प्रस्थान)*

करुणेश : कि यौ सार महोदय देखलियै। एक सँ एक नीक व्यक्ति सब छैथि। गरीब होईतहु दहेजक शख्त विरोधी छथि।

मामा : यौ कतऽ छी। ओ गेलै अपने Head Quater सँ पुछबाक लेल जे कते मँगिएन...

करुणेश : आहाँ तऽ लाल बुझकड़ छी सबटा अही बुझैत छियै। यौ हमहुँ लोक के चिन्हैत छियै। दिन-राति आदमियै के चरबैत रहैत छी।

(शिक्षक बरबईत प्रवेश)

शिक्षक : हद-भऽ गेल, हद भऽ गेल। आब ई समाज नै बाँचि सकैत

अछि। पराकाष्ठा पर पहुँच रहल अछि आब...।

मामा : की भऽ गेल मास्टर साहेब?

शि. : औ की हैत...बौआक माय कहैत छथि जे एना बौआक विवाह आदर्श करेबैनि तऽ दुदू टा बेटीक विवाह कतऽ सँ हैत। बौआक जे सख-मनोरथ छैनि से के पूरा करत। कहू त' केहन समाज भऽ गेल। वास्तव मे हमर बेटीक विवाह कोना हैत। ई दहेज सत्यानाश क' क'ड राखि देत। ई सब देखि क' त' होईत अछि जे गंगामे डुबि कऽ प्राण त्यागि ली।

मामा : जी गंगा तऽ एतय सँ बहुत दूर छथि।

शिक्षक : जी...

मामा : हमरा कहबाक तात्पर्य जे गंगा बहुत दूर छथि। एतय सँ सिमरियाक टिकट कटाब' परत। पाई से लागत समयसे बहुत लागत।

शिक्षक : अपने हमरा संग ठठ्ठा कऽ रहल छी?

करुणेश : जी हिनका गप्प के अधलाह जुनि मानी। हिनकर हम बहिनोई छिथैन तें सबके ई बहिनोई बुझि लैत छैथि। क्षमा कऽ देल जाओ।

शिक्षक : ओ ई गप्प छै ठीक छै क्षमा कऽ देलियैन।

करुणेश : त' कहल जाओ जे...

शिक्षक : औ की कहू-कहैत तऽ लाज लगैत अछि। मुदा आब आहाँ सँ कि छुपायब। आहाँ त' आब कुटुम्बे मुदा...

मामा : मुदा की स्पष्ट ने कहियौ।

शिक्षक : जी पाँच लाख टाका लागत अपने केँ...

करुणेश : पाँच लाखः?

शिक्षक : बेसि बुझना जाईत अछि तऽ दुचारी हजार कमे देबै ताहि लेल कोनो बात नै।

करुणेश : *(ठाढ़ होईत)* हम आहाँके आदर्श पुरुष बूझैत छलहुँ मुदा अहं तऽ ओहि श्रेणीक छी। चलू वकील साहेब चलू *(दुनू प्रस्थान करैत आगू अबैत छैथि)*

मामा : देखलियै एकरा कहैत छै पाँच लाख। आदर्श-मुदा एतेक अगुतेला सँ काज हैत? बोली दऽ दऽ क' हम हिनका एक लाख पर लऽ अनितियैन।

करुणेश : हम एकटा पाई नै गछब ई हमर सिद्धांतक विरुद्ध अछि।

मामा : जखैन यैइ गप्प छै तऽ अहाँ बैसू हम एकटा तामासा केने अबैत छी।

करुणेश : आब की कर' जा रहल छी ओतऽ।

मामा : आहाँ बैसू ने हम तुरते अबैत छी...

(करुणेशक प्रस्थान मामा पुनः मास्टर लग जा कऽ)

मामा : आहाँ तऽ गलती कऽ देलियै मास्टर साहेब। जे व्यक्ति अपने दस लाख टाका खर्च करबाक विचार स' आयल छल तकरा लग मुँह खेलि कऽः औ अहाँक बेटा तऽ ततेक पसिन्न छनि जे हमरा कहैत छलाह जे आहाँक पक्का बना क' मकान दैतथि। छै लाख टाका हाथ क' दऽ दितथि। अपन जमाय बेटी कें घर सजा दितथि। हिनका कमी कथिक छैनि। करोड़ो रुपया सब दू नम्बरक आ एकटा बेटीटा आहाँ सब चौपट कऽ देलियै।

शिक्षक : जी की आहाँ सत्ते?

मामा : सत्ते नै तऽ कि झट्ठे सच पुछू तऽ एहन सुदर्शन, सज्जन, होनहार लड़का देखि कऽ हमहुँ निश्िंचत भऽ गेल रही जे अगितीक उपयुक्त कर भेल। मुदा आहाँ तऽ सब चौपट केलौ। आहाँके कहबाके छल तऽ चुपचाप हमरा कहितहुँ।

शिक्षक : ओह तहन त' ठिके हम... आब तऽ अंही किछु कहियौ वकिल साहेब।

मामा : औ जी ई तऽ पिनकाह व्यक्ति छथि जे कि कहू मुदा हम एहि लड़का के हाथ सं नै जाय देब अपने ऐकटा काज करी। हे एहि पता पर हिनका एकटा निक पत्र लिखियौन. ..क्षमा मँगैत। बाँकि सब हम सम्हारि देब। आ हे जाधरि हम नै लिखि ताधरि कतौ अपन बेटा क' विवाह ठिक नै कऽ लेब। एतेक पाई कतौ नै भेटत। सब मिला-जुला कऽ

आठ-दस लाखक चक्कर छै।

शिक्षक : आठ-दस लाख?

मामा : और नै तऽ कि एक बेर इन्जिनियर साहेब खुशी के करऽ ने दिअ तखन फेर लिअ ने उगल चान की लपकह पूआ। मुदा एखन आहाँ त' हमरो घात केलों।

शिक्षक : से की?

मामा : औ आहाँ हिनका पिनका देलियैन आब ई भरि रास्ता मुँह फुलौने रहताह। रास्तामे कार खराब भऽ गेलैन तहि लेल अलग मुँह फुलल छैनि आब तऽ भरि रास्ता ने चाह ने पान आ ने जलखै हम तऽ हिनके TA-DA पर बुलैत छी। अपना लग तऽ फुटल कौड़ी नै...

शिक्षक : जी हमर की सेवा...

मामा : और सेवा की बस पचास टाका घरमे हो तऽ दिअ। रास्ता मे चाह पान त' हैत। दोसर बेर आयब त' आपस कऽ देब।

शि. : हँ-हँ अवश्ये किने हे तुरते अनैत छी *(घर सँ आनि सभ टाका दैत छैथि)*

मामा : बेस नमस्कार! हमर गप्प मोन राखब। काल्हिये एकटा बढ़ियाँ चिट्‌टी हिनका लिखि दिऔन।

शिक्षक : नमस्कार 8-10 लाखक चक्कर अछि। *(प्रकाश बन्द होईत अछि प्रस्थान)*

पांचम दृश्य

(बड़ा बाबूक घर पर। दूः तीनटा कुर्सी एकटा टेबुल। अपने कोनो सरकारी ऑफीस बड़ा बाबू छथि। करुणेश आ मामा जीक प्रवेश। दुनू गोटे बड़ा बाबू के प्रणाम करैत छथि। बड़ा बाबू हूँ कहिएक' नजरि देखैत छैथि। पुनः अखबारमे मूड़ी गौंइत लैत छैथि। ई दुनू गोटे कुर्सी पर बैसेत छथि। कने काल थहिका)

मामा : बड़ा बाबू ई करुणेश बाबू Excutive Engineer आ हम हिनक सार वकिल-वकिल घनश्याम।

बड़ा : *(मुड़ी गोतने)* हूँ...

मामा : जी हमरा लोकनि अपनेक बालकपर कथावार्ता लऽ आयल छी।

बड़ा : हूँ

करुणेश : जी अपनेक बालक के Tisco मे बास भलैन छथि ने। हुनका विषयमे दयाधर बाबू कहने छलाह। वस्तुतः हुनके Recomandation पर हमरा लोकनि आयल छी।

बड़ा : हूँ।

करुणेश : दयाधर बाबू तऽ अपने सम्बधी छथि ने वैह कहलैन जे अपने बड़ उच्च विचारक लोक छी बालक सभक एकदम आदर्श विवाह करायब।

बड़ा : हूँ।

(बड़ा बाबूक उत्तर नै पाबि ई लोकनि अपनामे इशरा सँ गप्प करैत छथि। मामा जी करुणेश बाबू सँ दस टाकाक नोट लऽ टेबुल के निचां से बड़ा बाबूक हाथमे धरा दैत छथिन। बड़ा बाबू नोट देखैत देसी अखबार रखैत छैथि आ मुस्काईत)

बड़ा : भऽ जेतै! की?

करुणेश : जी!

बड़ा : कहल ने भऽ जनेतै...की...।

करुणेश : भऽ जेतै-भऽ जेतै हमरा दयाघर बाबू कहने छलाह जे ई कथा भव्य भऽ जायत।

बड़ा : हम कहलौंने जे रजिस्ट्रेशन भऽ जेतै की...

मामा : Registration?

बड़ा : बड़ ई रजिस्ट्रेशन अछि। ऐहि मे अपन नाम गान पता ठेकान लिखि दिऔ आ अपन ऑफर सेहो लिखि दियौ की।

करुणेश : ऑफर?

बड़ा : ऑफर अंग्रेजी शब्द छै। मैथिली मे एकर माने होईत छै जे कतेक टाका तक दऽ सकैत छी... बुझल की *(करुणेश उठय चाहैत छैथि मुदा मामा हुनका रोकित दैत छैथिन)*

मामा : मुदा बड़ा बाबू हमरा लोकनि।

बड़ा : हम कहल ने एहि मे लिखि दिऔ सब गोटे लिखिक' गेल छथि। आहाँक 72वाँ नम्बर अछि की।

करुणेश : की कहल 72 वां नम्बर।

बड़ा : जी अंग्रेजी मे एकरा Seventy Two कहैत छै की।

मामा : मुदा बड़ा बाबू हमरा लोकनि तऽ सोचैत छलहुँ, जे एखने किछु गप्प-सप्प भऽ जेतै तऽ...।

बड़ा : औ जी अखने कोना गप्प भऽ जैते। ई कोनो दालि-भातक कर छै की। नुनूक विवाह गप्प छै। नुनू के पाँचटा मामा छथिन, नाना जिबते छथि नव उटा पिसी रहता पीसा कि सभक विचार विमर्श सँ ने हेतै की। तैं एहि Register मे लिखि दिऔ आ फोटो सोहो बनेने होइ त' राखी दिऔ... कीः।

मामा : तऽ फैसलामे कतेक टाइम लगतै?

बड़ा : फैसला हेवा मे टाईम तऽ लगबे करतै की सभक राम विचार।

मामा : तऽ हमरा लोकनि कहिया तक चेक करब...

बड़ा : मास दिन पर आबि जैतैक जे किछु फैसला हेतै से सब भयै जैत....की...

करुणेश : हद भऽ गेल। ई आहाँ बेटाक विवाह करा रहल छी की बेटा पर डाक करबा रहल छी।

बड़ा : की कहल डाक?

करुणेश : हँ-हँ डाक सौंसे हंगामा करबैने छी जे आदर्श करब आ एतत' खाता खुजल अछि डाक लगेबाक लेल छी-छी-छी।

बड़ा : ई ताम-झाम हमरा जुनि देखाबूः।

मामा : आ हाहा बड़ा बाबू कने शांत-शांत। इहो कोनो छोट लोक ने छथि Excutive Engineer छैथ।

बड़ा : Excutive Engineer छैथ तऽ अपना घर मे। एहिठाम मिनिस्टर सबहक लाईन लागल अछि आ Excutive Engineer छी।

करुणेश : हाँ-हाँ मिनिस्टरो सब तऽ अछि, अहाँ आदर्शवादी छथि ने तै लाईन लगौने रहैत छैथि। हूँ-आदर्श विवाह।

बड़ा : औ बड़ा तखन सं आदर्श-आदर्श कऽ रहल छी आदर्श' क अर्थो बुझैत छियै कि एहि सं बढ़ियाँ आदर्श की हेतै जे हमसब कें उचित मौका द' रहल छियै कि ई समाजवाद सिद्धांत छै समझू उचित अवसर से हम द' रहल छियै। डांड़ मे दम अछि त' आऊ नै तऽ रास्ता नापू। कि बेटा हमर अछि जतय मोन हैत से करेबे जतय ततय नै धकेल देबै की बुझलियै।

करुणेश : खुब बुझलौः एक-एकटा बुझि रहल छी चलू वकिल साहेब।

बबड़ा : हं-हं जाऊ-जाऊ आहाँ सन् व्यक्तिक आब Registration नो नै भऽ सकैत छै।

करुणेश : चलू वकिल साहेब।

मामा : हे' हे' हे' बड़ा बाबू त' बड़े बाबू छैथिः। *(बढ़िकऽ बड़ा बाबूक हाथ सँ दस टकिया लैत)* जखैन Registration नै भऽ सकतै तऽ Registration fee तऽ आपस हेबा चाही की...?

छठम दृश्य

(करुणेश आ मामाजी बैसल छैथि कंचन चाह आनि क' रखैत छैथि)

कंचन : की भेल से तऽ अहाँ सब किछु कहिते नै छी?

करुणेश : शनिचरा-शनिचरा।

कंचनः हम पुछि रहल छी जे कि भेल। कतौ बात आगू बढ़ल कि नहि तऽ आहाँ शनीचरा - शनीचरा कऽ रहल छी।

करुणेश : हमरा ऑफिस जेबाक अछि स्नानक व्यवस्था करु..

कंचन : अंहि कहू भैया ई त' किछु ने बतेता ऑफिसक धुनि सबार भऽ गेल छैन।

करुणेश : फेर आहाँ वैह गप्प कऽ रहल छी। अखैन मात्र दस ठाम गेलौ। बुझि लेलियै की सब।

मामा : अखन की भेलै... अखैन त' शुरुए भेलै....

कंचन : ओफ्फो भैया साफ-साफ कहू ने...

मामा : गै कि कहियौ ई श्रीमान पाई गनबाक नाम पर तेना भड़कि जाई छथुन जेना लाल कपड़ा देखि कऽ सांढ़। तखैन त' वैइ हेतौ जे बैरंग वापस एहिलयौ।

करुणेश : वाकिल साहेब आहाँ बेर-बेर वैह गप्प बजैत छी कान खोली क' सुनि लिअ। ने हम बाजब आ ने गानब। आ आहाँ देखैत रहियौ जे हमर बेटीक विवाह होईत अछि कि नहि।

मामा : गै कंचन हम चललियौ ई अपन हरिश्चंद्री Phyesoptry छोड़थुन नै आ बड़क बाप गिनानेने मानतौ नै। तऽ अई मे हम कि कऽ सकैत छिऔ। घरवाली लग सँ पड़ा कऽ एतय एलौ जे कने शान्ति भेटय। मुदा एतय तऽ तेसरे दाखिला हमर तऽ वैह पड़ि भेल जे ''गदहा गेला स्वर्ग तऽ छान लगले गेलैन। *(प्रस्थान)*

करुणेश : हँ-हँ जाऊ-जाऊ हम अँहिक भरोसे नै जिबैत छी।

कंचन : ओफ्फो... अहाँ जाऊ स्नान कऽ लिअ।

(डौलीक प्रवेश)

डौली : पापा आहाँ कतऽ चलि गेल रही? हमरा एकौ रत्ती मोन नै लगैत छल। कतऽ गेल रही पापा कहू ने?

करुणेश : कतौ खास नै। अहिना किछुठाम धूमय फिरय' गेल रही!

डौली : वाह! अहिना कतौ लोक जाईत छै। कहू ने कतऽ गेल रही।

मामा : *(भितर स' अपन झोड़ा झपटा नेने प्रवेश)*

गै डौलिया ई कि कहथुन हम कहैत छियौ तोरे लेल वर ताकय गेल रही हम सब।

डौली : मामा भेटल की नहि?

मामा : अरौ तोरी के देखूने कते अगुता रहल अछि विवाहक लेल ई छौरी। गै भेटतौ तखन जखैन तोहर बाप 2-4 लाख टाका बहार करथुन।

डौली : टाका किऐक?

मामा : हे लिअ' - एहिठाम सब एकै पाठ पढ़ने अछि गै तोहूँ ओहि गुरुजी सँ पढ़नै छै जकरा सं पढ़ि कऽ तोहर बाप Excutive Engineer बनलखुन?

करुणेश : वकिल साहेब आहाँ तऽ जाईत रही। रुकि कियैक गैलौ?

मामा : माने की आहाँ हमरा गर्दनिया दऽ कऽ बाहर कऽ देब। हम नै जायब ई हमर बहिनक घर छी देखैतछी आहाँ की कऽ लैत छी।

कंचन : ओफ्फो आहाँ जाऊ स्नान करक लेल।

करुणेश : देखू-देखू फेर आहाँ अपन भाईक पक्ष ल' रहल छी।

मामा : औ पक्ष नै लेत' तऽ कि हम सदिखन उचित गप्प कहैत छियै। कहू त' एतेक सुन्नरि हमर भगिनी। एतेक सुशील पढ़ल लिखल। एकरा तऽ निक सं निक बर भेटबाक चाहि। देख ले गै डौली, तोहर बाप सिद्धांत बनौने छथुन जे एकटा पाई नै गनथुन, आ कहैत छथुन जे डौली सेहो ओहि लड़का स' विवाह नै करत, जे पाई गनाओत कह तऽ गै डौली तों ठिके वियाह नै करबिही।

डौली : कियैक नै करब मामा ... आहाँ ठीक करब तऽ अवश्ये करब।

मामा : सुनि लिअ औ श्रीमान आब निकालू लाख टाका।

डौली : मामा

मामा : हं-हं

डौली : मामा हम तऽ अहाँक एक मात्र भगिनी छी ने।

मामा : हं-हं ईहो कोनो कहबाक गप्प छै।

डौली : तऽ मामा आहाँ अपन एक मात्र भगिनिक विवाह नै कर सकैत छी। भगिनिक लेल लाख टका खर्च नै कऽ सकैत छी अंही निकालूने टाका मामा

मामा : कि...?

डौली : हं मामा अंही 5 लाख।

मामा : की ... की ... *(करैत बेहोश भऽ खैस पड़ै छैथि। डौली*

हँसैत छैथि कंचन पानिक छिटा दैत छथिन। वकिल साहेब उठिक हाढ़ होइत छैथ)

कंचन : भैया-भैया की भऽ गेल?

मामा : नहला पर दहला मारलकौ ई डौलिया बन्द कऽ देलकौ हमर सब बोलिया कंचन। हम चललियौ हम चललियौ। गोर तोर लगबाक छौ तऽ लागि ले।

कंचन : भैया ईकी भऽ गल बैसू।

मामा : नै गै हम चललियौ। गोर-तोर लगबाक छौ त' लागि ले। *(कंचन गोर लगैत छैथि, डौली मामा गोर लगैत छी कहैत पैड़ छू लैत छथि)*

मामा : निके रह वर-घरऽ निक भेटौ *(प्रस्थान)*
(डौली आ करुणेश हँसैत छथि)

कंचन : वाह-वाह खुब हँस दुनू बाप बेटी। गै डोली तोरा एकौ रती अकिल नै छौ मामाक संग लोक ठठ्ठा करैत अछि।

डौली : ठठ्ठा... हम की ठठा केलियैन। कहलियन 5 लाख टाका दकऽ हमर विवाह करा दैथि।

कंचन : ओ कतऽ सं देथुन। हुनका लग कत सं एतैन।

डौली : वाह मम्मी तो खुब मामाक पक्ष लऽ रहल छहुन। कियैक ने देथिन। पापा एकौटा पाई नै' लखिन अपन विवाह मे तखैन मे करीब 20,000। सूद-मूड़ लगा कऽ एखन 5 लाख सं बेसिये हेते।

कंचन : तोरा सं के बतरिजौन करैत रहै। जे मोन होई से करै जो दुनू बाप बेटी *(प्रस्थान)*।

करुणेश : डौली अहाँक मम्मी तऽ खिसिया गेलीह।

डौली : पापा हमर विवाहक लेल आहाँ एना चिंतित कियैक छी? पापा दहेज घृणित व्यापार थीक। नै करब जतय पाईक लेन-देन हो से आहाँ साफ-साफ सुनि लिअ।

करुणेश : डौली...।

डौली : पापा हम पढ़ि लिख कऽ अपन पैड़ पर ठाढ़ होमय चाहैत छी। हम सब पुरुष सँ कोन बात मे कम छी। जे क्यो

विवाह कऽ हमरा पर ऊपर उपकार करय।

करुणेश : बेटी आहाँ सब सं यैह उम्मेद अछि। जँ आई काल्हिक युवा वर्गक मनोबल ऊँच नै रहत तऽ अपन ई समाज अपन ई कतऽ चलि जायत क्यो नै जनैत अछि। शाबास बेटी शाबास।

कंचन : *(प्रवेशक संग)* हे हम तऽ एकटा गप्प कहनाई बिसरिये गेलौ। रामदीन काल्हि सं तीन बेर आबि चुकल अछि।

कक. : रामदीन? मुदा ओ तऽ छुट्टी ल' क' बेटीक विवाह करक लेल गेल अछि।

कंचन : ओहि विवाह मे तऽ झंझट भऽ गेलै।

करुणेश : झंझट! से की?

कंचन : बीस हजारमे गप्प भेल छलै से बेचारा गनि देने छलै। आब ओसर समधि 10 हजार और मंगैत छै से देतै तखैन बियाह हेतै।

डौली : बीस हजार तै पर सं फेर दस हजार ई श्रीमान।

कंचन : अरे पिछला महिनामे अपना सब दिस भुकम्प आयल रहै ने तै मे रामदीनक समधीक घर खसि पड़लै। आब घरक मरम्मतिक लेल 10 हजार चाही।

करुणेश : भुकम्पमे घर खसि पड़लै तकर मरम्मतिक पाई रामदीन देतै... हद्द भऽ गेल। सब जाति सब समाजक एकै हाल खैरे रामदीन के हमरा सं कि काज...

कंचन : से लाख पुछलिये नै कहलक खालि कनैत छल। अपने बजा कऽ पुछि लिऔ। डौली कने रामदीन कें बजौने अबहि तऽ। *(डौलीक प्रस्थान)*

कंचन : देखैं छियै अठमा पास लड़का छै कोनो फैक्ट्रीमे मजदूर छै आ बीस हजार लेलकेयै। आ आहाँ।

करुणेश : चुप रहू अखैन हमर दिमाग अशांत अछि। ई कहू तऽ भुकम्पमे घर खसि पड़लै तकर खर्च लड़की बला दै। काल्हि माई मरि जेतै त' कि श्राद्धक खर्च सेहो रामदीन के देबय पड़तै...

(रामदीन आ डौलीक प्रवेश)

रामदीन : हुजूर *(कनैत)* हम तऽ बर्बाद भऽ गेली। शादी मे दू तीन दिन रह गेल है। 10 हजार और माँगै छै समधि। हमर तऽ इज्जत खतम हो जेतै हुजूर...

करुणेश : तोरा सब सन व्यक्तिक यैह हाल हेबाक चाहि। तों सब दहेज के बढ़ाबा दऽ रहल छहक तों पाई कियैक गनलह।

राम. : कि कैरती हुजूर। बिना पैसा के कोई शादी करै नै चाहे है। जवान बेटी के कैसे बिठा के रखती हुजूर।

करुणेश : गलत एकदम गलत तों सब बेटी के भार बुझैत छलक तैं होईत छह जे वियाह हेबै ने करतै एक सं एक लड़का छै जकर विवाह आदर्श हेतै।

कंचन : ओहि बेचारक प्राण पर बनल छै आ आहाँ आदर्शक पाठ पढ़ा रहल छियै। कखनो तऽ सोचल करियौ।

करुणेश : अंय है अच्छा कह तऽ हमरा स' कोन काज।

राम. : हुजूर हुजूर हमर इज्जत बचा लिअ हुजूर 10000 रुपैयाक कोनो इंतजाम कर दी हुजूर। एक-एक पैसा चुका देब हुजूर।

करुणेश : रामदीन दहेज देबाक लेल हम एक छदाम नै दऽ सकैत छी। छीः छीः पाप-कर्ममे हम अपनाके भागिदार नै बना सकैत छी। हँ बेटीक विदाईक लेल काज परत' तऽ हम अवश्य मदद करब'।

कंचन : अरे पहिने बेटीक विवाह हैतै तखन ने विदाई।

करुणेश : रामदीन तों जाह हमरा स' मददिक आस नै राखह।

रामदीन : हुजूर निराश न करी हुजूर। हम बहुत आशा सं आयल छी हुजूर। आहाँ जं मदत नै करब त के करत हुजूर।

करुणेश : एक बेरे कहि देलियौ जे एहि पाप कर्म मे भागिदार नै भऽ सकैत छी। आब तौं जाह हमर दिमाग जुनि खराब करह।
(रामदीनक कनैत प्रस्थान)

कंचन : आहाँ-आहाँ एकरा पाप कर्म कहैत छियै। बेटीक विवाह के पाप कर्म। आहाँक ह्रदय पाथरक अछि पाप अहाँ कऽ रहल छी।

करुणेश : ओफ कंचन आहाँ नै बुझैत छियै।

कंचन : हं हम कि बुझबै। सबटा तऽ अंही बुझैत छियै। अपने तऽ आदर्श-आदर्श करिते रहैत छी आ ओकरा आदर्शक पाठ पढ़बैत छलियै। ओ जो आहाँक बाट पर चलत तऽ ओकर बेटीक विवाह नै हेतै

करुणेश : किऐक नै हेतै? साल-दू-साल नै हेतै तेसर तऽ चारिम साल हेबे करतै।

कंचन : कहियौ नै हेतै आ फेर ओकर बेटी गर्दनी मे फँसडी लगा कऽ आत्महत्या कऽ लेतै। या केकरो संग भागि जेतै।

करुणेश : की आत्महत्या?

कंचन : हं-हं और नै त' की ओ ओ आहाँ सँ कर्ज मँगैत छल कोनो दान नै। आहाँके मदति करबाक चाहि। बेचारा रामदीन।

करुणेश : अच्छा हम काल्हि पाई देबै। हमरा सं बड़ा पैघ गलती भेल। *(प्रकाश बन्द)*

सातम दृश्य

(करुणेश बाबू भोजन उपरान्त ड्राइंग रुम मे सुपारी सोंफ आनि कऽ रखैत छैथि।)

कंचन : की सोचि रहल छी?

करुणेश : अंयः

कंचन : जखैन सं आहाँ घुमि कऽ एलौं। तखन सं आहाँकें किछु अशान्त देखि रहल छी।

करुणेश : कंचन हम सोचि रहल छी जे कतेक भ्रष्ट भऽ गेल अछि मनुष्य। कतेक नीच भेल चलल जा रहल अछि ई समाज। हम लाख सवा लाख बेटीक विवाह मे खर्च कऽ सकैत छी तखन तऽ ई हाल अछि। ई गरीब रामदीन सबहक की हाल हेतै। अपन सब जमा पूंजी निकालि बेटीक विवाह करैत अछि तैओ।

कंचन : हे हम एकटा बात कहू तामस करब नहि?

करुणेश : नैं-नै कहू।

कंचन : हम जे करेत छी से कऽ दियौ

करुणेश : की?

कंचन : थम्हू अबैत छी *(भितर जाकऽ कागज अनैत छथि)* एहि पर दस्तखत कऽ दिऔ।

करुणेश : *(पढ़ैत)* गुलाब मल-गेंदा मलक बिल। ई-ई- आहाँके के देलक?

कंचन : आहाँ दस्तखत कऽ ने दियौ दू लाख टाका भेटत। डौलीक विवाह एहि सं भऽ जायत।

करुणेश : कंचन आहाँ हमर अर्द्धांगिनी नै छी दुश्मन छी दुश्मन।

कंचन : हँ हँ हम आहाँक दुश्मन छी दुश्मन। आई 25 वर्ष सँ आहाँक खेनाई खाइ छी जेना आहाँ कहैत छी तहिना रहैत छी। आहाँक धिया पुता के पालि पोली क' एते पैघ बनौने छी तऽ आहाँक दुश्नम नै छी तऽ कि मुदा डौली हमरो बेटी अछि। हमरो ओकर चिन्ता अछि।

करुणेश : बेटी विवाहक लेल अहाँ हमरा भ्रष्ट बनब' चाहैत छी। हमर एतेक दिनक तपस्या क्षण मे भंग क' चाहैत छी। काल्हि लोक की कहत जे अपना पर पड़लैनि तऽ सब ईमानदारी घुसरि गेलैनि। एकै बेर मे भ्रष्टाचारक सीमापर पहुँचि गेला।

कंचन : लाखो लोक अपन बाल बच्चाक लेल बेटी विवाहक लेल। एकटा अहूं भऽ जायब तै स' की हेतै। धरती नै फाटि जायत आकाश नै खसि पड़त।

करुणेश : हँ धरती नै फाटत मुदा हमर ह्दय फाटि जायत। आकाश नै खसह मुदा हमर स्वाभिमान धरातलमे चलि यजत। हमर आत्मा अशांत भऽ जायत। अशांत *(कानय लगैत छथि)* ठीक छै अहाँक जँ यैह इच्छा अछि हमर तपस्या भंग भऽ जाय। जै अहाँके हमरा पर सं विश्वास इटि गेल हो तऽ लाऊ दस्तखत कऽ दैत छी *(कागज पर दस्तखत करैत)* लिअ जाऊ दू लाख लऽ लिअ मुदा एक बेर सोचि लिअ आहाँक पति करुणेश जिनकर तपस्या मे आहाँ 25 वर्षसँ

संग देलौ। से अब मृतवत् जिबैत रहताह। मारला बादो हमर आत्मा अशांत रहत। *(कनैत छथि)*

कंचन : *(एक बेर कागज आ एक बेर करुणेश के देखैत छथि फेर कागज फाड़ी कऽ फेक दैत छैथ)* हमरा क्षमा कऽ दिअ हमरा क्षमा कऽ दिअ। हम भटकि गेल रही। पथभ्रष्ट भऽ गेल रही। हमरा क्षमा कऽ दिअ।

(प्रकाश बन्द)

आठम दृश्य

(डौली बैसिक किछु पढ़ि रहल छैथि पार्श्व से अरुण अंकल अंकल करैत प्रवेश)

अरुण : ओह त' कम्पीटिशनक तैयारी कऽ रहल छी।

डौली : हं।

अरुण : डौली, अंकल के नै देखैत छिथैन।

डौली : पापा गेल छथि। दरभंगा।

अरुण : दरभंगा कथी लेल?

डौली : अरे आई काल्हि पापा आ मम्मी के एकैटा योजना छनि डौलक विवाह। हमरा लेल वर ताकय गेल छथि।

अरुण : Congratulions डौली।

डौली : Congratulations अरे वर भेटनाई की एतेक आसान छै। 5 लाख 6 लाखमे विकाईत छै। से हमर पापा कतऽ सँ देथिन। आ जे पाई लक' हमरा सं विवाह कै आयत तकरा मारी के घेरे सं भगा देबै। नै जानी लड़की के कि बुझैत छै लोक सब।

अरुण : से त' ठिके डौली हमर पापा सेहो मुन्नीक बियाह लेल बड़ परेशान रहैत छैथि। जत' जाईत वियाह खुब निक जकां करेबै। अपने कमा कऽ।

डौली : माने आहाँ पाई दक' लड़का खरीदबै मुन्नीक लेल।

अरुण : जे स्थित छै ताहि मे आओर कि कैल जा सकैत छै।

डौली : छीः माने आहाँ दहेज के प्रोत्साहन देबै। तखन त' आहाँ अपने विवाह कऽ लिअ। पाई अहुँके भेटबे करत ताहि सं मुन्नीक विवाह करा देबै।

अरुण : नै हम पाई लक' विवाह नै करब। पहिने मुन्नीक विवाह। तकरा बाद कोनो गरीब घरक पढ़ल लड़की स' विवाह करब।

(करुणेश प्रवेश बाबूक परेशान मुद्रामे प्रवेश)

करुणेश : डौली-डौली, कंचन कंचन अरे जल्दी आऊ *(कंचनक प्रवेश)* अरे कंचन मिठाई मँगाबू डौलीक विवाह ठीक भऽ गेल। खुब सुन्दर लड़का Business Managment तक दिल्ली मे मैनेजर अछि। आ प्रोफेसर साहेब तेहने भद्र लोक। एकटा पाई कौड़ीक कोनो गप्प नै।

कंचन : की ठिके कहि रहल छी?

करुणेश : अरे हम कहैत रही ने जे नीक लोकक कमी नै छै एहि समाजमे। देख गै डौली फोटो देख लड़का पसिन्न छौ कि नई। खुब Handsome गप्प केला पर मोन प्रसन्न भऽ गेल देख *(फोटो दैत)*।

कंचन : की ठिके कहि रहल छी?

अरुण : Congratulations डौली!

डौली : दुर पापा *(डौली भाईग जाईत अछि)*।

अरुण : लाज भऽ गेलै डौली के अंकल।

कंचन : तखैन तऽ हम सब के खबरि कऽ दियै भैया के बजा लियैन।

करुणेश : ईहो पुछवाक गप्प। आब समय कहाँ अछि आ अपन भैया के तऽ सबसं पहिने बजाऊ। ओहो त' बुझथ जे आदर्श विवाह केकरा कहैत छै। सब के फोन सं सुचित कऽ दि औ *(कंचन जाईत छथि)* अरुण तो चलह हमरा संग किछु व्यवस्था कैल जाय *(हुनूक प्रस्थान प्रकाश बन्द)*।

नवम दृश्य

(मामाजी आ करुणेश बाबू लिस्ट बना रहल छैथि।)

मामा : हँ औ श्रीमान् जी ई भऽ गेल 25 बरियातिक भोजनक सामग्रीक लिस्ट।

करुणेश : हे ठिक सं देख लिऔ किछु छुटय नै। बरियाती के निक सं निक भोजन भेटबाक चाहि।

मामा : अवश्ये किने... एकता, पाई नै लेलनि अछि तऽ उचिते किने! अच्छा आब ई कहू जे टेन्ट, सामयाना, लाउडस्पीकर एहि सब कें Book क' देलियै की नै?

करुणेश : टेन्ट, सामयाना की हेतै आ लाउडस्पीकर ई तऽ अपन सबहक सभ्यता नै अछि।

मामा : हे श्रीमान अपने धन्य छी। सभ्यताक नागरी पकड़ि क' लटकल रहू। औ Excutive Engineer क बेटीक विवाह हेतै...तरक भड़क धुम धड़क्का नै हेतै तऽ लोक की बुझैत।

करुणेश : हमरा बेटीक विवाह करबाक अछि की लोक के बुझेबाक अछि। ई सब फिजुल खर्ची थिक।

मामा : बेश अपने जैह कहियै सैह ठीक... Next अछि कार्ड, कार्ड छप' देलियैक की नहि।

करुणेश : अरे कतय सं ई सब अहाँक दिमागमे घुसी गेल अछि। हमर विवाहमे कहाँ कार्ड छपल रहै। अपना सबमे सम्बन्धी वर्ग के नोत पता पठायल जाईत छै से पढ़ा देलियैः। एतऽ सब के हकार पढ़ा देबैन।

मामा : हे यौ आहाँ Excutive Engineer छी आ कि चपरासी?

करुणेश : आहाँ के हम चपरासी बुझायत छी?

मामा : और नै तऽ कि आई काल्हि चपरासियोक बेटीक विवाह मे टेन्ट सामायाना अबै छै। स्टीरियो बड़ा स्पीकर बजैत छै। हे यौ श्रीमान केकरो जं कियौ कहैक जे एकटा अँहू सन Excutive Engineer छथि त' ओ कि कहतै से बुझै छियै?

करुणेश : की कहतै?

मामा : कहतै जे दुनियाक सब सं, पैघ फुसी गप्प थीक।

करुणेश : हा-हा-हा ई ठट्ठा करबाक योग्यता बिलक्षण अछि अपने के।

मामा : *(स्वतः)* तें त' हमरा बहिनोई सेहो बिलक्षण भेटल अछि।

करुणेश : की?

मामा : किछु नै... किछु नै... आहाँके बजार जेबाक छल ने

करुणेश : अरे हं। बहुत अबेर भऽ रहल अछि कंचन-कंचन।

कंचन : *(प्रवेशक संग)* की कहैत छी?

करुणेश : अरे बाजार चलबाक छल ने।

कंचन : हम सब तऽ तैयार छी चुलू। शनिचरा-शनिचरा!

शनी. : जी मेम साहेब।

कंचन : देख हम सब बाजार जाईत छी। हलुऐया एतौ त' बैस' कहिहै आ हे सुन भैया के आ डौलि के चाह बना कऽ द' दिहौन।

शनी : जी कही मेम साहेब।

कंचन : चलू *(कंचन करुणेश आ शनिचराक प्रस्थान)*

मामा : ओह भरि रातिक जागत छी आ ई तेहन काज द' क' चलि गेलाह जे आब कहू त' कोनो हम बेटी विवाह केने छी जे द्विरागामनक लिस्ट बनाऊ। डौलीए के बजा लैत छियै ओकरे जे जे इच्छा हेतै सैह सब लिखक' राखी देबैन। डौली...डौली...

डौली : *(प्रवेशक संग)* जी मामा जी।

मामा : एमहर आ बैसऽ एतऽ हे आब बाज जे बिदाई मे कि की लेबें? हमरा लिस्ट बनेबाक अछि।

डौली : पहिने हम जे पुछै छी तकर जवाब दिअ। आहाँ मामी के कियैक ने अनलियैन?

मामा : ओह हे गै। तोहर मामी के होनिहारी छै ने। अब-तब मे छलिह तऽ कोना कऽ अनितियैन। सच पूछ तऽ मात्र शरीर सं एतय छियौ। मोन तऽ हुनके लग अछि।

डौली : फेर होनिहारी मामा ई...

मामा : ई चारीम थिक-तीन टा बेटा तऽ पहिने छल ई चारिम हैत...

डौली : मामा ई ठीक गप्प नै।

मामा : की ठीक गप्प नै देख तीनटा बेटा अछि माने अखुन का ऐतक हिसाबे सोझे छ लाख आ चारिटा के माने आठ लाख।

डौली : मामा आहाँ के खाली पाईए तऽ सुझैए?

मामा : *(आन्हरक अनिनय करैत)* हे गै हमरा मात्र पाईए टा सुझैत अछि ने तो सुझै छै आ ने ई घर आ ने आगू मे बैसल छै लोक सब खाली पाई-पाई पाईए सब किछु छै पाईए भगवान सोझे आठ लाख।

डौली : तं एकर संग कोन भरोस अछि जे फेर बेटे हैत कही बेटी भऽ गेली तऽ।

मामा : देख ई जुआ छै-लहलौ तौ चानि नै त Loss मुदा हमरा बेटी कियैक हैत भऽ नै सकैत अछि।

डौली : बेटी के एतेक घृणा सं कियैक देखैत छियै मामा बेटी-बेटा सं कथी मे कम।

मामा : दहेज मे बेटा माल अनै छै आ बेटी मे लोक गनै छै।

डौली : आंहि जकां सब सोंचय लागय तऽ एक दिन लड़कीक जनसंख्या ततेक कम भऽ जेतैं जे ई देश चलब मुश्किल भऽ जेतै। मामा आहाँ बेटाक विषयमे किछु सोचैत छियै?

मामा : देख हम देश-देश के नै सोचैत छियै हम मात्र केसक विषयमे सोचै छियै केस अबैत रहए कोनो पाटी जितए कि कोनो हारय केस अबैत रहए आ केस अबैत रहत तऽ फिस अबैत रहत।

डौली : शान्त भऽ जाऊ मामा जी।

शनिचर : *(प्रवेशक संग)* मामा जी।

मामा : *(जोड़ सं)* रौ की

शनिचर : ओह मामा जी आहाँ ततेक जोर सं डांटि देलौ से हम बिसरियै गेलियै। जे मेम साहेब की कहि क गेलखिन आहाँ

के मोन अछि मामा जी?

मामा : हमर कान की तोरे जकां पातर अछि जे के की बजैत अछि से अकानैत रहब।

शनिचर : हं-हं मोन पड़ल - मोन पड़ल मेम साहेब कहि कऽ गेल रहथिन जे मामा जी के बेसौने रहिऔन आ हलुऐया सब ऐते' त' चाह बना क दऽ दिहै।

मामा : की रे ई हलुआई की तोहर बाप छौ जे चाह बना कऽ पियेबहि आ हम।

शनिचर : मेम साहेब तऽ सैह कहि कऽ

मामाः दिऔ गरदनियां भाग भाग एतऽ सं : *(सनिचरा परा जाई अछि।)*

डौलीः कहू कि पुछैत छलैं।

मामा : हँ पुछैत रहियौ जे बाज की की लेबें विदाई मे? देख फेर नै कहि दिहैं जे मामा हम आहाँक एकमात्र भगिनी छी अपना दिस सं लाख दू लाख देख (दुनू जेब ऊनटा कऽ देखेबैत) हम फक्कड़। एकटा चौअीयो नै छौ। बाज की की लेबै अपना लेल अपना बड़क लेल।

डौली : *(लजाईत)* हमरा किछु ने चाहि *(प्रस्थान)।*

मामा : वाह-वाह जेहने बाप किछु देबऽ बला नै तेहने बेटी किछु लेब नै चाहैत छै। खैर। अपने दिस सं किछु लिखैत छी। हँ कार-मारुती कार छह लाख टकाक कार दियनि श्रीमान पांच - दस हजार वाला ईमानदार मॉडल मारुती कहाँ बनैत छै जे देथिन तैओ लिख दैत छिनै। फ्रिज आ बी.सी आर. अलमीरा। *(पार्श्व सं मास्टर साहेबक श्वर इंजिनियर साहेब-साहेब करैत छैथि मामा बढ़ि कऽ देखैत)*

मामा : अरे-अरे अपने मास्टर साहेब आयल जाओ। आयल जाओ।

मास्टर : नमस्कार-नमस्कार ओकिल साहेब। निके भेल जे अंही सँ भेंट भऽ गेल आ इंजिनियर साहेब।

मामा : बजार गेल छथि कहल जाओ कोना की।

मास्टर : औ जी ओकिल साहेब आहाँ द' देलौं हमरा दुमरजा मे

द क' आ तकरा बाद कोनो पुछाड़ियो नै। देखू त कतेक लोक के हम आपस कऽ देलियै यै।

मामा : *(स्वतः)* ओ तऽ ई गप्प छै।

मास्टर : जी?

मामा : किछु नै किछु नै अहाँ त' बेकारे ने अगुता गेलौं?

मास्टर : औ जी अगुतायब नै तऽ एहि बरख बेटाक विवाह करबेक अछि। आब दिने कैकटा बाँचि गेल छै तैं हम अपने पहुँची गेलौ। बाजू की विचार अछि।

मामा : ओफ्फो मास्टर साहेब हई देखैत छियै।

मास्टर : अंय ई की छै?

मामा : ई लिस्ट छै औजी आहाँक लेल बहुत पापड़ बेलय पड़ल। इंजिनियर साहेब के बहुत खुसामद करऽ पड़ल ओ तऽ बुझू जे आहाँक बालक हमरा अपनों ततेक पहिन्न छैथि जे। हे देखियौ हुनक आदेशानुसार लिस्ट बना रहल छी। जे आहाँक बेटा के आ अपन बेटी के की देता 3-4 दिनक बाद हम सब तऽ पहुँचै वला रही।

मास्टर : अच्छा?

मामा : और नै त' की इंजिनियर साहेब कहखिन जे एकै बेर सब लिस्ट बना कऽ लऽ चलू आ सोझे मास्टर साहेबक आगा मे राखी देबैन। हे 5 लाख टाका Cash देबाक लेल तैयार कऽ लेलियैन।

मास्टर : हें-हें-हें

मामा : एतबे मे दाँत बहार भ' गेल आगू सुनि सकबै

मास्टर : से की-से की.

मामा : ओ हमरा सोंझा मे ठिकेदार के तऽ मने नाम छै हं गेन्दा मल गुलाब कंस्ट्रक्शन कम्पनीमे कहलिखन जे 10 लाखक बिल एहि बर्दाशात पर पास करैत छियौ जे हमर होयम वाला समधिक घर पक्का के बना देबैं।

मास्टर : धन्य छथि-धन्य छथि Engineer साहेबःधन्य छथि।

मामा : से तऽ परम धन्य छथि। आब देखू ने ई बिदाई क लिस्ट

बनाबक भार हमरा पर दऽ देनै छथि।

मामा : अखने अगुता गेलौं खैर अहूँ कि बुझब सुनि लिअ कार मालिक।

मास्टर : अंय

मामा : टी.वी. पलंग, सोफा, अलमीरा, बर्तन आ बीस भरी सोना।

मामा : बेसी बुझाईत अछि की तऽ हे लिय 10 भरि क' दैत छियै।

मास्टर : नै-नै एहन जुलूम ने करियौ हें-हें-हें वकिल साहेब सब दारोमदार अंही पर हे किछु छुटि ने जाय।

मामा : माने की लिस्ट के आओर लम्बा कऽ दिऔ।

मास्टर : हें हें हें अपने तऽ बुझनुक छिहे।

मामा : माने की अपन बहिनोई के घाटा आ अहाँ के फायदा।

मास्टर : हमरा की फायदा जे देबै से जमाय के की अपन भागिनी के।

मामा : से तऽ ठिके ताई सं हमरा की केस कियो हारे वा जीतै वकिल के त' फिस स' मतलब छै।

मास्टर : हें हें हें - बूझल-बूझल *(डांर सँ रुपेया बहार करैत)* दू सय ता। धरि राखल जाय। अपने त' विलक्षण छी ओकिल साहेब हें हें हें मुदा Engineer साहेब घर मे तऽ कोनो ताम झाम देखते नै छिथैन आहाँ त' कहलौं जे लड़की छैथि।

मामा : औजी आहाँ भरि जन्म मास्टरक मास्टरे रहि जायब। कहियो हेडमास्टर नै भऽ सकैत छी। औ जी इ दू नम्बरक पाई छै देखबय जे लगथिन तऽ Incometax वाल एतैन तुरते पकड़ि क' जहल के भीतर क' देतैन। बुझलियै लाखो टाका त' गारि कऽ रखने छथि।

मास्टर : कतऽ

मामा : से हमरा आहाँ के बतेता। हे आब अपने जाऊ इंजिनियर साहेब आबि जेता तऽ कि कहता जे केहन धरकर छैथि ई मास्टर।

मास्टर : हँ-हँ से तऽ ठिके हम चलैत छी अपने लोकनि कहिया एबै फाईनल करबाक लेल?

मामा : हे ई चारिम दिन विवाह छै त' पांचम आ छठम दिन।

मास्टर : विवाह केकर विवाह?

मामा : ओ ओ बगलमे जे हिनकर संगी Excutive Engineer छथिन ने हुनके बेटीक।

मास्टर : बेस तऽ चलैत छी (कने दुर जाकऽ वापस आबि) ओकिल साहेब ई घरक बाहर सफाई, रंगाई, पोताई भऽ रहल छै।

मामा : ओफ्फो मास्टर साहेब बगल मे जे वियाह हेतै ने तेकर बरियातीक टेन्ट सामयाना एतै लगतै। फेर अपनो बेटीक विवाह तऽ हेतैन 15 दिनक बाद।

मास्टर : ओ बुझल-बुझल एक पंथ दू काज तऽ हम आब चली।

मामा : चाह ताह मंगाबी की

मास्टर : नै-नै कष्ट कियैक आ फेर Engineer साहेब आबि जेता तऽ कि बुझता बेस नमस्कार *(प्रस्थान)*।

मामा : हूँ कि बुझता घरकर (हुंकार) दू लाख टाका दिमाग चढ़ि गेल ने खैर अपन फिस लेलौं

(फोनक घंटी बजैत अछि मामा बढ़ि कऽ फोन उठबै छथि)

: हेलो-हेलो

: हेलो हेलो

: हं हं करुणेश बाबू तऽ बाजार गेल छथि

: के हम-हम हुनक सार वकिल वकिल घनश्याम

: ओ प्रोफेसर साहेब नमस्कार, नमस्कार समधि।

: अरे कियैक नै कही अंय तीन दिन बाद विवाहे हेतै तखन त' समधि।

: जी कने जोर सं बाजू सुनाई नै पड़ैत अछि।

: अंय की की कहल विवाह नै हेतै कियैक

: हूँ - हूँ

: मुदा-मुदा एहिठाम सब व्यवस्था भऽ गेल छै : कहु तऽ की स्थिति हेतैन Engineer साहेबक

: हमर सबहक

: नै नै एहन जुलुम नै करियौ समधि।

: जी

: जी

: की? दू लाख?

: मुदा-मुदा दू लाख अपने त' आदर्श विवाह।

: जी

: जी

: जी

: आहें आब बुझल

: जी

: मुदा अपने किछु समय दियौ हमरा लोकनि जल्दी पहुंचि रहल छी।

: जी

: जी नमस्कार।

(प्रकाश बन्द)

दसम दृश्य

(सोफा पर उदास कंचन बैसल छैथि दोसर दिस मामा बैसल छथि अरुणेश बाबू आशान्त मन टहलि रहल छैथि।)

करुणेश : मुदा-मुदा वकिल साहेब प्रोफेसर साहेब की साफ-साफ दू लाख टाका मँगलैनि?

मामा : औजी तखैन सं कैक बेर कहि चुकलौं आब कतेक कहू जं नै देबैन त' विवाह नै हैत... कतेक नेहोरा कैलियैन त' दू दिनाक समय देलैन चारिम दिन विवाह थिक आ...

करुणेश : मुदा... मुदा ...

कंचन : हमर बेटी के विवाह नै हैत? आब हमर बेटीक विवाह नै हैत?

करुणेश : अरे आहाँ चुप रहू। तखैन सं रट लगौने छी... नेना डौली मात्र अहींक बेटी रहल हमर किछु अछिए नैः

मामा : ओफ्फो ई समय झगड़ा करबाक नै थिक स्थिर मोन सं

सोचूं नै कि कैल जाय।

करुणेश : की सोचू हमर त' बुधि नै काज करैत अछि। ऐहन नीक व्यक्ति, एहन नीक बात विचार, नीक परिवार तखैन यै एहन व्यवहार। सब इंतजाम भऽ गेल अछि। कुटुम्ब सब आबि गेल छैथि। हम तऽ मृत प्राण भऽ जायब। वकिल सहेब-प्रोफेसर साहेब के अवश्य कोनो गलत फहमी भऽ गेल होयतैनि त' अहाँके फोन पर सुनबा मे धोखा भेल छै।

मामा : औजी हम बहिर नै छी जे बजलैनि किछु आ हम सुनबै किछु आ ताहू मे टाका बला गप्प साफ-साफ 2 लाख टाका मँगलैनि अछि एक छदाम कम नै।

करुणेश : नै नै ओ एना नै कऽ सकैत छैथि एकदम आदर्शवादी व्यक्ति छैथि। चालू हम सब अखने दरभंगा चली। कोनो गलतफहमी अवश्य भेल अछि। ओ ओत, एकदम आदर्श विवाहक गप्प कयने छलाह।

मामा : औ श्रीमान लोक के नै बुझायना भऽ सकैत अछि। आहाँ के बुझालय। ई आदर्श विवाह ढकोसला छै एकर फेरा मे जे पड़ैत अछि से अहिना नचैत अछि। आदर्श के नाम पर लोक बड़का मंसुबा बनौने रहैत अछि।

करुणेश : मंसूबा

मामा : जे कहैत छै जे आदर्श करब। आ ठीक कतऽ करत जतऽ सँ ढेर ढाकि ऐबाक संभावना रहैत छै। अखबार पेपड़ मे नाम से भेलै आ तरे-तर खुब माल खाईत अछि।

करुणेश : ओकिल साहेब अहू समयमे आहाँक मजाक-सुझैत अछि?

मामा : मजाक की। जे सत्य अछि से कहलौं। यौ कतौ सुनलियै जे पैघ लोक बड़का ओहदा बला लोक करबैत अछि विवाह कोनो गरीब घरक लड़कां सं तखैन ने भेलै आदर्श जे ककरो उपकार होइतै। ओ प्रोफेसर साहेब हमरा साफ-साफ कहलैनि जे Excutive Engineer बुझि विवाह ठीक के ने रही नै की कानो ऑफिसक चपरासी ओहि ठाम।

करुणेश : की? हम हुनका चपरासी बुझेलियैन?

मामा : आहिंस' बुझखिन जे Excutive Engineer छैथ एकटा बेटी छैनि। समधि तऽ राजा भऽ देता।

करुणेश : एहन नीच लोक छी-छी-छी। आब ते कोनो हालत मे अपन बेटीक विवाह हम हुनका ओहिठाम नै करब। प्रोफसर दिन राति शिक्षा प्रदान केनिहार तकर ई हाल- किन्न्हुँ ने करब अपन बेटीक विवाह हुनका ओहिठाम।

कंचन : की-की आब हमर बेटीक विवाह ने हैत सौंसे-लोक सब छी-छी करत हमर बेटी हमर बेटी कुमारिये रहि जैत *(कहैत बेहोश भय जाईत छैथ)* करुणेश आ मामा हुनका सम्हारैक छथिन)

करुणेश : वकिल साहेब कि की भऽ गेलैन कंचन के?

मामा : घबराऊ जुनि हम तुरन्त डॉक्टर के बजौने अबैत छी। *(प्रस्थान)*

करुणेश : कंचन-कंचन आँ खि खोलू कंचन।

कंचन : पाईन-पाईन *(करुणेश दौड़क पानि अनैत छैथ आ मुँह पर छिठा दैत छथिन)*

करुणेश : कंचन-कंचन एतेक हतोत्साहित जुनि होऊ सब ठीक भऽ जेतै सभ ठीक भय जेतै।

कंचन : की ठीक हेतै? आब की ठीक हेतै आहाँ त' डौलीक दुश्मन छी आहाँ हमर सबहक दुश्मन छी।

करुणेश : कंचन।

कंचन : चिचिआऊ और जोरे सं चिचिआऊ हमरा और डौली के गरदनि दबा कऽ मारि दिअ।

करुणेश : कंचन की भऽेल अछि आहाँ के एना किएक बाजि रहल छी।

कंचन : कि भेल अछि? एखन त किछु नै भेल अछि चारिम दिन जँ हमर बेटिक विवाह नै हैत तखैन बुझबै जे कि भेल अछि हमरा।

करुणेश : चारिम दिन चारि दिन कोनो जरूरी छै जे चारिमे दिन वियाह होइं। हम दोसर वर ताकब एक सं एक वर भेटतै।

कंचन : अवश्य छै मुदा अहाँके नै भेटत। आहाँ आदर्शवादी चलबैत रहबै आहाँ ढपैया देबै नै तऽ के भेटत। मुदा-मुदा आई आहाँक फैसला करय पड़त।

करुणेश : फैसलाः केहेन फैसला?

कंचन : हं फैसला। विवाह तय भऽ क' जखन डौलीक विवाह नै हतै तऽ फेर के करतै डौली सं विवाह? से आहाँ सोचै छियै। लोक दूर-दूर छिया-छिया करत। ई आहाँक आदर्श आहाँक ईमानदारी हमर बेटीक जीवन तबाह कऽ देत हम कतहुं मुँह देखाबैक जोगरक नै रहब। काल्हि मुन्ना आबि रहल अछि। जखन ओकरा पता चलैत जे बहिनक विवाह नहि गेल।

करुणेश : धू आहाँक कंचन।

कंचन : हं आहाँक आदर्श सं तंग आबि गेल छी बहुत भऽ गेल ई आदर्श आ ईमानदारी हमर बेटीक जे विवाह नै भेल तऽ हम जहर खा कऽ मरि जायब। *(कनैत प्रस्थान)*

करुणेश : कंचन-कंचन *(कनेकाल एम्हर सं ओमहर ठहलैत छैथःफेर फोन उठा कऽ कोनो नम्बर Dial करैत छैथ)*

एगारहम दृश्य

(मंच पर प्रकाश अनैत अछि। करुणेश बाबू एमहर ओमहर परेशान भऽ टहलि रहल छैथि। गुलाबमलक प्रवेश)

गुलाब : *(पार्श्व से)* हुजूर-हुजर *(कंचन आ डौली पर्दाक बाबू ठाढ़ म' जाईत छैथि)*

करुणेश : अंदर आबि जाऊ...

गुलाब : *(प्रवेशक संग)* प्रणाम हुजूर...

करुणेश : गुलाब मल हम-हम अपन जीवन मे पहिल बेर आई पथ भ्रष्ट भऽ रहल छी। परिस्थिति आई हमरा अपन आदर्श सं डिगा देने अछि लोक लाज मुदा आहाँ।

गुलाब : हुजूर आपने एकदम निश्िंचत रहू। ई गप्प हमरा लग सं

कतहु नै जायत हुजूर। (Bagtable पर रखैत) हुजूर ई बिल....

करुणेश : अंय हं... *(कागज लऽ कऽ टेबुल पर बैसैत छैथ। सोफा परक कलम बहार क' जहिना दस्तखत कर' लगैत छेथि कि डौली आबि क' कागज छिनैत)*

डौली : पापा....

कंचन : डौली ई कि कऽ रहल छै तो भीतर जो...

डौली : माँ तो चुप्प रह। पापा-पापा आहाँ इ कि कऽ रहल छी?

करुणेश : डौली-डौली...

डौली : पापा आहाँ अपन आदर्श सं भटकि रहल छी। सेहो हमरा लेल हम की एहेक बोझ भऽ गेल छीः जे कोनो तरहें हमरा विदा कऽ देब' चाहैत छी। उचित-अनुचित सब बिसरी गेलियै पापा?

गुलाब : बौआ एहि मे कोनो अनुचित नै ई त' हुजूर के अधिकार छनि।

डौली : चुप्प रहू आहाँ सेठ जी आहाँ सबक लोक अपन स्वार्थक लेल केकरो से किछु करा सकैत अछि मुदा हम-हम पापा के ई नै करऽ देबैन।

करुणेश : बेटी-बेटी आओर कोनो रास्ता नै अछि हम एतैक कमजोर भऽ जैब से सोचनहुं नै छलौं। आई बुझा रहल अछि जे भ्रष्टाचारक एकटा कारण दहेज सेहो अछि...

कंचन : डौली पापा जे कऽ रहल छथुन से तोरे भविष्य लेल। तोरे सुख सुविधाक लेल।

डौली : तो चुप रह तो आन्हर भऽ गेल छै तोरा मात्र बेटीक भविष्य नजरि आबि रहल छौ। अपन समाजक मान मर्यादाक चिन्ता छौ। एकौ बेर ई सोचलही जे देशक करोड़ो गरीब लड़कियो कि हेतैक लाखो लाख लड़की जकरा दहेज बिना विवाह नै भऽ रहल छैक तकर की हेतैक भविष्य अहिना जं लोक, बेइमानी क'अ' पाई गनैत रहत तऽ एकर अन्त की हेतैक पापा आहाँ तऽ उच्च विचारक छी। आहाँ कोना

हमर भविष्य लेल सौंसे देशक भविष्य।

कंचन : बड़ा एलीह देशक भविष्य वाली तोरा पढ़ा-लिखा कऽ की भेल सब बात मे टांग अड़ा रहल छैं। ला ई कागज, जो अपन काज कर ग'। पापा के अपन काज करऽ दहुन।

डौली : नै ई कागज हम नै देबौ हे ले। *(फाड़ि दैत छैथि कागज कैं)*

कंचन : *(एक थप्पड़ मारैत)* डौली...

डौली : मार जतेक मारक छौ मार, मुदा हम ई नै होबय देबौ। सेठ जी! ई अपन बैग उठाऊ आ भागू एतऽ सं।

गुलाब : हुजूर?

डौली : हुजूर-हुजूर की कऽ रहल छी भागू एत' सं *(बैग उठा कऽ बाहर फेंक दैत छैथि)* (गुलाब मल बैग उठा कऽ प्रस्थान करैत छथि)

डौली : तोरो बहुत दुःख भेलौ ने हमर बात पर पापा आहाँ किछु बजैत कियैक नै छी?

कंचन : बेटी-बेटी आब कोना हेतौ तोहर विवाह 5 लाख टाका कत्तय सँ अनथुन तोहर पापा। सब थू-थू करत कतहुँ मुँहने देखा सकब हम सब *(अरुणक प्रवेश)*

अरुण : चाचा जी।

करुणेश : के अरुण आऊ बैसू।

अरुण : चाचा जी हमर पापा?

करुणेश : की भेलनि आहाँक पापा के...

अरुण : जी किछु नै किछु नै दरअसल ओ अपने अबितथि, मुदा हुनका त' ब्लड।

करुणेश : आब केहन माने छैनि?

अरुण : जी आब ठीक छथि। आसल मे हुनका बहुत दुख छनि जे प्रोफेसर साहेब ऐहन व्यवहार कऽ रहल छैथि। पापा मुन्नीक विवाहक लेल एक लाख टाका जामा रखने छथि से-से कहलैनि अछि जे तत्काल डौलीक विवाह लेल।

डौली : ने नै अरुण - आहाँ ई गप्प कोना बजलौ जे पाई गनि

क; हमर विवाह।

अरुण : डौली हमरा गलत जुनि बुझू।

डौली : गलत हूँ दहेजक विरुद्ध लम्बा चौड़ा गप्प दैत छलहूँ मुदा आब की भऽ गेल?

अरुण : डौली ई समाज बड़ निर्दयी अछि। एकरा सोझाँ सब के झुकऽ पड़ैत छै।

डौली : अहूँ कुकम क' र' चाहैत छीः बाजू अहूँ झूकय चाहैत छी?

अरुण : डौली?

डौली : अरुण हमर माँ के चिन्ता छै जे हमर बेटीक विवाह परसू नै हैत तऽ लोक आऽ समाज की कहत। पापा हमर विवाहक लेल अपन मान-मर्यादा ताख पर रखबाक लेल तैयार छथि। आहाँ एक लाख रुपेया तक कर्ज देबाक लेल तैयार छी। सब हमरा लेल बेहाल अछि। हम सब पर बोझ छियैक। की हमर कोनो अस्तित्व नै?

अरुण : डौली आहाँ सब के गलत बुझि रहल छियै।

डौली : गलत हूँ। अरुण जँ आहाँ अपना बड़ सही बुझैत छी तऽ हँ वा नहि मे जवाब दिअ अहाँ हमरा सँ विवाह करब?

अरुण : डौली...

कंचन : डौली

डौली : हम हँ या नहि मे उत्तर चाहैत छी आरुण 'हँ' या 'नहि' मे

अरुण : जँ चाची अऽ चाचाक आज्ञा हो-हँ

डौली : *(अरुणक हाथ पकड़ि)* पापा आशीर्वाद दिअ'।

करुणेश : कियैक नै भऽ सकैत अछि?

कंचन : ई अरुण-अरुण दोसर जातिक छैथि दोसर समाजक छथि ई नै भऽ सकैत अछि।

करुणेश : जाति आ समाज की देलक जाति आ समाज की देलक?

कंचन : अहूँ-अहूँ ई सैकड़ो सालक परम्परा, संस्कृति, रिति-रिवाज सबके अन्त करय चाहैत छी आहाँ बाप बेटी हम हम ई नै छी क्यो दैब?

करुणेश : पागल जुनि बनू कथुक अंत होईत छै आ कथुक आरम्भ। ई समय चक्र छै आदि वा अन्त। अन्त आ आदि आशीर्वाद दिऔ डौली के...

(दुनू गोरे पैड़ छुबि कऽ बाहर दिस प्रस्थान)

कंचन : डौली-डौली *(करैत खसि पड़ैत छैथ)*

करुणेश : कंचन-कंचन कानू नै कंचन ई त' खुसी क अवसर अछि कानू नै *(पार्श्व सें छी-छी वारि दिऔन हिनका समाज सं निकाली दिऔन हिनका)*

कंचन : सुनू लोक सब की कहैत अछि?

करुणेश : *(जोड़ सं)* हं-हं बाड़ि दिअ। निकाली दिअ समाज सं केकरा-केकरा निकालबै हिम्मत अछि त' आऊ ओहि प्रोफेसर के बारि दिऔ जे दू लाखक माँग करैत छैथि आई हमरा संग भेल काल्हि अहूं क संग हैत। अपन संस्कृति रिति-रिवाजक अन्त आ नव सभ्यता पश्चिमी सभ्यताक आदि आहाँ सोचू जे आहाँक लेल आदि थीक तऽ अन्त। अखैन भेलै की ई त' मात्र भूमिका अछि जं समाज नै चेतत, जं समाज नै सोचत जं समाज दोसरक बेटी के अपन बेटी नै बुझत जं बरक दाम बरद जकां लगैनाई बन्द नै हैत तऽ एहि देशक संस्कृति जे विभत्स रूप होयत से आहाँ सोचि नै सकैत छी। भऽ सकैत अछि आहाँक बेटी केकरो संग भागि जाय। भऽ सकैत अछि आहाँक बेटी आत्महत्या कऽ लिए, तकरा बाद अमेरिका आ इंग्लैण्ड जकां अपनो देश मे बिन बियाहल लड़की माय बनत। आ तकरा तकरा मान्यता देबय पड़त। सोचू की चाही की चाही आहाँकेंः

(मंच पर प्रकाश मध्यम)

पार्श्ववर : आदि वा अन्त आदि वा अन्त सोचू विद्वजन सोचू दर्शक गण कने सोचू समाजक महन्थ आदी वा अन्त आदि वा अन्त।

बाहम दृश्य

(मंच पर सब पात्र छैथि। मध्यम प्रकाश मंचक : मंचक अगिला भाग मे आठ दस व्यक्तिक जुलूस दहेज लेब बन्दः बंद करु बंद करु दहेज लेब पाप अछि। पाप अछि, पाप अछि।)

(दर्शकक बिच सं जे पागल सनक वेश भूषा मे छैथि दौड़ कऽ मंच पर अबैत छैथि)

व्यक्ति : आब-आब हमर बेटीक ब्याह भऽ जैत भऽ जैत समाजक नवयुवक सब आगू आबि रहल छथि आब हमर बेटीक बियाह भऽ जैत...

(ओ आगू, बढ़ि कऽ पहिल लग)

हमरा लग पाई नै अछि गरीब आदमी छी, हमर बेटी पढ़ल लिखल अछि सुन्दर अछि आहाँ-आहाँ ओकरा सं वियाह कऽ लिअ।

(पहिल मुँह झुकौने चल जाईत अछि फेर दोसर-तेसर अन्तिम स्त्री कृत मे माथ हिलबैत अछि। ताधरि ओकर बाप मोछ पर ताव देने अबैत छै आ घसिट क लऽ जाईत छै)

व्यक्ति : सब चलि गेल सब चलि गेल आब हमर बेटीक वियाह की हैत?

पार्श्व : *(अट्ठहास)*

व्यक्ति : आहाँ के छी : अहाँ के छी?

पार्श्व : हम लेखक छीः नाटककार छी।

व्यक्ति : आहाँ हँसी कियैक रहल छी? हमर दुर्भाग्य पर अहाँके हँसी छुटी रहल अछि?

पार्श्च : आहाँक दुभाग्य हमरो दुर्भाग्य थीक एहि समाजक दुर्भाग्य थीक एहि देशक दुर्भाग्य थीक।

व्यक्ति : मुदा-मुदा आब हमर बेटीक की हैत।

पार्श्व : कि हैत से नाटक मे नै देखलौ आहाँ गरीब छी छोट-मोट काज कयनिहार तऽ आहाँक बेटीः

व्यक्ति : हं-हं हमर बेटी की हेतै ओकरा संग।

पार्श्व : आहाँक बेटीक विवाह नै हैत जाधरि पाई नै गनब। सब किछु बेचि बिकिन कऽ दहेज गनू आ अपने अपन-पार्श्वक संग भिखमंगा भऽ जाऊ... नै तऽ

व्यक्ति : नै : तऽ?

पार्श्व : नै तऽ आहाँक बेटी केकरो संग भागि जायत।

व्यक्ति : नै नै...नै...

पार्श्व : नै तऽ भऽ सकैत अछि जे ओ आत्महत्या कऽ लिए।

व्यक्ति : नै-नै ई नै भऽ सकैत अछि

पार्श्व : भऽ सकैत अछि समय बितैत-बितैत एहन समय अवश्य जे ओ अपन यौन इच्छा पर निमंत्रण नै राखि एकल आ ओ व्यभिचारिणि भऽ जाय...

व्यक्ति : नै-नै आहाँ नीच छी : आहाँ हमरा बेटीक विषय मे एहन बात बाजि कोना सकलौ?

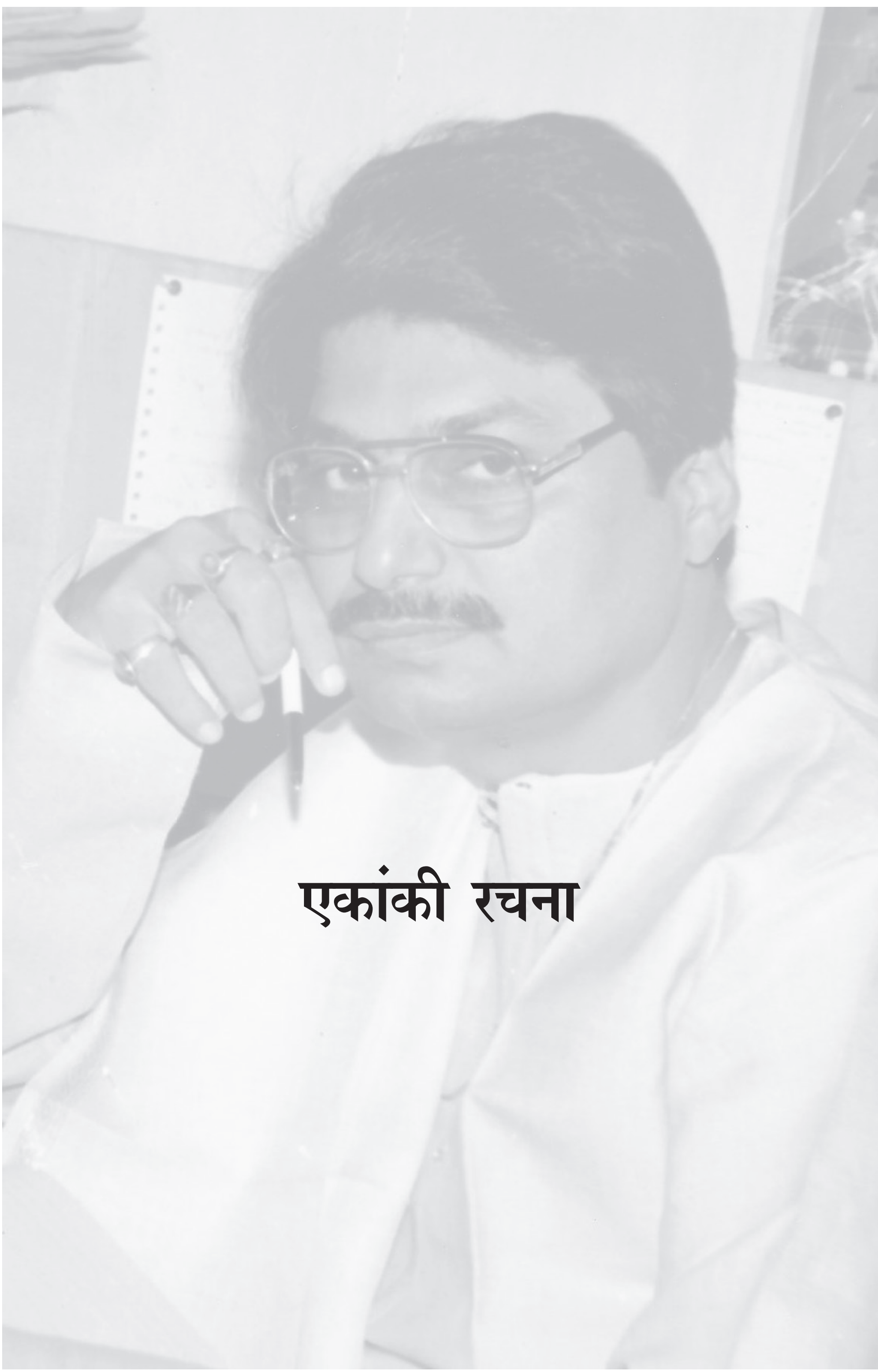
पार्श्व : हम नीच नै छी हम मात्र नाटककार छी लेखक छी हम तऽ अपन कल्पना शक्तिक आधार पर आई सं 25-50 वर्ष बाद की होमय जा रहल अछि से नाटकक माध्यम सें कहलियै सोचबाक काज तऽ एहि समाजक छै एहि दर्शकगण कै छैनि जे ओ की चाहैत छथि।

व्यक्ति : नाटक-नाटक-नाटक कियैक करैत छी नाटक कौन फायदा।

पार्श्व : हं उचित पूछल नाटक कियैक करैत छीः विश्वास अछि एतेक राश दर्शक मे सं एको व्यक्ति एहन अवश्य निकलता जिनका पर नाटक आसरि केने होनि।

व्यक्ति : हय एकदम झूठ केकरो पर आसरि नै करैत अछि अहाँक नाटक हम हम जिबते मरि गेल छी हम कतऽ सं पाई अपने हम की करि भगवान बचो हमर सहारा नैः आब जीला सं कोन फायदा अपन बेटीक बर्बादी देखय सं निक जे अपन प्राण त्यागि दी। लेखक-लेखक सुनिलिअ हम आई अहि मंच पर प्राण त्यागि रहल छी हमर बेटी जं पुछय तऽ कहि देबै लेखक मुदा अछि ओकर कसम मे जान नै छै भगवान हे भगवान *(मंच पर कपार पटकय लगैत छैथि)*

पार्श्व : हे भगवान ई कि कऽ रहल छी अहाँ? हमर कोन दोस हम आहाँक की मदद कर सकैत छीः हमर बालक सब।



एकांकी रचना

चन्दा

(एक साधारण नौकरीहारा व्यक्ति एवम् हुनक पत्नी...दरबज्जा पर खट खट)

प्रथम व्यक्ति : (सँगमे दू तीन गोटे) औ विजय बाबू छी यौ...। विजय बाबू...(विजय बाबू बाबू घर सँ निकलैत छथि, पाछू पाछू हुनक पत्नी)

विजय बाबू : बाबू : जी अपने लोकनि के चिन्हल नहि?

दोसर व्यक्ति : औ जी चिन्हब कोना। ऑफिस स' आबिक' अहाँ घरेमे सन्हियेल रहय छी त' चिन्हबय कोना।

तेसर व्यक्ति : छोडू इ सब गप्प कुमरजी बाबू...औ जी हमरा लोकनि परमहंस लक्ष्मीनाथ गोसाईं मंडली सँ आयल छी। विशाल स्तरपर एहि बेर मिथिला महोत्सव करबाक नेयार कयने छी।

पहिल व्यक्ति : जगन्नाथजी मुख्य अतिथि रहताह। रामेश्वर ठाकुरजी विशिष्ट अतिथि, आ कि कहय छै जे धनिक लाल मंडलजी प्रमुख अतिथि।

विजय बाबू : वाह इ त' प्रसन्नताक गप्प थिक।

दोसर बाबू : त' एहि लेल अपनेक सहयोग चाही।

विजय बाबू : जी कहल जाय की सहयोग चाही।

दोसर व्यक्ति : औ जी कत' घर अछि...सहयोगक अर्थ नहि बुझय छियैक? सहयोग माने चंदा।

विजय बाबू : चंदा...।

चारिम व्यक्ति : की भ' गेल यौ...सा रे गा म प ध नी सा...जकाँ कहलियैक चंदा...।

विजय बाबू : जी...किछु नहि, नेने अबैत छी (भीतर जाइत छथि)।

पहिल व्यक्ति : पाँच टाका...?

दोसर व्यक्ति : मात्र पाँच टाका...?

तेसर व्यक्ति : पाँच टाका केवलम्?

विजय बाबू : जी हमर इयैह ओकाइत अछि।

चारिम व्यक्ति : की कहैत छी यौ...अहाँक औकाइत के नहि जानैत अछि?

दोसर व्यक्ति : चारि हजार, पाँच हजार सोचि क' आयल छी ओहि ठाम पाँच टाका मात्र?

चारिम व्यक्ति : औजी कुमरजी बाबू बुझा गेल...जखने चलबाक समय बिलाड़ि रस्ता काटि देने रहैक, तखने बुझा गेल छल, जे अजुका जतरा ठीक नहि...यैह यौ विजय बाबू? बाबू कम से कम 51 टाका दियौ...एहि स' कममे काज नहि चलत।

विजय बाबू : 51 टाका...? इ त' हमरा बहुत भारी परत आ हमर घरवाली...।

पहिल व्यक्ति : घरवाली...? एहि ठाम सेहो घरवाली? यैह थिक मिथिलाबा. सिक सब सँ पैघ बीमारी...बिना घरवालीसँ पुछने मिथिला महोत्सवक चंदो नहि द' सकैत छथि।

दोसर व्यक्ति : आ काका...एकटा छलाह मैथिल कवि विद्यापति...घरवाली के कनिको मोजर नहि दैत छलाह...कतेको बरख तक ई नहि कहलाह जे उगना महादेव ओ स्वयं छलाह।

चारिम : औ जी कने हुनको मान मर्यादाक ख्याल राखू...जाऊ...51 टाका नेने जाऊ।

(विजय बाबू मोन मसोसि क' भीतर जाइत छथि आ 51 टाका आनि क' दैत छथि। आ वापस जाय क' कुर्सी पर बैस जाइत छथि। पत्नीक प्रवेश)

पत्नी : एना जँ चन्दा देबय त' भरि मास खायब की?

विजय बाबू : एखैंह हमर दिमाग खराब जुनि करू...हम अपने बहुत परेशान छी...जाऊ चाह बना क' नेने आऊ।

(पत्नीक प्रस्थान। पार्श्व सँ एकटा हारमोनियम ढोलक बालाक सँग प्रवेश)

उड़िया : छिता रामो...छिता रामो...छिता रामो...छिता रामो...।

विजय बाबू : सुनैत छी यै...कने देखू त' के अछि...

पत्नी : के होयत फेर कोनो चंदा वाला...

विजय बाबू : चंदा वाला...

पत्नी : आर नहि त' की...अहाँ के फोकटमे गीत सुनबय आयल अछि।

विनय : ठहरू हमरा देखय दिय।

पत्नी : जी नहि...अहाँ चुप चाप बैसू...हमरा देखय दिय'। अहाँ त' फेर 101 टाका द' देबय।

(पत्नी बाहर उड़िया लग पहुँचि क')

पत्नी : क्या है...?

उड़िया : माँ! आश्रम के लिए चंदा दो माँ...।

पत्नी : आश्रम के लिए चंदा...अभी पछिला रवि दिन त' ले गया है चंदा...

उड़िया : ओ कोई दूसरा आश्रम होगी माँ...हम त' पहली बार आई है माँ...।

पत्नी : नहि नहि जाइए...एतय सँ...फेरो कहियो बादमे आइएगा।

उड़िया : माँ...दे दो माँ...तेरा बाल बच्चा जुग जुग जियेगी माँ...आश्रम को दे दो माँ।

पत्नी : (स्वतः) सरधुआ नय देबय त' गारियो तारियो नय पढि दिए।

उड़िया : क्या बोला माँ...

पत्नी : कुछो नहीं...रुकिए *(भीतर जा क' 2टाका क' नोट आनैत छथि)*

उड़िया : दू टाका माँ...मात्रो दू टाका...

हारमोनियम वाला : *(हाथसँ छिनैत)* टाका दू टाकामे तो बीड़ी का एक बंडल भी नहि आएगा।

पत्नी : क्या अहाँ सब इस पैसे से बीड़ी पिएगा...*(टाका हाथ स' छिनैत)* जाइए दूसरा घर देखिए।

उड़िया : *(पुनः रुपैया छिनैत)* इ त' बेवकूफ है माँ...कुछो समझता नहीं है *(छिता रामो...करैत प्रस्थान)*

पत्नी : *(बड़बराइत)* ई आश्रमके नामपर चंदा आ पीयत बीड़ी।

विजय बाबू : की भेल यै...कतेमे फरियायल।

पत्नी : मात्र दू टाका अहाँ जकाँ 51 टाकामे नहि। ओह... चाहक पानियो जरि गेल होयत।

विजय बाबू : छोड़ू चाह...आबिक' पीयब...लाऊ झोड़ा पहिने तरकारी आनि दी...हे आई आधा किलो दूध बेसी आनि देने छी...कने काजू किसमिस द' क' बढ़िया सँ खीर बनाऊ। **(प्रस्थान)**

(बाहर सँ पहलवानक आवाज)

पहलवान : इकबाल बुलंद होखे साहेब के...जाय बजरंगबली...

पत्नी : *(भीतस सँ)* कौन...?

पहलवान : तानी दरबज्जा त' खोलीं माँ...राउर इलाका मे नाम रौशन करेबाला...मुख्यमंत्री लालू यादव के हाथ से पुरस्कार प्राप्त, हुरदंग पहलवान राउर दरबज्जा पर आइल बा। *(पत्नी बाहर आबैत छथि)*

पहलवान : जाय बजरंगबली के माई...माई ई पहलवान सरायकेला में होय वाला आल इंडिया कुश्ती में भाग लेबे जा रहल बा...सौ दू सौ रुपैया दीं माई...जे खा पी के...सरबा सब पहलवान के उठा के पटक दी।

पत्नी : (स्वतः) सौ दू सौ...आरौ बाप रे...। देखिए...साहब एखैन्ह नहीं हैं, बाजार गए हैं...एक घंटा बाद आइए।

पहलवान : एक घंटा बाद...माई एक घंटा में त' केतना पहलवान के उठा के पटक दिहिले हम...राजा नैखिन त' का रानी त' बारी...।

पत्नी : देखिए सब पैसा कौड़ी उहे रखते हैं त' हम कत' स' देंगे।

पहलवान : का कहतें हैं माई...राउर इ बात मे त' हमरा डाउटे लग. ता...आजकल त' घरे घर मेहरारू के राज चलता।

पत्नी : अरे आप विश्वास काहे नहीं करते हैं...एक घंटा बाद आइए।

पहलवान : अच्छा छोड़ी माई...ई पहलवान के एक लीटर दूधे पिला दीं...सेहत बने मे मदद करी।

पत्नी : दूध...अरे उ तो बच्चा के लिए है और खीर के लिए।

पहलवान : आ खीर त' दोसरो दिन खा सकिले...जल्दी करीं...टेम बर्बाद जुनि करीं।

(पत्नी घरे जा क' दूध आनि के' दैत छथिन्ह...पहलवान दूध पी जाइत अछि, मुँह पोछैत जाय बजरंग बलि कहैत प्रस्थान)

(पत्नी माथ पकिर क' बैस जाइत छथि)

(पतिक प्रवेश)

विजय बाबू : एना मुँह कियैक लटकल अछि यै फुचुक रानी...देखू तरकारी सब आनि देलहुँ...लाउ जलखई लाउ, बड़ जोरसँ भूख लागल अछि...आइ कतेक दिनपर खीर खायब।

पत्नी : खीर की खायब...कप्पार...सबटा दूध पी गेल।

विजय बाबू : दूध पी गेल...?

विजय बाबू : दूध पी गेल...अहाँ के काजे अहिना होइत अछि...भनसा घरक दरबज्जा ओहिना खुजले छोरि देने होयबय...त' पीत नहि त' की...एक पाई घरक खियाल नहि...कतेक मोन छल आय खीर खयबाक।

पत्नी : ओफ...हम कहैत छी जे पहलवान दूध पी गेल।

विजय बाबू : हाँ हाँ...हमहूँ बुझैत छियै, जे एहि इलाका के सब मूस आ बिलारि पहलवाने सन सन होइत छय...एना जँ खुल्ला छूट भेंटतय आ लीटर के लीटर दूध पियत त' पहलवान नहि होयत त' की।

पत्नी : अहाँ बुझैत कियैक नहि छी?

विजय बाबू : हम की बुझबय...बुझियौ अहाँ...ओह आई खीर खयबाक कतेक इच्छा छल...एक त' भोरे सँ चंदा बला सब, ताहि पर सँ इ बज्रपात।

पत्नी : हे भगवान...अपने सुरमे बजने जा रहल छथि...हिनका के बुझाबय...*(भीतर जाइत छथि आ एकटा ताला चाभी आनि क' दैत छथि)* आब एको टा के चंदा नहि देबय...हे लिय बाहर सँ ताला लगा दियौक आ पाछू सँ चलि आऊ।

विजय बाबू : अरे कय दिन एना दरबज्जा बंद करि क' रहब आ...बाहरक दरबज्जा बंद क' देबै त' कि बिलाड़ि नहि घुसत...

पत्नी : ओह फेर वैह बात...हे यौ...कोनो दोसर मोहल्लामे घर ताकि लिय...

विजय बाबू : दोसर मोहल्ला? हे यै कोन मोहल्ला एहि सँ बांचल अछि...हाँ एकटा काज क' सकैत छी...नौकरी तौकरी छाड़ि क' सासुरमे डेरा जमा दैत छी...तखैंह कोनो चंदाबला तंग नहि करत...उनटे अहाँक बाबुजीसँ हमही मंथली चंदा माँगैत रहबैंह...

पत्नी : दूर...अहाँ के त' सदिखन मजाके सुझैत अछि...जाउ ताला लगा दियौ...आई छुट्टी के दिन त' आराम सँ बितत। *(विजय बाबू जहिना ताला लगाबय के उपक्रम करय छथि, एकटा तेलगू भाषी केर एक हाथमे रजिस्टर लेने प्रवेश)*

तेलगू : नमस्कार श्रीमान्...लगता है आप कहीं जाने वाले हैं...आपका ज्यादा समय नहीं लुँगा...मैं आंध्रा का रहने वाला हूँ...हमारा घर परिवार सब बाढ़ में बह गया...कुछ नहि बचा...आप कुछ मदद कीजिए। *(और भी कुछ कुछ तेलगू में बोलता है)*।

पत्नी : के आयल अछि...*(कहैत बाहर आबैत छथि)*

विजय बाबू : भाई साहब...आप क्या बोले हम कुछ नहीं समझे।

तेलगू : हिंदी आप हिंदी?

पत्नी : मैथिली हम मैथिली।

विजय बाबू : ओह अहाँ चुप रहूँ...हाँ हम हिंदी...

तेलगू : मैं आंध्रा का रहने वाला हूँ...हमारा घर परिवार सब बाढ़ में बह गया...कुछ नहीं बचा...आप कुछ मदद कीजिए।

विजय बाबू : भाई साहब! मेरे पास चंदा देने को कुछ नहीं है...जाइए दूसरा घर देखिए...

तेलगू : ऐसा मत कहिए भाई साहब...विजयबाबूः हमने कहा नहीं दूसरा घर देखिए...

पत्नी : हे एना नहीं कहियौ...देखियौ बेचारा के की हाल छै...सबके

चंदा दैत छियै...एकरो किछु मदद करियौ...

तेलगू : माँ ठीक बोलती है, भाई साहब...मदद करो...

(रजिस्टर बढ़ा दैत अछि)

विजय बाबू : *(रजिस्टर उलटैत)* हूँ...की मदद करबय...ई सब ढोंगी अछि...देखियौ की लिखल छैक। बगल बला शर्मा जी के नाम के नाम पर 500 रु.। भाई साहब ई शर्मा जी आपको 500 रु. दिया है।

तेलगू : हाँ...।

विजय बाबू : *(डाँटेत)* सच सच बोलिए...नहीं तो अभी शर्मा जी को बुलाता हूँ।

तेलगू : (डराइत) 5 रुपैया दिया 2 जीरो हम अपना तरफ से लगाया।

विजय बाबू : बुझालिये' यैह धंधा छैक एकर...बाढ़ि बाढ़ि किछु नहि भेलैक, ई एही शहर के रहय बला होयत झूठ बाजैत अछि...सुनिए आप यहाँ से जाते हैं कि...

तेलगू : अम्मा अम्मा हम झूठ नहीं बोलता...

(गिरागिराबय लागैत अछि)

पत्नी : हे देखियौ कोना कानैत अछि...द' दियौक 2 टाका अहूँ।

विजय बाबू : आ लिखी दियौ 500 टाका...लीजिए भाई साहब...ई औरत सबके चलते ही आप लोगों को बढ़ाबा मिलता है...घर चलू आ ताला बंद क' दियौक।

तेलगू : धन्यवाद...मगर भाई साहब इतना गुस्सा ठीक नहीं...अम्मा के जैसा दयालु बनिए...अम्मा तुम तो लक्ष्मी है और तुम्हारा ये आदमी...।

वियय बाबू : अब आप फूटते हैं यहाँ से कि...

तेलगू : जाता भाई, जाता...काहे गरम होता...

(प्रस्थान)

विजय बाबू : हूँ आब केकरो चंदा नहीं देबय...बाहर सँ ताला लगा दैत छियैक...नहि जानि आय केकर मुँह देखि क' उठल रही।

पत्नी : हम्मर

विजय बाबू : तैं ई हाल भेल...

पत्नी : की कहलौं...हमर मुँह कि खराब अछि...

विजय बाबू : नहि अहाँ त' चौहदवीं के चाँद छी...

(ताबैत तीन चारि युवक केर प्रवेश)

पहिल युवक : एकदम ठीक कहा आपने भाई साहब...भाभी तो एकदम चौहदवीं का चाँद हैं।

दूसरा युवक : अबे क्या कहता है भाभी तो श्री देवी हैं...श्री देवी।

विजय बाबू : अहाँ भीतर जाउ।

तेसर युवक : काहे भीतर जाने को कहते हैं भाभी को हमलोग कोनो उठा के थोड़े ले जाएँगे।

चारिम युवक : भौजी से तनी दूगो मीठा मीठा बाते न करेंगे...त' इसमें आपका क्या घट जाएगा।

विजय बाबू : अरे...अहाँ जाय कियैक नहीं छी...जाउ।

(प्रस्थान)

(चारों का ठहाका)

पहिल युवक : अरे अरे...उनको भगा दिया त' अब बचा ही क्या है...

दोसर युवक : (कानमे) लंगूर...

(चारों फिर ठहाका लगाते हैं)

विजय बाबू : तमीज से बात कीजिए...किसी सभ्य आदमी के घर कैसे बात की जाती है, इतना भी नहीं जानते...

तेसर युवक : अरे...अरे...नाराज काहे होते हैं भाई साहब...इतना तमीज से तो हम लोग पहली दफा बोल रहे हैं।

विजय बाबू : अच्छा अच्छा...बोलिए?

चारिम युवक : क्या बोले...शाला मूड तो ऑफ कर दिया...निकालिए चंदा।

विजय बाबू : चंदा...किस चीज का...?

पहिल युवक : चीज का नहीं पूजा का...

दूसरा युवक : पूजा का...किस पूजा का?

तेसर युवक : ओ भाइ साहब कोनो पूजा समझ लीजिए, काट दो भाइ 250 रु. का रसीद।

विजय बाबू : 250 रु. का...देखिए एक तो दादागिरी कर रहे हैं ऊपर

से चंदा...हम चंद फंदा नहीं...जाइए आप लोग।

पहिल युवक : सुनो भाई...इ चंदा फंदा नहीं देंगे।

दोसर युवक : अरे का कहते हैं भाई साहब, यहाँ तो मंथली चंदा देता है सब। आप से तो वार्षिक माँग रहे हैं...दे दीजिए वरना।

विजय बाबू : वरना क्या...हम कहा न नहीं देंगें...जाइए जो मन में आए सो कर लीजिए।

तेसर युवक : चलो भाई लोग...इ नहीं देंगे तो का कर लेंगे...हम लोग चलो।

चरिन युवक : चलते हैं चलते हैं...तनि देख लें की गोलिया बचा है कि नहीं...*(पिस्तौल निकालकर गोली दिखता है और फूंक मारता है)* तो भाई साहब चलें हमलोग?

क्रमशः...

●

ग्रीन रूम (एकांकी) मैथिली

(पर्दा खुजैत अछि। मेक-अप मैन लग भिखमंगाक मेक-अप भ' रहल अछि...एक कातमे डांसर डांस क' रहल छथि। तबलची तबला बजा रहल छथि... एकदिस आओर कलाकार सब जे मेक-अप क' चुकल छथि... अपन कपड़ा पहिर रहल छथि... हुनकर सबहक माय... मदति कऽ रहल छथिन। डायरेक्टरक प्रवेश... डांसर लऽग... गायक गाबि रहल छथि...)

गायक : ठुमकि चलत राम चन्द्र बाजत पैजनियाँ... ठुमकि चलत राम चन्द्र...

डायरेक्टर : ओफ्फो... एना नै... एना... करियौ

डांसर : नै हम तऽ एहिना करब

डायरेक्टर : अरे... हम अहाँके की सिखेने छलौ आ अहाँ... बिसरी गेलियै सब।

डांसर : इह! बिसरबै किएक... मुदा हम ओना नै करब। ओना कतौ डान्स भेलैए।

डायरेक्टर : हे भगवान, अरे राजाक दरबारक सीन छै... ओय मे एना कोना डान्स करबै।

डांसर : राजाक दरबार छै तऽ की भ' गेलै... ओइ सिनेमामे नै देखने रहियै जे हेमा मालिनी कोना डान्स करैत छलै।

डायरेक्टर : ई हेमा मालिनीक डान्स नै छै। हम जेना सिखौने रही तहिना करू... आब नाटक शुरू हेतै आ अहाँ उल्टा सीधा...

डांसर : हमरा अहाँ डँटैत किएक छी यौ... मम्मी-मम्मी... देखियौक तऽ ई हमरा कोना कऽ डँटैत छथि...

मम्मी : की भेल बेटी... किएक डँटैत छियै यौ डायरेक्टर साहेब... कहू त' हमर फूल सनक बेटी... एतेक मेहनत सँ अहाँक

ड्रामा क' रहल अछि आ...

डायरेक्टर : हम्मर ड्रामा छीने...

मम्मी : आर नै तऽ की... तैं अहाँ डटबै

डायरेक्टर : ओह... हम, हम डॉटि कहाँ रहल छियैन... हम तऽ... दुलार कऽ कऽ बुझा रहल छियैन....बौआ...

डांसर : इह! बुझबै छथि... मुदा सुनि लिय हम हेमा मालिनी जेका डांस करब।

डायरेक्टर : हँ... हँ... अवश्य, जेना मोन हो तेना करूँ.... होऊ... करू...।

(मेक अप लऽग सँ भिखमंगाक स्वर)

भिखमंगा : कने हमर मेक-अप देख ने लिय औ डायरेक्टर साहेब...

(डायरेक्टर.... जा कऽ... मेकअप देखैत छथि...)

डायरेक्टर : बाह-बाह बहुत सुंदर... मुदा ई केश किएक एना केने छियैन यौ मेक अप मैन....

मेकमैन : हिनकर भिखमंगाक ने रोल छनि...

डायरेक्टर : अँय हँ, हिनका तऽ भिखमंगाक रोल छनि... अँय यौ तऽ ई राजकुमार बला ड्रेस किएक पहिरने छी।

भिखमंगा : मम्मी कहलनि अछि इएह पहिरबाक लेल।

डायरेक्टर : डायरेक्टर मम्मी छथि कि हम... हम अहाँकेँ फाटल चिटल कपड़ा अनबाक लेल कहने रही... उतारु...उतारु...

भिखमंगा : मम्मी... मम्मी... देखियौन कनि ई हमरा फाटल कपड़ा पहिरऽ कहैत छथि...

मम्मी-2 : किएक यौ... कियेक कहैत छियै, हमर बेटा फाटल कपड़ा पहिर कऽ नाटक करता... की हमर ई औकात अछि।

डायरेक्टर : नै नै... दरअसल ई भिखमंगाक रोल ने कऽ रहल छथि तऽ तैं हिसाबे ड्रेस पहिर' पड़तैनि... तैं कहलियैन जे ई उतारि क' फाटल चिटल...

मम्मी-2 : फाटल चिटल... कथमपि नै करत... इएह ड्रेस पहिर कऽ करत ई नाटक... अँय यौ जखैन ई भिखमंगा जेना acting करतै तऽ की लोक नै बुझतै जे ई भिखमंगाक रोल का

रहल छथि... करिही तऽ रौ बौआ... कोना कऽ करवही...।
(भिखमंगाक एक्टिंग करैत अछि...)

भिखमंगा : गरीब लाचार के दूटा पाई द' दिय भगवान अहाँके भला करता... राजा के रंक बनौता रंक के राजा...

मम्मी-2 : देखियौ तऽ केहेन सुन्दर भिखमंगा लगैत छै।

डायरेक्टर : हँ बड़ सुन्दर... बड़ सुन्दर...
(ताधरि ओम्हर एकटा मुंशी जी चश्मा पहिर क' चलबाक प्रयास करैत खसि पड़ैत अछि आ माँ-माँ कानऽ लगैत छथि)

डायरेक्टर : ओफ्फो आब हिनका की भेलनि... *(बढ़ि क देखैत)* अहाँके की भ' गेल किएक माँ... माँ... चिचिया रहल छी।

मुंशी : डायरेक्टर साहेब... हमरा तऽ चश्मा पहिर कऽ किछु सुझिते नै अछि...

डायरेक्टर : नीके अछि... कम-सँ-कम आन्हरक रोल तऽ अहाँ नीक जेकाँ कऽ सकैत छी...

मम्मी-3 : किएक यौ हमर बेटा की आन्हर अछि जे ओ आन्हरक रोल करत... ओकरा तऽ अहाँ मुंशी जीक रोल करबैत रहियै...

डायरेक्टर : मुंशी जी... अरे हाँ... मुदा ई चश्मा के आनऽ कहलक, देखू चश्माँ

मुंशी. : *(चश्मा दैत)* अहीं तऽ कहने रही... जे मुंशीक रोल मे चश्मा रहबाक चाही...

डायरेक्टर : यौ हम तऽ कहने रही जे कोनो बिना पावरक चश्मा लगेबाक लेल... आ अहाँ जे चश्मा अनलौए तै मे तऽ खाली पावरे पावर अछि ककरा से अनलौ इ चश्मा?

मुंशी : बाबा के छनि...

डायरेक्टर : बाप रे ई बाबा परबाबाक चश्मा आनब त' आओर की हैत... हटाऊ चश्मा के।

मम्मी-3 : ऐं यौ... अहाँ अपना के की बुझैत छियै... डायरेक्टर ने भऽ गेलौ जे... हमर बेटा मुंशीक रोल करैत अछि तैं अहाँ ओकरा डॅटबै... नै करत... ओ ड्रामा नै करत... ड्रामा बिना भूखल नै मरल जा रहल अछि...

डायरेक्टर : हे भगवान... हम कत' फँसि गेलौं... बहिनजी एना तामस ठीक नै... आब नाटक शुरु हेबा मे मात्र आधा घंटा रहि गेल अछि। जेना मोन हो करऽ दियौ... बाबा बला चाहे परबाबा बला... जे चश्मा पहिर कऽ जेबाक मोन होय जाय दियौ... हम की कहि सकैत छी आओर।

मम्मी-3 : ठीक छै... इएह पहिर कऽ जहिए रे बौआ... कर अपन रिहर्सल कर...

मुंशी : ठीक छे मम्मी...। *(फेर ओ... practice कर' लगैत अछि दू डेग चलैत अछि फेर खैस पड़ैत अछि...)*

डायरेक्टर : *(आगू बढ़ैत छथि तऽ रानी के मुकुट लगौने देखैत छथि)* अहाँ...अहाँ ई मुकुट....? ओ... अहाँकेँ तऽ रानीक पार्ट ने करबाक अछि...

रानी : हँ...

डायरेक्टर : हे भगवन! हम बर्बाद भऽ गेलौं... यै अहाँक रानीक रोल...आ एहन साड़ी.... खूब नीक साड़ी अनबाक लेल कहने रही ने, देखूतऽ, देखूतऽ ई अहाँ रानी लगि रहल छी कि नोकरानी...।

रानी : तऽ हम की करियै... मम्मी कहखिन जे नाटक-ताटक के लेल नीक साड़ी नई देब... सैह अछि तऽ डायरेक्टर साहेब के कहबै जे कीन का आनि देता...

डायरेक्टर : कीन कऽ हम आनि दिय... ठीक छै... ठीक छै... जे मोन हुए से करू अहाँ लोकनि आई तऽ हमर नाक कटले अछि।

भिखमंगा : हे-हे-हे-हे-हे हम सब नाटक करबै आ डायरेक्टर साहेब नाक कटतैन...

डायरेक्टर : चुप... गधा नहि तन

सिपाही : *(गदा नेने)* हैए गदा...

डायरेक्टर : गदा! ई गदा... ई गदा की हेतै... तो ई गदा किएक अनलैं... हम तऽ बॉसक तरुआरी आनऽ कहने रहियौ...

सिपाही : आब की तरुआरिक जमाना छै... जमाना छै गदाक... देख. लियै नै रामायणमे हनुमानजी केहेन गदा सँ मारि-मारि कऽ

भुट्टम भुस्स कऽ देलखिन।

डायरेक्टर : राजाक सिपाही आ गदा... वाह रे डायरेक्टर आई अहाँक डायरेक्टरी कमाल का देत... वाह... खैर... ई राजा कतऽ छथि...

सिपाही : राजा.... के राजा...

डायरेक्टर : अरे वैह रमेश जे राजाक पार्ट करता।

रानी : ओ तऽ लैट्रिन करऽ गेल छथि

डायरेक्टर : लैट्रिन... ओ एतऽ नाटक करऽ ऐला हे कि लेट्रिन करऽ...।

मुंशी : ओ तऽ तखैन सऽ चारी बेर गेला हे लैट्रिन

डायरेक्टर : चारि बेर...

भिखमंगा : और नै तऽ की... जाई छथि अबै छथि... जाई छथि अबै छथि... हौआ देखीयौन आबिगेला राजा साहेब...

(राजाक एकटा तौलिया लपेटने प्रवेश)

डायरेक्टर : अहाँ... अहाँ एतऽ नाटक करऽ एलौए कि लैट्रिन

राजा : लैट्रिन

डायरेक्टर : की...?

राजा : हमर पेट खराब भऽ गेल...

डायरेक्टर : हे भगवान... आब की करी हम...
यौ... पेट खराब भऽ गेल तऽ कोनो दवाई-तवाई किएक ने खा कऽ एलौ...

राजा : घरमे थोड़े खराब भेल छल... जखने पाठ मोन पारऽ लगैत छी कि लैट्रिन लागि जाइत अछि... हमरा तऽ बड़ डर लगैत अछि...

डायरेक्टर : नै-नै... डरबाक कोनोकाज नै... हम छी ने... डर के हटा दिय मोन सँ तऽ देखू जे किछ नै हैत... अँय ठीक ने...

राजा : ठीक छै...

डायरेक्टर : आब सभ एमहर आऊ... देखू सभ के अपन-अपन पाठ मोन अछि कि ने...

सम संगे : हँ मोन अछि...

डायरेक्टर : ठीक... आब हम सभ एक बेर बढ़ियाँ सँ रिहर्सल

करब... अखैन आधा घंटा समय छै नाटक शुरु हेबा मे...
(डायरेक्टर कुर्सी तुर्सी लगबैल छथि।)

डायरेक्टर : हँ... आब शुरू भऽ जाउ... अपन-अपन जगह लिय... राजा अहाँ ओम्हर सँ एबै... आ रानी अहाँ एमहर सँ... सिपाही अहाँ एतऽ... एतऽ ठाढ़ रहू.... Ok... Ready... Start...

सिपाही : होशियार... खबरदार... महाराज पधारि रहल छथि...
(राजा तौलिया लपेटने अबैत छथि... एक हाथ सँ तौलिया पकड़ने...)

राजा : हमर... हमर मुकुट की भेल...

डायरेक्टर : ओफ्फो... अरे मुकुट बाद मे ताकब... पहिने जल्दी सँ रिहर्सल कऽ लिय... फेर अहाँकेँ पूरा मेक-अप बांकिये अछि... ओ हाथ हटाउ तौलिया पर सँ... हटाउ ने...

राजा : नै हटायव... तौलिया जे कही खसि परल तऽ।

डायरेक्टर : ओफ्फ हे भगवान... ok... ok... चलू फेर सँ आऊ...

सिपाही : होशियार....
(राजा आबि कऽ कुर्सी पर बैसैत छथि)

सिपाही : होशियार...खबरदार... महारानी पधारि रहल छथि...
(महारानी आबि कऽ दोसर कुर्सी पर बैसैत छथि)

राजा : रानी... आई अहाँ बहुत सुन्दर लागि रहल छी...

रानी : महाराज... आई अहूँ बहुत सुन्दर लगि रहल छी...
(राजा बेचारा तौलिया संभारबामे लागल अछि)

भिख. मम्मी : करही ने बौआ तो अपन पाठ जो... उठ...

मुं. मम्मी : इह... पहिने हमर बौआ करतै... तखन अहाँके बौआ जो उठ करही ने...

डायरेक्टर : ओफ्फो... अहाँ सब तऽ चुप रहू... बहिन जी सब... माता जी सब... कृपा कैल जाओ... अहाँ सब कनेकाल ओमहर स्थिर सँ बैसू...

भिख. मम्मी : किएक यौ... ओम्हर किएक बैसू... हमर बौआ नाटक करतै आ' हम सब ओतऽ बैसू... हम तऽ एकरा संगे रहबै...

डायरेक्टर : की...?

मुं. मम्मी : हँ... हमहूँ तऽ अपन बौआक संग रहबै...

डायरेक्टर : हे भगवान... ई नाटक भऽ रहल अछि... कि... आई हमरा जूता चप्पल परबे करत... बेस... आब जे हो... ठीक छै... ठीक छै... होउ रिहर्सल करैत जाऊ...
हँ तऽ केकर पाठ छै... *(सब चुप)*
हम पुछै छी जे केकर पाठ छै...
(फट स्क्रीप्ट निकालि कऽ देखैत छथि)

राजा : अहाँकेँ ने बजबाक छल।

राजा : हमरा...?... हँ... हँ...

●

सूटकेस

(मंत्रीक आवास। एकटा स्टूलपर दरबान नं. 1 बैसल अछि। ओसारा पर दू टा कुर्सी, टेबुल आ नीचाँमे एकटा सूटकेस राखल अछि। दरबान-1 परेशान एम्हरसँ ओम्हर टहलि रहल अछि।)

दरबान-1 : *(स्वतः)* ना जानी काहाँ मऽर गेल सरबा। हमार टिरेन के टाइम हो रहल बा। बाकी अभी तक ले सरऊ नैखे आइ. ल। छौ महीना बाद तऽ मुश्किल से छुट्टी सैंक्शन भइल हऽ... ओफ्फ...। आ ई मंत्रीयो जी सुतले बाड़न...। का करीं हम कुछ बुझाइते नै खे।...
बुझाता कि आ रहल बा। ई सरउ मंतरी जी के गाँव के का हो गईल कि अपना के कौनो मंतरी से कम नईखे बूझत। ओह कइसे एकदम झूमत-झामत आ रहल बा।

दरबान-2 : जय राम जी के चाचा।

दरबान-1 : का जय राम जी के...। हमार टिरेन छूट हरल हऽ आ तहरा के जय राम जी सूझ रहल बा। लऽ संभाल अपन गद्दी... हम जा तानी।

दरबान-2 : अरे... अरे... चाचा एतेक कियैक खिसियाइत छी...। अरे आई-काल्हि कि कोनो ट्रेन टाइम पर थोड़े चलैत छैक जे छूटि जायत। जाऊ... जाऊ... आराम सँ जाउ, भेटबे करत। *(दरबार-1 जल्दी-जल्दी अपन झोरा-झपटा संभारैत प्रस्थान करैत अछि।)*

दरबार-2 : ईह... देखू ने... बुढ़िया सँ भेंट करबा लेल कतेक अघुतायल अछि... धड़फड़ा... धड़फड़ा... पड़ायल जा रहल अछि। *(स्वतः गीत गबैत...हे भोलादानी...कखन हरब...अचानक सूटकेस पर नजरि पड़ैत छैक...)*

अंय... ई सूटकेस...? ई बाहर मे एना कियैक पड़ल छैक... ककर छैक... के राखि गेल छैक... से जानि नहिं। आ ई चचबो किछु कहलक नहि।

(आगन्तुक-1 एवं 2 केर प्रवेश)

आगंतुक-1 : नमस्कार सिपाही जी

आगंतुक : की अछि यौ...

आगंतुक-2 : की रहत... मंत्री जीक दर्शनक लेल आयल छी।

आगंतुक-2 : औजी, अहूँ सब हद्दै करैत छी। मंत्रीजी एखन सुतले छथि आ आहाँ सब आबि कऽ लाईन लगा देलौं।

आगंतुक-1 : की कयल जाय। मंत्री सब आई-काल्हुक भगवान छथि आ भगवानक दर्शन के नई करऽ चाहत।

आगंतुक-2 : आ... हे... आहाँ जँ चाही तऽ हमरा लोकनि के सबसँ पहिने दर्शन भऽ सकैत अछि।

आगंतुक-2 : औजी हमर दिमाग जूनि खराब करू। एक तऽ ई सूटकेस...। जानि नहि कतऽ सँ आबि गेल...। एना बाहर मे देखथीन्ह तऽ मेम साहेब जे तमसैथिन....।

आगंतुक-1 : सूटकेस...।

आगंतुक-2 : हँ यौ... सूटकेस... देखै नई छियै...। ओतऽ बरंडा पर राखल छै।

आगंतुक-1 : हूँऽऽ... मामला किछु गड़बड़ अछि...। सिपाही जी... ई ककर सूटकेस छैक ?

आगंतुक-2 : औजी... से जे बूझल रहैत तऽ हमर दिमाग कियैक खराब भेल रहैत।

आगंतुक-2 : अई मे छै की सिपाही जी?

आगंतुक-2 : औ आहाँ प्रचंड बूड़ि छी। जखन हमरा इयह नहि बूझल अछि जे ई ककर छैक तखन हम ई कोना बुझबै जे एहि मे छै की से?

आगंतुक-2 : *(आग.-1 सँ)* यौ भाई साहेब... हमारा तऽ डऽर लागि रहल अछि।

आगंतुक-1 : डऽर...? से कियै यौ?

आगंतुक-2 : हेऽ... अईमे क्यो बऽम-तम ने राखि गेल हो।

आगंतुक-1 : बऽम...? नै-नै... अईमे बम नहि भऽ सकैत अछि...। औ जी एना क्यो बम कियैक रखतैक ओपेन मे...? सेऽ रहितैक तऽ बाहरे सँ बम फेकि कऽ भागि गेल रहितैक।... हेयौ... हमरा हिसाबसँ अहिमे रुपैया भरल छैक।

आगंतुक-2 : रुपैया...? आ सूटकेस मे...?

आगंतुक-1 : हँ यौ... हमारा हिसाबे अईमे पाँच-सात लाखसँ कम रुपैया नहि हएबाक चाही।

आगंतुक-2 : आहाँ तऽ हद्दे करैत छी। औ एना सूटकेसमे रुपैया...

आगंतुक-1 : आहाँ के आश्चर्य कियै होइत अछि ? आई-काल्हि सूटके. सिया घूस खूब चललैयै। पहिने नुका-चोरा कऽ देब-लेब छलैक... आ आब खुल्लम-खुल्ला सूटकेसमे...। जरूर कोनों बड़का हसामी मंत्रीजी के घूस दऽ गेल हेतैन।

आगंतुक-2 : हँ यौ आहाँक गप्प तऽ किछु-किछु बुझा रहल अछि... मुदा एना ई सूटकेस बाहर कियै राखल रहतै ?

आगंतुक-1 : यौ मंत्रीजी सबके ततेक ने सूटकेस अबैत रहैत छैन जे गलतीसँ ओही सब मेहक एकटा बाहरे छूटि गेल हैतेक।

आगंतुक-2 : हँ... ई भऽ सकैत अछि...। *(मुद्रा परिवर्तन)*... मुदा ई सरासर बईमानी थीक जनताक संग... धोखेबाजी थीक...। मंत्रीके किछु मोरल रखबाक चाही।

आगंतुक-1 : औजी कतऽ छी...। मोरल नामक चीज सौंसे देशमे कतहु कि रहि गेल छैक आब?

आगंतुक-2 : मुदा हम एकरा बर्दाश्त नहि कऽ सकैत छी। हम एखने जाई छी पुलिसमे रिपोर्ट करऽ लेल।

आगंतुक-1 : पुलिस!... औ पुलिस कि आहाँक ससूर थीक जे आहाँ कहबै तऽ दौड़ल चल आयत...। यौ पुलिसो तऽ अही मंत्री सबहक अंडरमे छैक...। उनटे अँहीं के बान्हि देत आ छौ मास जेलमे सड़ा देत।

आगंतुक-2 : हँ...सेहो ठीके कहै छी...। तखन कयल की जाय?

आगंतुक-1 : सुनु... विपक्षक जे नेता छथि फुलकुमारी देवी हुनका सँ

हमरा परिचय अछि...। चलू हुनके कहैत छियैहि। ओ किछु ने किछु अवश्ये करतीह।

आगंतुक-2 : हँ चलू। *(दूनूक प्रस्थान)*

पाछूमे कोलाहल। इन्क्लाब-जिन्दाबाद...। मंत्री बईमान छथि... बईमान छथि। सूटकेस संस्कृति...नहि चलत, नहि चलत। सरकार... इस्तीफा दिए, इस्तीफा दिए...

विपक्षक नेता/नेत्री फूलकुमारी देवीक संग 4-5 टा कार्यकर्त्ताक नारा लगबैत प्रवेश। संगहि तुरंत प्रेस रिपोर्टर, फोटोग्राफरक प्रवेश। नारा जारी अछि।

मंत्री आ हुनक पत्नी आँखि मीड़ैत घरसँ बहराइत छथि)

मंत्री : ई की हंगामा भऽ रहल अछि। दरबान... दरबान... ई कथीक शोर-गुल अछि?

फूलकुमारी : शोरगुल नहि। आई आहाँ रंगल हाथ पकड़ल गेलहुँ आब अहाँक गप्प कोन जे अहाँक सरकार जनताक कटघरामे ठाढ़ अछि।

(नारा....)

मंत्री : फुलकुम्मारि देवी, अहाँ ई की नाराबाजी करा रहल छी? अहाँ की सौंसे राज्यस्तरपर लोक जनैत अछि जे हम सच्चा हृदयसँ जनताक सेवक छी...। स्पष्ट एवं ईमानदार व्यक्ति छी।

फूलकुमारी : हँ यौ मिस्टर क्लीन। आई धरि तऽ अहाँ अपन खूब ईमानदार नेताक छवि बनैबामे सफल रहलहुँ, मुदा आई ई सूटकेस अहाँक सब ईमानदारीक पर्दाफाश कऽ देलक। आब जनता बूझत जे अहाँ कम्मल ओढ़ि कऽ घी पीबयवलामे सँ छी।

मंत्री : सूटकेस...?

पत्नी : ई सूटकेस...।

फूलकुमारी : बाह...बाह...बाह...। केहन अनजान बनि रहल छथि दूनू गोटे।

मंत्री : दरबान... दरबान...।

दरबान-2 : जी सरकार।

मंत्री : ई सूटकेस ककर छैक? एतय ई कहाँ सँ आयल?

दरबान-2 : जी... हमरा किछु नई बूझल अछि।

फूलकुमारी : बाह... आब अपन गलतीके दरबानपर थोपय चाहैत छी।

मंत्री : गलती...। हमर गलती?

फूलकुमारी : और ने तऽ की। रातिमे ई दस लाखसँ भरल सूटकेस अंदर राखब बिसरि जायब गलती नहि तऽ और की?

मंत्री : सूटकेस...? दस लाख...? देखू फूलकुमारी देवी! हमरा एहि सूटकेसक विषयमे किछु नहि बूझल अछि।

फूलकुमारी : भाई लोकनि! धरना दऽ दिय एहि सूटकेसक चारू दिस। आ जा धरि हाईकोर्टक चीफ जस्टिस आ सी.बी.आई. एतय नहि आओत ता धरि हमरा लोकनि केर ई सूटकेस के छोड़बाक नहि अछि।

मंत्री : एक मिनट, एक मिनट...। देखू एतेक लोकक जानके हाथमे जूनि लियऽ। एहि सूटकेसक विषयमे ककरो किछु ज्ञात नहि अछि। भऽ सकैत अछि एहिमे कोनो विदेशी ताकतक हाथ हो। बम सेहो भऽ सकैत अछि।

(नारा : बम नहि.... रुपैया अछि, रुपैया अछि)

शांत होई जाइ जाऊ....शांत। *(पत्नी सँ)* अँहूँ गेट के बाहर चलू। हमरा बैलेस्टिक एक्सपर्ट आ पुलिस के बजबऽ दिय। *(जाकऽ, फोन करैत छथि। संग बैलेस्टिक एक्सपर्ट आ 4-5 टा पुलिसियाक प्रवेश। Ballastic Expert Examination करैत अछि। पुलिस सब अपन पोजीशन लैत अछि। Ballastic Expert बम नहि हएबाक संकेत दैत अछि)*

(नारा : बम नहि.... रुपैया अछि, रुपैया अछि। सरकार... इस्तीफा दिए, इस्तीफा दिए। मुख्य न्यायाधीश के...बजाओल जाय, बजाओल जाय सब क्यो घूसि कय सूटकेसक चारूकात धरना दैत छैथि मंत्रीसँ प्रेस रिपोर्टर)

प्रेस रिपो.-1 : विपक्षक दावा अछि जे एहि सूटकेसमे रुपैया अछि। अहाँक रिएक्शन?

मंत्री : औजी एहि सूटकेसक विषयमे हमरा किछु नई बूझल अछि।

प्रेस रिपो.-2 : एहि सूटकेसक विषयमे नहि बूझल अछि... माने दोसर सब सूटकेसक विषयमे बूझल हएत।

मंत्री : देखू! हम एखन बहुत परेशान छी। अहाँ लोकनिक कोनो प्रश्नक जबाब नहि दऽ सकैत छी।

प्रेस रिपो.-1 : *(मंत्रीक पत्नीसँ)* मैडम! अँहीं किछु कहू एहि सूटकेसक विषयमे।

मंत्री : हिनकासँ कियैक पूछैत छियन्हि। कहलहुँ ने जे एखन हमरा लोकनि कोनो प्रश्नक जवाब नहि देब।

प्रेस रिपो.-2 : हिनकासँ एहि लेल पूछैत छियन्हि जे सूटकेस सबके सरिया-सरिया कऽ तऽ मैडमे ने हिसाब सँ रखैत हैतीह।

मंत्री : देखू! आब आहाँ सब हदसँ आगाँ बढ़ि रहल छी।

(दूनू प्रेसवला अपन कनहा उचकऽबैत विपक्षक नेता, फूल कुमारी देवी दिश बढ़ैत छथि)

प्रेस रिपो.-1 : मैडम को अहाँक दावा अछि जे एहिमे रूपैये छैक?

फूलकुमारी : हँऽऽ...। दावा की विश्वास अछि। दस लाखसँ कम रूपैया नहि।

प्रेस रिपो.-2 : से कोना बूझलियैक जे एहिमे दस लाख रुपैया छैक?

प्रेस रिपो.-1 : आ...हा...हा...से नहि बुझलियैक। जखन मैडम सरकारमे छलीह तऽ हिनको ने सूटकेस भेटैत रहैन। तैं अन्दाज छन्हि।

फुलकुमारी. : देखू! अहाँ लोकनि हमरापर लांछन लगा रहल छी। जे सामने अछि तकरा जनता लऽग उजागर करू। प्रेसक तऽ इयह काज छैक।

प्रेस. 2 : मैडम! तमसाऊ जूनि। दरअसल स्त्रीगण हएबाक नाते अहाँ के एहि बातक अंदाज हएबाक चाही जे एहिमे कतेक साड़ी, कतेक पेटीकोट आ कतेक ब्लाउज हएबाक चाही। मुदा...।

(ताधरि मुख्यमंत्रीक प्रवेश। नारा—मुख्यमंत्री—मुर्दाबाद, सरकार इस्तीफा दिए-2। सूटकेसमे रुपैया अछि-2 कतेक अछि-2, दस लाख, दस लाख प्रेस रिपोर्टर-1, मुख्यमंत्री दिश)

प्रेस रिपो.-1 : सर! विपक्षक दावा अछि जे एहि सूटकेसमे घूसक रुपैया अछि। आ एकरा चीफ जस्टिस एवं सी.बी.आई.

ऑफीसरक सोझाँमे खोलल जाय। अपनेक विचार...?

मुख्यमंत्री : एखन किछु नहि कहब। पाँच मिनटक बाद अहाँ सब सँ गप करब।

प्रेस रिपो.-2 : पाँच मिनटमे ई रूपैया सब कि झिटुकामे बदलि जायत?

(मुख्यमंत्री घूरैत मंत्री दिस जाइत छथि)

मुख्यमंत्री : ई कोन काज अहाँ कयलहुँ? एना क्यो रूपैयासँ भरल सूटकेस बाहरमे रखैत अछि?

मंत्री : ओह! अहूँ सैह कहि रहल छी। वस्तुतः हमरा एहि सूटकेसक विषयमे किछु नहि बूझल अछि।

मुख्यमंत्री : देखू, हमरा जूनि चराऊ। कम सँ कम हमरा सँ तऽ...। अपन तऽ जे हाल कैलहुँ से अलग...। एहि बातपर तऽ हमर सरकार खसि पड़त। जनताके अपन मुँह नहि देखा सकैत छियैक। ...किछु ने किछु तऽ करै पड़त।

मंत्री : जी किछु करू। हम तऽ पागल भेल जा रहल छी।

मुख्यमंत्री : ठहरू! हमरा दिल्ली सँ गप कर' दिअऽ। भीतर बला फोन कतऽ अछि?

(मंत्रीक स्त्री संग मु. मंत्रीक प्रस्थान नारा जारी)

समाचार

''ये आकाशवाणी है। अब एक विशेष समाचार सुनिए। राज्य के एक मंत्री के आवास पर एक सूटकेस पाया गया है। विपक्ष का दावा है कि इस सू. टकेस मे दस लाख रूपैया है जिसे किसी बड़े व्यापारी ने मंत्री को रिश्वत के रूप मे दिया है। विपक्ष इस सूटकेस का राज्य के उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश एवं सी.बी.आई. के बड़े पदाधिकारियों द्वारा खुलवाने की माँग कर रहा है। राज्य के मुख्यमंत्री भी मंत्री के निवास स्थान पर पहुँच गए हैं। सारे शहर में तनाव का वातावरण बन गया है। मंत्री के आवास के इर्द-गिर्द धारा 144 लागू कर दिया गया है। राज्य के पुलिस आयुक्त के अनुसार स्थिति तनावपूर्ण परंतु नियंत्रण में है। विशेष समाचार समाप्त हुआ।''

(मुख्यमंत्री बाहर आबि)

मुख्यमंत्री : आई.जी. साहेब, मुँह की तकैत छी। छिन, लीअऽ सूटकेस। झूठ-मूठ के हल्ला मचौने हछि।

(नाराक पुनरावृत्ति पुलिस आ कार्यकर्ता सूटकेस छीना-झपटी करैत छथि। ताबेतमे एकटा देहातीक प्रवेश। कान पर जनेऊ, मुँहमे दातमनि, हाथमे लोटा, एकटा झोरा)

दरबान-2 : अरे मामा जी अहाँ एतऽ।

मामा(देहाती) : हँ रौ! हम एतय। सब ठीक-ठाक किने? आ ई हल्ला-गुल्ला कथीक छैक?

दरबान-2 : अरे की कहू। आई भोरे सँ...। कहाँ सँ ई सूटकेस।

मामा : सूटकेस...!

दरबान-2 : हँ... हँ... ई सूटकेस...। सौंसे देशमे हंगामा करा देलक अछि।

मामा : हंगामा! *(दौड़ैत छथि)* अरे, अरे हमर ई सूटकेस टूटि जैत। हे...हे... एना कियैक घिच्चम-तीरी कऽ रहल छी?

आई.जी. : अहाँक सूटकेस!

मंत्रीक पत्नी : भैया! ई अहाँक सूटकेस।

मामा : हँ गे बहीन। ई हम्मर सूटकेस अछि।

फूलकुमारी : बाह... बाह... की बढ़ियां प्लॉट...। मुख्यमंत्री जी अहाँ तऽ दिल्ली फोन करय गेल रही कि एहि नाटकक योजना बनवऽ...?

मुख्यमंत्री : नाटक? की बजैत छी।

फूलकुमारी : नाटक नहि तऽ की। की बढ़ियाँ नटकिया चुनलौं हैं। मामला के रफा-दफा करऽ चौहत छी से नहि चलत।

(नारा : नहि चलत, नहि चलत)

मंत्रीक पत्नी : यै, ई हम्मर भाई छथि।

फूलकुमारी : सब तऽ अहाँके भाइये छथि। हमहूँ तऽ अहाँक बहीने छी। मुदा ई नाटकबाजी नहि चलत।

मामा : हे यै देवी जी! अहाँ के ई नाटक बुझा रहल अछि। ई हम्मर सूटकेस पर अहाँ सब बिढ़नी जकाँ लुधकल छी। ...हे यै! हमारा कोनो आजी-गुजी जूनि बूझू। अपना इलाकामे जेम्हरे

जाइत छी लोक सब झुकि-झुकि कऽ प्रणाम करैत अछि। आ हे हम्मर घरवाली अहाँ सँ हजारगुना सुन्नरि छथि। आरो टेलरीन-डेलरिन-फेलरिन साड़ी पहिरैत छथि। आ की कहै छै ने अँहीं जकाँ ठोर मे ललका-हरियरका पतलखड़ी रगड़ैत छथि।

फूलकुमारी : अहाँ हमर बेजती कऽ रहल छी।

(नारा : नौटंकीबाज, मुर्दाबाद, मुर्दाबाद)

मामा : ईह! मुर्दाबाद कहला सँ जेना हम मरिये गेलहुँ।

फूलकुमारी : मुख्यमंत्री जी... अपन एहि नौटंकिया के सम्हारू। आ हमर सभक माँग पूरा करू। हाई कोर्टक चीफ जस्टिस के आ सी.बी.आई. ऑफीसर के बजाऊ, तखने ई सूटकेस खोलऽ देब।

मामा : बहीन हे बहीन। ई सब हमर सूटकेस के नहि छोड़तौ। तोड़ि देत हमर सूटकेस।

मंत्रीक पत्नी : शांत रहू भैया, शांत रहू। सब ठीक भऽ जैतैक।

मंत्री : मुदा अहाँक ई सूटकेस एतऽ कोना आयल?

मामा : की कहू यौ...

फूलकुमारी : आब एकटा नव कहानी बनत की? हमरा सबके किछु नहि सुनबाक अछि।

मामा : नहि सुनबाक अछि तऽ जूनि सुनू। कानमे आंगुर धऽ लिअऽ मुदा हम तऽ बजबे करब। जोर-जोर सँ बाजब।

आई.जी. : मैडम, कने हमर रिक्वेस्ट सुनू। हिनकर गप्प तऽ सूनिलिअऽ प्लीज!

फूलकुमारी : ठीक छै। होऊ... नऽव कहानी सुनाऊ।

मामा : ई गप नै छै... सच छैक।

मंत्री : ओह, आब बाजू ने यौ सार महोदय... जे ई सूटकेस...

मामा : सैह तऽ कहैत छी।... पँचबजिया भोरका गाड़ीसँ उतरि कऽ सोझे एतय अयलहुँ। खचरहबा दरबानके लाख कहलियैक जे भाई हम मंत्री जीक सार छियैन मुदा ओ कियैक मान. त। कहलक जे आठ बजे आऊ। मंत्रीजी जखन सूति कऽ

उठता तखन गप हएत...। औजी की कहू...। हमरा ततेक जोर सँ लागल छल...।

आई.जी. : लागल छल? की लागल छल?

मामा : औजी झाड़ा आर की लागल रहत। आब ई सूटकेस लऽ कऽ हम कोना जइतहुँ कतेक हाथ-पैर जोड़लियैक तऽ सूटकेस राखयक लेल तैयार भऽ गेल आ हम चलि गेलहुँ गंगा कात...। आ... हा...हा... मोन प्रसन्न भऽ गेल। मुदा एतय अबैत छी तऽ देखैत छी जे हमर सूटकेस लऽ कऽ घीचा-तीरी भऽ रहल अछि।

फूलकुमारी : बाह... बाह... ई तऽ सिनेमाक कहानी भऽ गेल। बाह रे नाटकबाज। जँ हमर माँग पूरा नहि कयल गेल तऽ हमरा लोकनि एतहि भूख हड़ताल करब।

मुख्यमंत्री : आई.जी. साहेब, देखैत की छी... करू लाठी चार्ज। ई गुण्डागर्दी हम बर्दाश्त नहि कऽ सकैत छी।

फूलकुमारी : हँ... हँ... चलाऊ लाठी, फोड़ि दिअऽ हमर सभक कप्पार, आ कऽ दिअऽ मायला के रफा-दफा... हड़पि लिअऽ, दस लाख टाका। मुदा जाधरि चीफ जस्टिस आ सी.बी.आई. नहि आओत हमरा लोकनि एहि सूटकेस के छोड़ब नहि।

मामा : *(कनैत)* बहीन गे बहीन। तोड़ि देत ई सब हमर सूटकेस।

आई.जी. : *(मामा के डँटैत)* औजी अहाँ कने शान्त रहू। *(मुख्यमंत्री लऽग जाकऽ)* सर! लाठी चार्ज ठीक नहि हएत। हमरा कने सिचुएशन के देखऽ दिअऽ। *(फूलकुमारी देवी लऽग जा कऽ)* मैडम! हमर रिक्वेस्ट अछि जे कने शान्त मोन सँ हमर बात सूनू।

फुल. : कहू।

आई.जी. : जखन ई कहैत छथि जे हिनकर सूटकेस छनि तऽ एकर चाभी सेहो हिनका लऽग हेतन्हि।

मामा : हँ यौ चाभी किएक ने रहत। हैयेह जनऊमे बान्हल अछि।

आई.जी. : हिनका सूटकेस खोलऽ देल जाय। देखियौन तऽ की छैक एहि मे। हम वादा करैत छी जे जों सूटकेसमे रूपैया वा

तेहन कोनो चीज हैत तऽ हम सूटकेस के एम्हर सँ ओम्हर नहि होमय देब।

फूलकुमारी : अहाँ बचन दैत छी।

आई.जी. : जी...जी।

फूलकुमारी : *(अपन कार्यकर्ता सबसँ गप्प करैत छथि।)* ठीक छै। औ नौटंकीबाज! खोलू सूटकेस।

मामा : हें... हें... हें... ई भेल ने बात। *(बैसिकय खौलैत छथि अपन दतमनि आ लोटा आई.जी. के पकड़बैत)* कने धरू तऽ ओ दारोगा जी।

एक सिपाही : दारोगा नहि... आई.जी. साहेब, आई.जी. साहेब।

मामा : औजी साहेब। ई की दरोगो सँ पैघ हाकिम होइ छै।

सिपाही : बहुत पैघ।

मामा : माफ करब औजी साहेब, गलती सँ दरोगा कहि देलहुँ। हे आब हम सूटकेस खोलैत छी। *(खोलैत छथि)*
हे एहिमे अछि मडुआक आँटा। बहीन लेल अनलियैक अछि। ओकरा बड़ नीक लगैत छैक मडुआ आँटाक रोटी। आ ई कुम्हरौड़ी। आ हे ई शुद्ध घी, ई अपना बाड़ीक ओल, ई हमर धोती, ई हमर अंगा, आर हे देखू....आर किछु नहि।

फोटोग्राफर : मामा जी

मामा : रौ तों हमरा मामा जी किएक कहलैं। हम कि तोहर मायक भाई लगैत छियौ जे हमरा मामाजी कहलैं।

दोसर फोटो : ओहो गलती भऽ गेलै। काकाजी... दादा जी...। भाईजी कने पोज दिअऽ।

मामा : पोज दिअऽ। हम एहिमे सँ किछु नहि देब। ई सबटा हमर बहीनक लेल अछि।

फोटोग्राफर : ओफ्फो। हम आहाँक फोटो खीचब। एहि सूटकेसक संगें पोज दियौक।

मामा : फोटो। बाह... बाह... हे लिअऽ।
(पोज दैत छथि। फ्लैश सब चमकि उठैत अछि। प्रकाश बंद होइत अछि।)

●

मैथिली फिल्म

(मंचपर एकटा टेबुल, दू टा कुर्सी। प्रौड्यूसर आ निर्देशक बैसल छथि आ' किछु कागज राखल अछि।)

प्रोड्यूसर : डायरेक्टर साहब...

निर्देशक : जी श्रीमान...

प्रोड्यूसर : देखू, अहीं सभक जोरपर अपन पाइ लगाकऽ हम पहिल बेर मैथिली फिल्म बना रहल छी। ओना तऽ पहिनहुँ एक-आधटा फिल्म मैथिलीमे बनि चुकल लछि परन्च ओ फिल्म सभ चलन नहि।

निर्देशक : जी...

प्रोड्यूसर : कारण जनैत छी एकर? कारण थिक कलाकारक चुनाव ठीक सँ नहि केने छलाह फिल्म बनौनिहार या तऽ नामी हिंदी, बंगाली कलाकार सभकेँ लेलनि या अपन-अपन घरक लोक वेद के ठाढ कऽ देलनि...। आ' किछु-किछु एहने विचार अहूँक अछि।

निर्देशक : जी दरअसल मैथिल कलाकार...

प्रोड्यूसर : की मैथिल कलाकार? की मिथिलामे कलाकारक कमी अछि?

निर्देशक : जी से गप्प नहि। असल मे ततेत कलाकार सभ छथि जे चुनाव करब...

प्रोड्यूसर : मोश्किल हैत। सैह ने?...। किछु मोश्किल नहि हैत। देखू...हम अहाँकेँ रंगमंचसँ उठा कऽ फिल्मक निर्देशक बना रहल छी...हम जेना कहब तहिना कर', पड़त अन्यथा...

निर्देशक : जी-जी श्रीमान्

प्रोड्यूसर : गुड...देखू अभिनयक अनुभव हमरा नहि अछि...ताहि हेतु

अहाँके ँ इंटरव्यूमे बैसेने छी। कलाकारगणक चुनाव ठीकसँ होयबाक चाही।...ओना तऽ कतेको व्यक्ति कतेको मिनिस्टर, अफसरसभ अपन अपन कैण्डिडेट लेल हमरा एप्रोज कऽ चुकल छथि। परन्च,...आई वान्ट एकदम सँ रीयल आर्टिस्ट होइ...इंटरव्यू स्टार्ट करू।

निर्देशक : जी...जी श्रीमान...*(घंटी बजबैत छथि चपरासीक प्रवेश)* सुन...पहिने बच्ची जे आयल छथि ओकरा बजौ...*(प्रोड्यूसर सँ)* श्रीमान् पहिने बच्चा कलाकार सँ आरंभ करैत छी...

प्रोड्यूसर : ठीक अछि...*(एकटा 5-6 वर्षक बच्चीक संग मायक प्रवेश)* वाह-वाह बच्ची तऽ बड़ सुन्नरि अछि...ब्युटीफुल... भेरी गुड...डायरेक्टर साहेब बच्चीक माय सेहो बड़ सुन्नरि छथि...दूनू के ँ लऽ लिय'।

निर्देशक : श्रीमान्...एक्टींग?

प्रोड्यूसर : हँ हँ...ठीक कहैत छी। अच्छा अहाँ इंटरव्यू लिय'।

निर्देशक : *(उठि कऽ बच्ची लग अबैत छथि)* वाह। वास्तव मे बच्ची बड़ सुन्नरि अछि।

माय : जी...एक्टींग सेहो बड़ सुन्नर करैत अछि...स्कूलमे कतेको प्राइज भेट चुकल छै। आब तँ अपने एकटा सिनेमामे ल'लियौ जे बस सभक कान काटि कऽ राखि देत ई छौंड़ी...

निर्देशक : बाऊ...अहाँक नाम की अछि?

बच्ची : गुगुलिया?

निर्देशक : गुलगुलिया?

बच्ची : हँ हमर बाबूजी हमरा गुलगुलिया कहैत छथि।

प्रोड्यूसर : अच्छा...अच्छा...अहाँक असली नाम की अछि?

बच्ची : कुजरनी...

प्रोड्यूसर आ निर्देशिक (एके संगे) : कुजरनी?

निर्देशक : हँ– हमरा बाबा कुजरनी कहैत छथि...

निर्देशक : अफ्फो...यै बहिन दाई अहीं कहू जे अहाँक बेटीक नाम की अछि?

प्रोड्यूसर : हे यौ, माय सँ किये पुछैत छियै? सनीमा मे हम जेबै?

हमरा सँ ने पूछू। हमर नाम अछि फूलकुमारी...

निर्देशक : वाह...वाह। बड़ सुन्नर नाम। अच्छा...फूलकुमारी...बिस्कुट डिब्बा छै। एहि मे सँ बिस्कुट...ल' कऽ अहाँके ँ कुकुर ...माने कुत्ता-कुत्ता केँ खुएबाक अछि। एना कऽ...आह...आह ...आह...राजा ले बिस्कुट खो...

फुलकुमारी : हमरा कियैक ठकैत छी कुकुर कतहु बिस्कुट खाई छै?

प्रोड्यूसर : खाइ छै...खाइ छै...फुलकुमारी सिनेमा के कुकुर बिस्कुट खाइ छै। अच्छा...आब कहियौ जेना डाइरेक्टर साहेब कहैत छथि...राजा...राजा...ले बिस्कुट खो।

फुलकुमारी : ठीक छै...लेकिन कुकुर कहाँ छै।

निर्देशक : कुकुर?

फुलकुमारी : हँ कुकुर कहाँ छै?

प्रोड्यूसर : ठीक कहैत अछि ई बच्ची। कुकुर कतऽ अछि? बिना कुकुर के ँ ई एक्टींग कोना करत?

निर्देशक : जी कुकुर तऽ नहि अछि।

प्रोड्यूसर : हूँ...अच्छा...एकटा काज करू अही ँ कुकुर बनि जाऊ।

निर्देशक : जी?

प्रोड्यूसर : हँ-हँ— जल्दी करू...समय बर्बाद जुनि करू...अरे फिल्म लाइनमे टाइमक बड़ इम्पोर्टेन्स छै...चलू बनू...*(निर्देशक कुकुर बनैत छथि)*...हँ फुलकुमारी आब कुकुर के बिस्कुट खुअबियौ...

निर्देशक : ईह...ई कुकुर छै? ई तऽ आदमी छै। एकरा हम बिस्कुट कियै देबै। हम अपने नहि खा लेब जे। *(बिस्कुल खाय लगैत अछि। प्रोड्यूसर फूलकुमारी...फूलकुमारी बजैत कुर्सी सँ उठैत छथि। फूलकुमारी बिस्कुटक डिब्बा नेने बाहर पड़ा जाइत अछि)*...

प्रोड्यूसर : ओफ्फ...पूरा बिस्कुटक डिब्बा लऽ-कऽ भागि गेल ई-छौड़ी यै मैडम अहाँक बेटी...

माय : जाय दियौ ओकरा...एकटा बात कहू...हमरे सिनेमा मे लऽ ने लिय।

प्रोड्यूसर : अहाँके...तखन तऽ अहाँक लेल बिस्कुटक टीन आन’ पड़त अहाँक इंटरव्यू लेल।

माय : जी...?

प्रोड्यूसर : जी अहाँ जा सकैत छी। हमरा लग बिस्कुटक टीन खरीदबाक पाइ नहि अछि। नमस्कार। *(माय मुँह बनबैत चलि जाइत छथि। प्रोड्यूसर कुर्सी पर बेसैत)* ओफ्फ...प्रथमे ग्रासे मक्षिका पातः!...

निर्देशक : श्रीमान् आब हम मनुक्ख बनि जाऊ?

प्रोड्यूसर : हँ हँ बनि जाऊ...बनि जाऊ...(निर्देशक उठैत छथि आ डाड़-हाथ सोझ करैस कुर्सी पर बैसि जाइत छथि। प्रोड्यूसर कागत उनटाबैत...चपरासी चपरासी-*(चपरासीक प्रवेश)* सुन...अइ मे...कोनो पंडित जी आयल छथि हुनका बजो। *(चपरासीक प्रस्थान। पंडित जीक प्रवेश)*

पंडित : नमस्कार महोदय नमस्कार...

प्रोड्यूसर : आयल जाओ पंडित जी...आयल जाओ...। अपने सेहो सिनेमामे काज करऽ चाहैत छी?

पंडित : काज...? औ महोदय हम तऽ सनीमामे भूमिका करऽ चाहैत छी। गामक कतेको नाटकमे भूमिका कऽ चुकल छी ई बीच मे काज कतऽ सँ आबि गेल?

निर्देशक : सैह-सैह...अच्छा भूमिका ई छैक जे...मानि लिय’ अपने एक विद्वान पंडित छी।

पंडित : मानि लिय’...? औ मानि किएक लिअ? हम तऽ विद्वान पंडित छी हे...

निर्देशक : हँ-हँ से तऽ छीहे...परन्च, पहिने भूमिका तऽ सुनि लिय’। अहाँ एकटा विद्वान पंडित छी परन्च, अहाँक बालक बदचलन अछि...

पंडित : खबरदार खबरदार जे हमर बालक के ँ बदचलन कहल ओकरा सन सूशील तऽ सौंसे मिथिलामे क्यो नहि भेटत।

प्रोड्यूसर : ओफ्फो पंडित जी...ई अहाँक बालकक विषयमे नहि कहलनि अछि...

पंडित : औजी, अहाँ तऽ हद्दे करैत छी। ई तऽ-साफ कहलनि अछि जे हमर बालक बदचलन अछि...

निर्देशक : शांत होऊ...पंडितजी शांत होऊ। हम ई कहल जे सिनेमा मे जे अहाँक बालकक भूमिका करत से बदचलन रहत..

पंडित : रामक नाम लिय...औ महोदय जे बालके बदचलन अछि तकरा अहाँ सनीमा मे लेवे किएक करैत छी?...कोनो सुशील बालक के लिय'।

निर्देशक : पंडितजी अहाँ हद करैत छी...औजी ई सिनेमाक कहानीक डिमान्ड छै। कहानी एना छै जे एकटा विद्वान पंडित छथि आ हुनक बालक बदचलन...।

पंडित : पंडितक बालक बदचलन? बदलि दियौ अपन कहानी केँ आ...एना राखू...एकटा विद्वान पंडित छथि...हमरा सन आ हुनक बालक परम सुशील छथि...हमर बालक सन...

प्रोड्यूसर : औ पंडित जी...सिनेमा मे जँ काज करबाक हो त' जेना डायरेक्टर साहेब कहैत छथि तेना करू...अपन उपदेश नहि दियऽ...। बाजू करबाक अछि कि नहि?

पंडित : जेहन अपने लोकनिक विचार हम तऽ मात्र सलाह देल...

प्रोड्यूसर : *(तमसाइत)* अपन सलाह अपने लग राखू...मैथिलीक लेल सलाह देब सभसँ असान काज छै से हमरा बूझल अछि... होऊ डायरेक्टर साहेब...हिनका डायलॉग दियौन।

निर्देशक : *(कागत दैत)*...डायलाग अछि...एकरा एक्टींगक संग बाजू...

पंडित : *(पढ़िक')* परन्त एहि मे तऽ बालक सेहो अछि... जकरा ई समाद हम कहबै...ओकरा बजाऊ *(प्रोड्यूसर आ निर्देशक एक दोसर दिस तकैत अछि...फेर अनमनस्क भाव सँ निर्देशक पंडित के सोंझा ठार भऽ आइत छथि)*

निर्देशक : मानि लिय' जे हम बालक छी...होऊ आब एक्टींग करू...

पंडित : ओ महोदय, अपने तऽ कैकटा बालकक पिता...छी...अपने बालक कोना भऽ सकैत छी...

निर्देशक : ओफ्फ माई गौड...कतऽ गेलाह रामायण आ महाभारत रचनिहार? हुनका सभकेँ एहेक किएक नहि भेटलैन हमरे

कप्पार पर बथा रहल छथि...औ पंडित जी...

पंडित : बूझि गेल...बूझि गेल...महोदय आब नीक जँका बूझि गेल...अपने तात्कालिक बालकक भूमिका करब...असलमे क्यो आओर एहि भूमिकामे आओत...

प्रोड्यूसर : जी अपने बड़ बुझनुक छी...*(जोर सँ)* होउ आब शुरू भऽ जाऊ...

पंडित : वेश...नालायक...बदचलन...बेहूदा...तों हमर नाक कटबा कऽ राखि देलैं। चारु दिस थू-थू भऽ रहल अछि...हम कतहुं मुँह देखेबाक जोगरक नहि रहलहुँ।

निर्देशक : हमरा क्षमा कऽ दिय बाबूजी...

पंडित : क्षमा क' दिय'...? हम कोनो हालतमे क्षमा नहि कऽ सकैत छी। पहिने हमर जे नाक कटि गेल अछि तकरा आनि कऽ जोड़ नहि तऽ आई तोहर खाल खीच कऽ राखि देबौ...नालायक...बेहूदा *(आ छड़ी सँ तर-तर मारऽ लगैत अछि निर्देशक जोर सँ चिचियाइत छथि 'बचाऊ...प्रोडयू-सर साहेब...बचाऊ...। प्रोड्यूसर उठि कऽ पंडित के ँ पकड़ैत छथि...फेर डायरेक्टर लग जाइत छथि...)*

पंडित : *(हँसैत)* हा-हा-हा- पसिन्न भेल हमर भूमिका...?

प्रोड्यूसर : चलि जाऊ...चलि जाऊ...आई से गेट आऊट...

पंडित : अरे-रे...अपने एना किएक...?

प्रोड्यूसर : ऐना किएक...अहाँ जाइत छी की नहि...? चलू...भागू *(धक्का दऽ कऽ बाहार करैत छथि)*

निर्देशक : *(कनैत)* हम बाज अलयहुं एहन डायरेक्टरी सँ...हम नहि बनायब मैथिली फिल्म...हमरा आज्ञा दिय...

प्रोड्यूसर : की आज्ञा दिय? औ हमर जे एतेक पाई लागि चुकल अछि तकर की हैत...अहाँ जे आईं दू मास सँ हमरा पाई सँ हूड़ि रहल छी तकर की हैत?...देखू...यहीं सभक कहला पर हम मैथिली फिल्म बना रहल-छी...धैर्य राखू...देखू...मैथिली, मैथिलक लेल जखने किछु करऽ चाहब तऽ कष्ट हेबे करत. ..*(उठि कऽ डायरेक्टर पीठ पर हाथ दैत छथि कि अए-आह*

कर लगैत छथि) धैर्य राखू...धैर्य राखू...चपरासी-चपरासी।

च. : जी

प्रोड्यूसर : लड़की जे आयल छथि...बजो हुनका *(चपरासीक प्रस्थान...कनेकाल मंच पर शांति)*

प्रोड्यूसर : *(जोर सँ)* चपरासी-चपरासी

च. : *(खैनी मलैत प्रवेश)* जी

प्रोड्यूसर : तोरा कहलियौ लड़की के बजाबय आ तों तमाकू रगड़ लगलै?

च. : जी ओ तऽ फैशन कऽ रहल छथि...

प्रोड्यूसर : फैशन?

च. : जी। वैह पाउडर एस्नों मुँह पर पोति रहल छथि। आ मालिक आर जे दू टा छौंड़ा आयल अछि से ओई छौड़ी दिस टुकुर-टुकूर ताकि रहल अछि–

प्रोड्यूसर : अच्छा-अच्छा जो कहुन जे ई शूटिंग नहि भऽ रहल छै जे मेक-अप कऽ रहल छथि। जो जल्दी पठा...*(चपरासी जाइत अछि ला कनेकाल मे शुशीलाक प्रवेश)*

प्रोड्यूसर : डायरेक्टर साहेब...आब मूड फ्रेस कऽ आउ इंटरव्यू लिय...हँ तऽ मिस अहाँक नाम की अछि?

शु. : शुशीला

प्रोड्यूसर : वाह– बड़ सुन्नर नाम...डायरेक्टर साहेब...

वि. : तऽ सुशीला जी...अहाँ *(हीरोइनक रोल लेल)* आयल छी?

शु. हीरोइनि नहि तऽ की हीरोइनक मायक रोल करब हम?

निर्देशक : नहि-नहि अहाँ हीरोइनक लायक छीहे...अच्छा अहाँ केँ इ देखबाक अछि जे...एकटा पार्क छै...मानि लिय जुबली पार्क...ताहिमे अहाँकेँ नाचि-नाचि कऽ ई गीत गेबाक अछि *(गाबि कऽ)* ''मोर रे अंगनमा चनन केर गछिया ताहि चढ़ि कुररय काग रे''...

शु. : छी! छी! छी! अहाँ सभ केहेन थर्ड क्लाश गीत चुनलौंह अछि...अरे...एहेन सिचुयेशनमे तऽ एहि तरहक गीत होयबाक चाही (नाचि कऽ गबैत छथि) ''तेरे मरे बीच मे कैसा है

ये बंधन अनजाना...''

निर्देशक : शुशीला दाई ई हिंदी फिल्म नहि छैक—मैथिलीक छैक। आ मैथिली मे विद्यापतिक गीत सँ बढ़ि कऽ कोन गीत भेल अछि?

शुशीला : *(मुँह बिचकाबैत)* ओह विद्यापति...यौ, विद्याक पतिक गीत होइ कि विमलाक पतिक होइ...ओई सभ सँ बढ़ियाँ...*(गाबि कऽ)* तेरे-मेरे बीच

प्रोड्यूसर : चुप भऽ ताऊ सुशीला दाई...डायरेक्टर साहेब बड़ दुःखक विषय थीक जे आई काल्हिक धीया पूता सभकेँ विद्यापतिक नाम सेहो नहि बूझल छैः...खैर, दाई ई मिथिला थीक आ हमरा सभक उद्देश्य अछि मिथिलाक सभ्यता एवं संस्कृतिक रक्षा करब...

शुशीला : संकीरीत बाप रे बाप...हम ससंकीरीत मे नहि बाजब। हमरा संसकीरीत मे कहियो 10 नंबर सँ बेसी नहि आयल।...देखू हम बहुत नाटक लेने छी...। हमरा कतेको प्राइज भेटल अछि। तै कहैत छी ई गीत राखू *(गबैत छथि)* तेरे मेरे बीच मे...।

(डायरेक्टर आ प्रोड्यूसर माथ पकड़ि कऽ बैस रहैत छथि। ओमहर सँ हीरोक भूमिकाक लेल आयल युवक सेहो इएह गीत गबैत अबैत छथि आ फेर मंच पर युवक आ शुशीला दूनू मिल कऽ गबैत छथि)

प्रोड्यूसर : स्टाप...हम कहैत छी स्टाप...

(दूनू चुप भऽ जाइत छथि)

(युवक सँ) अहाँ के छी?

युवक : हम...? हा-हा-हा। हम हीरो...हम हीरोक रोलक लेल आयल छी...आई धरि हम कतेको सिनेमा...ओह सौरी...नाटक मे हीरोक रोल कऽ चुकल छी...आशा अछि अहाँ केँ हमर एक्टींग पसिन्न पड़ल हैत?

प्रोड्यूसर : पसिन्न कि नहि पसिन्न से तऽ बादमे पहिने ई कहू जे अहाँकेँ बजौलक के?

युवक : बजौलक केँ? बजौलक ई मधुरगीत...हमरा बुझायल जे ई गीत हमरा बिन अधूरा अछि। देखू एहि सभ गीतक शूटींग ठीक सँ होऽबाक चाही।

प्रोड्यूसर : प्रोड्यूसर हम छी...डायरेक्टर ई छथि आ शूंटिग ठीक सँ हेबाक चाही तकर चिंता अहाँकेँ अछि। वाह...खैर डायरेक्टर साहेब ई आबि गेल छथि तऽ हिनको इंटरव्यू लऽ लियौन।

निर्देशक : जी बेश...(युवक सँ) देखू एहि फिल्मक हीरो एक आदर्श युवक छथि...महादेवकेर परम भक्त...ओ एहन गीतसभ नहि गबैत छथि...हीरो के एहि सिनेमामे जे गीत गेबाक छनि ओ एना छै (गाबि कऽ) उगना रे मोर कतऽ गेला...

युवक : नौनसेन्स...थर्ड क्लास गीत...एहन गीतसँ अहाँक फिल्म एक दिन नहि चलत...गीत एकदमसँ फास्ट होयबाक चाही...जेना (गाबि कऽ) हम तुम एक कमरे में बंद...

प्रोड्यूसर : ओह यू—शर्ट-अप...हे...देखू अहाँ केँ जँ हमर फिल्ममे काज करबाक विचार हो तऽ जेना डायरेक्टर कहैत छथि करूँ अन्यथा अहाँ जा सकैत छी।

युवक : ठीक छै...ठीक छै गीत यैह रहत परन्च एकर म्युजिक आ लोकेशन हम डीसाइड करब जेना उगन रे मोर...(अंग्रेजी धुन पर गबैत छथि)

प्रोड्यूसर : नहि चाही...एहन हीरो हीरोइन चलि जाऊ

हीरो : बेश...जेहन अहाँक मर्जी।

(हीरो हीरोइन एकदोसराक हाथ पकड़ि नाट्कीय मुद्रा मे)
('तेरे मेरे बीच' गीत गबैत प्रस्थान)

प्रोड्यूसर : जे अबैत अछि सभ तिलबिखनी सभ।

निर्देशक : एकोटा कलाकार पसिन्न नहि परल...वास्तममे मिथिलामे तऽ सभ कलाकारक बापे अछि—

प्रोड्यूसर : हँ से ठीके ई इंटरव्यू सँ कोनो फायदा नहि।...खैर, आओर क्यो आयल अछि की?

निर्देशक : जी एक युवक...भिलेनक रोलक लेल आयल छथि।

प्रोड्यूसर : भिलेन हा-हा-हा इ अवश्ये पसिन्न पड़त...मैथिल आ

भिलेन...दूनू एक दोसराक पर्यायवाची ई अवश्ये पसिन्न परता...बजाऊ हिनका चपरासी...चपरासी...

(चपरासीक प्रवेश)

भिलेनक रोलक लेले जे युवक आयल छथि वजो हुनका...

(चपरासीक प्रस्थान आ एक युवकक संवाद बजैत प्रवेश)

युवक : रॉकी-रॉकी...सेट्टी...कतऽ मरि गेल सभके ँ सभ...अरे आई दुबई सँ सोनाक बिस्कुट आबय बला अछि आ तों सभ आराम फरमा रहल छै नमकहराम ......सभ गलीक कुत्ता सभ...सभक सभइक खाल लेबौ...जे.के. तोरा सभके ँनश्तनायूद कऽ देतौ। हा-हा-हा- ई छल हमर एक्टींगक एक नमूना...कहू नीक लागल?

निर्देशक : औ भाई साहेब...हमर फिल्मक भिलेन एहन नहि अछि...हमर फिल्ममे स्मगलिंग नहि होइत अछि...

युवक : छी! छी! छी! बिना स्मगलिंग आ मारि पीट के कतहु सिनेमा हो...देखू आगाँ फिल्म के खूब चलेबाक हो तऽ पूरा मशाला भरू आ ई काज हमरापर छोड़ि दिय...हम कतेको ठाम एहि लेल प्राइज लैऽ चुकल छी...

प्रोड्यूसर : सुनू...सुनू...सुनू...हमर फिल्मक कहानी किछु आओर अछि जेना डायरेक्टर साहेब कहैत छथि करू...बुझल...डायरेक्टर साहेब...

निर्देशक : ई जे रोल अछि से एक पंडितक बालकक अछि आ बड़ बदचलन अछि...गाममे सभके परेशान करैत रहैत अछि...गामक युवती सभसँ छेड़ छाड़ करैत रहैत अछि। ककरो खेतसँ कुसियार चोरा लैत अछि तऽ केकरो गाछ सँ लताम तोरि लैत अछि। एक दिन हीरोक गाछसँ लताम तोड़ैत अछि कि हीरो ओकरा पकैड़ लैत अछि फेर दूनू मे ई डायलोग चलैत छै...

(कागत बढ़ा बैत छथि)

युवक : *(पढ़ैत)* हीरो कतऽ अछि...ओकरे संगमे ई डायलाग हेतै?

(प्रोड्यूसर डायरेक्टर दिस देखैत अथि)

निर्देशक : *(अपना पीठ ससारैत)* आह...हमरा माफ कयल जाओ...हमरा हिम्मत नहि अछि...

(प्रोड्यूसर अपने उठि कऽ अबैत छथि)

प्रोड्यूसर : *(कागत पढ़ैत)* तों सुधरि नहि सकबह जेहन विद्वान पिता तेहने लुच्चा बेटा...

युवक : खबरदार जे हमरा लुच्चा कहलह... एखने लताम तोड़लिय हैय बेसी टाँय-टाँय करबह त' टाँग तोड़ि देबह...

प्रोड्यूसर : की कहलहँ...टांग तोडि देबह...चलह तोरा हम पंडित जी लग लऽ चलैत छी तेखैन बुझबहन।

(गट्टा पकड़ि कऽ-लऽ जेबाक उपक्रम)

युवक : छोड़...छोड़ हमर हाथ...पंडित जी लग जेबा सँ पहिने तोरा हम एतहि पंडिक दर्शन करा दैत छियौ...*(आ' धड़ाम-धराम मुक्का मारऽ लगैत अछि। प्रोड्यूसर एमहर सँ ओमहर भगैत छथि)*।

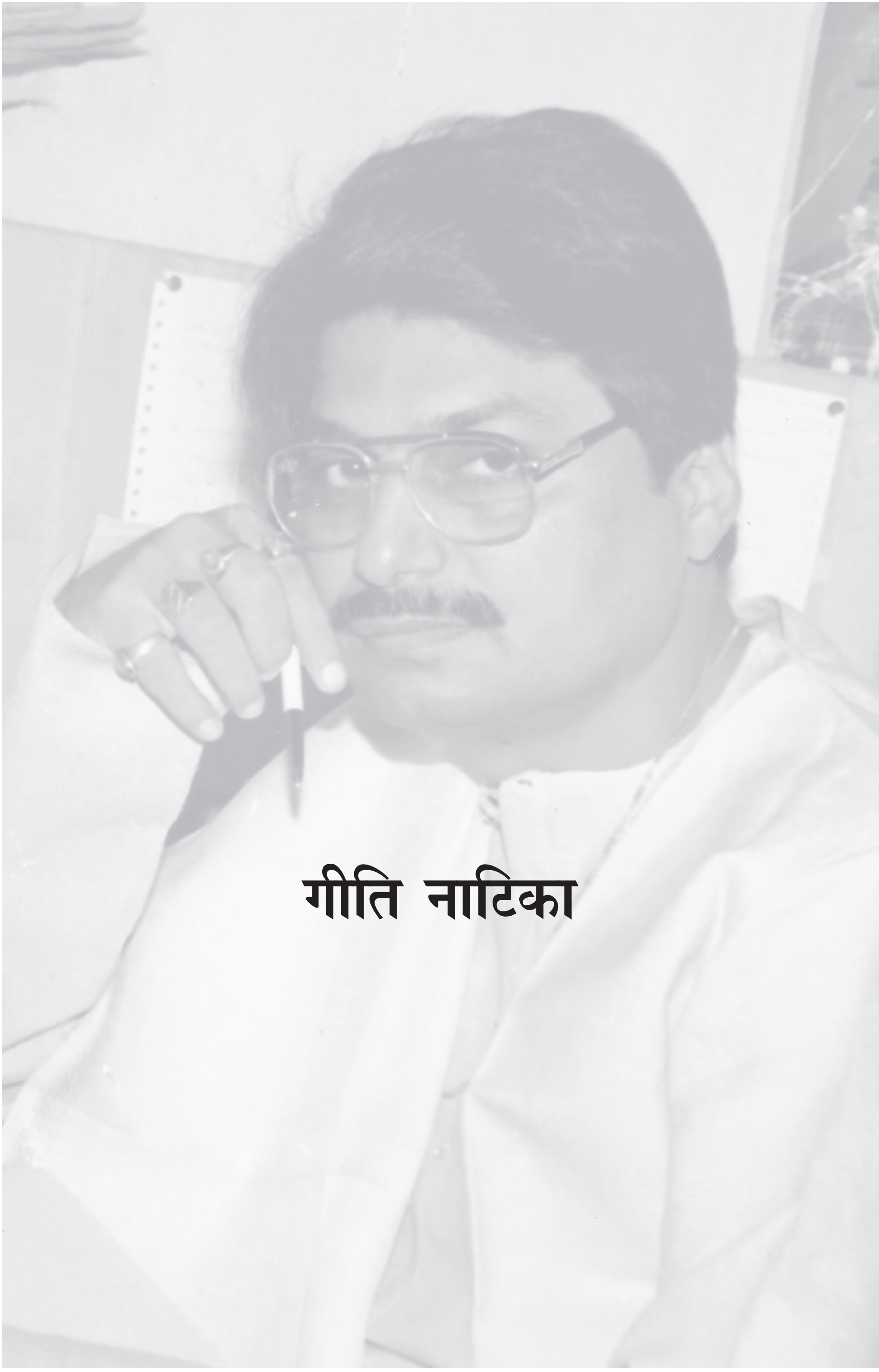
निर्देशक : अरे मारबाक नहि छै...मारबाक नहि छै...*(प्रोड्यूसर के ँ बचेबाक लेल जाइत छथि त' हुनको दू चमरि मुक्का दैत अछि)*

युवक : मारबाक नहि छै...अरे बिना मारि पीट के भीलेनक रोल केहेन...

(डायरेक्टर आ प्रोड्यूसर मारि खाइत चिचिआइत मंचपर सँ पड़ा जाइत छथि। युवक देह हाथ झाड़ैत कुर्सी पर बैसैत अछि...)।

युवक : हा-हा-हा— भागि गेल...बड़ा हिरोपनी करैत छल...ई पहिल फिल्म होयत जाहि मे भीलेन हीरो के ँ मारि भगायत... अँय...ई तऽ बड सुन्नर आइडिया। कहाँ गेलहु औ (प्रौड्यूसर साहेब...उठि कऽ प्रस्थान करैत सुनु हमर केहन सुन्नर आइ. डिया अछि...अहि मेत' अहाँक फिल्मके राष्ट्रपति पुरस्कार भेटबे करत।

●



गीति नाटिका

मधुर मधुर बाजय बाँसुरिया रे

मधुर मधुर बाजय बँसुरिया रे नाचै गोपी बाला
गोपी बाला... गोपी बाला... गोपी बाला...
मधुर मधुर बाजय...
कान्हा जीके बाँसुरी के तान निराला
तान निराला... कान्हा तान निराला
मन के मोहे ई बँसुरिया रे-2
नाचे गोपी बाला...
मधुर मधुर बाजय...
बँसुरिया सुनि सुनि राधा मन डोले
राधा मन डोले, कान्हा राधा मन डोले
राधा के तों कान्हा रसिया रे-2
नाचे गोपी बाला...
मधुर मधुर बाजय...
कखनो के राधा सोचथि बाँसुरी सौतनिया
बाँसुरी सौतनिया कान्हाँ, बाँसुरी सौतनिया
मुख सँ लगौने गोसैंया रे-2
नाचे गोपी बाला...
मधुर मधुर बाजय...

●

कौळाली

सभागाछी

बर : चारिम बरख थिक जे आपस जायब,
जायब जौं आपस तऽ फेर नहि आयब।
सूनि लियऽ बाबू यौ सूनि लियऽ भैया,
जतबो भेटैये ने भेटत रुपैया।
मुदा हमरे...तऽ हमरे करम कियैक एहन भऽ गेल,
चारि बेर अयलहुँ बियाहे ने भेल।

सहयोगी : तऽ हिनके करयम कियैक एहन भऽ गेल,
चारि बेर अयला विवाहे ने भेल।

पिता : आ...आ... अघुताउ जूनि, घबड़ाऊ जूनि,
अघुताऊ जूनि, घबड़ाऊ जूनि हएबे करत,
क्यो ने क्यो माल देबे करत।
बौआ एकरे कहै छै करमक खेल,
केहनो ठाम कोना दीयऽ, धकेल।

सहयोगी : मुदा हिनके करम किए एहन भऽ गेल, चारि बेर.॥

बर : कोना नै अघुताई से अंही सब कहू,
तीसम बरस बयस, आब कते दिन असगर रहू।
चतुर्थीक सौजन स्वप्न बनल जाइत अछि,
बाबू! आँहाँक गप्प आब नै सोहाइत अछि,
हायरे हमर करम नै जानि कतऽ, ओ बौआइत अछि।

सहयोगी : मुदा हिनके करम...चारि बेर. ॥

बऽर : कहलियै करम के रे केहनो तों आन,
आँखि सऽ आन्हर हो कि बहीर हो कान।
केहनो तों देबैं सब अछि कबूल,
पैर सऽ नाड़्-ड़् हो वा हो कोनो लूल्ह।

सहयोगी : मुदा हिनके करम...

पिता : एतेक जे अघुतायल छी जे आन्हर, बहीर, जेहन-तेहन कनियां चाहैत छी,
जीबते जीबैत जों नर्क योग चाहैत छी।
तऽ उढ़ड़ि जाऊ ककरो संग... आ उढ़ड़ि जाऊ ककरो संग, हमरा किछु ने कहू।
बूझि लिय, जे बाप मरि गेलाह, माय मरि गेलीह,
ओकरे संग जा कतहु रहू।

सहयोगी : मुदा हिनके करम...

पिता : हमरा संऽ पैथ अहाँक शुभचिन्तक के भऽ सकैत अछि, जे टकाक संग-संग नीक लोकीक घर तकैत अछि।
कोनो छोट-मोट थानाक हवलदार हो,
एक मदद मात्र अहाँक दुलरुआ सार हो,
सुन्दर-सुन्दर सारिक जतऽ भरमार हो।

सहयोगी : मुदा हिनके करम...

बऽर : मुदा हमरे करम...

पिता : सासु अहाँक चलबा-फिरबामे लाचार हो,
अहींक कनियांक हाथमे घरक सब कारोबार हो।
कहैत छियैन भगवान के जल्दी पठा दिय,'
जकरा लऽग रुपैया पचार हजार हो।

बऽर : आ...आ... बाप हमर खुश होथि आ स्वप्न हमर साकार हो। मुदा हमरे करम...
(एक घटकक प्रवेश)

बऽर : बाबू-बाबू...क्यों आबि रहल अछि,
बचि कऽ ई जा नै पाबय, सभा सेहो आब ढ़हि रहल अछि।
क्यो आबि रहल अछि।

पिता : चोप्प-चोप्प गदहा चोप।

घटक : नमस्कार

पिता : चोप्प

घटक : की?

पिता : नमस्कार!

घटक : हें...हें...हें...हें... नमस्कार! की पढ़ल छी?

बऽर : A B C D

घटक : की कहै छी?

बऽर : E F G H

घटक : हूं...हूं...टाका कतेक...कत्तेक टाका?

पिता : पचास हजार!

घटक : बाप रे बाप...! बहुत महग अछि! बहुत महग अछि।

बऽर : ईहो चल गेल... सभा उठि गेल...प्राण पर हमर बनल अछि...अहाँक लेल कोन।

सहयोगी : ईहो चल गेला... प्राण पर हिनक बनल छैन हिनक करम...।

पिता : चोप्प...चोप्प गदहा चोप्प।

बऽर : तमसाऊ जुनि, खिसियाऊ जूनि,
बाप हमर क्योंने फंसै की ई दोख हमर?
कनियां...हेयै कनियां... कतऽ छी हमर हुजूर,
लोक तकैयै बऽर के... हम तकै छी ससुर।

सहयोगी : कनियां....
लोक तकै अछि...

●

साढ़ूनामा

सासुर थिक कैलाशे... दूर हो कि पासे।
सारि-सारक गप्प कोन, सासु-ससुर दासम दासे।
तऽ अंही कियैक अघुतायल छी यौ साढ़ू,
एखन तऽ एखन तऽ भेल एके मासे ॥

बहुत जतन संऽ होइत यैक विवाह मनुख के,
सुखक आरंभ आ अंत दुःख के।
आ...भक्तक लेल जेना मंदिर-मस्जिद गुरुद्वारा,
मैथिलक लेल मोहिनी सुरतिया संऽ सुशोभित ससुर द्वारा।

तऽ प्रेमक व्यापार करु,
छप्पन तरहक व्यंजन मुफ्तहिं उदरस्थ करु।
लगैत नहि छैक कोहबर घरक कोनों भाड़ा
संठी सन जे अबैत छथि, मोटा कऽ-मोटा कऽ भऽ जाइत
छथि पाड़ा॥
तऽ अंही कियैक अघुतायब...
ने गाम परहक झंझट, ने बाबू के फटकार
बाबू खुश भेला लय हजारक हजार।
जिन्दगी मे आयल बहारे बहार,
चान सनक सरि आ फूल सनक सारि।

स्वर्णिम अक्षर संऽ लिखायत ओ चतुर्थीक राति,
जखन नोन देल भोजन पर सोन सनक मुखड़ाक दर्शन भेल
छल,

मोन मे ई अंकार भेल छल या हृदय मे ई गर्जन भेल छल।
(प्रश्न : की गर्जन लेल छल?)
हमें तो लुटि लिआ मिलके हुश्नवालों ने,
गोर-गोर गालों ने, काले-काले बालों ने।

हम छोड़ि चलल छी सासुर के, हमरा कथी लेल टोकै छी।
मुश्किल सं, कतेक जतरा कयलहुं, पाछू स' कथी लेल टोकै छी॥

ने चान सनक सारि, ने सार गुलाबक फूल,
विवाह जे कऽ लेलहुं, से भेल भारी भूल।
ने छप्पन तरहक भोजन, ससुर के लाचारी,
यौ छेढ़ आंखि वाली सासु गाबथि नचारी।
यौ कठखोधी सन मुँह वाली हमर घरवाली,
सड़क पर जौं चलती तऽ कहतैन मदारी।
बच्चों बजाओताली-2॥

ने चतुर्थीक राति ने होली ने बरसाति,
यौ कर्मक लिखल कहल गेल छै सुआति।
जिन्दगी संऽसाढू हम मानि गेलौं हारि,
गेलौं नेपाल संग गेलै कप्पार।

पहिने संऽ अधिक दुःखी छी हम,
छोड़ू कथी लेल रोकै छी। हम छोड़ी चलल छी सासुर के...

●

घटकैती

घटकराज : पाँच हजार

बाप : नई

घटकराज : दस हजार

बाप : नई ई-ई

घटकराज : बीस हजार

बाप : कने आत्रू बढ़ू

घटकराज : पच्चीस हजार

बाप : हाँ आ...

बाप : अपने जे एलियै तकरे विचार कऽ पच्चीसे पर हम कहलहुँ हाँ हमरा बौआ सन क्यो ने मिथिला मे दीयो लऽ कऽ ताकब जँ, मैट्रीक पढ़लकै I.A. केलकय सोचहुँ विवाह कऽ दियै तऽ ससुर पढ़ौथीन्ह, नौकरी दीऔथीन्ह बेटी सँ अपन प्रेम हेतैन जँ पच्चीसे पर तें कहलहुँ हाँ।

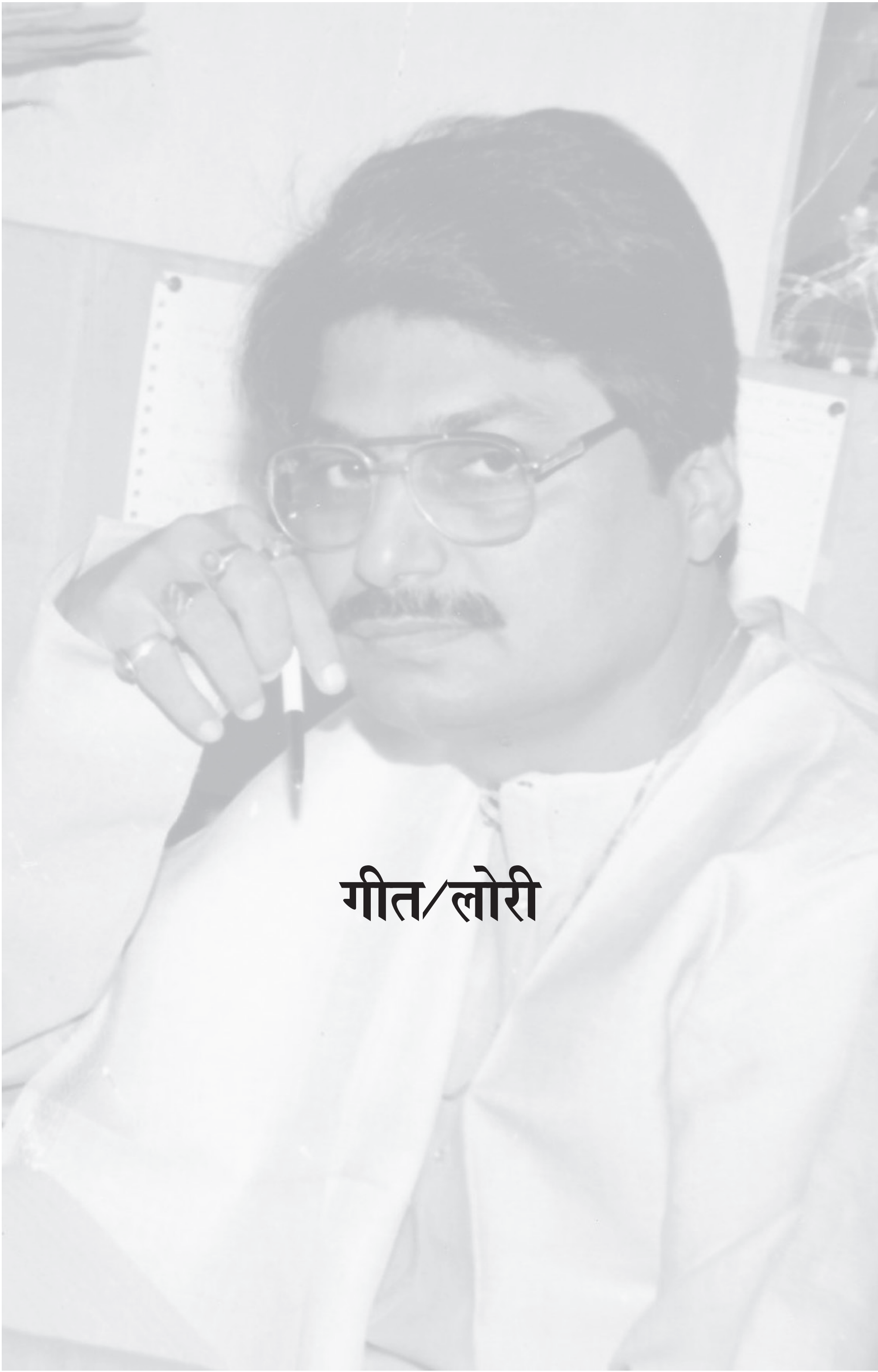
घटकराज : आगू पटेबै नौकरी दीयैबे हमरे उपर मे ई भार जें अपने की केलीये कोन बाघ मारलीयै बौआ के सिर्फ जनमेला टा एतेक टका के योग करय छीयै छुवियौ कने तऽ अपने सं माथ मे दर्द कोनाक होइछै बुझितीयै होईत बेटी जँ, मानि जाइयौ कने कम्मे सं...2

पांच हजार... Repeat मानि जाइयौ कने कम्मे सं...

बाप : हम की केलियै कोन खर्च केलियै तकर हिसाब देखबै जं हॉस्पीटलक खर्चा, दुधक पाई, मास्टर स्कूल के देलीयै जे लमनचुस टोफी किताब आ कापी हजार-हजार के किनलहुं जे आ बौआ के माय के कष्ट जे भेंलेन्हे तकर हिसाब करैत के? पच्चीसे पर हम कहलहुं हं...2

घटकराज : अपने महान, अर्थशास्त्रक विद्वान, सबटा हिसाब जोड़ने छी अपनहुं माय के कष्ट गेल हेतैन्ह, अपने के जनमेवा मे तकरो हिसाब जोड़ि लीय बेटा के सूली चढ़ेवा मे, गप्प बेकार, जी सरकार, हमरा बुते नय लागत पार, अपने के बड़का व्यापार, हम चलै छी नमस्कार-नमस्कार...।

●



गीत/लोरी

संकल्प गीत

संकल्प लिय'...संकल्प लिय'...
संकल्प लिय' यौ,
बाजब मैथिली
मिथिलाक लेल जियब यौ...
संकल्प लिय'...2

शांतिमय प्रयास हमर ई
सुनिलिय' देशक नेता...3
सूची अष्ठममे स्थान दियौ
आरो नय किछु कहब यौ...
संकल्प लिय'...2

लाखक लाख पत्र जाइत अछि
आँखि खोलि क' देखू...3
आबि गेल समय इंदिराजी
मिथिलाक मान राखू...3
संघर्ष बढ़त जँ बात नहि मनबय
आरो ने हम सहब यै...
संकल्प लिय'...3

●

लोरी (दूनू बेटा के लेल)

लोरी

तोरे लेल अनलहुँ हाथी घोड़ा,

कनिया पुतराक जोड़ा,
हमर बौआ, हमर बेटा,
बेटा दुलरुआ...।
चम चम चम चम, छम छम छम छम,
एतय निनियाँ रानी,
कोरामे ल’ क’ झुला झुलौतै,
चानक भरल जुआनी।
तोरे लेल अनलहुँ चान सन मामा,
नभ केर सबटा तारा,
हे रे बौआ, हे रे बेटा, बेटा दुलरुआ...।
खट खट खट खट लाठी ल’ क’
एथिन्ह बुढ़िया नानी,
नानीक कोरामे, बैसि क’ सुनतै,
रामक अमर कहानी।
तोरे लेल अनलहुँ सीता दैया,
राम लखन सन जोड़ा,
हे रे बौआ, हे रे बेटा, बेटा दुलरुआ...।
पढ़तय लिखतय बढ़तय उड़तय,
उड़य छय जेना आँधी,
देशक नाम खूब बढ़ौतय,
बनतय नेहरू गाँधी।
तोरे लेल अनलहुँ तिरंगा झंडा,
माँ भारत केर नक्शा,
हे रे बौआ हमर बेटा, बेटा दुलरुआ...।

लालमुनियाँ

लालमुनियाँ अगहनके राज सौंसे दुनियाँ लालमुनियाँ...
धाने बरियाती धाने सरियाती धाने बनल लोकनियाँ
लालमुनियाँ अगहन के...
करिया झुम्मर खेलय धान धरती गगनके चूमय, धरती गगनके चूमय
विह्वल अछि मजदूर किसान चिरइ दाना चूगय, चिरइ दाना चूगय
झुनन झुनन झन झनन झनन झन बाजय तोहर पैजनियाँ
लालमुनियाँ अगहन...
रंग बिरंगक चमकय साड़ी लहँगा तोहर चमकय, लहँगा तोहर चमकय
सजल सजाओल हमर दुल्हनियाँ हवा सेहो आई गमकय,
हवा सेहो आई गमकय
सजल सजाओल हमर दुल्हनियाँ हवा सेहो आई गमकय,
हवा सेहो आई गमकय
गाम नगरिया सौंसे डगरिया आइ बनल नचनियाँ
लालमुनियाँ अगहन...

लहलह लहलह धानक बाली गढ़ा देबौ तोरा कानक बाली,
गढ़ा देबौ तोरा कानक बाली
गहना सौं हम लादि देबौ कट' दही तों
धानक बाली कट' दही तों धानक बाली
दमदम दमदम दमकै लगतौ रंग तोहर जमुनियाँ
लालमुनियाँ अगहन...

●

नेना भुटकाक लेल गीत

छुक छुक छुक छुक छुक छुक
छुक छुक छुक छुक छुक छुक
रेल चलैया...पू...पू...
गार्ड के हरियर झंडी, इंजिन सँ पू सीटी बजैया
छुक छुक...

धक्कम धुक्की, रेलम पेला
टीसनपर लागल छै मेला
सेब लिय' अनार लिय'
ल' लिय' बाबू केरा...
हे...छुक छुक...

इ मद्रासी इल्ले पिल्ले
बंगाली बाबू मोशाय
पंजाबी की गल्ल है
मैथिल के पूछू यौ पूछू
आब कहू मोन केहेन लगैया
आगू पाछू लाईट जरैया
पूर्वा पछवा हवा बहैया
आब कहू...
सब अपना के गुरु बुझै छथि
केकरा कहबय चेला...
हे...छुक छुक...

●

बीतल दिन सब मोन पड़ैया

मोन ने लागय अहाँ बिना
चैन ने आबय निश दिना
मोन ने लागय...।

बीतल दिन सब मोन परैया
रहि रहि क' हिय चिहुकि उठैया
सपन छल जे टूटि गेल अछि
बिसरब हम कोना...
मोन ने लागय...।

घनघोर घटा छायल छल नभमे
पायल छल अहाँ पगमे
छम छम छम छम बाजी रहल छल
थिरकय मोर जेना
मोन ने लागय...।

जीवन हम बितायब संग संग
वचन अहाँ स' लेने रही हम
बैरी जगके नीक ने लगलय
पनिसोखी के मेघ जेना
मोन ने लागय अहाँ...।

●

हे रे चन्दा

हे रे चन्दा लेने जो सनेस पिया परदेश रे...चन्दा...।
तोहें ने उगै छः आन्हर राति
बिसरल रहै छी पिया केर पाँति
तोंहे जाँ उगै छः दीया बाती...दीया बाती
होइये मोनमे कलेश रे...चन्दा...।

हम्मर दुःख केयो ने बुझैया
कोना ओ रहै छथि केयो ने कहैया
कहियौन्ह विकल छैन्ह हुनकर दासी...हुनकर दासी
रुसल किए छथि महेश रे...चन्दा...।

पाँति हुनके आजु गाबैय छी
छविमे हुनके लीन रहय छी
धैर्य नहि आब बसल उदासी...बसल उदासी
नहि अछि कोनो उदेश रे...चन्दा रे...चन्दा

बहुत जतन सँ हृदय के बुझेलहुँ
नहि दोसर के हम किछु कहलहुँ
आस बनल अछि, नहि हम बिसरि...नहि हम बिसरि
चाही एतबहि, नय किछुओ विशेष रे...चन्दा

जहिया मँगलहुँ एतबे मँगलहुँ
सँग रही बस एतबे चाहलहुँ
जनम भरक दुःख, कही केकरा सँ...कही केकरा सँ
गेलैथ ओ एहेन विदेश रे...चन्दा

●

दिल धड़कल आँखि फरकल

दिल धड़कल आँखि फरकल
खाइते कालमे सरकल
भोरका गाड़ीसँ आबि रहल छथि
घर वाली घर वाली
भेंटत काल्हिसँ फेरो
आलूक साना पाइन सन दालि
सबटा रोटी झरकल
दिल धड़कल...

काल्हिसँ फेर हाथमे झोरा
बौआ रहता हमरे कोरा
देवीजी आगू आगू
चाकर हम पाछू पाछू
जीप के पाछू मे टेलर
जाइछै जेना गुड़कल
दिल धड़कल...

मौज छल कत्ते कहै छी सत्ते
होटल सिनेमा रोज अलबत्ते
साँझ छल आला कतेको बाला
अर्ध परिधानमे देखय वाला
देवीजी के लटकल ठोढ़
आँखिसँ सदिखन झहरैत नोर

कोनो पहाड़ सँ झरना
जाई छै जेना झहरल
दिल धड़कल...

नैहरक गुणगान एकेटा तान
छेरि छेरि क' खेती कान
बाप हमर ई देलैंह अहाँ बूते की भेल
आई धरि एकोटा साड़ियो ने किनी भेल
देवी जीके दुर्गा रूप
फज्जहति सुनियो करय छथि चुप
करेजा हम्मर फाटय जेना
कैंचीसँ फाटय मलमल
दिल धड़कल...।

●

अहाँ हमर के छी

अहाँ हमर के छी...2
स्वप्नक रानी प्रेम दिवानी
कोयल छी अछि पंचम वाणी
अहाँ हमर के छी...।

नयन अहाँ केर प्यासल प्यासल
काजरि सँ अछि सुन्दर साजल
डुबि क' देखि अथाह समुन्दर
अधलाह जँ ने मानी
अहाँ हमर के छी...।

ठोरक लाली मय केर प्याली
सोरहो बसंतक छी हरियाली
चंद्रमुख ई चमक रहल अछि
चमकय जेना चानी
अहाँ हमर के छी।

धवल अंगपर कारी साड़ी
प्रेमक भौंरा अंग निहारी
अंगक रस हम पीबि रहल छी
आँखि करय मनमानी
अहाँ हमर के छी।

प्रणय गीत हम गाबि रहल छी
हृदयमे बस अहीं रहय छी
एक भ' जाय दिय दुनू केर
बात हमर जँ मानी
अहाँ हमर के छी।

सब एलय फगुआमे सजना

सब एलय फगुआमे सजना
अहाँ बिना मोर आँगन सूना।
सब एलय...।
चतुर्थिक राति अहाँ पढिते रहलहुँ,
भोरे उठि क' अहाँ चलिए देलहुँ।
चिट्ठियो नहि देलहुँ, खबरियो नहि लेलहुँ
जाइत काल एकोटा फोटुओ नै देलहुँ,
इहो नहि बुझलियै हम जीबय कोना।
सब एलय...।
खूब पढू खूब पढू खूब पढू यौ
कखनो क' हमरो बिचारि करू यौ
लाल काकी के जोड़ा बेटा भेलैंह
सौंसे गामे के ओ भोज केलैन्ह
अपन कर्मक लिखल के मेटत के
ककरो एकोटा नहि ककरो भेटय दूना।
सब एलय...।

●

मधुर मधुर बाजय बाँसुरिया रे

मधुर मधुर बाजय बँसुरिया रे नाचै गोपी बाला
गोपी बाला गोपी बाला गोपी बाला...
मधुर मधुर बाजय...
कान्हा जीके बाँसुरी के तान निराला
तान निराला कान्हा तान निराला
मन के मोहे ई बँसुरिया रे-2
नाचे गोपी बाला
मधुर मधुर बाजय...
बँसुरिया सुनि सुनि राधा मन डोले
राधा मन डोले, कान्हा राधा मन डोले
राधा के तों कान्हा रसिया रे-2
नाचे गोपी बाला
मधुर मधुर बाजय...
कखनो के राधा सोचथि बाँसुरी सौतनिया
बाँसुरी सौतनिया कान्हाँ, बाँसुरी सौतनिया
मुख सँ लगौने गोसैंया रे-2
नाचे गोपी बाला
मधुर मधुर बाजय...

•

हैया रे... हैया रे...

हैया रे हैया रे हैया हैया रे, हैया रे हैया रे हैया हैया रे...
लहरि उठल छमाछल हवा चलल सनन सन,
मयुर मन नाचि उठल सावनमे संग संग, अहाँ आओर हम, अहाँ आओर हम
हैया रे हैया रे हैया रे...

संग हमर मीत हमर माँझी के गीत हमर
नदिया के जल सन निर्मल पिरीत हमर
यौवन के चढ़ल रंग सावनमे संग संग, अहाँ आओर हम, अहाँ आओर हम
हैया रे हैया रे हैया हैया रे...

सावनके रंगमे सजनी नहायल
घुँघरू छमकि उठल, झनकि उठल पायल
थिरकि रहल अंग अंग, सावनमे संग संग, अहाँ आओर हम, अहाँ आओर हम
हैया रे हैया रे हैया हैया रे...

पिया बिनु चैन कहाँ, चान बिनु रैन कहाँ
माँझी तों लेने चल, प्रेमक हो देश जहाँ
बिरहा के फुजल अगन सावनमे सँग सँग, अहाँ आओर हम, अहाँ आओर हम
हैया रे हैया रे हैया रे...

●

गोर-गोर-गोर सब छै गोर

गोर गोर गोर सब छै गोर
बौआ के मामी के पिचकल ठोड़,
गोर-गोर....

एक डेग आगू आ एक डेग पाछू
मामी के आगू पाछू मामा नाचू,
कनियाँ छथि कि बहिना
जे कहैय छथि तहिना
दिन राति मामा आहाँ बाँचू
चोर-चोर-चोर, सब छै चोर
बौआ के मातरीक मे सब छै चोर।

दही खैब की चूड़ा,
पूछैथ नाना बुढ़ा
दहीमे परल फुफरी
चूड़ा, मे घूमय सुरा
घोर-घोर-घोर मोन भेल घोर
नानाक चूड़ा देलक पेट मड़ोर
गोर........

तोंही छः दुलरुआ
कहथिन्ह बुढ़ीया नानी
कहियो जे किछु देलखुन

तऽ तोहरा मानी
बोर-बोर बोर नानी छथुन्ह बोर
फुसिए तोरा लेल बहाबैथ नोर
गोर गोर गोर.......
मोन ने लागय अहाँ बिना
चैन न आवय निश दिना
गोर-गोर-गोर

●

मोन ने लागय अहाँ बिना

बीतय दिन सब मोम पड़ैया
रहि रहि कऽ मोन चिहुँकि उठैया
सपना छल जे टुटि गेल अछि
बिसख हम कोना
मोन ने लागय........

घनघोर घटा छायल छल बममे
पायल छल अहाँक पग मे
छम-छम-छम-छम बाजि रहल छल
नाचय मोर जेना
मोन ने लागय अहाँ बिना.....

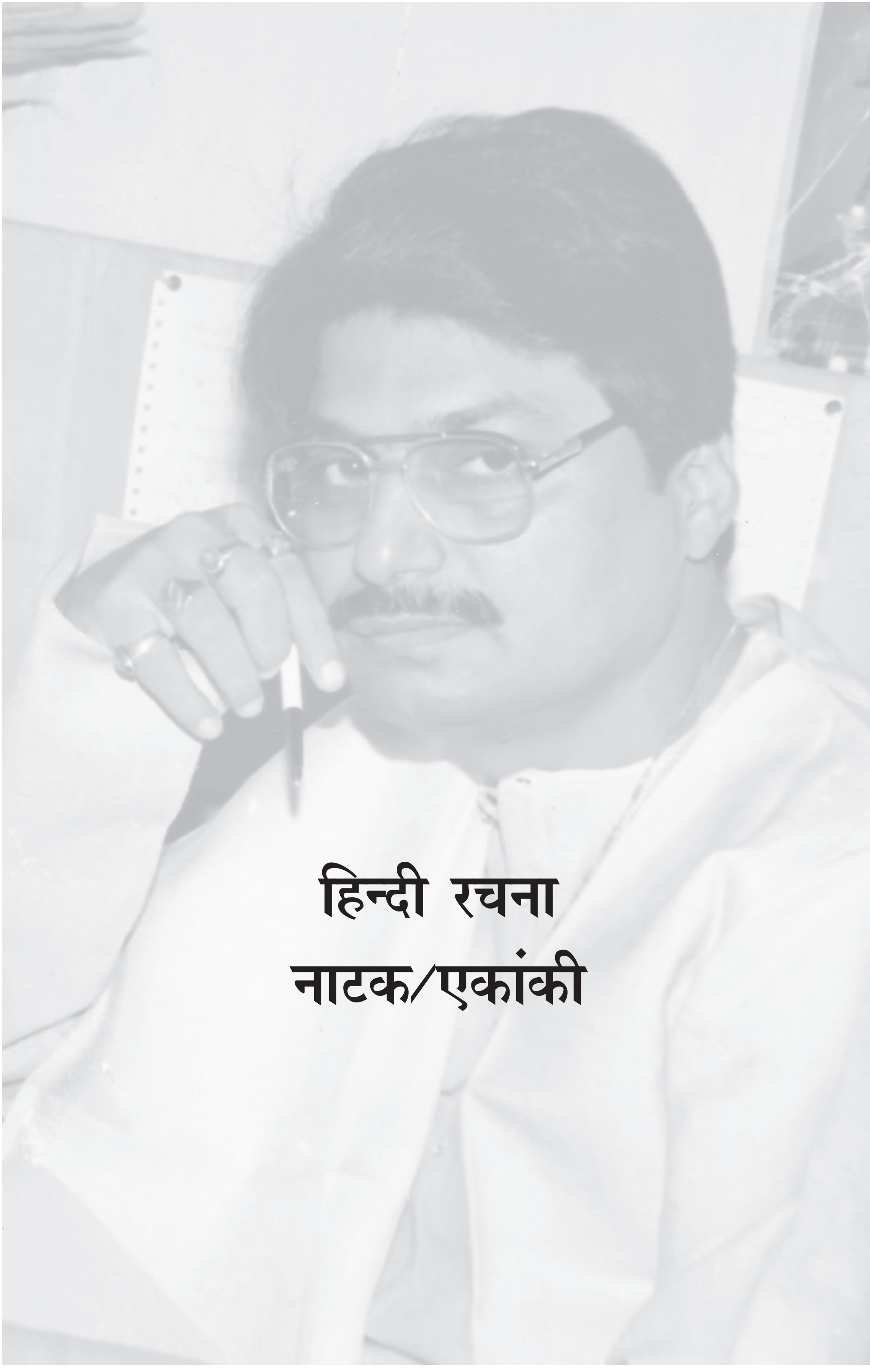
जीवन हम बितायब संग-संग
बचन अहाँ सं लेने रही हम
बैरी जग के नीक नय लगलय
पैनसोखी के मेघ जेना
मोन ने लागय अहाँ बिना.....

जीवन संगी भऽ अहाँ जे चलु यै
क्षणमे दुनियाँ हम बदलि दियै
देखलहुँ अहाँ के जहिए
हम मोन हारि देलहुँ तहिये
जीवन संगी भ'...

लड़की : एहन प्रेमी हम नहि देखलहुँ
हमरा लेल मोन हारू हम नहि कहलहुं
आउरो बहुत छै एहि जगमे
हमरा सं आश राखू नहिये
जीवन...........

लड़की : हाथ माँगवा स' पहिने हाथ धो लीय'
पुरैनीक पात स' मुँह पोछि लीय'
सोरह बरस के हम युवती
छत्तीस कय अहाँ हैब नहिये
जीवन...
सोलह 36 मे की छय राखल
मोन हमर मोम अछि नहि पाथर।
जीवन...

●



हिन्दी रचना
नाटक/एकांकी

सूनी सड़क

पात्र एवं परिचय

मुख्य पात्र

जय	:	25 साल का युवक
घनश्याम	:	25 साल का युवक, जय का मित्र
प्रेम	:	25 साल का युवक, जय का मित्र
पिता	:	70-75 वर्ष का वृद्ध, जय का पिता
माँ	:	40-45 वर्ष, जय की माँ
मुरली	:	50 वर्ष, एक साधारण व्यक्ति
राय विरेन्द्र सिंह	:	50 वर्ष, एक स्थानीय नेता, M.L.A
कालू	:	30-35 वर्ष; राय के गुण्डे
इंस्पेक्टर	:	30 वर्ष
एस.पी.	:	50 वर्ष
भीम		
सोना		
एक आदमी		

सहायक

8-10 लोग

5-6 सिपाही

इंस्पेक्टर (दृश्य 3 के लिए मात्र)

मंच व्यवस्था

मंच व्यवस्था के अतिरिक्त आवश्यक सामग्री की सूची—

प्रथम दृश्य : जय के लिए कंधे से लटकने वाला झोला, पुलिस की लाठियाँ, सीढ़ी, गोंद, पोस्टर।

दृश्य दो : राय साहब की छड़ी, भीमा की लाठी।

दृश्य तीन : जय का झोला, गुण्डों के लिए लाठियाँ।

दृश्य चार : पत्थर का एक टुकड़ा, लकीर खींचने के लिए।

दृश्य पाँच : चारपाई, कफन का कपड़ा, एक मिट्टी का बर्तन, उपले की आग।

दृश्य छठा : चादर, तकिया, थाली, रोटी, सब्जी, खिलौना, रिवॉल्वर।

दृश्य सात : शराब की बोतल।

दृश्य आठ :

दृश्य नौ : अखबार, रिवॉल्वर।

सूनी सड़क

एक दृश्य

पार्श्व स्वर : किसी अत्याचारी के क्रूर पंजों में दबकर हरी-भरी बस्ती वीरान हो सकती तो फिर यह सड़क? चहल-पहल से भरी यह सड़क, दिनकर के प्रचंड ताप से झुलसती, शशि की शीतलता में नहाती, पथिकों को मंजिल तक पहुँचाती यह सुहागन सड़क... सूनी सड़क क्यूँ कर?

जब रक्षक ही भक्षक हो जाए, तो देश, काल और समय अपने संस्कार खो देते हैं और पैदा होता है एक नया संस्कार जो इतिहास से सबक नहीं लेता और बनने लगता है एक नया इतिहास। क्या है? इतिहास इस सड़क का क्या है? क्या है?

(मंच पर एक पुलिस इंस्पेक्टर के साथ तीन-चार सिपाही दौड़ते हुए प्रवेश करते हैं और बायें से आकर दाहिने जाते हैं। मंच के उजले पर्दे पर छाया (शैडो) में कुछ लोगों को इंकलाब जिंदाबाद, गुण्डागर्दी नहीं चलेगी... ऐसे नारे लगाते हुए दिखाया जाता है। पुलिस प्रवेश के साथ लाठी चार्ज, कराहने की आवाज, हल्ला-गुल्ला, भगदड़। भागते हुए तीन नवयुवकों का मंच पर प्रवेश। सभी का साँस फूला हुआ है। पहले आकर दम लेते हैं। बेंच पर बैठकर फिर...)

घनश्याम : जय

जय : हूँ

घनश्याम : जय यह अच्छा नहीं हुआ!

जय : क्या अच्छा नहीं हुआ घनश्याम?

घनश्याम : कुछ नहीं... कुछ नहीं!

जय : घबराते क्यों हो घनश्याम! साफ-साफ बातें किया करो। देखो हम लोग पढ़े-लिखे लोगे हैं। अगर हम लोगों के बीच भी स्पष्ट बोलने की स्वतंत्रता ना हो तो फिर यह लड़ाई किसलिए? यह आन्दोलन किसलिए?

प्रेम : ठीक कहते हो जय! हमारे बीच किसी भी प्रकार का लुकाव-छिपाव नहीं होना चाहिए। घनश्याम तुम्हें जो भी कहना हो साफ-साफ कहो।

घनश्याम : जय... जय मैं कह रहा था कि यह भाग-दौड़, मीटिंग, पुलिस, लाठीचार्ज... यह सब हमलोग कब तक कर पायेंगे? राय विरेन्द्र सिंह से टक्कर... क्या हम वो साधन हासिल कर पायेंगे, जिन साधनों की आवश्यकता होती है? क्या, क्या हम तीन इसके लिए काफी हैं?

जय : घनश्याम कायर मत बनो। अत्याचारी को सबक सिखाने के लिए, अत्याचार को मिटाने के लिए एक निष्ठावान ही काफी होता है। यहाँ तो हम तीन हैं। हिम्मत मत हारो। याद रखो गाँधी एक ही थे फिर सारा देश उनके पीछे आया था।

घनश्याम : मगर...

जय : अगर-मगर मत सोचो। अपने कर्म पर भरोसा रखो। आत्मविश्वास को कभी भी ढीला मत होने दो।

प्रेम : जय... यह सब तो ठीक है। लेकिन घनश्याम ने जो साधनों की बात की है उसका क्या सोचते हो?

जय : साधन! प्रेम सच्चाई ही हमारा सबसे बड़ा साधन है। ईमानदारी ही हमारा हथियार है। मत भूलो घनश्याम कि हमने उच्च्च शिक्षा प्राप्त की है। इसलिए नहीं कि हम दूर सड़कों पे मारे-मारे फिरें। मत भूलों कि हमारे बजुर्गों ने अंग्रेजों से लोहा लिया, इसके लिए नहीं कि उनकी संतान पढ़-लिखकर एक कलर्क की नौकरी के लिए भागता फिरे। इसलिए नहीं कि स्वतंत्र भारत में लोगों को स्वांस लेने

के लिए भी इन भ्रष्ट लोगों की तरफ देखना पड़े। खैर! जिन साधनों की तुम बात करते हो हम उन्हें भी हासिल करेंगे। नौमिनेशन भरने के लिए मात्र 5 दिन रह गए हैं। मैं भरूँगा, मैं अवश्य चुनाव लड़ूँगा।

घनश्याम : चुनाव तो हमें लड़ना ही है, चाहे जो भी हो जाए।

प्रेम : हाँ! जो भी हो जाए। हमें कितना पब्लिक सपोर्ट मिल रहा है। जय, ये कॉलेज स्टूडेंट्स जो हमारे साथ आ रहे हैं क्यूँ ना उसके जरिये हम लोग धन का संग्रह करें। घर-घर जाकर अगर वे चन्दा माँगे तो लोग अवश्य देंगे।

जय : विचार तो अच्छा है प्रेम। उनमें से कुछ चुने हुए की एक मीटिंग बुलाई जा सकती है और...

घनश्याम : मगर जय... ये कॉलेज स्टूडेंट्स जो हमारे साथ आना चा. हते हैं... सिर्फ लम्बा-चौड़ा भाषण करना जानते हैं। सिर्फ डिस्कस करना जानते हैं। सच्चाई और ईमानदारी से उन्हें कोई मतलब नहीं। थोड़ा-सा लोभ, थोड़ा फायदा के बहकावे में आसानी से आ जाते हैं। राजनीतिक पार्टियों के बहकावे में आकर दीवाने बन जाते हैं। और जो अच्छे लड़के हैं उनको डिस्टर्ब करना उचित नहीं। उनकी पढ़ाई-लिखाई में बाधा डालना ठीक नहीं।

जय : ठीक कहते हो घनश्याम हमें उन लोगों से सख्त घृणा है, जो आंदोलन के नाम पर छात्रों का कैरियर बर्बाद करते हैं। शैक्षणिक सत्र बर्बाद करवाते हैं। उन गरीब माँ-बाप को कष्ट देते हैं, जो अपना पेट काट-काट कर बच्चों को पढ़ाते हैं।

प्रेम : तो फिर इस आंदोलन से क्या फायदा ? हमारी लड़ाई ही तो इस शिक्षा के विरुद्ध है।

जय : गलत...! हमारी लड़ाई इस शिक्षा के विरुद्ध नहीं! हमारी लड़ाई तो उन भ्रष्ट नेताओं के विरुद्ध है, उन भ्रष्ट अफसरों के विरुद्ध है, जो हमारी शिक्षा का, हमारी क्षमता का मजाक उड़ाते हैं। देखो, प्रेम! हमारे साथ सिर्फ वही आ सकते

हैं जो बेरोजगार हैं... जिनमें पुलिस की लाठियाँ सहने की हिम्मत हो... ऐसे नहीं कि पुलिस को देखते ही भाग खड़े हों।

प्रेम : लाठी के सामने वे कर ही क्या सकते थे?

घनश्याम : क्या नहीं कर सकते थे? किस अधिकार से पुलिस ने लाठी चार्ज किया? राय विरेन्द्र सिंह मीटिंग कर सकता है मगर हम नहीं...क्यूँ? आखिर क्यूँ! क्या हम इस देश के नागरिक नहीं? हम शान्ति पूर्वक अपने आन्दोलन को बढ़ाना चाहते हैं... पर ये नेता, ये अफसर हमें नेक्सलाइट और ना जाने क्या-क्या घोषित करवा रहे हैं।

जय : इतना गर्म होने की आवश्यकता नहीं घनश्याम... हम फिर कल सवेरे इस विषय पर बात करेंगे। अब तुमलोग जाओ, तुम लोगों को दूर जाना पड़ता है।

प्रेम : ठीक है जय...पर तुम भी घर जाओ थक गए हो...!

जय : मेरा घर, मेरा घर तो वो सामने है। यहाँ से दस डेग भी नहीं। मैं कुछ देर बाद चला जाऊँगा।

घनश्याम : हमें मालूम है कि तुम्हारा घर तो सामने है। प्रेम ने तुम्हें घर जाने को इसलिए कहा है कि तुम घर जाकर आराम कर सको।

जय : आराम .... हूँ ... घर में आराम कहाँ प्रेम, जब मैं घर जाता हूँ और पिताजी का उदास चेहरा देखता हूँ तो खून खौल उठता है क्या-क्या सपने सोच रखे थे उन्होंने, खैर मैं भी चला जाऊँगा... तुम लोग जाओ ok good night

(घनश्याम और प्रेम Good Night कह कर चले जाते हैं। जय वहीं बेंच पर लेट जाता है। सड़क पर लोगों का आना-जाना बना हुआ है। आने-जाने वाले लोगों को देख ऐसा लगता है मानो दिनभर के काम से थक कर बाजार हाट करते हुए घर को बापस जा रहे हैं। एक सीढ़ी, कुछ पोस्टर और गोंद लिए मुरली का प्रवेश। मुरली दारु पिए हुए है। कोई सस्ती-सी फिल्मी गीत गुनगुना रहा है।)

मुरली : *(स्वतः)* पोस्तर कहाँ लगाऊँ...शाला कोई जगह ही नहीं है। हाँ... पेड़ पर लगा देता हूँ, आगे बढ़कर पेड़ पर एक पोस्टर लगा देता हूँ। बिना टॉकिज में गए डाकू संग्राम सिंह कलाकार .... ई.ई.।

(फिर उसकी नजर बेंच पर परती है नजदीक जाकर।)

मुरली : ओ हो...हो ये तो अपने नेहरु जी हैं।

जय : *(उठकर बैठते हुए)* मैं नेहरु जी नहीं, नेहरु बन भी नहीं सकता। मैं तो तुम्हारा जय हूँ मुरली चाचा।

मुरली : हाय...क्या कहते हैं मेरे नेहरु जी का लम्बा-लम्बा भाषण, राय साहब से चुनाव तो नेहरु नहीं तो और क्या। पिस्तौल चलाना, बम फेंकना और कहते हो नेहरु नहीं हो, हा...हा...हा...।

जय : चाचा ये सब तुमसे किसने कहा?

मुरली : सभी तो कहते हैं। पर मुझे तुमसे कोई डर नहीं। मुझ पर अगर बम चलाओगे तो तुम्हारा बम फट जाएगा। मैं नहीं फटूँगा। हटो... हटो... इस बेंच पर से... मुझे पोस्टर लगाने दो। *(ढकेलकर जय को उठा देता है और पोस्टर लगाने लगता है)*

जय : चाचा लोग गलत कहते हैं। मैं ना तो पिस्तौल चलाता हूँ और ना बम फेंकता हूँ। हाँ अगर जरूरत हुई तो वह भी करूँगा। चाचा एक बात बताओ तुम शराब क्यों पीते हो?

मुरली : क्या कहा क्यों पीते हो? अरे यह क्यों नहीं पूछते कि क्यों जीते हो? ... पर हाय रे पेट! हा...हा...हा... सुनो नेहरु जी, एक बार तुम भी पीकर देखो सब नेतागिरी भूल जाओगे *(पोस्टर लगाता है)*

जय : डाकू संग्राम सिंह *(पार्श्व से प्रतिध्वनि डाकू संग्राम सिंह डाकू संग्राम सिंह डाकू राय विरेन्द्र सिंह डाकू राय विरेन्द्र सिंह...)*

मुरली : क्यूँ क्या सोचने लगे बच्चू बहुत अच्छी फिल्म है, जरूर देखना अगर जेब में पैसे नहीं हों तो मुझसे कहना फ्री

पास दिलवा दूँगा...।

जय : *(स्वतः)* डाकू राय विरेन्द्र सिंह!

मुरली : क्या...? ...हाँ तुम ठीक ही कहते हो डाकू राय विरेन्द्र सिंह उसने इतने मुझे लूटा...मेरी ...मेरी बेटी इज्जजत लूटी है...इज्जत लूटी है...*(रोने लगता है)*

जय : फिर भी तुम उसी के लिए काम करते हो?

मुरली : क्या करूँ...क्या करूँ मैं? इस पापी पेट को शान्त करने के लिए और कौन देगा काम...? इस शहर में, इस इलाके में उसी का राज चलता है... सिनेमा उसी का, होटल उसी का, दुकान उसी की, पुलीस उसी की,ऑफिसर...हुक्मरान उसी का सबकुछ...।

सब कुछ उसी का, सब कुछ उसी का...इस बार अगर जीत गया तो लोग कहते हैं मिनीस्ट बनेगा। तुम...तुम अगर उसको हरा सको तो सबसे ज्यादा खुशी मुझे होगी। पर, पर ऐसा होगा नहीं...। ऐसा होगा नहीं...। ऐसा होगा नहीं...। उसकी ताकत का तुम्हें अंदाजा नहीं। *(बोलते हुए प्रस्थान करता है मंच के दाहिने ओर पार्श्व में जय के मता पिता का चिन्तित स्वर में मुरली से पूछना)...*

पिता : अरे मुरली भाई उधर जय को कहीं देखा है?

मुरली : कौन? नेहरुजी, अरे वो देखो बेंच पर लेटा हुआ है...चुनाव लड़ेगा...हा...हा...हा...। जय के माता-पिता का प्रवेश)

माँ : जय...जय बेटे...तुम ठीक तो हो?

जय : हाँ माँ...बिल्कुल ठीक हूँ...मुझे क्या होगा माँ?

पिता : बेटे हमने सुना पुलिस ने लाठीचार्ज किया तुम्हारी मीटिंग में।

माँ : बेटा तुमको तो नहीं ना लगी चोट?

जय : इसी बात का तो दुख है माँ कि मुझे न लगकर मेरे साथियों को लगी।

पिता : ऐसी बातें मत करो बेटे...तुम ही तो अकेले हमारे लिए सब कुछ हो बेटा मैंने कितनी बार समझाया है कि मत करो

यह सब...मुझे नहीं देखते क्या हालत है मेरी आज। बहुत तेज विद्यार्थी था मैं। अंग्रेजों की तरफ से छात्रवृत्ति मिलता था। पर अपनी पढ़ाई-लिखाई छोड़कर स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़ा और आज, आज रोटी के लिए कहाँ-कहाँ झाँकना पड़ता है। बेटे दुख इस बात का नहीं कि मैंने अपनी जिंदगी के अमूल्य अंश क्यूँ गंवाये दुःख तो इस बात का है कि भारत माँ को विरोधियों से आजाद कराकर कुछ देशी शैतानों के हाथ दे दिया। इसलिए कहता हूँ बेटे...तूँ भी मेरी राह पर मत चल...कहीं कोई छोटी-मोटी नौकरी ढूँढ लो और...।

जय : और जिन्दगी भर किसी ऑफिस में कलर्की करते, करते मर जाऊँ और अपने बाल-बच्चों को भी कलर्की करने के लिए विवश करूँ।

पिता : मुझे गलत मत समझो जय...।

जय : क्या गलत और क्या सही। पिता जी क्या आपने इतना कष्ट सह-सह कर मुझे पढ़ाया-लिखाया था इस लिए? क्या मैंने और मेरे जैसे हजारों युवक पूरी लगन और मेहनत से इसलिए अपनी शिक्षा पूरी करते हैं कि जो चीज उन्हें मिलनी चाहिए वह कोई कामचोर, निकम्मा, गलत तरीकों से शिक्षा हासिल करने वाला अपनी पहुँच के बदौलत मार ले जाये?

माँ : बेटे मन को शान्त करो। यह सब भाग्य का खेल है। अपने चित को कष्ट देने से क्या फायदा चल बेटा घर चल...।

जय : नहीं माँ...आप पहले मेरे प्रश्नों का उत्तर दे दो...माँ तुमने फटी हुई साड़ियाँ पहन कर आधा पेट खा-खा कर मेरे लिए सब कुछ किया, क्या इसलिए कि तुम्हारा जय दर-दर की ठोकरें खाता फिरे...क्या पिता जी ने और इनके जैसे करोड़ों लोगों ने सालों तक अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी। क्या इसलिए कि उनकी संतानें...

पिता : बेटे...बेटे. निकाल दे दिमाग से इन बातों को...अब तो

चालिस से भी अधिक वर्ष हुए भारत को आजाद हुए अब क्या बदल सकते हो तुम लोग? पर, बेटा समय बड़ा बलवान है। वह समय अवश्य आयेगा जब फिर से भारत में राम राज्य होगा।

जय : पिता जी वह समय खुद कभी नहीं आयेगा...जहाँ सिर्फ राक्षस ही राक्षस हों वहाँ राम राज्य खुद क्या आयेगा...उस समय को लाना होगा। इतने रावणों का नाश करने के लिए हजारों राम को सामने आना होगा।

माँ : जय यह कैसी बहकी-बहकी बातें कर रहा है? जरा सोच तो तुम्हें अगर कुछ हो गया तो तेरी इस माँ का क्या होगा?

जय : पर माँ...मेरी उस माँ का क्या हो रहा है जो सिर्फ मेरी ही नहीं तुम्हारी भी पिता जी की भी और सबों की माँ है। क्या उस माँ के लिए हमलोगों का कोई कर्तव्य नहीं?... जनता के सामने ये राक्षस भारत माँ कि जय बोलते नहीं थकते परन्तु पीछे माँ को जड़ से ही नष्ट करने पर तुले हुए हैं। माँ, क्या इन दानवों को हम यूँ ही स्वतंत्र छोड़ दें?

माँ : बेटा...बेटा...ऐसी बातें मत कर मुझे डर लगता है। जरा तो सोच, तूँ ही तो हमलोगों का एक मात्र सहारा है। इस देश में हजारों युवक बेकार हैं। उनके लिए छोड़ दें यह काम बेटा चल घर चल, देख अब कितनी रात हो रही है।

जय : तुम तो स्वार्थी मत बनो माँ। तुम तुम मेरी माँ हो...तुम तो स्वार्थी मत बनो।

(माँ के आंचल में मुँह छिपाकर रोने लगता है।)

माँ : मत रो जय मत रो!

(पार्श्व से आग-आग का शोर, शैडो में घरों में आग लगी हुयी दिखाया जा सकता है)

पिता : आग... मुहल्ले में आग लग गयी दौड़ों बेटा...। *(तीनों का दौड़ते हुए प्रस्थान। शोर हल्ला-गुला रोता चिल्लाता ई पार्श्व से,* प्रकाश बन्द होता है।)

दो दृश्य

(वही मैच। दिन का समय। शानदार वस्त्रों में राय विरेन्द्र सिंह का प्रवेश। हाथ में छड़ी। हाथ में छड़ी। साथ में है, उनका खास व्यक्ति भीम। नाम के अतुल्य ही काया। लम्बी-लम्बी मूंछे। छोटे-छोटे बाल।)

राय : भीम

भीम : जी सरकार

राय : सुना है कल रात इस मुहल्ले में आग लग गयी।

भीम : हाँ...हाँ...हाँ... सरकार आग जहाँ चाहे लग जाए। जहाँ चाहे बुझे जाए।

राय : गधे कहीं के।

भीम : जी सरकार।

राय : शरीर इतना तगड़ा और दिमाग बिलकुल गोल...। अबे पेड़ों के भी कान होते हैं धीरे बोल।

भीम : जी सरकार पेड़ों के भी कान होते हैं और बेंचों के भी। अब मैं धीरे बोलूँगा सरकार...।

राय : वेरी गुड...भीमाँ मैं इस शहर का चेयरमैन हूँ, M.L.A. हूँ, मुझे इन लोगों का हाल चाल जानने के लिए जाना चाहिए क्यूँ?

भीम : जी सरकार अवश्य जाना चाहिए। फिर सरकार वोट भी तो लेना है। इसी मुहल्ले से तो सारी गड़बड़ी हो रही है। सरकार इस बार अगर ठीक से आपने चाल ना चली तो बहुत गड़बड़ हो सकता है।

राय : क्या बकता है? जानता नहीं तुम राय विरेन्द्र सिंह, बल्द राय जीनेन्द्र सिंह, महान देशभक्त,ब महान स्वतंत्रता सेनानी, महान समाजसेवी से बात कर रहा है?

भीम : जानता हूँ सरकार? बहुत दिनों से जानता हूँ...जब में पैदा नहीं था तभी से जानता हूँ...अपनी माँ के मुँह से सुन-सुन कर जानता हूँ सरकार।

राय : इसलिए तो तुमको इतना चाहता हूँ रे भीमाँ क्या पता कहीं

तू मेरी ही औलाद न हो।

भीम : मेरी माँ को गाली मत दीजिए सरकार।

राय : अरे रे गाली कहाँ दे रहा हूँ मैं तो उसे बहुत चाहता हूँ। रे...विश्वास नहीं है क्या? देख-देख मैंने तुम्हें क्या नहीं दिया—मकान, जमीन, जायदाद सबकुछ और तू... तू विश्वास नहीं करता मुझ पर *(रोने का अभिनय करता है)*

भीम : नहीं-नहीं सरकार! मैं तो आपका गुलाम हूँ। सरकार मैं कह रहा था इस जय के बच्चे ने काफी उधम मचा रखा है। सुना है लोग इसको काफी मदद कर रहे हैं। ताकि आपको चुनाव में हराया जा सके।

राय : सुना तो हमने भी है। यह हरामजादा खतरनाक होता जा रहा है। इसके बाप ने भी पहले चुनाव में मुझे काफी परेशान किया था। शाला स्वतंत्रता सेनानी बनता है।

भीम : सरकार आप आदेश दें तो शाला बाप-बेटा दोनों को...।

राय : अरे नहीं...नहीं...मैं अहिंसा का पुजारी हूँ। मेरे पिता गाँधी बाबा के परम भक्त थे। आजतक मैंने अपने हाथों एक भी खून नहीं किया। पर तू निश्चिंत रह भीमाँ इन कुत्तों को वश में करना, इन कुत्तों से वोट लेना, पिता जी की कृपा से मैं अच्छी तरह जानता हूँ।

भीम : पर सरकार आजकल ये कुत्ते बहुत होशियार हो गए हैं।

राय : तू चिन्ता मत कर मैंने खतरनाक कुत्तों को भी वश में कर रखा है। *(भीम का पीठ सहलाते हुए)*

भीम : *(आश्चर्य से)* जी?

राय : हो...हो...हो... चल-चल मुहल्लों वालों का हालचाल पूछ आयें? *(दोनों का प्रस्थान। सड़क पर एक आध आदमी का आना-जाना बना हुआ है। कुछ क्षण बाद जय घनश्याम और प्रेम का प्रवेश। तीनों परेशान हैं। आकर बेंच पर बैठते हैं।)*

प्रेम : जय, यह तो सरासर पुलिस की ज्यादती है। हम लोगों का रिपोर्ट तक नहीं लिखा।

घनश्याम : सब के सब राय विरेन्द्र सिंह के खरीदे हुए हैं और हम उसी के विरुद्ध, रिपोर्ट लिखवाने गए थे तो कैसे लिखते?

जय : घनश्याम। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि आग खुद ही लग गयी हो। हमलोग जो राय विरेन्द्र सिंह को बीच में घसीट रहे हैं क्या वह उचित है?

घनश्याम : जय तुम कुछ भी कहो, मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि आग राय विरेन्द्र सिंह ने ही लगवायी थी। उसे तुमसे खतरा हो गया है। अब वह कुछ भी कर सकता है।

प्रेम : यह तो गनीमत हुआ कि ज्यादा नुकसान नहीं हुआ। मुहल्लवालों की तत्परता से सब बच गया। नहीं तो सोचो क्या नहीं हो सकता था।

घनश्याम : ठीक कहते हो प्रेम। यह SP भी बाहर गया हुआ है। उसके आने पर हमलोग अवश्य मिलेंगे।

प्रेम : क्या दरोगा क्या SP, सब एक ही हैं। सारा शासन तंत्र ही भ्रष्ट है। जी तो करता है जय, जय वो चार रिवाल्वर जो हमलोगों ने हासिल किये हैं, उसमें से एक मुझे दे दो। मैं... मैं इस राय विरेन्द्र सिंह के बच्चे का काम ही तमाम कर दूँ... फिर चाहे मुझे फाँसी पर लटकना पड़े। कोई परवाह नहीं...ना रहेगा बाँस ना बजेगी बाँसुरी।

जय : होश में रहकर बातें करो प्रेम। कभी-कभी यह कैसी बातें करने लगते हो? किस-किस का खून करते फिरोगे? खून करने से कुछ भी हासिल नहीं होगा। आन्दोलन करना होगा। लोगों को शिक्षित करना होगा...उन्हें जगाना होगा।

प्रेम : मगर मैं पूछता हूँ वो रिवाल्वर है कहाँ?

जय : वो मैं अपने पास नहीं रखता। किसी के पास सुरक्षित रखे हुए हैं।

प्रेम : किसी के पास! घनश्याम इसका मतलब है वे तुम्हारे पास है।

घनश्याम : हाँ है। मगर तुम्हें नहीं मिलेगा। तुम समझते क्यों नहीं। हम लोग खून खराबे में विश्वास नहीं रखते।

प्रेम : तो फिर हमने इन रिवाल्वरों को हासिल किए ही क्यों है।

घनश्याम : प्रेम, ऐसा समय आ सकता है जब हमें अपनी सुरक्षा करनी पड़ी। वैसा समय आने पर तुम्हें भी दे दिया जायेगा। अरे वो सामने कौन आ रहा है? जय जय यह तो राय विरेन्द्र सिंह लगता है। यह तुम्हारे मुहल्ले में क्यों गया था?

प्रेम : शाला देखने गया होगा कि लोग जिन्दा कैसे बच गए।

जय : प्रेम तुम्हारे मुँह से गाली शोभा नहीं देता। अगर तुम्हें हमारे साथ चलना है तो अनुशासन में रहना होगा।

प्रेम : सॉरी जय...

जय : प्रेम राय विरेन्द्र सिंह के इधर से गुजरने पर कोई भी उल्टी-सीधी हरकत नहीं करोगे समझे।

प्रेम : Ok जय As you like, you are own leader.

राय : *(प्रवेश के साथ)* लीडर क्या बच्चों मैं तो तुमलोगों का सेवक हूँ।

प्रेम : आपको नहीं कहा लीडर। हमरा लीडर तो जय है।

जय : प्रेम।

प्रेम : सॉरी जय।

राय : अरे रे बोलने दो बेटा...बोलने दो। हमने जब संविधान बनाया तो बोलने की स्वतंत्रता पर खास ध्यान रखा गया था ताकि सब लोग बोल सकें। चाहे जो मन हो सो बोल सकें।

प्रेम : आपने संविधान बनाया?

जय : *(डांटते हुए)* प्रेम। राय विरेन्द्र जी...

राय : राय विरेन्द्र जी नहीं बेटे...चाचा कहो चाचा। सब लोग मुझे चाचा कहते हैं। तुमलोग भी कहो बेटे...।

प्रेम : कहो भाई...चाचा नेहरु की तरह इनको भी चाचा...।

घनश्याम : प्रेम तुम बाज नहीं आओगे? देखिए राय विरेन्द्र जी। हमलोग अभी काफी परेशान हैं। जय के मुहल्ले में रात आग लगायी गयी।

भीमा : लगायी गयी? तुम कहना क्या चाहते हो?

प्रेम : वही जो तुम समझ रहे हो।

भीम : खबरदार जो हमारे सरकार पर इलज़ाम लगाया तो...।

प्रेम : लो भाई जय, समझ लो चोर की दाढ़ी में तिनका।

राय : तुम कुछ ज्यादे बोलते हो क्या नाम कहा—हाँ प्रेम। बेटे ज्यादा बोलना सेहत के लिए ठीक नहीं होता। हाँ तो बेटे क्या नाम कहा—हाँ घनश्याम तुम क्या कह रहे थे? मुहल्ले में आग लगायी गयी। छीः...छीः...छीः। कौन है इतना बड़ा नीच जिसने ये कुकर्म किया? बेटे जय क्या तुम लोग उसको जानते हो?

घनश्याम : हाँ जानता हूँ...। अच्छी तरह जानता हूँ उस महान नीच को...।

राय : अरे तो मेरे साथ थाने चलो रिपोर्ट लिखवाओ। शाले को 6 साल के लिए अन्दर ना करवाया तो मेरा नाम विरेन्द्र सिंह नहीं।

जय : थाने से ही तो आ रहे हैं हमलोग दरोगा जी ने रिपोर्ट लिखने से इंकार कर दिया।

राय : उस शाले की इतनी हिम्मत! रिपोर्ट नहीं लिखा। बताओ उस नीच का नाम। मैं अभी जाकर दरोगा की खबर लेता हूँ। बताओ बेटा कौन है वह पापी?

जय : छोड़िये क्या कीजिएगा उस नाम को जानकर।

राय : नहीं बेटा...यह तो जुर्म है सरासर जुर्म है। किसी के घर में आग लगा देना। यह तो अक्ष्य अपराध है। बताओ कौन वह?

घनश्याम : जय से क्या पूछते हैं। मुझसे पूछिये उस आदमी का नाम।

राय : हाँ...हाँ... तुम्हीं बताओ बेटा।

घनश्याम : राय विरेन्द्र सिंह!

भीम : *(लाठी उठाते हुए)* खबरदार जो फिर दूसरी बार सरकार का नाम लिया तो...। एक-एक हड्डी तोड़ कर रख दूंगा।

राय : शान्त भीमा! शान्त! अभी ये लोग नादान हैं क्षमा कर दो। और भीमा भीम का गदा हर बार नहीं उठना चाहिए। सिर्फ

समय आने पर। बेटे जय तुमलोगों ने मुझ पर इतना बड़ा इलजाम लगाया...मेरा तो आज हत्या कर लेने का जी कर रहा है।

मेरी प्रजा मुझ पर ही इतना बड़ा इलजाम लगावे। छी! छी! छी!

प्रेम : हम आपकी प्रजा नहीं हैं राय विरेन्द्र सिंह। हम इस देश के स्वतंत्र नागरिक हैं समझे।

राय : अरे बेटा काहे का राजा...काहे की प्रजा। मेरे कहने का मतलब था। तुम लोग मेरे गाँव के हो मैं यहाँ का MLA हूँ और इतना घृणित लांछन... अभी-अभी मैं लोगों के घर को देखकर रो उठा था। लोगों को मैंने आश्वासन दिया है कि मुख्यमंत्री जी से कहकर मुआवजा दिलाऊँगा। पर...पर।

घनश्याम : क्या! क्या नाटक करते हैं आप राय विरेन्द्र सिंह जी।

राय : यह नाटक नहीं बेट...यह नाटक नहीं। यह सच्चाई है। मैं तुम लोगों को कैसे समझाऊँ। बेटे जय बाप-दादे के जमाने से हमलोग समाज सेवा में लगे हुए हैं। अंग्रेजों से लड़ने में हमारे पिता ने लाखों-रुपये बहाये। इसका...इसका यही फल दे रहो हो तुमलोग?

जय : राय साहब इतनी देर मैं चुप था क्योंकि आप बुजुर्ग हैं परन्तु समाजसेवा का नाम लेकर आपने मुझे बोलने पर विवश कर दिया है। आपने और आपके जैसे नेताओं ने समाजसेवा के नाम पर देश को लूटा है। लूट रहे हैं। आजादी से पहले क्या था आपके पिता के पास। आपके पिता ने स्वतंत्रता संग्राम में थोड़ा बहुत भाग लिया पर आपने क्या किया? मेरे पिता जी थे, 15 वर्षों तक अंग्रेजों से लड़ते रहे। कई बार जेल गए समय पर शादी नहीं की। आजादी के बाद भी समाजसेवा में लगे रहे। पर आज खाने के लाले पड़े हैं। उनकी ईमानदारी देखिए समाज सेवा देखिए...देशभक्ति देखिए स्वतंत्रता सेनानियों को दिया जाने वाला पेंसन भी उन्होंने स्वीकार नहीं किया। क्योंकि...उनके विचार से देश

में उनसे भी गरीब लोग हैं। पहले उनकों सहायता दी जानी चाहिए... और आप आज तो भिखमंगों का भी अधिकार छीन लेना चाहते। उनके सामने से भीख में दी गयी रोटी उठा लेना चाहते हैं।आपके सारे संबंधी आज स्वतंत्रता सेनानी का पेंशन उठा रहे हैं भले ही उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम का मुँह तक नहीं देखा है। बोलिए यह सच है कि नहीं?

राय : यह सब गलत है, सब गलत है! तुम लोगों को किसी ने बहलाया-फुसलाया है।

प्रेम : हम कोई दूध पीते बच्चे नहीं हैं विरेन्द्र सिंह जी! जो कोई हमें बहला-फुसला दे।

घनश्याम : और अगर मेरी बातें गलत हैं तो फिर डरते क्यों हैं? जाईए आराम से जाईए और वे चुनाव की तैयारी कीजिए। हाँ एक बात और देखियेगा इस बार आपके विरुद्ध हमलोग जय को खड़ा कर रहे हैं।

राय : यही सुनकर तो दुख हुआ बेटा। यही सुनकर दुख हुआ। इस बुड्डे से एक नौजवान टक्कर लेने की सोच रहा है। बेटे जय अब मैं और कितने दिन? मेरे बाद तो तुम्हीं लोगों को राज-पाट चालाना है। मुख्यमंत्री जी ने कहा है कि इस बार जीतकर आओ तो मंत्री बना देंगे। वही तम्मना था कि मंत्री बनकर अपने क्षेत्र का उद्दार कर सकूँ।

प्रेम : अपने क्षेत्र का या अपनी तिजारी का?

जय : प्रेम *(डाँटते हुए)*। राय साहब आपकी एक भी बात से मैं सहमत नहीं हूँ। मैंने फैसला कर लिया है। मैं चुनाव लड़ूँगा और आपको हराकर कम से कम इस क्षेत्र से भ्रष्टाचार को मिटा दूँगा।

राय : बेटे भ्रष्टाचार है कहाँ? यह यह तो युग की रीति है। बेटे यह कलियुग है जिसे आजकल लोग भ्रष्टाचार कहते हैं वही कलियुग का सदाचार है बेटे।

जय : हूँ क्या फिलासफी है। वाह! राय साहब आप समझते रहिए जो समझना हो पर हम ही नहीं सारा देश इसे भ्रष्टाचार

कहता है। जुल्म समझता है। अब आप जा सकते हैं।

राय : इतना गुस्सा ठीक नहीं...। जरा इधर तो आओ बेटे *(एकांत में ले जाना चाहता है)*

जय : मुझे आपसे कोई भी गुप्त बात नहीं करनी है। जो कहना हो यहीं कहिए?

राय : बेटे एक मिनट तो सुनलो।

घनश्याम : जाओ जय! सुन लो। कौन-सी सदाचार की बातें कहते हैं? सुन लो?

राय : हाँ...हाँ... आओ बेटा *(मंच के एक कोने में ले जाता है)* बेटा मेरी बातें जरा ध्यान से सुनो, तुम एक गरीब नवयुवक हो...उमंग है, जोश है, तेजी है, परन्तु तुम्हारे ये साथी अच्छे खाते-पीते घरों के हैं। क्यों इनके बहकावे में आकर अपनी जिन्दगी बर्बाद कर रहे हो। मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें आदमी बना दूंगा। Muncipality का वार्ड कमीश्नर बना दूँगा। मुख्यमंत्री एवं अन्य बड़े-बड़े नेताओं से परिचय करवा दूँगा। कहाँ से कहाँ पहुँच जाओगे। देखो बेटा यह Election का भूत अपने दिमाग से हटा दो। दस हजार रुपये मुझसे आकर ले जाना। अपने घर को देखो। अपने माता-पिता को देखो।

जय : राय विरेन्द्र सिंह तुम मुझे लालच दे रहे हो...तुम मुझे पैसे देकर खरीदना चाहते हो। तुम मुझे भी उसी सोने के डंडे से रोकना चाहते हो चले जाओ अभी यहाँ से चले जाओ। मुझे गुस्सा बहुत कम आता है पर जब आता है?

राय : खामोश... जोर से मत बोलो राय विरेन्द्र सिंह को भी जो से बोलना आता है। इतनी जोर से कि कोई दूसरी आवाज सामने टिक नहीं पाती। मैंने फालतू में इतना समय तुमलोगों के पीछे बर्बाद किया। तुम लोग जिस स्कूल और कॉलेज से पढ़े हो, शायद उनमें मेरे बहाल किये हुए शिक्षक नहीं थे। इसलिए मैं तुम लोगों को समझ नहीं सका। पर याद रखो मेरे पास दूसरे तरह के शिक्षक भी हैं जो किसी को

भी किसी भी समय, कुछ भी समझा सकते हैं। उनमें एक है भीमा और ऐसे कई भीमा मैंने पाल रखे हैं। *(जय कुछ बोलने लगता है)* खबरदार, जो अब एक भी शब्द बोलने की कोशिश की राय विरेन्द्र सिंह का अब तक तुमने सिर्फ नाम सुना है। काम नहीं देखा है। चार दिन बात तक Nomenation Papers दाखिल करने का अन्तिम दिन है। कल सवेरे तक अगर तुम मेरे पास नहीं आये तो मैं समझूँगा तुम एलेक्शन लड़ने पर उतारु हो...उसके बाद ही भीमा अपना काम करेगा...चलो भीम...।

भीम : जी सरकार।

(दोनों का प्रस्थान। प्रकाश बन्द होता है)

तीन दृश्य

(वही मंच। एक दिन बाद। दो पहर का समय। जय परेशान मुद्रा में यहाँ से वहाँ टहल रहा है। कंधे से झोला लटका हुआ है)

जय : *(स्वतः)* अभी तक नहीं आये। दो बजने को आया। बस तो बाहर बजने ही आ जाती है।

(माँ का प्रवेश)

माँ : तूँ अभी तक यहीं है...देख मैं कहती थी न इतनी देर में खाना तैयार हो जाएगा...चल बेटा खाना खा ले...घर से भूखे पेट निकलना अच्छा नहीं।

जय : मुझे भूख नहीं है माँ...तुम जाओ।

माँ : *(गौर से देखकर)* बेटा आज तू इतना परेशान क्यों लग रहा है...क्या बात है बेटे?

जय : कुछ नहीं माँ...कुछ नहीं!

माँ : तू सबसे छुपा सकता है पर अपनी माँ से नहीं। बोल बेटा, देख एक माँ के लिए तू प्राण तक देने को तैयार है और दूसरी से झूठ बोलता है।

जय : झूठ नहीं माँ! मैंने कोई झूठ नहीं बोला है।

माँ : बोला है। तू परेशान है किसी खास वजह से और अपनी माँ से कहता है कुछ नहीं।

जय : अरे माँ...तू तो बेकार ही चिन्तित हो रही है। दरअसल बात यह है कि घनश्याम और प्रेम को कल रात मैंने राम नगर भेजा था कुछ लोगों से मिलने के लिए। उनसे सहायता माँगने के लिए। पर वे लोग अभी तक नहीं लौटे। बारह बजे ही बस आ जाती है और अब दो बज चुके हैं।

माँ : आ जायेंगे बेटा...आ जायेंगे...गाड़ी-घोड़े की बात है...हो सकता है बस लेट हो गयी तो। तू घर चल। खाना खा कर आराम कर वे लोग वहीं आ जायेंगे।

जय : नहीं माँ... उन लोगों को यहीं आना है।

माँ : पता नहीं इस सड़क के किनारे इस पेड़ के नीचे क्या रखा है जो तुम लोग यहीं बैठे रहते हो। बगल में घर है वहाँ भी तो बैठ सकते हो।

जय : सच कहूँ माँ...इस सड़क के किनारे इस पेड़ के नीचे बैठने से बड़ा सकून मिलता है। तुम तो जानती हो माँ आजादी के बाद पिता जी के हाथों इस सड़क का उद्घाटन हुआ था, पिता जी से ही लोगों ने इन पेड़ों को लगवाया था...वे दिन भी क्या दिन रहे होंगे। लोग आजादी के दिवाने थे, स्वतंत्रता सेनानियों की इज्जत की जाती थी मैंने नहीं देखा पर तुम तो अपनी आँखों से देखे हो माँ!

माँ : अब उन बातों को कौन याद रखता है, तुम्हारे पिता जी को अब कौन पहचानता है। भूल जा बेटा इन बातों को भूल जा अब याद करने से भी क्या फायदा।

जय : फायदा है माँ...फायदा है। इस सड़क को देखकर इन पेड़ों को देखकर आजादी का एहसास होता है। उन वीरों की याद आती है जो हँसते-हँसते अपने प्राण न्योछावर कर गए। इस मिट्टी की आजादी के लिए और माँ कितनी चहल-पहल रहती है। इस सड़क पर हर मुसाफिर को मंजिल तक पहुंचाती है पर इस सड़क को देखकर उम्मीद बंधती

है। हमारी मंजिल भी अवश्य मिलेगी, अवश्य मिलेगी। पर माँ, इस सड़क पर चलने वालों का जर्जर शरीर देखकर, मुरझाया हुआ चेहरा देखकर, गुलामी की भी एहसास होता है। वैसे गुलाम जिन पर आजाद भारत का संविधान लागू होता है इन चन्द चोर बेईमान और भ्रष्ट नेताओं और अफसरों की कृपा से।

माँ : बेटा, तुम्हारी ये बातें मेरी समझ के बाहर हैं। मैं तो इतना ही जानती हूँ कि सब चोर बेइमान नहीं है।

जय : हाँ माँ... सब चोर, बेइमान, भ्रष्ट नहीं है परन्तु अधिकतर है। इन गद्दारों को देश में रहने का कोई अधिकार नहीं।

माँ : तुमसे बहस कौन करे। चलो घर चलो।

जय : नहीं माँ...तुम जाओ मुझे तुरन्त रामनगर जाना होगा। *(प्रस्थान करने लगता है)*

माँ : जय-जय सुनो बेटा। मेरा मन नहीं करता कि आज तुम्हें कहीं जाने दूँ।

जय : कैसी बात करती हो माँ...मेरा जाना आवश्यक है।

माँ : नहीं बेटा नहीं! तुम्हें मेरी कसम आज कहीं मत जाओ, घर चलो बेटा।

जय : ओफ्फ माँ यह तुमने क्या किया। माँ तुम मेरी मजबूरी मत बनो। आज के बाद कभी कसम मत देना माँ...मत देना।

माँ : ठीक है जय तुम जो चाहोगे वहीं होगा। तुम्हारे रास्ते की रुकावट में अब कभी नहीं बनूँगी। भारत माँ के लिए अगर तुम इतना कर सकते हो तो वह मेरी भी माँ है। मैं भी सबकुछ सह सकती हूँ। पर आज बेटा कहीं जाने नहीं देना चाहता। आ घर चल बेटे।

जय : मैं घर नहीं जाऊँगा। यही उन लोगों का इंतजार करुंगा तुम जाओ। (माँ की ओर देखकर) तुम्हारी दी हुई कसम का मैं इज्जत रखूँगा। आज कहीं नहीं जाऊँगा लो यह झोला ले जाओ। ठीक से रख देना। अब तो विश्वास हो गया ना।

(माँ कंधे पर झोला लटका कर जाने लगती है। दूसरी तरफ से भीमा के साथ दो-तीन गुण्डे का प्रवेश। सभी के हाथ में लाठी है।)

भीमा : यही है, यही है मारो शाले को। इतना मारो कि हरमजादा फिर पानी भी ना माँग पाये। *(गुण्डे लाठियों से मारने लगते हैं। जय गिर पड़ता है। माथे से खून बहने लगता है।*

माँ : *"मत मारो, मत मारो मेरे बच्चे को रे भगवान") कहते हुए गुण्डों को पकड़ती है।*

एक गुण्डा "हट बे बुढ़िया" (कह कर ढकेल देता है। माँ कुछ दूर जाकर गिर जाती है। बेहोश हो जाती है। यह सारा दृश्य प्रकाश की सहायता से आँख-मिचौली की तरह दिखाया जा सकता है। मंच पर पूरा प्रकाश दूर से कुछ लोगों के गाने की आवाज।)

भीमा : भागो...भागो लगता है लोग आ रहे हैं। *(सभी गुण्डे भाग जाते हैं। कुछ लोगों के साथ जय के पिता का प्रवेश,* पहले नजर माँ पर पड़ती है।)

पिता : जय की माँ...जय की माँ...आँखें खोलो। क्या हो गया जय की माँ...आँखे खोलो हे भगवान!

एक आदमी : अरे उधर जय भी गिरा हुआ है। *(नजदीक जाकर)* बाप रे खून!

पिता : *(माँ को छोड़कर जय के पास जाते हैं)* जय बेटा जय यह क्या हो गया...जय उठ बेटा उठ जय।

एक आदमी : अरे कोई दौड़कर पानी लाओ जल्दी जाओ।

(जय के पिता कभी जय को और कभी माँ को उठना चाह रहे हैं। 3-4 सिपाहियों के साथ एक इंसपेक्टर प्रवेश के साथ)

इंसपेक्टर : कहाँ है शाला?... दंगा करता है वो देखो वहीं है। पकड़ो उसे। *(जय की तरफ ईशारा सिपाही बढ़ते हैं)*

इंसपेक्टर : खबरदार, जो कोई आगे बढ़ा, चलो।

पिता : मत ले जाओ जय को...मत ले जाओ।

(इंसपेक्टर का पाँव पकड़ते हुए) इंसपेक्टर इस बूढ़े पर दया करो मेरा बेटा निर्दोष है। देखो-देखो किसी ने मार-मार कर क्या हालत बना दी है। दया करो इंसपेक्टर।

इंसपेक्टर : ऐ बुड्डे जब बेटा हीरो बनता था, तो क्यों नहीं समझाया. ..अब शाले को आटा-दाल का भाव मालूम पड़ेगा, हट जाओ। *(पिता को ढकेल देता है...सिपाही जय को खींचते हुए ले जाते हैं...)*

पिता : मत ले जाओ...मेरे जय को मत ले जाओ। हा...हा... हा...ले गया। ले गया। मेरा सब कुछ ले गया। हा... हा...हा... खून-खून की नदी यहाँ की धारा में नदी में डूबकी लगाऊंगा। हा...हा...हा...।

(पागलों की तरह करने लगता है। लोग पकड़ते हैं....धीरे-धीरे प्रकाश बन्द होता है।)

चार दृश्य

(कुछ दिन बाद। वही मंच। घनश्याम और प्रेम बैठे हुए हैं। प्रेम हिचकियाँ ले लेकर रो रहा है)

घनश्याम : प्रेम...प्रेम... जो होना था सो हो गया। अब रोने से क्या फायदा हमें आन्दोलन को...।

प्रेम : मत लो आन्दोलन का नाम जय! जय *(रोने लगता है)*

घनश्याम : देखो प्रेम...जितना दुःख तुम्हें है उससे कहीं ज्यादा... खैर चाचा और चाची का सामना कैसे किया जाए?

प्रेम : घनश्याम! काश उस दिन मैं मौजूद रहता।

घनश्याम : कुछ नहीं कर पाते प्रेम...कुछ नहीं यहाँ लोकतंत्र नहीं है। गुण्डा तंत्र है। किसी ने भी हमारी नहीं सुनी। बूढ़े चाचा और चाची पर भी किसी को दया न आयी। देखो कितना बड़ा विरोध जूलूस लोगों ने निकाला शहर में। कितना तनाव हो गया था। पर पुलिस ने लाठी के बल पर सबको दबा दिया।

प्रेम : घनश्याम...घनश्याम तुम लोगों ने चार रिवाल्वर हासिल किये थे। उनमें से एक मुझे दे दो। मैं तुम्हारे पांव पकड़ता हूँ। घनश्याम एक मुझे दे दो। मैं उस हरामखोर विरेन्द्र सिंह को नहीं छोड़ूँगा।

घनश्याम : इतने उतावले मत होओ। समय आने पर सब किया जायेगा। अभी हमलोग भी पुलिस की नजर में हैं। राय विरेन्द्र सिंह कितना बड़ा मक्कार है, तुम अच्छी तरह जानते हो।

प्रेम : मगर घनश्याम एक बात बताओ... पुलिस ने अपनी रिपोर्ट में जय के पास से एक देशी रिवाल्वर और गोलियां बरामद की गयी बताया है। क्या यह उन्हीं चार में से...

घनश्याम : हाँ प्रेम उन्हीं में से एक था। प्रेम जय को मैंने एक रिवाल्वर हमेशा अपने पास रखने को कहा था। तुमसे उस दिन झूठ कहा गया था क्योंकि तुम शार्ट टेम्पर्ड हो मगर...मगर विरेन्द्र सिंह के गुण्डे के विरुद्ध जय ने रिवाल्वर का उपयोग क्यों नहीं किया? यह मेरी समझ में नहीं आ रहा।

प्रेम : हो सकता है हमला अचानक किया गया हो...।

घनश्याम : हाँ, कुछ ऐसा ही हुआ होगा। प्रेम अब हम दो रह गए हैं। प्रेस भी हमारा साथ नहीं दे रहा है। हमारी फरियाद छापने को तैयार नहीं। विरेन्द्र सिंह सब के लिए एक हौआ बना हुआ है। क्या करूँ कुछ समझ में नहीं आता।

प्रेम : सबसे पहले तो चाचा और चाची का सामना। घनश्याम मेरे को हिम्मत नहीं होती उनके सामने जाने की। तुम...तुम अकेले ही हो आओ।

(इतने में जय के पिता पागल की तरह दौड़ते आते हैं। पीछे-पीछे जय की माँ भी बदहवास-सी आती है)

माँ : ऐसे मत करो जय के पिता ऐसे मत करो। मुझे अभागन पर तरस खाओ।

पिता : हाँ....हाँ....हाँ... मेरा जय, मेरा जय देखो जय की माँ जय यहाँ लेटा हुआ है। खून-खून हा...हा...हा... जय के माथे से खून की नदी बह रही है। गंगा नदी में उसमें डूबकी

लगाऊँगा हाँ। मेरा सारा पाप धुल जायेगा। *(जय जहाँ गिरा था वहीं जाकर बोलता रहता है फिर नदी में नहाने के जैसा नाक पकड़कर डुबकी लगाता है)*
हर-हर गंगे....हर हर गंगे!

माँ : ऐसा क्यों करते हो...मुझे देखो मैं माँ होकर भी सब सह रही हूँ। पर, पर तुम इतने बुझदिल डरपोक-कायर।

पिता : कायर हा...हा...हा... नहीं छोड़ूँगा। किसी को भी नहीं छोड़ूँगा। मार डालूँगा। हा...हा...हा... *(बोलते हुए चबूतरे के चारों ओर दौड़ता रहता है। जय की माँ उन्हें पकड़कर जबरदस्ती चबूतरे पर बैठाती है)*

माँ : हे भगवान किस पाप की सजा दे रहे हो। इस अभागन पर थोड़ी-सी भी दया नहीं। *(रोती है, पिता हंसते हुए चबूतरे पर लेट जाते हैं)*
(घनश्याम और प्रेम एक कोने में खड़ा असहाय अवस्था में सब देखता रहता है। घनश्याम हिम्मत करके आगे बढ़ता है)

घनश्याम : चा ची...

माँ : *(देखते हुए)* कौन? ओह घनश्याम प्रेम मेरा बेटा कैसा है घनश्याम? वो कब आयेगा? घनश्याम...घनश्याम वो कब आयेगा? तुमलोग कुछ बोलते क्यों नहीं? घनश्याम बोलो बेटा...बोलो...प्रेम तुम भी...? तुम तो कुछ बोलो बेटा...

प्रेम : बहुत बुरी खबर है चाची बहुत बुरी खबर...।

माँ : बुरी खबर...अब और क्या बुरी खबर होगी बेटे...। बेटे घबराओ मत। मेरा हृदय मेरा हृदय पत्थर का हो गया है... यह कुछ भी सुनने को तैयार है। बोलो, बोलो बेटा... बोलो क्या जय को सजा हो गयी?

घनश्याम : नहीं चाची नहीं... हम लोगों को सजा मिल गयी चाची। हम लोगों को... जय नहीं रहा, जय नहीं रहा!

घनश्याम : हाँ चाची हाँ... पुलिस लॉकअप में आज सवेरे...

माँ : नहीं ऽ ऽ ऽ *(रोने लगती है)*

पिता : रोती है...हा...हा...हा... रोती है। *(तालियाँ बजा-बजा कर हंसता है)* रोती है, हा...हा...हा... रोती है।

माँ : जय के पिता जय के पिता, जय...जय मर गया है। ज य मर गया, जय के पिता।

पिता : हा...हा...हा... मर गया। मर गया...विक्रम सिंह ने मार डाला। हा...हा...हा... जय को मार डाला। हा...हा...हा... *(हँसते-हँसते रोने लगता है। फिर हँसते हुए)* झूठी कहीं की। जय तो वहाँ लेटा हुआ है (दौड़कर उसी जगह जाता है, जहाँ जय गिरा था) खून-खून जय के माथे से खून...हर-हर गंगे। *(दुलराता है)*

घनश्याम : *(बढ़कर पकड़ता है)* चाचा-चाचा ऐसा मत करो। तुम ही ऐसे करोगे तो फिर चाची को कौन देखेगा। घर चलो चाचा। *(प्रेम और घनश्याम पकड़ कर ले जाना चाहते हैं। पिता दोनों को धकेल देता है)*

पिता : घर हा...हा...हा... मेरा घर तो यही है देखो...देखो ये है मेरा घर मैं यहीं रहता हूँ, यहीं सोता हूँ हा...हा....हा...
(एक पथर का टुकड़ा उठाकर जय जहाँ गिरा था उसके चारों ओर लकीरें खींच कर उपर्युक्त संवाद बोलता है।)
जय, जय घबराना मत बेटे। तेरा बाप हूँ मैं। एक-एक से बदला लूँगा मार डालूँगा...मार डालूँगा। हा...हा...हा... *(कहते हुए वहीं लकीरों के बीच सो जाता है। माँ उधर पेड़ के चबूतरे पर रोते-रोते बेहोश जाती है। प्रेम की नजर पड़ती है। इधर पिता सब को मार डालूँगा। एक-एक से बदला लूँगा। हा...हा...हा... चिल्लाता रहता है)*

प्रेम : चाची-चाची उठो चाची। आँखे खोलो घनश्याम तुम चाचा को देखो। मैं चाची को घर ले जाता हूँ। *(चाची को गोद में उठाकर प्रस्थान करता है)*

घनश्याम : चाचा देखो, चाची की कैसी हालत हो गयी है। घर चलो, देखो चाची बेहोश हो गयी है।

पिता : नहीं मरेगी... नहीं मरेगी... एक-एक को मार कर उसे

मारूँगा। फिर खुद मरूँगा ला दो...शूट कर दूँगा मुझे एक रिवाल्वर ला दो, शूट कर दूँगा सब को शूट कर दूँगा। मेरा पाप धुल जायेगा। जय...जय... के माथे से खून हर गंगे...हर गंगे।*(वही संवाद दुहराता है। धीरे-धीरे प्रकाश बन्द होता है)*

दृश्य पाँच

दूसरा दिन। वहीं मंच। इस दृश्य में राय विरेन्द्र सिंह का चुनाव विजय जलूस का दृश्य पर्दे पर शैडो में दिखाया जा रहा है। लोग नारे लगाते हुए झूमते-गाते जा रहे हैं। ''जीत गया भाई जीत गया। राय विरेन्द्र जीत गया। जो हमसे टकरायेगा। चूर-चूर हो जायेगा। सामने मंच पर स्पॉट लाइट के हल्के प्रकाश में जय की अंतिम यात्रा का दृश्य दिखाया जाता है। दोनों दृश्य साथ-साथ दिखाये जाते हैं। अंतिम यात्रा में एक चारपाई पर जय की लाश। चार लोग कंधा दिए हुए। कुछ और भी लोग। जय के पिता जो पेड़ के चबूतरे पर लेटे हैं उन्हें प्रेम और घनश्याम जबरदस्ती उठा कर अंतिम यात्रा में ले जाते है। घनश्याम के हाथ में मिट्टी का बर्तन जिसमे आग है। धुआँ निकल रहा है। जय के पिता ''नहीं जाऊँगा, यहाँ से कहीं नहीं जाऊँगा... वो आयेगा वो आयेगा... मार डालूँगा चिल्लाते रहते हैं। अंतिम यात्रा का जलूस एक ओर से चुनाव विजय का जलूस दूसरी ओर चला जाता है। धीरे-धीरे प्रकाश बन्द होता है।

छः दृश्य

(कुछ दिन बाद। दिन का समय। वही मंच। चबूतरे पर एक साधारण-सा चादर तकिया लगा है। पिता उसी पर बैठे हैं। बढ़ी हुयी दाड़ी। फिटे-चिरे कपड़े एक थाली में रोटी तरकारी लिए जय की माँ बैठी है। प्रेम इधर से उधर टहल रहा है।)

माँ : अब तो खा भी लो। क्यों मुझे इतना तंग करते हो? एक बेटा था वह भी धोखा दे गया। अब तुम क्यों मुझे इतना रुलाते हो...लो खा लो...।

पिता : नहीं खाऊँगा...नहीं खाऊँगा...हा...हा...हा... पहले मुझे रिवाल्वर लाकर दो मार डालूँगा सबको मार डालूँगा। मैं सबको पहचानता हूँ। एक-एक को मार डालूँगा खून-खून (जय को दुलराते हुए फिर लकीरों से घिरे जगह में पहुँच कर हर हर गंगे)

प्रेम : चाचा-चाचा चलो कुछ खा लो।

पिता : नहीं खाऊँगा। पहले मुझे रिवॉल्वर दो।

प्रेम : अभी आ जायेगा रिवॉल्वर चाचा। घनश्याम अभी लेकर आएगा। चलो तब तक तुम खा लो।

पिता : हा...हा...हा... शूट कर दूँगा। मैं सबको शूट कर दूँगा... वो आयेगा... वो आयेगा। *(कहते हुए चबूतरे पर लेट जाता है)*

प्रेम : चाची तुम घबराओ नहीं। हमलोग कुछ ना कुछ अवश्य करेंगे। चाची इस देश में मरते हुए के सामने से भी रोटी छीन लेने में लोगों को शर्म नहीं आती। लाखों रुपये खर्च करती है सरकार मेन्टल (हॉस्पीटल *पर मगर कुछ* नहीं होता, कुछ नहीं होता) प्राइवेट नर्सिंग होम में इलाज अच्छा होता है पर लूटने में ये लोग भी कोई कसर नहीं छोड़ते चाची...हम लोग, हमलोग पैसे का इंतजाम कर रहे हैं, तुम घबराओ मत।

(घनश्याम का प्रवेश)

तुम आ गए घनश्याम।

(घनश्याम का नाम सुनते ही पिता उठकर बैठ जाते हैं और)

पिता : रिवॉल्वर मेरा रिवॉल्वर...?

घनश्याम : हाँ...हाँ... चाचा ले आया हूँ लो। *(कहकर एक खिलौना वाला रिवॉल्वर जेब से निकालकर देता है। पिता रिवॉल्वर लेकर बहुत खुश होते हैं और शूट कर दूँगा। बोलने लगते हैं)*

माँ : लो... अब तो खा लो *(खिलाने लगती है। पिता खाते भी*

रहते हैं और शूट कर दूँगा बोलते भी रहते हैं। दूसरी तरफ प्रेम और घनश्याम)

प्रेम : घनश्याम अब कुछ न कुछ करना होगा।

घनश्याम : मगर प्रेम इतना पैसा हम लायेंगे कहाँ से। पिता जी से कहा तो उन्होंने साफ ना कर दी। क्या करूँ कुछ समझ में नहीं आता।

प्रेम : घनश्याम मैं फिर कहता हूँ... एक रिवॉल्वर मुझे दे दो। चाचा और चाची की तरफ जब भी देखता हूँ। तो मेरा खून खौल उठता है।

घनश्याम : फिर वही पागलपन? चलो मेरे साथ।

प्रेम : नहीं! आज मैं तुम्हारी एक बात नहीं सुनूँगा। पहले मुझे बताओ तुमने रिवॉल्वर कहाँ रखे हुए है?

घनश्याम : प्रेम तुम कैसी बातें कर रहे हो?

प्रेम : ठीक कह रहा हूँ। मुझे नहीं चाहिए आन्दोलन, मुझे नहीं मिटाना भ्रष्टाचार को अहिंसा से, अहिंसा में मेरा विश्वास नहीं रहा अगर तुमने मुझे रिवॉल्वर नहीं दिये तो मैं...मैं उस विरेन्द्र सिंह के बच्चे को गला दबाकर मार डालूंगा।

घनश्याम : जय...जय होश में आओ। हमारा पहला कर्तव्य चाचा और चाची को देखना है। जो तुम करना चाहते हो उसके लिए बहुत समय है। विरेन्द्र सिंह के पापों का घड़ा एक न एक दिन भरता ही है फिर...

प्रेम : फिर क्या? कुछ नहीं होगा। वह आगे बढ़ता ही चला जायेगा और कोई कुछ नहीं कर पायेगा। तुम डरपोक हो बुझदिल हो पर, मुझे डर नहीं...मुझे मौत का भी डर नहीं। उसे मैं जिन्दा मिट्टी में दफन कर दूँगा...फिर चाहे जो हो।

घनश्याम : ठंडे दिमाग से काम लो प्रेम। प्रेम ना तो मैं डरपोक हूँ और नाहीं बुझदिल। सिर्फ समय का इंतजार कर रहा हूँ।

प्रेम : तो करते रहो इंतजार...मुझे जो करना होगा, अकेले करूँगा। *(बोलते हुए प्रस्थान)*

घनश्याम : प्रेम-प्रेम सुनो तो *(कहते हुए प्रस्थान)*
(प्रकाश बन्द होता है।)

दृश्य सात

(वही मंच। रात का समय। सड़क बिल्कुल सुनसान। चबूतरे पर जय के पिता सोये हुए हैं। सड़क की बत्तियाँ जली हुयी हैं। दो गुण्डे कालू और सोना आते हैं)

कालू : *(प्रवेश के साथ)* हा-हा-हा तब तो बड़ा मजा आया होगा रे सोना चल यहीं बैठते हैं।

सोना : यहाँ?

कालू : हाँ तो क्या हुआ?

सोना : कालू यहाँ इस सड़क के किनारे? देख पगला बूढ़ा सोया हुआ है। मुझे तो डर लगता है। फिर सरकार का भी तो हुक्म है दारू पीता है तो घर के अंदर, छोकरी उठायो तो शहर से बाहर ले जाओ।

कालू : अबे चुप। शाला। मूड मत खराब कर। अबे जब से उस बूढ़े के बेटे का हमलोगों ने काम तमाम किया है। इस सड़क की सारी चहल-पहल खत्म हो गयी और रात में, अरे रात में तो कोई भूल कर भी इधर से नहीं गुजरता। सब पीछे वाले सड़क से जाते हैं चल बेटे!
(दोनों बेंच पर बैठते हैं)

सोना : कालू यहीं पर हमलोगों ने उस जय के बच्चे को मार गिराया था।

काल : मार गिराया होगा। देख सोना किसको कहाँ कब मारा मैं याद नहीं रखता।

सोना : पर कालू कभी-कभी सपने में उस जय को देखता हूँ। बहुत डरावना सपना मुझे तो डर लगता है यहाँ।

कालू : चुल्लू भर पानी में डूब मर। शाला डर लगता है। सरकार का माल हजम करने में डर नहीं लगता?

सोना : तू गुस्साता क्यूँ है रे कालू।

कालू : तो और क्या करूँ? देख सोना मैं तो सरकार का गुलाम हूँ। सरकार जिसको बोलते हैं। खत्म कर देता हूँ। फिर

याद नहीं रखता। जब तक सरकार है, हमारा कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता। समझे चल बोतल खोल...।

(सोना जेब से बोतल निकालता है। बोतल से ही दोनों पीते रहते हैं और बातें करते हैं)

कालू : हाँ तो क्या हुआ उस दिन बड़ा मजा आया क्यों? अरे उस छोकरी पर सरकार की नजर बहुत दिनों से थी। शाली बहुत नखरे दिखा रही थी। लेकिन मैंने उसे उठा कर सरकार के सामने डाल ही दिया...शाले शुकर मना जो अचानक उस दिन मेरी तबियत खराब हो गयी और सरकार ने जूठा करके इतना बढ़ियाँ माल तुमको दे दिया। अगर मैं होता ना तो तुमको नसीब भी नहीं होता।

सोना : सो तो ठीक कहते हो। तुम सरकार के खास आदमी हो। भीमा के बाद तो तुम ही हो।

कालू : भीमा से बड़ा डर गलता है। शाला हर बखत सरकार से चिपका रहता है। अरे उस दिन भीमा नहीं रहता ना तो उस जय के बच्चे को यहीं खतम कर दिया होता। खैर दरोगा जी ने बाकी काम पूरा कर दिया हा..हा...हा..बड़ा अच्छा दरोगा था। शाला ई नया दरोगा कुछ टेढ़ा है मगर सरकार से बच कर कहाँ जायेगा।

(अचानक जय के पिता उठकर खड़े हो जाते हैं और रिवॉल्वर तानकर)

पिता : हा-हा-हा-हा आया वो आया, खून-खून-खून जय के माथे से खून शूट कर दूँगा। हर-हर गंगे *(संवाद दुहराता है)*

सोना : कालू रिवॉल्वर भागो।

कालू : चुप वे। *(स्वतः)* इसके पास रिवॉल्वर कहाँ से आया। *(प्रगट ऐ पगले रिवॉल्वर जेब में रख। जानता नहीं मेरा नाम कालू है।*

पिता : हा-हा-हा खबरदार, खबरदार शूट कर दूंगा। खून-खून। हर-हर गंगे *(संवाद दुहराते हुए ट्रिगर दबा देता है। गोली कालू को लगती है। कालू गिर जाता है। सोना खून-खून*

चिल्लाते हुए भाग जाता है)

पिता : हा-हा-हा मार डाला शूट कर दिया। हा-हा-हा एक-एक को शूट कर दूँगा। वो आयेगा वो आयेगा। खून-खून जय के माथे से खून।

हर-हर गंगे *(संवाद दुहराते हुए कालू की लाश पर बैठ जाता है। कुछ देर के लिए मंच का प्रकाश बन्द कर दिया जाता है। पुनः प्रकाश। पिता वैसे ही बैठा हुआ है, हँस रहा है बोल रहा है। एक इंसपेक्टर तीन-चार सिपाही और सोना का प्रवेश)*

सोना : यही है हुजूर, यही है।

पिता : हा-हा-हा और आया खबरदार शूट कर दूँगा। खून-खून, हर हर गंगे। *(ट्रिगर दबाता है पर कुछ नहीं होता। इंसपेक्टर बढ़कर उन्हें पकड़ लेता है और हाथ से रिवॉल्वर छीन लेता है। फिर दो सिपाही पिता को पकड़ लेते हैं)*

पिता : दे दो... दे दो... मेरा रिवॉल्वर... वो आयेगा, वो आयेगा शूट कर दूँगा। दे दो।

(इंसपेक्टर रिवॉल्वर को उलट-पुलटकर खोल कर देखता है... फिर)

ई. : छोड़ दो इसे।

एक सिपाही : मगर हजूर यह खूनी है।

ई. : शटअप छोड़ दो *(सिपाही छोड़ देता है)*

पिता : दे दो...दे दो मेरा रिवॉल्वर दे दो।

(इंसपेक्टर दे देता है। पिता खुश होकर शूट कर दूँगा बोलते हुए चबूतरे पर जाकर बैठ जाता है)

सिपाही : हुजूर ये आपने क्या किया?
रिवॉल्वर भी दे दिया।

ई. : रिवॉल्वर नकली है। बच्चों के खेलने की... इससे खून नहीं किया जा सकता है। *(लाश को उलट-पुलट कर देखता है फिर एक सिपाही से तुम जाओ और फोटोग्राफर और एम्बुलेंस लेकर आओ। और तुमलोग उस तरफ जाओ,*

खोजो उस झाड़ी में देखो उस मुहल्ले के लोगों की तलाशी लो। इस आदमी के घरवालों को बुलाओ जल्दी सिपाही दौड़ जाते हैं। प्रकाश बन्दे होता है।)

दृश्य आठ

(तीन-चार दिन बाद। वही मंच। रात का समय। पिता सोये हुए हैं। एक आदमी धीरे-धीरे उनकी तरफ बढ़ता है। उस व्यक्ति के भाव-भंगिमा से लगता है जैसे वह जय के पिता का गला दबा देना चाहता हो। ज्यूं ही वह नजदीक पहुंचता है पिता हंसते हुए उठ खड़े हो जाते हैं, रिवॉल्वर तानकर)

पिता : हा-हा-हा... आ गया... आ गया। शूट कर दूँगा। हा-हा-हा

आदमी : चुप बे पगले मुझे मालूम है रिवॉल्वर नकली है। आज, आज के बाद तू नहीं हँसेगा...तूने मेरे सबसे प्यारे दोस्त को मार डाला है। सरकार के खास आदमी को मार डाला है। आज तू मुझसे नहीं बचेगा।

पिता : खबरदार...खबरदार शूट कर दूँगा। खून...खून हर हर गंगे *(ट्रिगर दबाता है। आदमी बढ़कर उनको दबोच लेता है। हथेली से मुँह बन्द कर देता है। वे छटपट करने लगते हैं)*

आदमी : अबे चुप शाला अभी तेरा हर-हर गंगे कराता हूँ। शाला नाटक करता है। इस चहल-पहल से भरी सड़क को सूनी कर दिया है। तेरे डर से लोगों ने इस सड़क से आना-जाना बन्द कर दिया है। शाला हर हर गंगे करता है...ले ले भगवान का नाम *(जय के पिता छटपट करते हैं। उनका गला दबा रहा है। इस छीना-झपटी में उस आदमी का पीठ झाड़ी की तरफ हो जाता है। पिता के मुँह से गूं-गां की आवाज आ रही है। गोली चलने की आवाज गोली उस आदमी के पीठ में लगती है। आदमी गिर जाता है।)*

पिता : हा-हा-हा शूट कर दिया। मार दिया, खून-खून...हर हर गंगे, हर हर गंगे। *(संवाद दुहराता है। धीरे-धीरे प्रकाश बन्द होता है।)*

दृश्य नवम्

(अगला दिन। दिन का समय। वही मंच। दो सिपाही जय के पिता को पकड़कर चबूतरे पर रखे हुए है। वे जब भी कुछ बोलना चाहते हैं कि सिपाही हथेली से मुँह दबा देता है। एक तरफ दो सिपाही और खड़े हैं। इंसपेक्टर हाथ में जय के पिता का रिवॉल्वर लिए हुए बेचैन मुर्दा में टहल रहा है। एक सिपाही अखबार पढ़ता रहता है। फिर इंसपेक्टर से)

सिपाही : हुजूर ई अखबार वाला तो गजब का खबर छाप दिया है।

ई. : हूँ।

सिपाही : हुजूर लिखता है एक सप्ताह में दो हत्यायें। खूनी रिवॉल्वर इंसपेक्टर के हाथों में आते ही खिलौना...जादुई रिवॉल्वर की शहर में सर्वत्र चर्चा लोग भय से आक्रान्त पुलिस की लापरवाही से खूनी का स्वतंत्र अवस्था में शहर में घूमना। एसेम्बली में पुलिस अधिकारियों के तबादले की माँग। *(इतने में जीप रुकने की आवाज। सब उधर ही देखते हैं। एस.पी साहब का प्रवेश। सभी सैल्यूट मारते हैं। एस.पी. बढ़कर जय के पिता के पास जाता है)*

एस.पी. : हूँ तो यही है वह आदमी?

ई. : येस सर...और सर यही है इसका रिवॉल्वर।

एस.पी. : इंसपेक्टर।

ई. : सर।

एस.पी. : एक सप्ताह में दो-दो खून। एक ही जगह और तुम... तुमने क्या किया? कुछ भी नहीं।

ई. : सॉरी सर, कुछ भी मेरी समझ में नहीं आता। चारों तरफ सर्च की है। बगल के मुहल्ले में सारे घरों को मैंने खुद चेक किया है। कुछ भी सुराग नहीं मिला। इस रिवॉल्वर से खून हो ही नहीं सकता और असली रिवॉल्वर...।

एस.पी. : असली रिवॉल्वर क्या खूनी खुद तुम्हारे घर पहुँचा जायेगा? नॉन सेंस। अखबार पढ़ा है? अखबार वालों ने हमारी धज्जियाँ उड़ा कर रख दी हैं। तुमने इस बुढ्ढे को पहले दिन ही हिरासत में क्यों नहीं लिया?

ई. : सर...सर।

एसी.पी. : सर...सर... क्या कर रहे? मेरे प्रश्न का क्या जवाब है तुम्हारे पास?

ई. : सर यह आदमी बेटे की मृत्यु के गम से पागल हो गया है। क्या यह खून कर सकता है सर? एक्सक्यूज मी सर इसके बेटे जय के केस को हमारे डिपार्टमेंट ने ठीक से टैकल नहीं किया सर।

एसी.पी. : What do you mean?

ई. : सर मैंने तहकीकात की है। सर इसके बेटे को पुलिस लॉकअप में मार डाला गया सर।

एस.पी. : शटअप। तुम जानते नहीं उस समय भी मैं ही यहाँ का एस.पी. था।

ई. : सर आप एस.पी. थे। इंसपेक्टर नहीं। इंसपेक्टर ने आपको फीडबैक दी थी सर?

ई. : यस सर... उसका बेटा जय एक निहायत ही कर्मठ और सज्जन युवक था। युनवर्सीटी में चौथा स्थान मिला था उसे। वह भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष कर रहा था। चुनाव में खड़ा होने वाला था। राय विरेन्द्र सिंह को इससे खतरा पैदा होने लगा था। इसलिए उनके गुण्डों ने उसे मार-मार कर अधमरा कर दिया और बाकी का कसर पुलिस लॉकअप में।

एस.पी. : इंसपेक्टर तुम्हें अपनी नौकरी प्यारी है कि नहीं? किसके खिलाफ ईलजाम लगा रहे हो जानते हो?

ई. : जानता हूँ सर जानता हूँ। जिसके खिलाफ इलजाम लगा रहा हूँ, वह एक पहुँचा आदमी है। अपने को मुख्य मंत्री का दाहिना हाथ कहता है। इस शहर में चारों तरफ उसके गुण्डे फैले हुए हैं। हमारे डिपार्टमेंट का अधिकांश व्यक्ति उसका भेदिया है।

एस.पी. : इंसपेक्टर मैं तुम्हारा भाषण सुनने यहाँ नहीं आया। दो-दो खून हो चुका है और तुम भाषण दे रहे हो।

ई. : सर ये भी नहीं हकीकत है।

एस.पी. : शटअप, ये रिवॉल्वर इस पगले के पास कहाँ से आया?

इंसपेक्टर : सर इसकी पत्नी ने मुझे बताया कि जय की मृत्यु के बाद यह कुछ भी नहीं खाता था। जब भी इसे खिलाने का प्रयास किया गया तो इसने पहले रिवॉल्वर माँगा ताकि अपने बेटे के कातिलों को मार सके। फिर जय का मित्र घनश्याम ने यह खिलौना वाला रिवॉल्वर इसे लाकर दिया।

एस.पी. : घनश्याम। जय का मित्र। और कौन-कौन है जय का दोस्त?

ई. : वैसे तो कई थे पर घनश्याम और प्रेम सबसे।

एस.पी. : तुमने इन लोगों को चेक किया?

ई. : सर ये लोग खून करें, ऐसे नहीं हैं।

एस.पी. : शटअप ये ही खूनी है, मैंने धूप में बाल सफेद नहीं किए हैं। नीचे से बढ़कर ऊपर पहुंचा हूँ।

ई. : मगर सर।

एस.पी. : अगर-मगर कुछ सुनना नहीं चाहता। जैसे भी हो... जहाँ से भी आज शाम तक इन दोनों को पकड़ लाओ। तुम्हारे चलते आज छः दिनों से मेरा जीना हराम हो गया है। राय साहब के खास आदमी थे। सबेरे शाम मुख्यमंत्री सचिवालय से और राय साहब से फोन पर डांट सुननी पड़ती है। राय साहब एसेम्बली छोड़कर खुद आज सबेरे यहाँ पहुँच गए हैं। हो सकता है यहाँ भी आवे तुम्हारे चलते मेरी नाक कट गयी।

(एक सिपाही दौड़ना हुआ आता है और सैल्यूट मार कर...?

सिपाही : हुजूर राय साहब की गाड़ी आ रही है।

एस.पी. : ओह ठीक है, ठीक है। तुम लोग तमीज से पेश आना। *(कार के रुकने की आवाज)* इंसपेक्टर, तुम सोच समझकर राय साहब के प्रश्नों का उत्तर देता। ध्यान रखना राय साहब जल्द ही मिनिस्टर बनने वाले हैं। (राय साहब, पीछे-पीछे भीमा का प्रवेश। एस.पी. हाथ जोड़कर नमस्ते करता है। इंसपेक्टर एक तरफ खड़ा हो जाता है। राय साहब एक नजर *इंसपेक्टर पर डाल कर, एस.पी. से कहते हैं)*

राय : एस.पी. साहब, यह क्या हो रहा है? मेरे दो-दो आदमियों का खून हो गया और आपने खूनी को यूँ छोड़ रखा है?

पिता : *(राय विरेन्द्र सिंह को देखते ही सिपाहियों से अपने को मुक्त कराने की कोशिश करते हुए)* आ गया...आ गया... नहीं छोड़ूँगा, शूट कर दूँगा, खून-खून जय...।
हर हर गंगे *(अपने को छुड़ा कर दौड़ता है और राय साहब का गला दबाने लगता है।)* हर हर गंगे, हर-हर...
(एस.पी. भीमा और सिपाही सब मिलकर पिता को पकड़कर अगल करते हैं।)

राय : मारो शाले को पेड़ से बाँध कर मारो। इतना मारो कि फिर साँस भी ना ले सके।
(भीमा और सिपाही सब मिलकर पिता को पेड़ के साथ बाँधने लगते हैं।)

राय : *(इंसपेक्टर की तरफ देखकर)* इंसपेक्टर तुम्हारे हाथों में क्या मेहदी लगी थी हरामजादे?

ई. : जबान संभालकर बात करो राय विरेन्द्र सिंह दूसरी बार अगर गाली निकाली तो...।

एस.पी. : शटअप तमीज से बात करो राय साहब के साथ।

ई. : तमीज से आप बात कीजिए। आपने बाल धूप में सफेद नहीं किए हैं। मगर मेरे बाल अभी सफेद हुए ही नहीं हैं।

एस.पी. : *(चिल्लाकर)* इंसपेक्टर...।

राय : शान्त होइये एस.पी. साहब। शान्त होइये। इंसपेक्टर अभी नौजवान हैं। जवानी का जोश है। बेटे अगर मुख्यमंत्री जी सुन लेंगे तो बहुत नाराज होंगे।

ई. : मुख्यमंत्री की नाराजगी या खुशी आपके लिए मायने रखता हो पर, मेरे लिए नहीं। मेरे लिए सिर्फ एक बात मायने रखता है ईमानदारी पूर्वक कर्तव्य निभाना।

राय : ऐसी बातें नहीं कहते बेटे मुख्यमंत्री, मुख्यमंत्री होता है बेटे।

ई. : राय विरेन्द्र सिंह इतना याद रखिये एक इंसपेक्टर हो सकता है कभी मुख्यमंत्री बन जाये परन्तु मुख्यमंत्री इंसपेक्टर कभी नहीं बन सकता। समझे आप? कभी नहीं बन सकता।

राय : वाह-वाह कितनी सही बात कही है तुमने। वाह! मगर बेटे मुख्यमंत्री कितने ही इंसपेक्टरों का भाग्य बदल दे और चाहे तो कितनों को लात मार दे।

ई. : मैं उन में नहीं जिसे कोई लात मार दे। राय विरेन्द्र सिंह अगर किसी ने मुझे लात मारने की कोशिश की तो उसकी दोनों टाँगों को पकड़ कर बीच से चीर दूँगा...समझे आप?

एस.पी. : खामोश.... इंसपेक्टर मैं तुम्हें सस्पेंट करता हूँ। Now get lost...

ई. : सर आप क्या मुझे सस्पेंड करेंगे। मैं खुद ही ऐसी नौकरी नहीं करना चाहता भ्रष्टाचार के गुलामों की गुलामी करनी पड़े। मैं अपने त्यागपत्र आपके पास भेजवा दूँगा। *(सैल्यूट मार कर प्रस्थान करता है।)*

एस.पी. : इडियट देख लूँगा, तुमको देख लूँगा।

राय : उसे तो बाद में देखियेगा एस.पी. साहब। पहले इस सुअर के बच्चे को देखिए। अरे तुम खड़े-खड़े मुँह क्या देख रहे हो... भीमा!

भीमा : जी सरकार।

राय : सरकार के बच्चे मेरा मुँह क्या देख रहा है। मारो शाले को...शाला पागलपन का नाटक करता है। मेरे दो-दो आदमियों को ....

एस.पी. : ठहरो तुम लोग इधर आओ।

राय : एस.पी. साहब...?

एस.पी. : सर, इसे मैं हिरासत में लेता हूँ, कानूनी कार्यवाही की जायेगी। यह पागल है या ढोंग करता है, डॉक्टर ही सही-सही बता सकता है। Let me do my duty sir.

राय : एस.पी. साहब आप भूल रहे हैं कि आप किससे बातें कर रहे हैं? यह पागल है कि नहीं मैं अच्छी तरह जानता हूँ... मेरा खून खौल रहा है इस नीच को दखेकर भीमा तुम अपना काम करो इस एस.पी. के बच्चे से मैं निपट लूँगा। *(उधर ज्योंही भीमा लाठी उठाता है, झाड़ी की तरफ से*

गोली चलने की आवाज... गोली भीमा को लगती है। भीमा वहीं ढेर हो जाता है। जय के पिता हँसते हैं और खून-खून हर हर गंगे संवाद दुहराते हैं)

एस.पी. : सिपाहियों दौड़ो-दौड़ो पकड़ो गोली आयी है। दौड़ो पकड़ो। *(सिपाही, ज्योंही जाने को तैयार होते हैं पार्श्व से जय के माँ की आवाज। धीरे-धीरे वह मंच पर आती हैं)*

माँ : एस.पी. साहब अगर किसी ने भी आगे बढ़ने की कोशिश की तो गोली चला दूँगी। इस रिवॉल्वर से अभी पाँच गो. लियां बची हैं। अपने सिपाहियों से कहें पीछे जाकर खड़े हो जायें, नहीं तो एक को भी नहीं छोड़ूँगी और खबरदार जो किसी ने भी चालाक बनने की कोशिश की।
(एस.पी. सिपाहियों को इशारा करता है। सब पीछे खड़े हो जाते हैं। पिता बीच-बीच में यूँ ही बोल रहे हैं हँस रह हैं)

एस.पी. : मगर-मगर तुम कौन हो और यह रिवॉल्वर कहा से आया?

माँ : मैं कौन हूँ... पूछिए इस नीच राय विरेन्द्र सिंह से एस.पी. साहब मैं एक अभागन माँ हूँ, जिसके एक मात्र बेटे को इस के गुण्डों ने मार-मार कर अधमरा कर दिया। एक ऐसी लाचार स्त्री हूँ जिसके पती को इसने पागल बना दिया।

एस.पी. : और मगर ये रिवॉल्वर?

माँ : रिवॉल्वर कैसी विडम्बना है। इसके गुण्डों के हमले से कुछ ही देर पहले उसने अपना झोला मुझे दे दिया था, दे नहीं दिया था। *(रोते हुए)* मैंने ले लिया था। काश उस समय झोला उसके पास ही रहता बाद में उसी झोले में मुझे रिवॉल्वर और गोलियाँ मिलीं। उसी दिन मैंने कसम खायी जय के कातिलों से बदला लूँगी। एस.पी. साहब मुझे डर था। इस पापी से इसलिए मैंने रात-रात भर इस झाड़ी में जाग कर बिताया। अपने पती की रक्षा के लिए आज का ही मुझे इंतजार था। *(रिवॉल्वर राय की तरफ तान देती है।)*

राय : नहीं बहन, नहीं मैं बेकसूर हूँ।

माँ : तुम्हारे मुँह से बहन शब्द कितना घृणित लगता है तुम सोच भी नहीं सकते तुम्हारा पाप पूरा हो चुका है, राय विरेन्द्र सिंह।

एस.पी. : नहीं, नहीं तुम ऐसा नहीं कर सकतीं। तुम कानून को हाथ में नहीं ले सकतीं।

माँ : कानून कैसा कानून? कहाँ का कानून? क्या आप उसी कानून की बात करते हैं जिसे राय विरेन्द्र जैसे भ्रष्ट लोग रोज बनाते हैं और अपने फायदे के लिए रोज बदलते हैं। क्या आप उसी कानून की बात कर रहे हैं। जिसका पाठ यह आपको अभी-अभी पढ़ा रहा था?

एस.पी. : बहन, बहन ऐसा मत करो तुम एक औरत हो और...

माँ : औरत नहीं माँ कहिये माँ। और माँ अपने फर्ज से पीछे नहीं हटती। मेरा बेटा अपनी एक माँ को इस जैसे गद्‌दारों से मुक्ति दिलाने के लिए संघर्ष करते-करते शहीद हो गया तो क्या दूसरी माँ का यह कर्तव्य नहीं कि उसके अधूरे काम को पूरा करे। राय विरेन्द्र सिंह अपने गुनाहों को याद करलो। तुम्हारे तीन खास चम्मचों को मैंने पहले ही नर्क भेज दिया है, अब तुम्हारी बारी है।

राय : नहीं बहन...नहीं मैं...मैं अपनी गलती कबूल करने को तैयार हूँ। सजा भुगतने को तैयार हूँ। मुझे मारो मत बहन मेरे बच्चे अनाथ हो जायेंगे, मेरी पत्नी...।

माँ : खामोश *(ट्रिगर दबा देती है गोली राय के सीने में लगती है। राय वहीं ढेर हो जाता है। एस.पी. उन्हें पकड़ते हैं)*

पिता : शाबास-शाबास जय-जय देखो, देखो वो आया शूट कर दिया। हा-हा-हा खून-खून, हर हर गंगे। *(संवाद दुहराता रहता है)*

एस.पी. : यह तुमने ठीक नहीं किया अपने आपको कानून के हवाले कर दो। *(आगे बढ़ता है)*

माँ : खबरदार एस.पी. साहब मैं आपको नुकसान नहीं पहुँचाना चाहती मगर आपने कोई भी हरकत की तो मैं हिचकुँगी

नहीं। आप कानून की बात कर रहे थे एस.पी. साहब मैं अपने आपको कानून के हवाले अवश्य करूँगी मगर आपके कानून के नहीं उस ऊपर वाले के कानून के।

एस.पी. : नहीं बहन-बहन, नहीं ऐसा मत करो। *(आगे बढ़ने लगता है। पीछे से दो सिपाही आकर पकड़ लेता है)*

एस.पी. : छोड़ो मुझे छोड़ो।

दूसरा सिपाही : नहीं सर। हम लोग आपको आगे नहीं जाने देंगे। वो औरत पागल हो चुकी है।

माँ : पागल... हा-हा-हा *(पिता से)* देखो, देखो अब मुझे भी लोग पागल कहने लगे *(रोती है)* स्वामी जय का काम पूरा हो चुका है। अब...अब हम दोनों का इस दुनियाँ में रहना कोई अर्थ नहीं रखता। स्वामी मुझे माफ करना। इस अभागन को माफ करना जो अपने हाथों विधवा होने पर मजबूर हैं। शायद... शायद हम फिर मिलें *(अपने पति का पांव छूकर प्रणाम करती है। रिवॉल्वर उनके माथे से दबा कर (ट्रिगर दबाती है रोती है फिर अपने माथे में गोली मार लेती है।) एस.पी. बढ़कर पकड़ते हैं।*

एस.पी. : बहन यह तुमने क्या किया? क्या किया बहन?

माँ : अब क्या बचा था एस.पी. साहब अब क्या बचा था। आ. पने मुझे बहन कहा है आपसे मेरी एक ही विनती है। हम दोनों को एक साथ इसी सड़क के किनारे जला दीजिएगा और... और लोगों से कहिएगा कि इस आबादी के सड़क को जो जय के बाद सूनी हो जाती है। उसे सूनी ना रहने दे। सुहागन बना दे। कहिएगा इस सड़क पर लोग खूब नाचे गायें। इस विधवा की फरियाद लोगों तक पहुँचा दीजिएगा। एस.पी. साहब यह विधवा तो सुहागन ना रह सकी।
इस सड़क को लोग सुगाहन बना दे ताकि इसे कोई सूनी सड़क ना रहे। *(एक तफर लुढ़क जाती है। एस.पी. सर से टोपी उतारकर मौन खड़े हो जाते हैं। धीरे-धीरे प्रकाश बन्द होता है।)*

समाप्त

डम डम डिगा डिगा

पात्र परिचय

पुरुष पात्र

खुशामद सिंह (I. A.S. Retd.) 30 वर्ष– एन. चौधरी
फिरौती लाल (I.T.O- Retd.) 30 वर्ष– पी. झा.
लक्ष्मीपति सिंह : (I.A.S) 30 वर्ष जी. विश्वनाथ
तलवारी लाल (होटल मालिक) : 50 वर्ष– यू.पी.एन. सिंह
मनमाया : (होटल बेरा) : 10 वर्ष– भास्कार
कृष्ण कुमार : (छात्र) 25 वर्ष– सुधीर

स्त्री पात्र

कु. मीरा : 25 वर्ष

एक दृश्य

स्टेज पर लाइट जलता है। सामने बोर्ड लगा है। (होटल डम डम डिगा डिगा नाश्ता एवं चाय का उत्तम प्रबंध (प्रो. तलवारी लाल) तलवारी लाल हाथ में अगरबत्ती लिए भगवान की पूजा कर रहा हैं)

तलवारी लाल : ओम जय लक्ष्मी मैया... ओम जय लक्ष्मी मैया,
ग्राहक भेजो इतना मिले पचास रुपैया ओम लक्ष्मी मैया... मनमाया... मनमाया न जाने कहाँ मर जाता है यह छोकड़ा ओम जय लक्ष्मी मैया। मनमाया-मनमाया...।

मनमाया : आया *(कहते हुए प्रवेश)*

तलवारी लाल : अबे उल्लू के पट्ठे। कहाँ मर गया था।

मनमाया : सेठ *(उँगली दिखाते हुए)* इद्दिर को गया था।

तलवारी लाल : अबे गधे। जब ग्राहक आने का टाइम होता है तभी तुम इधर जाता है। जा जल्दी चाय का पानी चढ़ा दे। ग्राहक आने का टाइम हो गया... ओम जय लक्ष्मी...।

मनमाया : ग्राहक *(मुँह और पेट पकड़ कर हँसने लगता है।)*

तलवारी लाल : अबे तू क्यूँ रहा है?

सन. : कुछ नहीं सेठ कुछ नहीं... *(हँसते हुए चला जाता है।)*

तलवारी लाल : ओम लक्ष्मी मैया... मनमाया... मनमाया...

शनीचर : आया...क्या है सेठ?

तलवारी लाल : देख पहले टेबल सब पर साफी मार दे...।

मनमाया : ठीक है सेठ... *(प्रस्थान)*

तलवारी लाल : ओम लक्ष्मी मैया... मनमाया...मनमाया...

धनीलाल : अब क्या है सेठ...

तलवारी लाल : देख कितना गन्दा पड़ा हुआ है। पहले झाड़ू मार दे... ओम. ..लक्ष्मी मैया... *(मनमाया टेबल पर जाकर चुपचाप बैठ*

जाता है पूजा करते-करते तलवारी लाल की नजर पड़ती है।) अबे... मनमाया ... तू वहाँ क्यूँ बैठ गया।

मनमाया : देख सेठ। एक बार अपुन को एक काम बोला कर। चाय का पानी चढ़ा दे, साफी मार दे, झाड़ू मार दे। ऐसा माफिक सब काम एक साथ बोलेगा तो अपुन फिर इधिर को चला जाएगा। *(अँगुली का इशारा करता है।)*

तलवारी लाल : अरे नहीं...नहीं... नहीं...। अच्छा जा पहले चाय का पानी डाल दे... *(मनमाया का प्रस्थान)* हे लक्ष्मी मैया देख मेरी क्या दशा हो गयी... एक लौंडा भी धमकी देता है। तीन-तीन नौकर थे... डम डम डिगा डिगा में लोगों की भीड़ लगी रहती थी। जबसे ये तीन गुण्डे मेरे होटल में आने लगे हैं... मेरे होटल का सत्यानाश हो गया है... परन्तु हे लक्ष्मी मैया इन लोगों का भी क्या दोष! ये बेचारे भी तो किस्मत के मारे हैं। पर, हे लक्ष्मी माता आज अगर मैंने मनमाया को 25 रुपये Advance नहीं दिये तो यह लौंडा भी छोड़कर चला जाएगा। सिर्फ 25 रुपये का सवाल है।...

लक्ष्मीपति सिंह : *(प्रवेश)*... तथास्तु। मिल जाएगा।

तलवारी लाल : क्या? मिल जाएगा। धन्य हो लक्ष्मी माता, धन्य हो। मैं तो लक्ष्मी माता को पुकार रहा था, ये लक्ष्मी पिता कहाँ से बोलने लगे।

लक्ष्मीपति सिंह : लक्ष्मी पिता नहीं... लक्ष्मी पति... तलवारी लाल जी लक्ष्मी पति सिंह।

तलवारी लाल : ओह तो ये तुम हो। आ गए सबेरे-सबेरे। तुम लोगों के चलते तो मैं बर्बाद हो गया हूँ। मेरा होटल बर्बादा हो गया है। ... हूँ मिल जाएगा .... फूटी कौड़ी तो देखी नहीं कहाँ तो 50 रुपए मिल जाएगा।

लक्ष्मीपति सिंह : तलवारी लाल जी। घबराइये नहीं। माना कि आपका धंधा हमलोगों के चलते मंदा पड़ गया है, माना कि 'डम डम डिगा डिगा' की रौनक खत्म हो गयी है। परन्तु हमारे लिए तो आप ही सबकुछ हैं। आपका आसरा, आपका प्यार ही

हमारे जिन्दा रहने का साधन है। याद रखिए तलवारी लाल जी इसी जगह पर एक दिन फाइव स्टार होटल बनेगा ''डम डम डिगा डिगा'' प्रो. तलवारी लाल... अरे मनमाया... चाय ला और साथ में कुछ खाने को भी ला...।

तलवारी लाल : आ हा हा... साथ में कुछ खाने को भी ला... ऑडर फरमा दिया।

लक्ष्मीपति सिंह : चाचा तलवारी लाल जी लगता है आज सबेरे-सबेरे कुछ गड़बड़ हो गई है। बहुत परेशान नजर आते हैं।

तलवारी लाल : अरे बेटा, जिन्दगी ही अब परेशानी बन गई है। कभी तो मन करता है तुम तीनों को धक्के मारकर बाहर कर दूँ। कितनी बढ़ियाँ जिन्दगी बीत रही थी, जब तक तुम तीनों का पाँव इस होटल में नहीं पड़ा था। पर फिर सोचता हूँ... तुमलोग जाओगे कहाँ... मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता... आज तो चाय भी मिल जाए तो गनीमत समझो... कल्ह से तो वह भी नहीं।

लक्ष्मीपति सिंह : क्यूँ?

तलवारी लाल : बेटा आज अगर मनमाया को 25 रुपये नहीं दिये तो कल्ह से वह भी होटल छोड़कर चला जाएगा।

लक्ष्मीपति सिंह : मनमाया नहीं जाएगा। आज उसे 25 रुपये मिल जाएँगे।

तलवारी लाल : अरे कहाँ से मिल जाएँगे?

लक्ष्मीपति सिंह : ये रखिए दस रुपये और बाकी के 15 रुपये आज शाम तक मिल जाएँगे।

तलवारी लाल : ये... ये... तुम कहाँ से लाए? कोई नौकरी मिल गई क्या?

लक्ष्मीपति सिंह : चाचा नौकरी नहीं। अभी तो छोकड़ी मिली है। जल्दी से चाय पिलाओ पहले उससे निपट लूँ फिर चैन से बतलाऊँगा।

तलवारी लाल : मनमाया अरे मनमाया....

मनमाया : आया... *(आते हुए हाथ में ट्रे है और ट्रे में तीन कप चाय और एक कप प्लेट हैं।)* लो भाई श्रीमान लक्ष्मी पति सिंह जी नाश्ता करो चाय पियो।

मनमाया : अभी तुम्हारा दोनों दोस्त आता ही होगा। बस फिर चिल्लाओगे

मनमाया-मनमाया। अपुन को बार-बार लेफ्ट राइट करना भोत बुरा लगता है।

लक्ष्मीपति सिंह : अरे बाप मेरे। ये अपुन क्या लगा रखा है। जा जल्दी से एक ग्लास पानी भी ले आ...

मीरा : रिक्शावाले ओ रिक्शावाले....

मनमाया : रिक्शावाले... ओय मेम साब, इदिर होटल होता है, रिक्शे का अड्डा नहीं।

मीरा. : शटअप

लक्ष्मी पहला पुरुष : बस दो मिनट मेम साब। मैं अभी आया। जरा चाय पी लूं।

मीरा. : लक्ष्मी जी की भी हद होती है। दस मिनट से बाहर रिक्शे में बैठी हूँ और तुम इधर गप्पे लड़ा रहे हो।

लक्ष्मीपति सिंह : अरे मेम साब। इतना लाल-पीला क्यों हो रहीं हैं। चलिए रिक्शे में बैठिए मैं अभी आया।

तलवारी लाल : अरे... रिक्शा... लक्ष्मीपति ये क्या चक्कर है?

मीरा. : चक्कर मुझसे पूछिए। आज के ये रिक्शवाले पैंट शर्ट क्या चढ़ा लेते हैं अपने को लाट साहब समझने लगते हैं। दो चार जूते लगते हैं कि होश ठिकाने आ जाते हैं।

लक्ष्मीपति सिंह : ए' लड़की होश संभालकर बात कर।

मीरा : होश संभालकर मैं बात करूँ। तुम्हारी ये मजाल। जानते हो कौन है? मेरे पापा Under Seceratry हैं। जिन्दगी भर के लिए जेल में सड़वा दूँगी।

तलवारी लाल : अरे बेटी शांत हो जाओ। बेटे ये क्या चक्कर है... तुम-तुम रिक्शा चलाने लगे हो?

लक्ष्मीपति सिंह : हाँ चाचा। कल्ह रात से ही तो चला रहा हूँ। पर लगता है ये समाज के ठेकेदार यह काम भी चैन ने नहीं करने देंगे। जी करता है चाचा... कहीं से एक पिस्तौल मिल जाए तो सब शालों को भून डालूँ।

तलवारी लाल : अरे... अरे... ऐसी बातें नहीं करते...। बेटी तुम तो पढ़ी-.

लिखी समझदार मालूम पड़ती हो... शान्त रहना चाहिए गुस्सा नहीं करना चाहिए...।

मीरा : ओ बाबा इसको समझाइए औकात में रहकर बात करें मैं खुद जानती हूँ कहाँ गुस्सा करना चाहिए और कहाँ शान्त रहना चाहिए... ये गंवार अनपढ़ लोग।

तलवारी लाल : अरे नहीं... नहीं बेटी। ऐसा मत सोचो। ये बेचारा तो किस्मत का मारा है। बहुत पढ़ा-लिखा है। .... मेरा तो हृदय फटा जा रहा है... बेचारे को पेट की आग बुझाने के लिए रिक्शा चलाना पड़ रहा है।

लक्ष्मीपति सिंह : अरे चाचा! तुम भी किसको सुना रहे हो। ये पैसे वाले जो खुद पैसे से शिक्षा खरीदतें हैं, इंसान को इंसान नहीं समझते... सारी दुनिया को मूर्ख समझते हैं... गंवार समझते हैं।

मीरा. : यू शटअप। मैं तुम्हें देख लूँगी। तुम्हारे इस बहस से मेरा जो समय बर्बाद हो रहा है। उसे मैं ही जानती हूँ। मैं अभी जाकर पापा से कहूँगी। तुम नहीं जानते मेरे पापा... *(खुशामद सिंह और फिरौती लाल का प्रवेश)*

दोनों साथ. : Under Secratary हैं।

मीरा. : You

खुशामद सिंह : आ हा हा मिस... नाराज मत होइए। ये जो आपके सामने बैठा चाय पी रहा है पूरा का पूरा गदहा है।

लक्ष्मीपति सिंह : खुशामद।

फिरौती लाल : अबे उल्लू के पट्ठे चुपचाप रहो बैठे, इतना भी नहीं जानते हसीनों से कैसे बात की जाती, हरदम ऐंठे-ऐंठे।

खुशामद सिंह : हाँ तो मिस ये बाबू लक्ष्मीपति सिंह जी सर से पांव तक गधे हैं। ना जाने कौनी-सी University ने इसे double M.A. का degree दे दिया। यह भी History में Ist class IIIrd और Political science में 2nd class Ist.

मीरा. : What?

लक्ष्मी.-खुशा. : Yes

मीरा. : Oh you are making me fool. मैं तुम तीनों को देख लूँगी।

खुशामद सिंह : हाँ...हाँ...हाँ... देखिये। मित्र आगे यह मत कह दीजिएगा कि मेरे पापा under Secratory हैं।

फिरौती लाल : क्यों कि हम तीनों पर अगर किस्मत की मार ना होती और आप जैसे अंग्रेज की संतानों की मेहरबानी ना होती तो हम तीनों ही अभी Over Secratory रहते।

मीरा : Ch. my Dad. मैं भी किन पागलों के बीच फंस गई *(चली जाती है। Hand bag होटल Counter पर छोड़ देती है।)*

खुशामद सिंह : अबे ओ जेब में फूटी कौड़ी नहीं और नाम के लक्ष्मी पति महाराज जी। ये सबेरे-सबेरे छोकड़ी कहाँ से टपक पड़ी... और ये रिक्शा का क्या चक्कर है।

तलवारी लाल : चक्कर! तुम लोगों ने तो मुझे चक्कर में डाल दिया है। और एक दूसरे से पूछते हो क्या है चक्कर।

फिरौती लाल : चाचा उस छोकड़ली से हमलोगों का कुछ भी नहीं है चक्कर, लो चाय पीयो इसमें बिल्कुल नहीं है शक्कर।

लक्ष्मीपति सिंह : बकवास बंद करो फिरौती। हर घड़ी तुकबन्दी। हर घड़ी तुकबन्दी।

फिरौती लाल : देखो लक्ष्मीपति तुम मुझे डाँट नहीं सकते। तुमको क्या अधिकार है मुझे डाँटने का। तुम नहीं जानते... तुम नहीं जानते... मेरे पापा Under seceratory है। *(सब ठहाका मारते हैं। Light off)*

दृश्य : दो

(एक टेबल पर खुशामद, फिरौती और लक्ष्मीपति बैठे हैं। लक्ष्मीपति और खुशामद जेब से रुपये निकाल-निकालकर टेबल पर रखते जा रहे हैं।)

तलवारी लाल : मगर बेटा। इतने रुपये तुमलोगों ने लाए कहाँ से।

लक्ष्मीपति सिंह : चाचा तलवारी लाल जी। तुम आम खाने से मतलब रखो। गुटली गिनने से नहीं। लो लगाओ होटल में मैंने कहा था

न एक दिन इसी जगह पर शानदार 5 स्टार होटल बनेगा। होटल डम डम डिगा डिगा 5 स्टार

खुशामद सिंह : और चाचा। अब देखना। जिस तरह दुनियाँ ने हमको आज तक नचाया, हम किस तरह दुनियाँ को अपने इशारों पे नचाते हैं।

(मनमाया का सेब के प्लेट के साथ प्रवेश)

खुशामद सिंह : अबे ये क्या है?

मनमाया : वही है जो तुमलोग रोज लेते हो। एक प्लेट सेब और ग्यारह कप चाय।

लक्ष्मीपति सिंह : What

मनमाया : अपुन रोज हिसाब रखता। एक प्लेट सेब लेता और 11 कप चाय। तुम लोगों के वास्ते सेब का दिवाला निकल गया। तुम तीनों इधर बैठता गप्पे मारता और भर दिन हँसता रहता। हा...हा...हा...

लक्ष्मीपति सिंह : अबे चुप! और मनमाया। देख अगर चाचा हमारा लिए Prime Minister है तो तू ही तो Food Minister है। अगर तू गाली देता ही रहेगा तो हमलोग खाएंगे क्या?

फिरौती लाल : देख मनमाया तेरे सामने पड़ी है माया, जा कुछ अंडे ले आ, मटन बना, चिकेन बना, देख आज से सेब और और चाय पर जीना बन्द है। प्लेट अब जब तुम लाओ तो देखूँ सामने कलाकन्द है। जा फटाफट।

मनमाया : *(टेबल पर से कुछ रुपये उठाते हुए)* अपुन को क्या मालूम था कि तुमलोग भी सेठ बन गए हो।

(तीनों हँसते हैं। हा-हा-हा)

तलवारी लाल : बेटे। इतनी थोड़ी-सी दौलत पाकर क्या तुम लोग इतने बदल गए? क्या इस बूढ़े पर भरोसा ना रहा? क्या अपने चाचा को पराया समझने लगे?

लक्ष्मीपति सिंह : नहीं चाचा नहीं! ऐसी बात मत करो। तुमको छोड़ हम लोगों का अपना कहने वाला और है ही कौन?

खुशामद सिंह : एक छोटी-सी खोली में हम रहते हैं। रात बिताते हैं। सुबह

से रात तक तुम्हारे इस आश्रय में तुम्हारे प्यार के तले समय बीतता है। फिर तुम्हें हम कैसे पराया समझ सकते हैं?

तलवारी लाल : तो फिर क्यों नहीं बतलाते कि इतना रुपया तुमने कहाँ से लाया?

लक्ष्मीपति सिंह : चाचा सुन सकोगे तो सुनो। मगर तुम्हें हमारी कसम है कि फिर इन रुपयों को या आगे जो हम लाएँगे उसे लेने से इंकार न कर देना... मैं Dobule M.A. लक्ष्मीपति सिंह ना जाने बाप ने क्या सोचकर नाम लक्ष्मीपति रख दिया, खैर मैं लक्ष्मीपति Double M.A. रिक्शा चलाता हूँ। क्या मिलता है? पसीना टप टप चूता रहता है। सवारियों की डाँट-फटकार। गाणियां। चाचा *(जेब से चाकू निकालते हुए)* ये देखते हो... चाकू...

तलवारी लाल : चाकू...

लक्ष्मीपति सिंह : हाँ चाचा चाकू... रात के अंधेरे में सवारियों को चाकू दिखाकर लूट लिया... वही पैसा है यह।

तलवारी लाल : छीः छीः छीः

खुशामद सिंह : छीः छीः छीः छीः नहीं तलवारी लाल जी और सुनो मैं खुशामद सिंह, M.sc Ist class, बाप ने नाम खुशामद रख दिया, पर खुशामद से दूर तक का रिश्ता नहीं। दर दर मारा फिरता हूँ। Compeltions, interrier भाग दौड़। थक गया हूँ चाचा। तुम्हारा कितना पैसा बर्बाद कर चुका हूँ इन Competions के पीछे, Interviews के पीछे। आखिर क्या अधिकार है मुझे तुम्हारा पैसा बर्बाद करने का? क्या अधिकार है। इसलिए मैंने .... मैंने एक स्मगलर का लिए काम करना शुरु कर दिया। यहाँ से वहाँ सामान पहुँचाने के बदले हजारों रुपये मिलेंगे।

तलवारी लाल : राम राम राम!

फिरौती लाल : चाचा! लक्ष्मीपति और खुशामद तो अब employed हो गया। मैं फिरौती लाल ही unemployed हो गया। मैं क्या

करूं कुछ समझ में नहीं आता। चाकू... लक्ष्मीपति मुझे भी एक चाकू खरीद दे यार...

लक्ष्मीपति सिंह : अबे तू क्या करेगा चाकू लेके...

फिरौती लाल : फिरौती...

खुशामद सिंह : फिरौती

फिरौती लाल : हाँ। बाप ने नाम फिरौती रखा। यथा नाम तथा गुण। जैसा नाम वैसा काम। मैं बच्चों को Kidnap करूँगा फिर उनके बापों से फिरौती में हजारों लाखों माँगेगा।

तलवारी लाल : ये क्या हो गया है तुमलोगों को। छीः छीः छीः। तुम लोग चोरी करने लगे डकैती करने लगे। मुझे ऐसी उम्मीद न थी।

लक्ष्मीपति सिंह : चाचा मुझे भी ऐसी उम्मीद न थी कि इतनी बड़ी-बड़ी डिग्रिया लेकर भी हमलोग रास्ते के भिखारी बन जाएँगे।

खुशामद सिंह : मुझे भी ऐसी उम्मीद नहीं थी कि Competetions में interviews में जहाँ भी जाऊँगा पैरवी की माँग होगी ना कि Certificate की। नौकरी लेने में हजारों रुपये घुस के देने पड़ेंगे।

तलवारी सिंह : बेटे। इतने से ही तुमलोग घबड़ा गए? अभी तो पूरी जिन्दगी पड़ी हुई है। उतार-चढ़ाव का नाग ही तो जिन्दगी है।

लक्ष्मीपति सिंह : हाँ चाचा। उतार चढ़ाव का चार जिन्दगी वाली बात खत्म हो गई। आज की जिन्दगी पैसे की जिन्दगी है। आज की जिन्दगी Power की है, पैसे पर और तो बोलती है officer है कलम दिखाकर लूटते हैं। आज का समाज आज का देश दो नम्बर के पैसे पर चल रहा है।

तलवारी लाल : बेटे। भगवान से डरो। दो नम्बर की कमाई पाप की कमाई होती है।

फिरौती लाल : हा-हा-हा... अरे मेरे भोले-भाले प्यारे-प्यारे चाचा। कहाँ की बात करते हो। दो नम्बर की कमाई यानि No. 2 income, oxford dictionary से हमारे इंडिया के माता-. पिता, भाई-बहनों ने कब का निकाल फेंक दिया। चाचा

अब तो आलम ये है कि दो नम्बर की कमाई वालों को लोग Employed कहते हैं। एक नम्बर पर जिन्दा रहने वाले तो Unemployed.

लक्ष्मीपति सिंह : क्या कहीं फिरौती तू ने। आज तेरी तुकन्दी तो वास्तव में महाकवि कालिदास की ऊँचाइयों को छू रहा है। बताओ चाचा अब भी कुछ कहना है

तलवारी लाल : कैसे समझाऊँ तुम लोगों को। देखो तुम लोग भटक रहे हो। मुझे देखो...मुझे... मैंने तो चोरी नहीं की, डकैती नहीं की। देश के साथ गद्दारी नहीं की? देश आजाद हो गया। पर, मुझे कुछ नहीं मिला। जिन्दगी के 6 साल मैंने जेल में काटे। स्वतंत्रता की लड़ाई में किसी से पीछे न रहा... दुख अवश्य होता है कि हमने क्या सोचा था और आज देश क्या हो गया।... पर इससे क्या... क्या मैं भी बेईमान बन जाऊँ। तुमलोग मेरे क्या हो? क्या संबंध है, मेरा और तुम लोगों का? .... मैं अपना धंधा बर्बाद कर रहा हूँ तुमलोगों के लिए...?

फिरौती लाल : चाचा... तुम्हारे बारे में किसी ने सही ही लिखा हैः'आप ऐसे पेड़ हैं जो छाँव बाँटकर अपनी तरसते रहते हैं। हर धूप में एक साये को'

खुशामद सिंह : पर हम ऐसा पेड़ नहीं बनेंगे। हमसे अगर साये की उम्मीद की जाती है तो हम भी साये की उम्मीद करते हैं।

लक्ष्मीपति सिंह : हमें भी साया चाहिए। अगर ऐसे नहीं मिलेगा तो हम छीनकर लेंगे। चाकू के बल पर लेंगे पिस्तौल दिखाकर लेंगे।

तुल. : तुम लोग पागल हो गए हो। थोड़ी-सी तकलीफ क्या सही तुमने अपना ईमान-धर्म भूल गए। ईमान बेचने पर तैयार हो गये हो।

लक्ष्मीपति सिंह : चाचा बेचता यूँ ही नहीं है आदमी ईमान को, भूल से ले आती है ऐसे मोड़ इंसान को।

फिरौती लाल : शुभान अल्लाह! क्या बात कही? लक्ष्मीपति मैं तो तुकबन्दी ही करता था। तुम तो पूरा का पूरा शेर कहने लगे।

खुशामद सिंह : हूँ शेर कहने लगा। फिरौती इसका अपना नहीं है चोरी की है।

लक्ष्मीपति सिंह : चोरी की है? देख खुशामद हर बात में टाँग अड़ाना ठीक नहीं। खुद तो एक लाइन बोल नहीं सकता मैंने बोला तो चारी की है।

खुशामद सिंह : क्या कहा मैं एक लाइन बोल नहीं सकता। चाचा...चाचा... हूँ...सुनो लक्ष्मीपति हम चाचा को चाचा ही कहेंगे?
हम चाचा को चाचा ही कहेंगे?
अबे फिरौती... पूरा कर... हम चाचा को चाचा ही कहेंगे।

फिरौती लाल : पूरा करूँ?

खुशामद सिंह : हाँ हाँ पूरा कर।

फिरौती लाल : हम चाचा को चाचा ही कहेंगे।

फिरौती लाल : हम भतीजा हैं भतीजा ही रहेंगे।

खुशामद सिंह : *(फिरौती का बाल पकड़कर)* अबे उल्लू के पट्ठे। भर दिन तुकबन्दी ही करता रहता है। मैंने सुन्दर-सा तुकबदी करने को कहा तो हम भतीजा हैं, भतीजा ही रहेंगे।'

फिरौती लाल : बाल छोड़.... बाल छोड़...
(बाल छोड़ देता है)
सुन्दर-सा तुकबन्द क्यों?

खुशामद सिंह : हाँ... कोई सुन्दर-सा तुकबन्दी लगा।

फिरौती लाल : बोल फिर से बोल।

खुशामद सिंह : हम चाचा को चाचा ही कहेंगे।

फिरौती लाल : *(तमाचा दिखाते हुए)* इस तमाचे को तमाचा ही कहेंगे। *(और खुशामद के गाल पर जड़ देता है।)*

खुशामद सिंह : मर गया... मर गया.. *(कह रहा है और लक्ष्मीपति ठहाके मारकर हँसने लगता है)*

चाचा : अरे अरे मार पीट क्यों कर हो तुमलोग....

दृश्य : तीन

(कृष्णा कुमार एक कोने में बैठा पुस्तक पढ़ रहा है। बगल की कुर्सी पर झोले

में ढेर सारी पुस्तकें रखी हुई हैं। बस्ते, एक मटमैला-सा धोती और कुर्ता। तीनों साथियों का प्रवेश)

फिरौती लाल : भतीजा। अबे ओ भाईजान। चाचा के तो हम तीन ही भतीजा थे ये चौथे तुम कहाँ से टपक पड़े?

कृष्णा : जी मैं उनका दूर के रिश्ते में भतीजा पड़ता हूँ। रात ही गाँव से आया हूँ।

खुशामद सिंह : भाई गाँव से आये हो तो शहर घूमो। पिक्चर-विक्चर देखो-मौज मस्ती करो... ये क्या किताब कॉपी लेके बैठ गए।

कृष्ण कुमार : जी दरअसल बात यह है कि कल्ह मेरा Interview है। Written मैं Complete किया हूँ।

लक्ष्मीपति सिंह : भाई साहब किस पोस्ट का इंटरव्यू है।

कृष्ण कुमार : जी, आई.ए.एस.

एक साथ : *(तीनों)* क्या आई.ए.एस. और लक्ष्मीपति ठहाके मार कर हँसता है और दोनों भी साथ देते हैं। आई.ए.एस. हा हा हा... आई.एस.एस. हा हा हा धोती कुर्ता 100% हिन्दुस्तानी और आई.ए.एस.

कृष्ण कुमार : आपलोग क्यों हँस रहे हैं?

लक्ष्मीपति सिंह : हँस रहा हूँ? भाई हम तो रहे हैं?

कृष्ण कुमार : रो रहे हैं? लेकिन आपलोग तो ठहाके मारकर हँस रहे थे।

फिरौती लाल : देखो भाई... क्या नाम है तुम्हारा?

कृष्ण कुमार : जी कृष्ण कुमार।

फिरौती लाल : हाँ तो श्रीमान कृष्ण कुमार जी। हम हँस रहे थे तुम्हारे इस धोती कुर्ता के साथ आई.ए.एस. का मैच देखकर। और रो रहे थे यह सोचकर कि हमारे जैसा देश का एक और जवान उल्लू बने जा रहा है।

कृष्णा : मैं आपलोगों की कोई भी बात नहीं समझ रहाँ कृपया मुझे पढ़ने दें।

खुशामद सिंह : ठीक है भई पढ़ो। खूब मन लगाकर पढ़ो। हमलोग तुम्हारे लिए दुआ माँगेंगे। चलो भाई.... चलो चाय पिया जाए...

तीनों आकर चाय पीने लगते हैं।

फिरौती लाल : यारों इस मौके पर कुछ तुकबन्दी करने का मन करता है।

खुशामद सिंह : तों कर डालो। तुम से कुछ और हो भी तो नहीं सकता।

फिरौती लाल : तो सुनो... पोथी पढ़ पढ़ जग मुहा पंडित हुआ न कोय
तीन लेटर आई.ए.एस. का पढ़े सो पंडित होय।

लक्ष्मीपति सिंह : वाह! वाह! क्या तुकबन्दी है।

फिरौती लाल : *(पुनः रिस्पेक्ट करके)*
पढ़े सो पंडित होय कहत फिरौती लाल आई.ए.एस. के ख्वाब में। जिनके पक गए सारे बाल पक गए सारे बाल।

खुशामद सिंह : शू... शू... शू... (*मुहँ पर अँगुली रख चुप रहने का इशारा करता है।)* Under seceratry *(फिरौती टेबल के नीचे सर घुसाकर खोजने लगता है।)*

लक्ष्मीपति सिंह : अरे क्या खोज रहे हो।

फिरौती लाल : Seceratery को अन्दर में।

खुशामद सिंह : अबे इधर नहीं उधर... (तीनों secetary की तरफ देखते हैं। जिधर मीरा खड़ी इधर-उधर देख रही है)

मीरा : मैनेजर! मैनेजर न जाने कहाँ चला गया बुढ्ढा।

खुशामद सिंह : *(उठकर आगे आता है।)* Yes Madam, what do you want please.

मीरा. : You shut up *(कहकर आगे कृष्ण कुमार के पास जाती है)*
सुनिये कृपा आप बतला सकते हैं कि मैनेजर कहाँ गया है? *(कृष्ण कुमार सर झुकाए पढ़ रहा है।)*

मीरा : सुनिए...

कृष्णा : जी .... सर उठाता है। अरे मीरा तुम?

मीरा : हाय! कृष्णा तुम? तुम यहाँ क्या कर रहे हो?
(दूसरी तरफ)

खुशामद सिंह : हाय! ये श्रीमान तो उस्ताद निकले।

लक्ष्मीपति सिंह : कृष्ण और मीरा क्या जोड़ी है।

फिरौती लाल : अरे मैं तो प्रेम दिवानी मेरा दरद ना जाने कोय मीरा के प्रभु गिरधर।

लक्ष्मीपति सिंह : अबे चुप सुन लेगी तो कच्चा खा जाएगी।
(दूसरी तरफ)

मीरा : उधर बी.ए. पास किया इधर पापा की बदली दिल्ली हो गई। बस यहीं से एम.ए. किया। तुम से तो तीन-चार साल बाद मुलाकात हो रही है। पर तुम इस होटल में कैसे?

कृष्णा. : मीरा! इस होटल के मालिक तलवारी लाल जी मेरे दूर के रिश्ते में चाचा लगते है। रात ही आया हूँ। और तुम इस होटल में कैसे?

मीरा : क्या बताऊँ कृष्ण! कुछ दिन पहले एक पागल के चक्कर में फंस गई थी और यहाँ आ गई थी। उसी दिन मेरा बैग खो गया। आज अचानक ख्यात आया कि यहाँ भी चेक कर लूं। इसलिए इस बूढ़े मैनेजर को खोज रही थी।

कृष्ण : बुड्ढा...। अरे वे ही तो मेरे चाचा हैं तलवारी लाल जी। अच्छा मीरा... चाचा जी अभी नहीं है आते ही मैं पूछ लूँगा।

मीरा : अरे तुम तो मुझे भगाना चाहते हो क्या बात है?

कृष्ण : मीरा भगाना नहीं चाहता। दरअसल कल्ह मेरा आई.ए.एस. का इंटरव्यू है। उसी की तैयारी कर रहा हूँ। समय कम है और पढ़ना ज्यादा है?

जीरा : अरे .... आई.ए.एस. का इंटरव्यू। मैं जानती थी तुम अवश्य Written में कम्पलीट करोगे। बी.ए. में जब हम साथ पढ़ते थे। तभी मैंने पापा से कहा था कि तुम भी कम्पलीट करोगे? And you will be glad to know what i have also qualified to going to appear at inteview tomorrow along with you.

कृष्ण : Oh good, congratulations.

लक्ष्मी : हमलोगों की तरफ से भी Congratulation Miss Meera.

मीरा : You shut up बदत्तमीजी की भी हद होती है। तुम लोगों को एक-एक करके देख लूँगी। चलो कृष्ण।

कृष्ण : कहाँ?

मीरा : मेरे घर। यहाँ इन पागलों की बीच क्या तैयारी कर पाओगे? मेरा बंगला बहुत बड़ा है तुम नहीं जानते अब मेरे पापा।

तीनों साथ : Under Seceretary हैं।

मीरा : Oh you कृष्ण तुम चुपचाप देखे चले जा रहे हो और ये गुण्डे मेरी बेइज्जती किये जा रहे हैं।

लक्ष्मीपति सिंह : मिस मीरा! आपकी जबान कैंची की तरह चल रही है। हम जबान कतरना भी जानते हैं।

खुशामद सिंह : और जब अपने हमें गुण्डा, पागल सब कह ही दिया तो जरा धैर्य से सुनिए हमलोगों का Introduction बैठ जाइये...बैठ जाइये *(जोर से)* मैंने कहा न बैठ जाइये... *(मीरा सहमती हुई चुपचाप बैठ जाती है)* सुनिये : ये मि. लक्ष्मीपति सिंह Double M.A. and doubly retired I.A.S कृष्ण जी!

खुशमद सिंह : जी हाँ... इन्होंने दो-दो बार Written में कम्पलीट किया पर इंटरव्यू में छूट गए। क्यों? क्योंकि ये अंग्रेज की औलाद नहीं है। अंग्रेजी फटाफट नहीं बोल सकते। Conventment में पढ़ा नहीं। दिल्ली या बम्बई में कॉचिंग लिया नहीं।

लक्ष्मीपति सिंह : और ये जनाब खुशामद सिंह जी। Retired I.A.s Officers University topper घर में एक शाम खाना भी मुश्किल से मिलता था। Interview में छँटते गए। क्यों? क्योंकि पाँव में जूते नहीं थे। पैंट शर्ट प्रेस किए हुए नहीं थे। सूट टाई नहीं थी। और ये महाशय फिरौती लाल जी, Retired Income tax officer ख्वाब...ख्वाब ही रह गया। बेचारे का इनकम ही नहीं तो टैक्स की बात ही क्या?

खुशामद सिंह : मिस. मीरा आप जितना चहक रही हैं उससे ज्यादे हम चहकते अगर हमारे पिता भी Under secerarty रहते।

लक्ष्मीमद सिंह : आप जितनी जोर से शट अप बोलती हैं उससे कहीं अधिक जोर से हम शट अप कहते अगर मेरे बाप का भी दिल्ली में एक बंगला रहता। समझी...

फिरौती लाल : और मिस. आपकी सुन्दरता से भी हम सुन्दर गर बाप के पास होता रुपये का समन्दर, रुपये का समन्दर तो दुनियाँ

की ऐसी-तैसी, एक नहीं हजार अगल-बगल चलती आपकी जैसी।

मीरा : Idiot एक-एक को देख लूँगी। कृष्ण तुम्हारे ये नोट्स ले जा रही हूँ कल्ह इंटरव्यू के टाइम वापस कर दूंगी। *(जल्दी. ..जल्दी चली जाती है।)*

कृष्ण : मीरा...मीरा... जरा सुनो तो... हे भगवान अब मैं पढ़ूँगा क्या?

फिरौती लाल : भाई मीरा के गिरधर गोपाल अब तुम्हें पढ़ने की जरूरत ही क्या है। अब तो तुम गीत गाओ। मीरा...मीरा.. पुकारूँ मैं वन में, मेरी मीरा... छिपी है... मेरे मन मे।

कृष्ण : ओफ! भाई साहब कृपया मुझे अकेले छोड़ दें।

लक्ष्मीपति सिंह : अरे तो हमने तुम्हें पकड़ कर ही कब रखा है।

खुशामद सिंह : हम तो तुम्हें ये बता रहे थे कि आई.ए.एस. का चक्कर तुम्हारे बस का नहीं।

कृष्ण : आप लोग sadist हैं और मुझे भी sadist बनाना चाहते हैं।

लक्ष्मीपति सिंह : हा हा हा... शान्त शान्त! भाई हम लोग sadist नहीं है। Realistic हैं। Realistic.

कृष्ण : इसी को Realistic कहते हैं? क्या आई.ए.एस., आई.पी. एस. सिर्फ शहर के लोग ही कम्पलीट करते हैं। अमीर लोग ही कम्पलीट करते हैं।

लक्ष्मीपति सिंह : ज्यादातर! ज्यादातर भाई अब शहर के नहीं। बड़े-बड़े शहरों के अंग्रेजों की औलाद सब दिल्ली बम्बई शहरों के मद्रास, कलकत्ता। कुछ पिछले सालों का रिकॉर्ड उठाकर देख लो ऊपर से नीचे तक बड़े-बड़े लोगों की औलाद।

फिरौती लाल : शायद ही कोई मिल जाय जिसके पिता दरिद्र नारायण हों। और माता जी कर्तव्य परायण हों।

लक्ष्मीपति सिंह : अरे भाई कृष्ण कुमार जी। इस धोती और कुर्ते पर आई. ए.एस. फिट नहीं बैठता। ये तो भाग्य आजमाने आ ही गए हो। खैर तुम अगर भाग्य आजमाने आ ही गए हो

तो आजमा कर देख लो। यूँ खुशामद...
(पीछे से तलवारी लाल की आवाज मनमाया... मनमाया)

खुशमद सिंह : अरे चाचा तलवारी लाल चलो जल्दी बैठ जाओ नहीं तो खैर नहीं।

दृश्य : चार

(कृष्ण कुमार चुपचाप बैठा है। उदास एकदम उदास। तीनों का प्रवेश)

लक्ष्मीपति सिंह : अरे आजकल तो चाचा गायब ही रहते हैं। पता नहीं सबेरे-सबेरे कहाँ चले जाते हैं? मनमाया... ओ मनमाया...

मनमाया : आया... बोलो क्या है सेठ?

खुशामद सिंह : अरे ये तलवारी लाल जी किधर गए?

मनमाया : सेठ। बड़ा सेठ टेशन गया है। हू... हू... हू... *(रोता है)*

मनमाया : अरे... अरे तू रो क्यूँ रहा है?

मनमाया : सेठ...सेठ.. आज बड़ा सेठ का सेठानी आने वाली हैं।

लक्ष्मीपति सिंह : सेठानी ... अरे तेरे सेठ तो कुँआरे हैं फिर... सेठानी कहाँ से?

फिरौती लाल : अबे मुख... मेरे नाना भी तो कुंआरे थे, फिर मेरी नानी कहाँ से?

लक्ष्मीपति सिंह : फिरौती! तू चुप रहेगा कि नहीं। हर बार तुकबन्दी हर बख्त तुकबन्दी। मनमाया.. मानलो सेठ की सेठानी आ ही रही है तो तुमको क्या फर्क पड़ता है। ओय। तू क्यों रो रहा है?

मनमाया : सेठ... अपुन को जनाना अच्छी नहीं लगती...।

फिरौती लाल : आ हा... हा... जनाना अच्छी नहीं लगती।
तो इस जमाने में तू हुआ क्यूँ पैदा अरे जनाना और खजाना के लिए तो सब मार करते हैं सब मार करते हैं। मारधाड़ करते हैं। जिनके पास नहीं ये दोनों हमारी तरह सड़ते हैं। देखा था ख्वाब ऑफिसर इनकम टैक्स का बनेंगे हम पर, इनकम के लिए सड़कों पर एड़ियों रगड़ते हैं ओ हो हो अरे भाई गिरधर गोपाल जी मेरा मतलब कृष्ण कुमार जी

कहिए क्या हाल हैं आपके
और कहिए क्या हाल हैं
आपकी मीरा के बाप के I mean under seceratry के...

कृष्ण : भाई साहब।

फिरौती लाल : अरे अरे तुम रो रहे हो? लक्ष्मी खुशामद देखो भाई चाचा के भतीजा नं. 4 भी रो रहे हैं।

लक्ष्मीपति सिंह : (पास जाकर) क्यूँ भाई कृष्ण कुमार तुम क्यूँ रो रहे हो? अरे मैं तो पूछना ही भूल गया कैसा हुआ तुम्हारा इंटरव्यू? *(कृष्ण कुमार चुप?)*

खुशामद सिंह : भाई इसमें रोने की क्या बात है? अगर इन छोटी-मोटी बातों पे रोने लगे तो इस जालिम जमाने में रात-दिन महिनों, सालों रोते ही रहोगे। देखो हमलोगों को देखो। तीनों के तीनों रिटायर्ड आई.ए.एस., आई.पी.एस. टैक्स ऑफिसर कितनी मजे की रिटायर्ड लाइफ लीड कर रहे हैं। फाँके में भी मौन माली। कृपा चाचा तलवारी लाल की।

फिरौती लाल : बोलो चाचा तलवारी लाल की

तीनों : जय (Repeat)

लक्ष्मीपति सिंह : शान्त! शान्त!
ये इंटरव्यू... इंटरव्यू! भई मेरी मानों तो छोड़ो ये इंटरव्यू इंटरव्यू का चक्कर और आ जाओ मेरे साथ एक रिक्शा तुम्हें भी दिलवा दूँगा। रात में पैसेंजर को बैठाओ फिर छूरी दिखाकर लूट लो।

खुशामद सिंह : नहीं यह इतना घटिया काम नहीं करेगा। यह मेरे साथ आयेगा। स्मलिंग का माल इधर से उधर पहुँचायेगा और हजारों कमाएगा।

कृष्ण. : ओ...फ! भाई साहब। कृपया मुझे अकेले छोड़ दें।

फिरौती लाल : फिकर नॉट... फिकर नॉट
ये लो आ गई daughter of under seceratry.
(मीरा का प्रवेश)

मीरा : हाय कृष्णा! अरे तुम उदास क्यों हो? कैसा हुआ इंटरव्यू?

कृष्ण. : अच्छा नहीं हुआ।

मीरा. : क्यों?

कृष्ण : मीरा क्या बताऊँ। वहाँ का रंग ढंग देखकर तो मैं पहले ही नर्वस हो गया था। एक से बढ़कर एक dress-suit tie. अधिकांश कैंडिडेट तो नॉन स्टाप अंग्रेजी बोले चले जा रहे थे। मैं तो Humiliated feel कर रहा था। और अन्दर में। बोर्ड के मेम्बर्स ऐसे उट-पटांग प्रश्न कर रहे थे कि...

मीरा : ओफ कृष्ण! ... don't be disappointed फिर कोशिश करो you must complete.

कृष्ण : मीरा! तुम्हारा कैसा हुआ?

मीरा : फर्स्ट क्लास और पापा ने तो assure किया है कि बेटी किसी का हो या नहीं हो तुम्हारा अवश्य होगा। अरे कृष्ण मैं कल्ह तुम्हारा नोट्स लौटाना भूल ही गयी। Really your notes helped me a lot अरे अब तुम क्या पढ़ रहे हो? *(सामने की किताब उलटाते हुए)* Bank Competition guide।

कृष्ण : हाँ मीरा इसका भी Exam कल्ह ही है। मैंने सेंटर दिल्ली में ही करवा लिया है।

मीरा : Good! this job is also good job.

लक्ष्मीपति सिंह : वाह! वाह! क्या कहते हैं। खुद आई.ए.एस. बनने की तरकीफ लगा रही है और इस बेचारे को बैंक के बाबू बनने के लिए कह रही है।

फिरौती लाल : यार ये कलयुग के मीरा कृष्ण की जोड़ी है।

मीरा : You shut up!

लक्ष्मीपति सिंह : You shut up! चिल्लाइये मत। कितना बड़ा दुर्भाग्य है इस देश का। आई.ए.एस. का ख्वाब देखने वाला बैंक के क्लर्क ग्रेड की परीक्षा दे रहा है। हा...हा..हा..। ये नोट्स ये किताब व्यर्थ हैं। *(फाड़ने लगता है)*

कृष्ण : अरे अरे मेरे नोट्स दे दो।

लक्ष्मीपति सिंह : नोट्स हा हा हा... अरे दोस्त इस नोट्स में क्या रखा है। ये नोट्स आदमी को गधा बनाता है। अरे इन नोट्स को देखो। इन नोट्स को देखो यही आज का भगवान है। यही आज का ईमान है। हा-हा-हा।

मीरा : चुप हो। ... तुम लोगों की बकवास सुनते-सुनते मैं तंग आ गई हूँ। मैं पूछती हूँ तुम लोगों को क्या अधिकार है जो कृष्ण को परेशान करते रहते हो। मुझे छेड़खानी करते रहते हो। कहने को तुमलोग double M.A., triple M.A.हो। University Toppers हो पर तमीज नाम की चीज नहीं।

लक्ष्मीपति सिंह : ए मेम साहब। बहुत चिल्ला रही हैं। क्यों पेट भरा हुआ है इसीलिए। इसीलिए तमीज की बात कर रही हो। अरे हमसे क्यों पूछती हो तमीज की बात। जाकर पूछो अपने बाप से जाकर पूछो इस देरा के नेताओं से कि हमारी तमीज को क्यों लकार मारा गया है।

मीरा : भूखे सिर्फ तुम नहीं हो। इस देश के बहुत से लोग भूखे हैं। बेरोजगार हैं। पर, सभी तुम्हारी तरह बदतमीज नहीं हैं। और अगर भाषण देने की इतनी ही इच्छा है तो इस डेमोक्रेसी में तो सबको छूट है। Strike करो आन्दोलन करो।

लक्ष्मीपति सिंह : हा-हा-हा! आन्दोलन! Strike Miss मीरा आन्दोलन, हमारा आन्दोलन होता नहीं और जब कभी होता है तो ये सफेद टोपी वाले ये ऊँचे-ऊँचे ओहदे वाले अफसर ये जनता की रक्षा करने वाले पुलिस अपना-अपना सर घुसा अपना-अपना उल्लू सीधा करते हैं। और हम वहीं के वहीं रहें। वही रहेंगे।

मीरा : चलो कृष्ण। इन पागलों...

फिरौती लाल : खामोश। अगर हमें गाली दिया तो ठीक नहीं होगा।

लक्ष्मीपति सिंह : और कृष्ण तुम्हारे साथ नहीं जाएगा। यह हमारी जमात का है हमारे साथ रहेगा...कृष्ण इन किताबों में इन नोट्स में कुछ नहीं रखा है। इन्हें यूँ फाड़कर फेंक दो। हा...हा...हा...

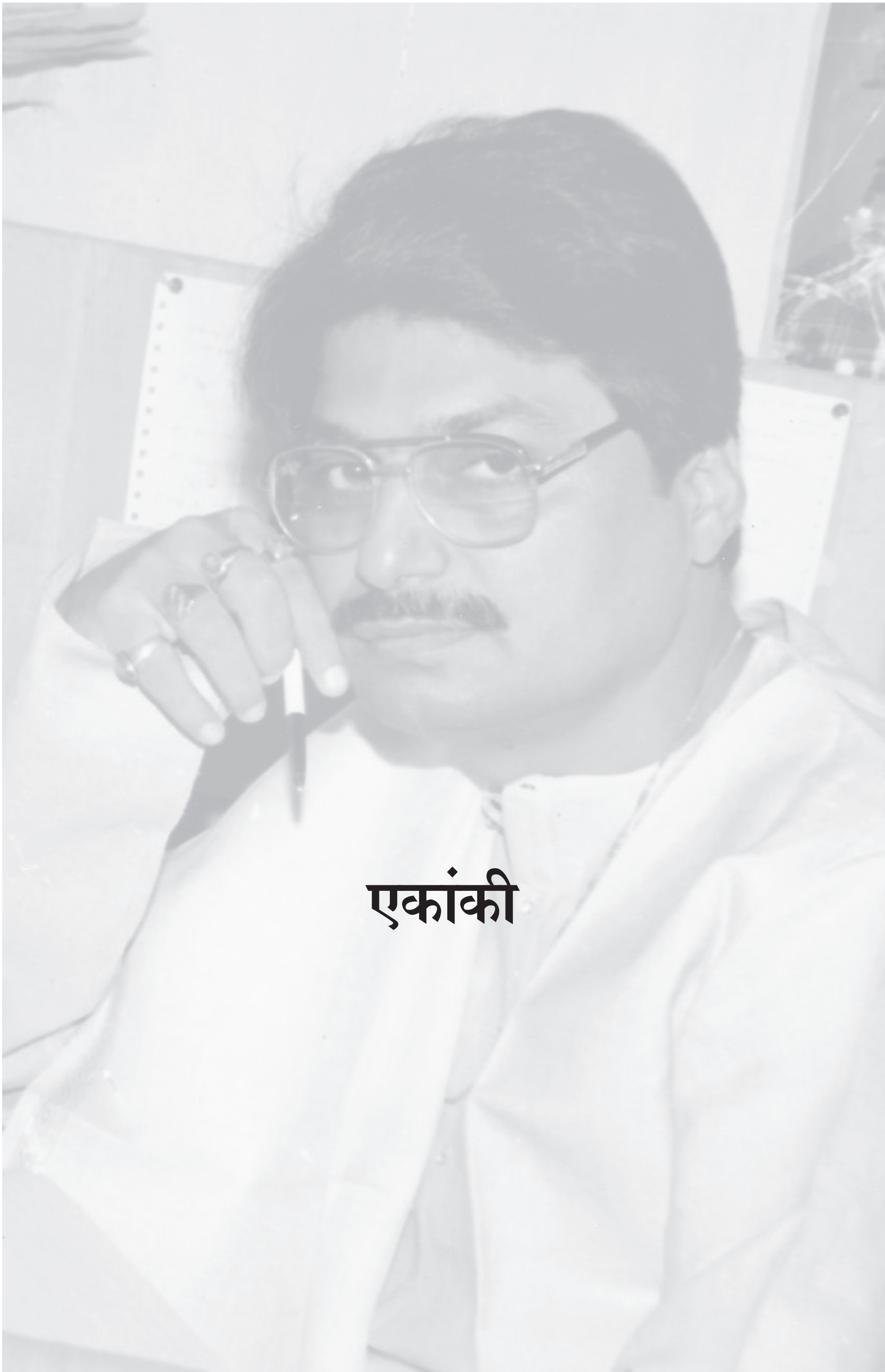
कृष्ण : अरे किताब मत फाड़ो, नोट्स मत फाड़ो।

लक्ष्मीपति सिंह : किताब और नोट्स फाड़-फाड़कर फेंक रहा है और हंसता जा रहा है। तीनों हंस रहे हैं।

पार्श्व से आवाजः ''अट्टहास के पीछे छिपा हुआ है क्रन्दन, इतिहास बदलने वाला उपहास बना है नन्दन। जब मुक्त हो गई परतंत्रता की बेड़ी से माँ भारत, ऐ देश चलाने वालों हमें तो यह बतलाओ फिर कैसा है ये बंधन)

समाप्त

●



एकांकी

सहयोग

पात्र परिचय

मनोहर लाल	:	40-45 साल का फोरमैन
रीता	:	35-40 साल की मार्डन गृहणी मनोहर लाल की पत्नी
राज	:	20 साल का लड़का मनोहर लाल का पुत्र
सिंह जी	:	मनोहर लाल का मित्र
नाना जी	:	राज के वृद्ध नाना
गुड्डी	:	15-16 साल की लड़की
सरदार जी	:	खलासी
स्टोर कीपर		
दो हेल्पर		

ड्राइंग रुम का दृश्य। दो कुर्सियाँ एक टेबल। टेबल पर टेप रेकॉर्डर और कुछ कैसेट रखा है। मनोहर लाल चाय पी रहे हैं, पेपर पढ़ रहे हैं। सुरक्षा गीत बज रहा है और पीछे के पर्दे पर स्लाइड से कास्टिंग दिखाया जा रहा है।

गीत

चाहिए चाहिए चाहिए
जीवन में सुरक्षा चाहिए
क्या घर क्या कर्मभूमि
क्या बाहर क्या मातृभूमि
पिता, पत्नी, पुत्र, मित्र
सबका सहयोग चाहिए।
ऐ मानव यह शरीर बस तेरा नहीं
तेरा नहीं, तेरा नहीं
यह जीवन बस राख रंग का डेरा नहीं
डेरा नहीं डेरा नहीं
हिम्मत से तुम आगे बढ़ो
दुःख से तुम नहीं डरो
कौन-सी ऐसी रात हुयी है
जिसका कोई सबेरा नहीं
सवेरा नहीं, सवेरा नहीं
चाहिए, चाहिए चाहिए,
सबका सहयोग चाहिए।

(गीत के साथ ही कास्टींग खत्म होता है। सिंह बाबू का नेपथ्य से आवाज)

सिंह : अरे भाई मनोहर लाल। घर में हो क्या?

(प्रवेश)

मनोहर : आइए। आइए सिंह बाबू। बैठिए। यह सबेरे-सबेरे किधर को चले हैं?

(टेप बन्द कर देता है)

सिंह बाबू : अरे भाई क्या बताऊँ। मरने की फुर्सत नहीं है। देखो ना आज एतवार का दिन है। छुट्टी का दिन है और मैं ऑफिस जा रहा हूँ।

मनो. : क्यों? कौन जी आफत आ पड़ी है? हमलोग तो Con-

struction Dept. के आदमी हैं। क्या एतवार क्या सोमवार सब दिन एक समान है। परन्तु आपके Design Dept. में एतवार को काम करने वाले को...

सिंह : चमचा कहा जाता है यही न?

मनो. : नहीं-नहीं। ऐसी बात नहीं। मैं कह रहा था...

सिंह : तुम क्या कह रहे थे पता नहीं। पर, सभी ऐसा ही कहते हैं। *(कुछ एक गुरु)* माइनाइनेशन का काम हो रहा है। चारों तरफ आग दौड़। क्या दिन क्या रात। सब लोग काम समय पर कम्पलीट करने में लगे हुए हैं। और वह Calcining blant वाला... गैलरी का काम जो रुका हुआ था। उसने डिलेल सप्लायर से कल ही मिला है। आज ही ड्राइंग को Revise करके दे देना है बाकी Fabricate करके कल-परसों तक दस-बीस का erectim हो जाये।

मनो. : हाँ भाई! इस एक नीम के चलते सारा का सारा काम रुका पड़ा है। General Manager (Enginerring) खुद इसके पीछे पड़े हुए हैं।

सिंह : *(कैसेट को हाथ में लेते हुए)* अरे भाई मनोहर Division में तो, सुरक्षा के हीरो बने हुए ही हो। यह घर में भी जय सुरक्षा-जय मुख्य।

मनो. : सुरक्षा ही तो जीवन है। और अगर इस जीवन पर सिर्फ अपना अधिकार रहे तो जैसे चाहों इसे लुटा दो। परन्तु इस पर तो हमारा अधिकार है ही नहीं। इस पर अधिकार है पत्नी का बच्चे का समाज का देश का और सबसे बड़ा अधिकार है परमपिता परमेश्वर का जिसने हमें बनाया है।

सिंह : ठीक। अब तुम रास्ते पर आये। भाई जब परमेश्वर ने हमें बनाया है तो वही इसकी रक्षा भी करेगा। हम क्यूँ इसके पीछे समय बर्बाद करें?

मनो. : सिंह बाबू। आश्चर्य है। आप इतनी उम्र गुजार चुके हैं। पढ़े-लिखे हैं, अच्छे ओहदे पर हैं। अच्छी तनख्वा पाते हैं। फिर भी सुरक्षा के महत्व से वंचित हैं। अच्छा मैं एक बात

पूछता हूँ। मान लिजिए आपको मैं 500 रुपये देता हूँ कि यह आपका हो गया। तो क्या आपका फर्ज यह नहीं होता कि आप उसे संभाल कर रखें, सोच समझकर खर्च करें? या आप यह सोचेंगे कि मनोहर ने दिया है तो मनोहर ही इसकी रक्षा करेगा।

सिंह : *(कुछ सोचते हुए)* भई बात तुम्हारी सही रही है। खैर छोड़ो हटाओ उस टॉपिक को। यह बताओ चाय-कॉफी कुछ मिलेगी कि नहीं?

मनो. : Oh sure! अजी सुनती हो?

(अन्दर वाले दरवाजे के पास जाकर आवाज देता है। रीता का क्रोध में प्रवेश)

रीता : बार-बार कहा है मुझे ऐसे मत बुलाया करो। 'अजी सुनती हो', 'अजी सुनती हो' मेरा नाम नहीं है क्या?

मनो. : अच्छा! अच्छा! रीता।

रीता : रीता नहीं रीता डार्लिंग कहो।

(सिंह बाबू की ठहाके की आवाज। मनोहर शरमा जाता है। रीता सिंह बाबू की तरफ देखती है)

सिंह : अरे वाह भाभी। इस बुढ़ापे के ऑटोज मेम बनने की कैसे सूझी?

रीता : क्या कहा बुढ़ापा। क्या मैं बूढ़ी हूँ?

सिंह : मामी नाराज मत होइये। मैं तो यूँ ही।

रीता : हूँ। मैं तो यूँ ही। आप मर्दों को औरतों की इज्जत करनी नहीं आती। अपनी बीवी तो सोलह साल की बच्ची नजर आती है और दूसरे की बीवी साठ साल की बुढ्ढी... हूँ।

मनो. : रीता...! सिंह बाबू मेरे दोस्त हैं। जरा होश में आओ।

रीता : तुम चुप रहो जी। होश में इन्हें आना चाहिए। मैं पूरे होश में हूँ।

सिंह : भाभी मैं तो यूँ ही मजाक कर रहा था।

रीता : ऐसे मजाक करने वाले मेरे घर आये यह मुझे पसंद नहीं।

मनो. : रीता...

सिंह : अच्छा मनोहर मैं चलता हूँ। *(प्रस्थान)*

मनों. : सिंह बाबू जरा सुनिए... रीता।

रीता : रीता नहीं रीता डार्लिंग कहो।

मनो. : *(गुस्सा कर)* रीता। *(कुछ रुककर)* रीता तुम मुझसे किस जन्म का बदला ले रही हो। मैंने हमेशा तुम्हें प्यार किया है पर पर तुम्हारे प्यार को खोता जा रहा है।... बचपन में माँ का प्यार नहीं मिला। तुम मिली तो सोचा तुमसे असीम प्यार मिलेगा। प्यार ही प्यार होगा हमारे छोटे से संसार में पर।

रीता : पर क्या? तुम तो ऐसे कह रहे हो जैसे मैं तुम्हारा दुश्मन हूँ *(घड़ी देखते हुए)* Oh my God बन रहे हैं। क्लब में सब आ गयीं होंगी। मैं तो अभी तैयार भी नहीं हूँ। *(अन्दर जाती है)*

मनो. : रीता। मेरी बात तो सुनो...।

ओफ कैसे समझाऊँ रीता तुम्हें।

(पाँव में जूता/चप्पल डाल बाहर चला जाता है। रानू और गुड्डी का प्रवेश। राजू सिगरेट पीते हुए डांस करते हुए आता है। कैसेट को देख कर मुँह बिचकाता है)

राजू : ओफ हो। गुड्डी डार्लिंग। मेरे पापा भी अजीब हैं। जब देखो तब या तो मीरा का भजन "अरी मैं तो प्रेम दीवानी" या यही सहयोग चाहिए सुरक्षा चाहिए। ठहरो मैं दूसरा कैसेट लाता हूँ।

(कैसेट लाकर चेंज करने का उपक्रम)

गुड्डी : राजू। तुम सिगरेट पी रहे हो। कहीं तुम्हारे पापा आ गए तो?

राजू : हा हा हा! पापा के मुलाकात का समय है रात के 11 बजे सुबह। सुबह जब मैं सोता रहता हूँ वे डूयटी चले जाते हैं और रात को 8-10 बजे आकर खाना खाते हैं और सो जाते हैं। हरेक 4-4 वां को पूरी की पूरी तनखवा लाकर मम्मी के हाथों में रख देते हैं। मम्मी को मिला पैसा कि

शुरु हो शुरु। क्लब महिला समाज, डयूटी पार्लर और बेटा राजू का शेयर लूट जाता है दोस्तों की महफिलों में और प्यारी गुड्डी की खातिरदारी में। ऐश ही ऐश है। भई अपना तो प्रीमीयर है,

''लगा दो आग पानी में जवानी इसको कहते हैं
लुटा दो जो... कही इसको कहते हैं।''

(नाना का प्रवेश)

नाना : नानी! नहीं बेटा। तुम्हारी नानी नहीं आयी बेटा। मैं तो अकेला ही आया हूँ। श्रीराम श्रीराम।

राज. : हाय नाना जी। गुड मार्निंग।

नाना : जीते रहो बेटा। श्री राम श्री राम। *(गुड्डी की तरफ देखते हुए)* बेटा, यह लड़का कौन है?

राजू : हा हा हा नाना जी यह लड़का नहीं। लड़की है। गुड्डी। मेरी गर्लफ्रेंड।

नाना : क्या! *(गौर से गुड्डी को देखे हुए)*
कबीरदास की उल्टी वाणी
लड़की बन गयी लड़का
लड़का करे मनमानी। श्री राम श्री राम।
(राजू गुड्डी हँसते हैं)
अच्छा बेटा यह तो बताओ तुम्हारे बाबू जी किधर है?

राजू : बाबू जी! यू मीन पापा?

नाना : पापा नहीं बाबू जी के बारे में पूछ रहा हूँ बेटा। श्री राम श्री राम।

गुड्डी : नाना जी। बात ऐसी है कि अंग्रेजी में बाबू जी को 'पापा' बुलाते हैं।

नाना : श्री राम श्री राम। अच्छा बेटी यह बताओ अगर अंग्रेजी में बाबू को पापा कहती हो तो क्या माता जी को पापी कहते हो?

गुड्डी : *(हँसते हुए)* पापा नहीं मम्मी कहते हैं।

नाना : श्री राम। श्री राम। अच्छा बेटा तो यही बताओ कि तुम्हारे

पापा जी ओर अम्मी किधर हैं?

राजू : अम्मी नहीं। मम्मी। मम्मी अन्दर हैं और पापा ड्यूटी पर गए होंगे।

(नाना श्री राम श्री राम करते हुए अन्दर चले जाते हैं।)

गुड्डी : राजू। तुम्हारे नाना जी तो बहुत मजेदार हैं।

राज : अरे छोड़ो। आज 4-5 साल बाद बुढ्ढा आया है। बोर करके रख दिया। आओ हम लोग डाँस करें।

(Tape की आवाज तेज कर देता है। अन्दर चला जाता है। पीछे के या साइड के परदों पर Shadow *में दोनों को डाँस करते हुए दिखलाया जाता है।)*

मनोहर लाल का प्रवेश। स्पेज पर धीरे-धीरे लाइटआता है। मनोहर टेप बंद करता है।

मनो. : मैं पूछता हूँ क्या हो रहा है इस घर में?

(डाँस बन्द हो जाता है और राजू और गुड्डी दोनों सामने आते हैं। राजू के हाथों में सिगरेट है)

राजू। तुम्हारे हाथों में सिगरेट। तुम सिगरेट पीते हो?

राजू : यस पापा।

मनो. : What? *(बढ़कर राजू को एक तमाचा मारता है)*

राजू. : पापा। यह आपने अच्छा नहीं किया। आपने मेरे फ्रेंड के सामने मेरी बेज्जती की है।

मनो. : खामोश बत्तमीज। तुममे बात करने की भी तमीज न रही। कौन है यह लड़की?

राजू : मेरी गर्ल फ्रेंड। हम एक-दूसरे से प्यार करते हैं और जल्दी ही शादी करने जा रहे हैं।

मनो. : शादी। प्यार! (सर पकड़ लेता है और पीछे से आवाज। ‘‘या भगवान। क्या हो रहा है मेरे घर में? मैं सोच रहा था परिवार की नैया को सुरक्षित बढ़ा रहा हूँ। पर। पर! पानी तो सर से ऊपर चढ़ रहा है।

क्या करूँ। क्या करूँ?

(प्रगट मे) बेटी। क्या नाम है तुम्हारा?

गुड्डी : जी गुड्डी।

मनो. : किस क्लास में पढ़ती हो।

गुड्डी : स्टैंडर्ड टेन में।

मनो. : राजू। जरा सोचो। अभी तुम लोगों की उम्र ही क्या है। तुम Ist year में पढ़ते हो ओर यह स्टैंडर्ड टेन में। अभी तो तुम लोगों के पढ़ने के दिन हैं। अभी इन बातों में समय मत बर्बाद करो।

राजू : नो पापा! हम लोगों ने निश्चय कर लिया है। But Mummy knows it. रीता-रीता। *(रीता और नाना अन्दर से आना)* सुनती हो। राजू क्या कह रहा है। राजू इस लड़की से प्यार करता है। शादी करेगा।

रीता : तो कौन-सा गजब हो गया। शादी ही तो करेगा कत्ल तो नहीं करेगा।

मनो. : रीता! रीता... तुम... तुम...
मैंने तुम पर कितना विश्वास किया। पर, तुम लोगों ने आज मेरे विश्वास की धज्जियाँ उड़ा कर रख दी। मैं सुबह से शाम तक कोल्हू बना रहता हूँ। ताकि हमारे परिवार का भविष्य उज्जवल रहे। मैंने सोचा था तुम लोगों के सहयोग से परिवार की गाड़ी को सुरक्षित निकाल ले चलूँगा। पर-पर। तुम तो अपने बेटे की भी सुरक्षा न कर सकी।

रीता : सुरक्षा-सुरक्षा। तंग आ गई हूँ सुन-सुनकर। इससे तो अच्छा है कि मेरे साथ दुर्घटना हो जाय तो तुमको मुझसे छुटकारा मिल सके।

मनो. : नहीं! नहीं! ऐसा न कहो। ऐसा न कहो अभी भी समय नहीं बीता है। जरा सोचो। हम लोग आपस के सहयोग-से काफी सुखमय जीवन बिता सकते हैं।

रीता : किस सहयोग की बात करते हो। तुम यही न चाहते हो कि जो कुछ तुम कहो वही मैं करूँ वही राजू करे। हम लोग वैस नहीं कर सकते। आखिर हमारी भी इच्छाएँ हैं। मनोरंजन है। तुम सुबह से शाम तक कारखाने में घुसे रहो

और मैं यहाँ बैठी तुम्हारी प्रतीक्षा करती रहूँ यह मुझसे नहीं होगा। रखो अपना घर द्वार। हम तुम्हारी मर्जी पर चलने के लिए यहाँ नहीं रह सकते। चलो राजू। *(राजू गुड्डी के साथ प्रस्थान)*

मनो. : रीता। सुनो रोज। रीत... ओफ रीता तुम मुझे नहीं समझ सकी। हे भगवान क्या से क्या हो गया।

नाना : धैर्य रखो बेटा! सब ठीक हो जाएगा।

मनो. : बाबुजी मेरी आँखों के आगे अंधेरा-सा छा रहा है। सारा भविष्य कालीख में पुता नजर आ रहा है। लगता किसी ने मेरे जिगर के टुकड़े-टुकड़े करके सड़क पर फेंक दिया है।

नाना : घबराओ नहीं बेटा। मैं अभी उन लोगों को मनाकर वापस लाता हूँ।

(नाना का प्रस्थान मनोहर धीरे-धीरे कुर्सी पर बैठ जाता है। पीछे से आवाज Light धीरे-धीरे कम हो जाता है नाना के साथ रीता और राजू की वापसी... घर की तरफ चले जाना)

(सुबह का दृश्य। सैडो में सुर्योदय एवं चिड़िया की चहचहाने की आवाज। खाट पर मनोहर लाल आंखें मलते हुए हाथ में चाय के प्याले की खोज में हाथ टेबुल पर बढ़ाता है पर प्याला वहाँ नहीं है। प्याला लिए नाना का प्रवेश।)

नाना : श्री राम। श्री राम। वहाँ नहीं बेटा। यहाँ है।

मनो. : *(हड़बड़ाकर उठ जाता है)* अरे बाबुजी आप क्या कर रहे हैं। आपने क्यों चाय लायी?

नाना : बेटा। जब अपना खून ही इस तरह का हो जाय तो प्रायश्चित तो करना ही पड़ता है। लो पी लो। *(मनोहर चाय पीता है। नाना टेप की तरफ देखते हुए)* बेटा यह डिब्बा कैसा है?

मनो. : इसको टेप रिकॉर्डर कहते हैं। इसमें अपनी आवाज को टेप कर सकते हैं और फिर उसे सुन सकते हैं।

(कहते हुए अन्दर की तरफ प्रस्थान नाना जी डिब्बा को

घूरते हुए एक बटन दाब देते हैं। सुरक्षा गीत बजने लगता है। नाना जी ध्यान से सुनते हैं। मनोहर तौलिये से मुँह-हाथ पोंछते हुए प्रवेश करता है। जूता पहनकर तैयार होता। कुछ इधर-उधर खोजता है। नाना की नजर पड़ती है।)

नाना : क्या खोज रहे हो बेटा।

मनो. : ना जाने किधर रख दिया है। सेफ्टी हेलमेट खोज रहा हूँ।

नाना : अच्छा लोहे वाला टोपी।

मनो. : जी।

नाना : अच्छा ठहरों, मैं अंदर से खोज कर ला देता हूँ। श्री राम श्री राम।

(अन्दर जाता है कुछ देर में वापस आता है।)

नाना : बेटा अन्दर तो मिल नहीं रहा है।

मनो. : ओफ हो। डियूटी का समय हो गया। अब कैसे जाऊँ।

नाना : बेटा एक दिन ऐसे ही चले जाओगे तो क्या हो जाएगा।

मनो. : बाबूजी। एक दिन क्या एक क्षण की लापरवाही से जान चली जा सकती है खैर। मैं कोई दूसरा इन्तजाम कर लूँगा। *(जाने लगता है।)*

नाना : बेटा। कुछ खाना तो खा लो?

मनो. : क्या खाऊँगा बाबूजी। घर में कुछ बने तभी तो। *(आँखों का आँसू पोंछते हुए प्रस्थान। नाना भी आँख से आँसू पोंछते हैं।)*

(लाइट बन्द स्टेज पर ये सब सामान हटा दिया जाता है। एक टेबुल और दो चार कुर्सी लगाकर साइट कैंटीन जैसा दृश्य बना दिया जाता है। एक सरदार जी और एक अन्य लैबर बैठकर खाना खा रहे हैं। स्टोर कीपर का प्रवेश।)

स्टोरकीपर : सत श्री आकाल सरदार जी। खाना हो रहा है?

सरदार : सत श्री आकाल बादशाओ आओ बैठो भाई स्टोर कीपर साहेब खाना खाओगे।

स्टोरकीपर : नहीं! नहीं! आज एक मुर्गा फंस गया था। भर पेट मिठाई खिलाई उसने।

सरदार : ओय। फिर तो चांदी है तेड्डी।

स्टोरकीपर : हा हा हाँ कोई चीफ इंजीनियर से कम अकल पाई है। वह तो शाली किस्मत ही ऐसी है कि स्टोर कीपर ही रह गया। पिछली दफा जब दिल्ली गया था राजीव गांधी का हाथ देखकर कहा था ''घबराओ नहीं राजीव साहेब। आन्ध्र प्रदेश कर्नाटक गया तो क्या हुआ। दिल्ली तुम्हारे हाथ आएगी। आसाम तुम्हारे हाथ आएगी। सिर्फ विजय विजय ही विजय लिखा हुआ है। अब देखना सरदार जी मेरी बात बिल्कुल सच निकली है। आज जा रहा हूँ दिल्ली। राजीव भाईसे सोर्स लगवाकर चीफ इंजीनियर क्या सीध डायरेक्टर ऑफ प्रोजेक्ट बन जाऊँगा। देखता हूँ कौन माई का लाल रोकता है।

(सरदार हाथ पोछ चुका। धोखा है : स्टोरकीपर का हाथ दबाते हुए)

सरदार : भई स्टोर कीपर साहब जरा मेरा भी ख्याल रखना। प्रमोशन तो लगता है कभी मिलेगी ही नहीं।

स्टोरकीपर : देखूँ। जरा अपना हाथ तो लाओ। *(गौर से देखता है।)* राम राम। शुरु की महादशा में बृहस्पति सीधे पेड़ पर चढ़ा हुआ है। जिस तरह कृष्ण गोपियों के सारे कपड़े चुराकर पेड़ पर चढ़ गए थे। और वही बृहस्पति तुम्हारे प्रमोशन के सारे रास्ते पर अजगर की तरह कुण्डली मार बैठा है।

सरदार : कौन? कौन बृहस्पति?

स्टोरकीपर : अरे वही तुम्हारा फोरमैन? जब तक वह रास्ते से नहीं हटेगा तुम्हारा तो कल्याण नहीं।

सरदार : इसका मतलब। पहले फोरमैन साहेब का ही प्रमोशन दि. लवाना होगा।

स्टोरकीपर : हा हा हाँ तुम तो ऐसे कह रहे हो जैसे कबड्डी खेल रहे हो। अरे उसका प्रमोशन होने का रहता तो हो गया रहता। दस साल से लटका हुआ है। बड़ा साहब उससे काफी चिढ़ा हुआ है। और उधर देखो मनोहर लाल को सहयोग

सुरक्षा रटते हुए कैसे आगे बढ़ता चला जा रहा है।

सरदार : तब फिर?

स्टोरकीपर : सोचना होगा। *(हाथ देखता है)* अरे बाप रे।

सरदार : *(उछलकर)* क्या हुआ?

स्टोरकीपर : एक तरफ शनी दूसरी तरफ राहू बैठा हुआ तुम्हें यूँ देख रहा है।

(एक आँख दिखाता है।)

सरदार : क्या? इसका क्या मतलब हुआ।

स्टोरकीपर : इसका मतलब। इसका मतलब हुआ। शनी तुम्हारी बीवी को भगाकर ले जाएगा। और राहू .... अच्छा चला जाएगा।

सरदार : नहीं! नहीं! मेरी बीवी को कैसे ले जा सकता है। भई स्टोर कीपर साहब। कुछ उपाय करो।

स्टोरकीपर : उपाय। *(सोचकर)* शनी और राहू की शान्ति करानी पड़ेगी। करीब 11 रुपए खर्च करने पड़ेंगे। पास में हो तो लाओ। आज ही शुरु करवा देता हूँ। प्रमोशन की चिंता नहीं करो। राजीव भाई से मिलते ही हमलोग का सब कष्ट दूर।

सरदार : *(रुपये देते हुए)* भई जरा बढ़ियाँ से शान्ति कराना। मेरी बीवी मुझे बहुत प्यार करती है।

(मनोहर का प्रवेश)

मनो. : स्टोर कीपर साहब मैं आपको ढूँढ़ता फिर रहा हूँ और आप यहाँ बैठे गप्पे लड़ा रहे हैं। डियूटी के टाइम में तो अपनी जगह पर रहना चाहिए आपको।

स्टोरकीपर : कहिए। आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ।

मनो. : भई मेरी हेलमेट न जाने कहाँ खो गई है। मिल नहीं रही है। मुझे एक हेलमेट चाहिए।

स्टोरकीपर : कुछ नहीं है। स्टोर खाली है। न हेलमेट है न हैंड ग्लब्स हैं। न...

मनो. : कुछ नहीं है। कम से कम सेफ्टी के सामान तो स्टोर में हर वक्त उपलब्ध रहना चाहिए।

स्टोरकीपर : जाकर बड़े स्टोर से पूछिए। जब फोन करता हूँ तो आकर

ले जाइए आकर ले जाइए। यहाँ तो दम मारने की फुर्सत नहीं। अकेला आदमी। स्टोर का काम देखूँ कि बड़े स्टोर से सामान लाऊँ।

मनो. : वह तो देख ही रहा हूँ कि आपको दम मारने की फुर्सत नहीं है। देखिए। यह आपका कर्तव्य है। कम्पनी ने सारे साधन उपलब्ध करा रखे हैं। अगर आप उन्हें नहीं लायेंगे या आपको कोई दिक्कत है तो डिपार्टमेंट के बड़े अफसरों से अपनी दिक्कत जाहिर नहीं करेंगे तो कैसे होगा। मा. र्डननाइजेशन का काम है बड़ा से बड़ा अफसर छोटा से छोटा कर्मचारी। सभी लोग दिन रात एक कर रहे हैं। समय पर काम पूरा होगा तो सबों का भला होगा। कारखाने का उत्पादन अच्छे किस्म का होगा हम सबों की तरक्की होगी। आखिर सभी के सहयोग से यह कारखाना चलता है। यह देश चलता है। खासकर सुरक्षा के मामले में तो सबों का सहयोग उतना ही आवश्यक है जितना कि बच्चे के लिए माँ का दूध। बड़ा से बड़ा छोटा से छोटा हर तबका का आदमी इसमें समान रूप से भागीदार है। सुरक्षा का...

स्टोरकीपर : लगता है आप किसी सुरक्षा नाटक का डायलॉग बोल रहे हैं।

मनो. : समझ... समझ का फेर है। स्टोर कीपर साहब। वर्ना आप ऐसा नहीं कहते। जन्म से लेकर मृत्यु तक सुरक्षा कितनी अहमीयत रखता है। इसे समझतने का प्रयास कीजिए। चिड़िया अंडे देती है। बच्चा निकलता है। फिर घोंसले में अगर उसकी सुरक्षा न करे तो उस बच्चे की क्या स्थिति होगी। अपना देश इतना विशाल है। अगर इसकी सुरक्षा हमारे जवान न करें तो क्या होगा? हम फिर किसी के गुलाम हो जाएंगे? आप अपने ही घर में अपने बच्चे की सुरक्षा न करें तो आपका लड़का अवारा हो जाएगा। सिगरेट पीयेगा। शराब पीयेगा। सोचिए। सुरक्षा का कितना महत्व है। अगर कल को आपके किसी प्रियजन का कारखाने

में या कारखाने से बाहर स्कूटर से कार से एक्सीडेंट में मृत्यु हो जाए तो आप पर क्या बीतेगी। और यह सुरक्षा सबों के सहयोग से ही संभव है। सीमा पर के जवान को देशवासियों का सहयोग चाहिए। आपके बच्चे को आपका आपकी पत्नी का सहयोग चाहिए। कारखाने में मजदूरों को आप जैसे लोगों का बड़े साहबों से छोटे कर्मचारी तक सबों का सहयोग चाहिए।

स्टोरकीपर : मनोहर बाबू यह लेक्चर बाजी अपने पास ही रखिए। मुझे इन बातों को सुनने की फुर्सत नहीं है। अगर आपको शिकायत करनी हे तो शौक से कीजिए।

(प्रस्थान)

मनो. : ओफ हो। क्या हो गया है इन लोगों को। कोई सहयोग नहीं करना चाहता। लगता है इस देश की गाड़ी भगवान भरोस ही चलेगी।

(एक आदमी का प्रवेश)

आदमी : मनोहर बाबू बीम का प्रोडक्सन चालू होने वाला है इंजीनियर साहब आपको तुरंत बुला रहे हैं। *(पहला आदमी खाना खा रहा था)*

साहब आज आप बहुत उदास लग रहे हैं।

मनो. : नहीं भाई। कोई खास बात नहीं है।

आदमी : साहब आप मेरा हेलमेट ले लीजिए।

मनो. : नहीं भाई तुम तीनों काम पर जा रहे हो। मैं कोई दूसरा इंतजाम कर लेता हूँ।

(सरदार की तरफ देखकर) भई सरदार जी बड़ी मेहनत से पैस कमाते हो। और ऐसे अगर लोग मूर्ख बनाकर पैसे ठग ले जायें तो बीवी बच्चों को क्या लिखाओगे?

(प्रस्थान)

सरदार : *(पहले आदमी से)* क्या स्टोर कीपर हमको उल्लू बना रहा था।

आदमी : और नहीं तो क्या तुमको पीएच.डी. का डिग्री दे रहा था।

सरदार : वह तो कह रहा था राजीव गाँधी उसका दोस्त है? हूँ। स्टोर कीपर साहब। अब देखोगे सरदार का कमाल। अगर तेरी दोस्ती इंदिरा गाँधी से ना करा दी तो मेरा नाम सरदार हरचरण सिंह एंड संस नहीं।

(स्टेज पर अंधेरा। shadow में बीम का इरेक्शन दिखाया जाता है।)

आवाज : मनोहर बाबू जरा Allignment देखिएगा।

आदमी : जी सर।

(क्रेन चलने की आवाज, क्रेन का बीम टूट जाता है। *बीम नीचे गिर जाता है।)*

हल्ला : क्या हुआ। अरे बीम मनोहर बाबू के ऊपर गिरा है। एम्बूलेंस बुलाओ। First Aid phone करो। मनोहर बाबू ने आज हेलमेट नहीं पहनी थी। पहनी होती शायद बच जाते। बीम सीधे इनके सिर पर गिरा है।

(अंधेरा)

डॉक्टर : क्या हाल है मनोहर बाबू का?

डॉक्टर : He is dead, sorry.

(स्टेज पर पहले जैसा ड्राइंग रुम। राजू बैठा मैगज़िन पढ़ रहा है। टेप पर अंग्रेजी धुन जोर-जोर से बज रहा है।)

●

सुहागरात

(स्टेज पर दो माइक लगा हुआ है। पहला पुरुष परेशान सा टहल रहा है। दूसरे पुरुष का प्रवेश)

दूसरा पुरुष : अरे भाई! इधर अकेले अकेले क्या कर रहे हो? बहुत परेशान से मालूम पड़ते हो?

पहला पुरुष : अरे भाई क्या बताऊँ! कल डिपार्टमेंट के जे.डी.सी. का सिल्वर जुबली फंक्शन है। अपना वो कामथ साहब हैं ना वो फंक्शन में एक स्कीट देने को बोला। आज रिहर्सल करने को था। अभी तक हीरोइन नहीं आयी। ओह माइ गॉड अब क्या होगा। कामथ साहब तो हमको खा जायेगा।

दूसरा पुरुष : अरे शाला! इधर तो कुछ गण्डगोल लगता है।

पहला पुरुष : क्यूँ क्या हुआ?

दूसरा पुरुष : अबे तुम्हारा हीरोइन वो मिस टिन टिन को तो उधर बिस्टापुर में अपना ब्वॉयफ्रेंड के साथ गोलगप्पा खा रहा था।

पहला पुरुष : क्या! अब क्या होगा?

दूसरा पुरुष : होगा क्या! कामथ साहब तुमको फायर करेगा। तुम्हारा उस फायर में भष्म हो जायेगा। हा हा हा! एक बात होने सकता। बोलेगा। ऐसा करो तुम खुद ही डबल रोल करो, हीरो का भी हीरोइन का भी।

पहला पुरुष : यार! ये हमलोगों के प्रेसटीज का सवाल है। एक कलाकार के लिए शर्म की बात है। है ना। मेरी एक बात मानेगा?

दूसरा पुरुष : अबे क्या बात है। क्यूँ इतना माखन लगा रहा है। अच्छा बोल। बोल क्या बात है?

पहला पुरुष : यार! तुम हीरोइन बन जाओ।

दूसरा पुरुष : क्या हीरोइन बन जाऊँ। तुमको क्या मैं छोकड़ी माफिक लगता हूँ।

पहला पुरुष : प्लीज गुस्सा मत करो। रंगमंच रंगमंच होता है। यहाँ सफल कलाकार वही होता है जो वह करके दिखाये जो वह नहीं है। और तुम तो उदीयमान नक्षत्र हो इस मंच के। आज तुम इस शहर में जगमगा रहे हो। कल सारे देश में तुम्हारा नाम अमिताभ बच्चन, राजेश खन्ना की तरह चमचमायेगा।

दूसरा पुरुष : क्या तुम ठीक बोलते हो?

पहला पुरुष : एकदम ठीम मेरे दोस्त। अच्छा यह लो स्क्रिप्ट। इसमें से हीरोइन का डायलॉग बोलो। चलो शुरू हो जायें। ठीक।

दूसरा पुरुष : ठीक *(पहला स्टेज से बाहर चला जाता है। फिर प्रवेश करता है।)*

पहला : डार्लिंग। डार्लिंग! हाय माय स्वीट डार्लिंग।

दूसरा पुरुष : क्या डार्लिंग डार्लिंग करते हो?

पहला पुरुष : ओफ्फो। अरे मेरी जान। मैं तुम पर जान छिड़कता हूँ। और तुम हमेशा नाक भौं सिकोड़े रहती हो।

दूसरा पुरुष : आहा हा हाँ जान छिड़कता हूँ। खाक। मेरी एक भी बात तो मानते नहीं और कहाँ तो जान छिड़कता हूँ।

पहला पुरुष : डार्लिंग! बताओ तो तुम्हारी कौन सी बता हमने नहीं मानी है।

दूसरा पुरुष : कौन सी बात! अरे मैं कहती हूँ साड़ी ला दो, साया ला दो, ब्लाउज ला दो तो लाके देते हो सिर्फ ब्रेसि.....छी छी छी। कितना गन्दा डायलॉग है। मैं ऐसा डायलॉग नहीं बोलूँगा।

पहला पुरुष : बोलूँगा नहीं। बोलूँगी, बोलूँगी। अच्छा ऐसा करो तुम इसको रूमाल कर दो। ठीक। अच्छा फिर से बोलो।

दूसरा पुरुष : हूँ।.....। कौन सी बात। अरे मैं कहती हूँ साड़ी ला दो, साया ला दो, ब्लाउज ला दो और तुम लाके देते......सिर्फ रूमाल।

पहला पुरुष : हा हा हाँ माय स्वीट डार्लिंग। देखो यह हमारा तुम्हारा परिवार है। इसमें दोनों को मिलकर साथ-साथ सोचना

होगा और तुम्हारा होम जे.डी.सी. है। जैसे हमारा कंपनी में जे.डी.सी. होता है। मैनेजमेंट और एंप्लाई दोनों मिलकर सोचते हैं, करते हैं और कंपनी को दिन दूनी और रात अठन्नी प्रगति दिलाते हैं। इधर अपना होम जे.डी.सी. में हम मैनेजमेंट है और तुम एंप्लाई है।

दूसरा पुरुष : अरे तुम ये सब क्या बकते हो। हमको कुछ समझ में नहीं आता। मैं साड़ी साया की बात करती हूँ और तुम जेड सी जेड सी बक रहे हो। भाड़ में जाये तुम्हारा ये जेड सी।

पहला पुरुष : ओफ्फो! अरी भाग्यवान! तुम साड़ी, साया माँगती हो तो हम .... होने के नाते तुमको कम-से-कम ब्रेसि.... ओह सॉरी कम से कम रूमाल तो देता हूँ। पर दूसरे होम जे. डी.सी. में देखो। माँग के साथ ही हंगामा मच जाता है। महाभारत शुरू हो जाता है। मैनेजमेंट की आँखें लाल लाल हो जाती हैं।

दूसरा पुरुष : एजी एक बात पूछूँ?

पहला पुरुष : पूछो, पूछो। तुम हरेक बात को पूछ सकती। जेडीसी के सिद्धांत के मुताबिक तुम वही प्रश्न पूछ सकती हो जो हम यानी कि मैनेजमेंट चाहेगा।

दूसरा पुरुष : क्या?

पहला पुरुष : यस! देखो तुमको जो भी पूछना हो लिख के दो । वही दिस इज नॉट प्रोब्लम हियर। अच्छा तुम पहले मेरे कान में बोलो। फिर अगर मैं अप्रूव करूँगा तो तुम जोर-जोर से पूछ सकती हो।

दूसरा पुरुष : ठीक है! *(फिर कान में कुछ पूछता है)*

पहला पुरुष : नो, नो, नो! यह प्रश्न एकदम से हमारे होम जेडीसी के नियम के बाहर है।

दूसरा पुरुष : हूँ! मैं जो भी पूछती हूँ सब तुम्हार जेडीसी के बाहर है। अरे मैं पूछती हूँ कौन सी बात है जो तुम्हार जेडीसी के अंदर है।'

पहला पुरुष : ओफ्फो! नाराज क्यूँ होती हो? देखो तुमने पूछा कि हम

लोगों को कंपनी का बढ़िया वाला फ्लैट कब मिलेगा। है ना? तो सोचो फ्लैट देना कंपनी का काम है। जब कंपनी सोचेगी तब हमको फ्लैट देगी। अभी तो हम इधर ही फ्लैट होना चाहते हैं।

दूसरा पुरुष : तुम क्या हमको उल्लू समझता है? झूठमूठ बोलकर हमको ठगते हो। तुम्हारे बाद कैस बाबू नौकरी में आया उसको फ्लैट मिल गया। शर्मा जी तो अभी-अभी आया उसको भी फ्लैट मिल गया। और तुम 15 साल से इस छोटे से क्वार्टर में हो।

पहला पुरुष : अरे ये सब तुम नहीं समझोगी। बोस बाबू को फ्लैट कैसे मिला मैं नहीं जानता। पर, शर्मा जी तो जी ही हैं ना इसलिए उसे फ्लैट मिल गया।

दूसरा पुरुष : अरे शर्मा जी तो तुम्हारी तरह एंप्लाई हैं फिर ये सब क्या कोई भगवान होता है?

पहला पुरुष : होता है। होता है। भगवान माफिक ही होता है। तुम तो हमेशा हमको गाली देती रहती हो। उधर डिपार्टमेंट के जेडीसी मीटिंग में जब भी जाता हूँ बढ़ियाँ-बढ़ियाँ मिठाई खाने को मिलती है। और इधर होम जेडीसी में सिर्फ गालियाँ। जानती हो हमारा कंपनी में लोगों को जेडीसी से इतना प्यार है कि इसका नाम भी मिठाई के नाम पर रख दिया है। जलेबी डेस्टीनेशन सेंटर। अच्छा छोड़ो। आज मूड ऑफ मत करो। आज तो अपना सिल्वर जुबली सुहागरात है।

दूसरा पुरुष : मारो गोली सुहागरात है। मैं पूछती हूँ तुमको कंपनी का वहाँ वाला फ्लैट कब मिलेगा?

पहला पुरुष : रिटायरमेंट के बाद।

दूसरा पुरुष : क्या? रिटायरमेंट के बाद?

पहला पुरुष : *(स्क्रिप्ट देखते हुए)* ओह सॉरी रिटायरमेंट तक। देखो फिर इस सवाल को मत पूछना। यह हमारे होम जेडीसी में पावर के बाहर की चीज है। समझी।

दूसरा पुरुष : हूँ। अच्छा ये तो बताओ कि हमारा जेडीसी के .... में आता क्या है।

पहला पुरुष : वेरी गुड क्वेश्चन। इस प्रश्न से प्रसन्न होकर हम तुम्हें एक पप्पी इनाम में देते हैं।

दूसरा पुरुष : ओह सॉरी लोग देख रहे हैं।

पहला पुरुष : हूँ तो सुनो तुम पूछ सकती हो कि आज क्या खाना बनेगा तो मैं मैनेजमेंट होने के नाते कहूँगा ज्यादा खाना हेल्थ के लिए हॉर्मफुल है। इसलिए आज कुछ नहीं बनेगा। तुम पूछ सकती हो कपड़े घर की बजाय लॉन्ड्री में खुलवाये जाये तो मैं कहूँगा। क्या बकवास है। अपना काम खुद करना चाहिए। इससे तुम्हारी सेहत भी बढ़िया होगी। तुम पूछ सकती हो मेड, सर्वेंट।

दूसरा पुरुष : न्यू सर्वेंट एजी कब से कह रही हूँ कि एक मेड सर्वेंट रख लो। सिर्फ 80 रुपये महीने लगेंगे। मुझे कितना आराम हो जायेगा।

पहला पुरुष : छी छी छी। आराम। नेहरू जी ने कहा था आराम हराम है। मोरी साइन भी कहते हैं। इसकी साइन भी करते हैं। और सुनो यह 80 रुपये का एडीशनल लोड हमारी होम जेडीसी बर्दाश्त नहीं कर सकती। और सबसे बड़ी बात यह है कि मैं किसी भी कीमत पर घर में .... बढ़ाने की इजाजत नहीं दे सकता। पहले ही हमारी इस छोटी सी जेडीसी पर काफी बोझ है।

दूसरा पुरुष : क्या मसलन।

पहला पुरुष : देखो! 25 साल पहले मैं अकेला था। फिर तुम आ गयी। मतलब 100 प्रतिशत ज्यादा बोझ हमारी जेडीसी 25 साल से ढो रही है।

दूसरा पुरुष : क्या! मैं तुमको बोझ लगती हूँ। हे भगवान! मेरे तो करम फूटे। मैं आज ही मैके चली जाऊँगी।

पहला पुरुष : अरे में मैं तो बर्बाद हो जाउँगा। सिल्वर जुबली सुहागरात का क्या होगा। अच्छा बोलो। आज तुम जेडीसी से क्या

माँगती हो जो माँगोगी वही मिलेगा। अब तो खुश हो। बोलो शर्माती क्यूँ हो।

दूसरा पुरुष : ऐ जी। 25 साल हो गए हमारी शादी को। घर कितना सूना लगता। हमको एक बच्चा ला दो।

पहला पुरुष : मुन्ना... मुन्ना...। हो मुन्ना। अरे ये तो एक बड़ी समस्या है। हमारी होम जेडीसी के सामने जिसे 25 साल से मैं मैनेजमेंट और तुम एंप्लॉई दोनों इजी करते आ रहे हैं। पर डार्लिंग। जेडीसी का मतलब ही है गोल को पाने के लिए प्रयास करते रहना। चलो हम दोनों भी इसके लिए प्रयास करें।

दूसरा पुरुष : आखिर कब तक, प्रयास करना होगा जी।

पहला पुरुष : रिटायरमेंट तक।

दूसरा पुरुष : रिटायरमेंट तक। रिटायरमेंट तक। तंग आ गयी हूँ सुनते-सुनते। तुम्हारा सब काम रिटायरमेंट तक होगा। तो तुम शादी भी रिटायरमेंट के समय में करते।

पहला पुरुष : हाय! गुस्से में तो तुम और हसीन लगती हो। देखो। जेडीसी के सिद्धांत के मुताबिक या तो हमें प्रयास करते रहना होगा। हर मीटिंग में डिस्कश करना होगा। मिनट पर मिनट बनाने होंगे या फिर जैसा की हर जेडीसी में होता है प्रॉब्लम को ड्रॉप कर देना होगा। बोलो क्या तुम इस प्रॉब्लम को ड्रॉप कर देना पसंद करोगी?

दूसरा पुरुष : नहीं जी कैसी बात करते हो...?

पहला पुरुष : तो चलो आज हम सिल्वर जुबली सुहागरात के सुनहरे मौके से हम लोग और जोर से प्रयास करें। और अपने होम जेडीसी को प्रगति के पथ पर ले चलें। रेडी।

दूसरा पुरुष : *(सर हिलाकर समर्थन करता है।)*

पहला पुरुष : होम जेडीसी जिंदाबाद। सिल्वर जुब्ली सुहारागत जिंदाबाद।

दूसरा पुरुष : यहाँ से मुझे किधर ले जाते हो।

पहला पुरुष : अरे चलो ना डार्लिंग। शर्माओ मत।

(डान्सर गा रही है। ठुमकि चलत राम चंद्र...)

डायरेक्टर : ओफ्फो ऐसे नहीं, ऐसे करो।

डान्सर : ऊंह... मैं तो ऐसे ही डांस करूंगी... हं...

डायरेक्टर : अरे मैंने तुम्हें क्या सिखलाया था और तुम भूल गयी सब कुछ।

डान्सर : ऊंह...भूलेंगे क्यों...मगर मैं वैसा नहीं करूंगी। वैसे कही डान्स होता है?

डायरेक्टर : हे भगवान अरे राजा के दरबार का सीन है वहाँ ऐसा डान्स कैसे करोगी?

डान्सर : राजा का दरबार है तो क्या हुआ.... उस सिनेमा में आप नहीं देखे थे श्रीदेवी कैसे डान्स की थी?

डायरेक्टर : अरे यह श्री देवी का डान्स नहीं है हमने जैसा बतलाया था वैसा ही करो। अब नाटक शुरू होने वाला है और तुम उलटा-सीधा।

डान्सर : आप-आप मुझे डांटियेगा मम्मी-मम्मी देखिए तो ये मुझे कैसे डांट रहे हैं?

मम्मी : क्या हुआ बेटी? क्यों डाँट रहे हैं ओ डाइरेक्टर साहेब। मेरी फूल जैसी बेटी इतनी मेहनत से आपका ड्रामा कर रही है और...

डायरेक्टर : क्या? मेरा ड्रामाँ...।

मम्मी : और नहीं तो क्या। इसलिए आप डाँटिएगा?

डायरेक्टर : ऊफ! मैं डाँट कहाँ रहा हूँ। मैं तो प्यार से समझा रहा हूँ। बेटी....

डान्सर : ऊंह-ऊंह। समझा रहे हैं। मगर सुन लीजिए मैं श्रीदेवी जैसा ही डांस करूँगी। हाँ....

डायरेक्टर : हाँ-हाँ जैसा मन हो वैसा ही करो। मगर कुछ तो करो। फॉर गॉड सेक।

(मेकअप के पास से भिखमंगा का शोर। जरा मेरा भी मेकअप देख लीजिए ओ डाइरेक्टर साहेब।)

डायरेक्टर : वाह! वाह! बहुत सुंदर! मगर... मेकअप मैम इनका बाल ऐसा क्यों है?

मेक. : सर! ये भिखमंगा का रोल करेगा न जी।

डायरेक्टर : अँय। ओ हाँ। इनका तो भिखमंगा का रोल है। मगर जनाब ये राजकुमार काला ड्रेस क्यों पहले हुए हैं?

भिखमंगा : बाबू ने कहा है यही पहनने के लिए।

डायरेक्टर : डायरेक्टर मैं हूँ कि तुम्हारी बाबू? मैं ने फटा चिटा कपड़ा लाने को कहा था। उतारो, उतारो इसे।

भिखमंगा : क्यों साहेब? क्यों कहते हैं। क्या मेरा बेटा फटा चिटा कपड़ा पहनकर करेगा।

डायरेक्टर : नहीं नहीं! दरअसल ये भिखमंगा का रोल कर रहा है। उस हिसाब से ही ड्रेस पहनना पड़ेगा। इसलिए मैंने कहा इसे उतार कर फटा चिटा....

बाबू : फटा चिटा कभी नहीं पहनेगा। यही ड्रेस पहनकर वो करेगा नाटक। अजी ओ डाइरेक्टर जब यह भिखमंगा जैसा एक्टिंग करेगा तो पब्लिक नहीं समझेगा जो यह भिखमंगा है। करो तो बेटा कैसे करेगा एक्टिंग।

(भिखमंगा एक्टिंग करने लगता है।) गरीब-लाचार को दो पैसा दे दो भगवान भला करेगा राजा को रंग और रंक को राजा करेगा।

बाबू : देखिये तो डायरेक्टर साहेब... कितना सुंदर भिखमंगा लगता है।

डायरेक्टर : हाँ.... हाँ.... बहुत सुंदर... बहुत सुंदर।

(उधर मंत्री जी चश्मा पहनकर गिरते हैं और रोते हैं।)

डायरेक्टर : ओफ्फ... अब इसे क्या हो गया? अरे तुम्हें क्या हो गया, क्यूँ मम्मी-मम्मी किए जा रहे हो?

मंत्री : डायरेक्टर साहेब मुझे तो चश्मा पहनकर कुछ दिखलाई नहीं पड़ता।

डायरेक्टर : *(स्वतः)* अच्छा ही है। कम से कम अंधा का रोल तो ठीक से कर सकते हो।

मम्मी : क्या कहा, मेरा बेटा अंधा है....अंधा का रोल करेगा, अरे उसे तो आपने मंत्री का रोल दिया था।

डायरेक्टर : मंत्री...अरे हाँ... मंगर ये चश्मा लाने किसने कहा था *(चश्मा लेता है)*

मंत्री : आप ही ने तो कहा था कि मंत्री के रोल में चश्मा चलेगा।

डायरेक्टर : अरे मैंने तो बिना पावर का चश्मा लाने को कहा था...और इसमें तो सिर्फ पावर ही पावर है। किससे माँग लाये हो?

मंत्री : हे...हे...हे... मेरे बाबा का है। ग्रांड फादर का।

डायरेक्टर : ओ माय गॉड...अरे ये बाबा और परबाबा का चश्मा लग. ाओगे तो और क्या होगा। हटाओ हटाओ इस चश्मा को तुम लोगों से मैं तंग आ गया हूँ।

मम्मी : ओ जी डायरेक्टर साहेब आप अपने को क्या बूझते हैं.... डायरेक्टर न हो गए जो....मेरा बेटा मंत्री का रोल कर रहा है इसका माने आप उसे जो मन होगा सो कहिएगा...नहीं करेगा... नहीं करेगा ड्रामा...ड्रामा के बिना भूखा नहीं मरा जा रहा है....

डायरेक्टर : हे भगवान.... मैं कहाँ फँस गया। बहन जी इतना गुस्सा ठीक नहीं, अब नाटक शुरू होने में मात्र आधा घंटा रह गया है। जैसी इच्छा हो करने दीजिए। बाबा वाबा या परबाबा वाला, जो चश्मा पहन कर इच्छा हो करने दीजिए... अब मैं कर ही क्या सकता हूँ?

मम्मी : ठीक है... यही पहन कर जाना बेटा, करो तो अपना रिहर्सल।

मंत्री : ठीक है मम्मी... *(चलता है, गिरता है)*

डायरेक्टर : *(आगे बढ़ता है, रानी को देखकर)*...अरे! यह मुकुट...? ओह.... आपको तो रानी का पार्ट करना है न?

रानी : जी...

डायरेक्टर : हे मेरे ईश्वर, मैं बर्बाद हो गया... मैं बर्बाद हो गया। रानी का रोल और ऐसी साड़ी... हे भगवान... अरे मैंने तो खूब बढ़िया साड़ी लाने को कहा था...देखो तो इस साड़ी में तुम रानी लगती हो या नौकरानी...?

रानी : तो हम क्या करें... मम्मी ने कहा है कि नाटक-फाटक के

लिए वे बढ़िया साड़ी नहीं दे सकती... अगर यही है तो डायरेक्टर साहेब से कहना खरीद कर ला देंगे।

डायरेक्टर : खरीद कर...हम लायें... ठीक है, ठीक है जो मन हो करो तुम लोग... आज तो मेरा नाक कटा ही हुआ है।

भिखमंगा : हे... हे... हे... हे... हम लोग नाटक करेंगे और डायरेक्टर साहेब का नाक कट...

डायरेक्टर : चोप हला पुरुषः गधा कहीं का

सिपाही : गदा, यहाँ है गदा सर

डायरेक्टर : गदा...। ये गदा... गदा क्या होगा? मैंने तुमको लकड़ी का तलवार लाने को कहा था।

सिपाही : हाँ... हाँ... हाँ... सर, अब क्या तलवार का जमाना है... अब तो गदा का जमाना है देखे नहीं सर, रामायण में हनुमान जी ने कैसे गदा से मार मार कर सबका भुट्टम-भुस्स कर दिया।

डायरेक्टर : राजा का सिपाही और गदा...वाह रे डायरेक्टर, आज तुम्हारी डायरेक्टरी कमाल कर देगा.... वाह, खैर.... ये राजा कहाँ है?

सिपाही : राजा... कौन राजा सर?

डायरेक्टर : अरे वही रमेश जो राजा का रोल करेगा

रानी : वह तो बाथरूम गया है

डायरेक्टर : बाथरूम... वह यहाँ नाटक करने आया है या बाथरूम जाने?

मंत्री : अब तो वह चार बार बाथरूम जा चुका है।

डायरेक्टर : चार बार!

भिखमंगा : और नहीं तो क्या, जाता है, आता है। वो देखिये आ रहे हैं। राजा साहेब...

डायरेक्टर : आप यहाँ नाटक करने आये हैं कि बाथरूम।

रानी : बाथरूम।

डायरेक्टर : क्या?

रानी : मेरा पेट खराब हो गया है।

डायरेक्टर : ओह माय गॉड, अब मैं क्या करूँ...अरे पेट खराब था तो कोई दवा खाकर आना था।

रानी : घर में थोड़े खटाव हुआ था? यहाँ आकर जैसे ही अपना रोल याद करने लगता हूँ कि लेटरिंग लग जाता है। मुझे तो बहुत डर लग रहा है।

डायरेक्टर : नहीं-नहीं... डरने की कोई बात नहीं सब ठीक हो जायेग. ा। भय को अपने मन से निकाल दो अब सब इधर आ जाओ... हाँ तो सबको अपना-अपना पाठ याद है ना

सारे : हैं, याद है

डॉ. : ठीक है अब हम लोग एक बार बढ़िया से रिहर्सल करेंगे। अभी आधा घंटा समय है ठीक है...। *(कर्मी उसी ठीक कर सब को जगह बना देता है)*

डायरेक्टर : सिट

सिपाही : होशियार खबरदार महाराज पधार रहे हैं।

राजा : *(प्रवेश)* मेरा मुकुट कहाँ है?

डायरेक्टर : ओफ्फो... मुकुट बाद में खोजना... पहले रिहर्सल करो। बाद में मेकअप...और तौलिये पर से हाथ हटाओ।

राजा : नहीं...नहीं.... हटायेंगे...अगर तौलिया गिर पड़ा

डायरेक्टर : ओफ्फो... ठीक है, ठीक है.... जाओ फिर से आओ

सिपाही : होशियार...

(राजा, बैठता है फिर रानी)

राजा : रानी आज आप बहुत सुंदर लग रही हैं।

रानी : महाराज आप भी बहुत स्मार्ट लग रहे हैं।

डायरेक्टर : राजा, चुप क्यों हो गए?...तुझे ही बोलना था न।

राजा : मुझे....हें....हें....

डायरेक्टर : तो बोलो ना... चुप क्यों हो गए?

राजा : *(याद करते हुए)* ...बाथरूम...बाथरूम

डायरेक्टर : चुप्प... बोलो अपना पाठ।

राजा : हें...हें... राजा नर्तकी... रानी को नृत्य करने का आदेश दो।

डायरेक्टर : क्या...? ओह माइ गॉड... अब मैं क्या करूँ अरे तुम्हारा क्या डायलॉग है यार तुम क्या बोल रहे हो।

राजा : हम फिर से बोलते हैं... रानी... राज नर्तकी को...बाथरूम।

डायरेक्टर : ओफ, मैं बर्बाद हो गया... मैं बर्बाद हो गया। ठीक है, ठीक है, रानी तुम अपना पाठ बोलो।

रानी : राज नर्तकी नृत्य आरंभ करो... जैसे ही नृत्य आरंभ होता है। भिखमंगा का प्रवेश।

भिखमंगा : शरीक...
राजा...

मंत्री : ये... ये... भिखमंगा दरबार में कहाँ से आ गया... मैं पूछता हूँ भिखमंगा दरबार में कहाँ से आ गया।
(एक तरफ से सब कहाँ से आ गया-2)

मंत्री : भिखमंगा, तुम कहाँ से आ गए

भिख. : सरकार, कलकत्ता से।

रानी : क्या...कलकत्ता से... महाराज यह भिखमंगा मेरे नैहर से याने कि आपके ससुराल से आया है।

महाराज : हें सो तो ठीक... भिखमंगा जी क्या तुम मेरे ससुराल के हो?

मंत्री : महाराज... यह ससुराल और नैहर करने का स्थान नहीं है... यह आपका दरबार है...भिखमंगा तुम कलकत्ता से यहाँ तक कैसे आये।

भिखमंगा : टिरेन से सरकार... टिरेन से।

मंत्री : ओह, टिकट कटाने का पैसा कहाँ से आया।

भिखमंगा : ऊंह... टिकस काहे लेंगे सरकार... हम तो विदाउट टिकस आये हैं।

राजा : विदाउट टिकट...? तुमको मजिस्ट्रेट चेकिंग नहीं हुआ।

भिखमंगा : हुआ की सरकार... खूब हुआ। मजिस्ट्रेट पूछा तउ हम कह दिया हम महाराज का भिखमंगा है।

मंत्री : क्या... महाराज का भिखमंगा... महाराज इस भिखमंगा ने आपका नाम बेचकर घोर जुलुम किया है...इसे कठोर से

कठोर सजा मिलनी चाहिए।

राजा : है... यह तो घोर जुलुम है।

रानी : क्या घोर जुलुम महाराज, यह भिखमंगा मेरे नैहर का है... अगर आपका नाम कह ही दिया तो क्या हो गया? मगर है भिखमंगा जी... तुमको अगर कहना ही था तो कहते कि मैं महाराज का शाला हूँ...

भिखमंगा : आगे से ऐसा ही कहेंगे सरकार...

मंत्री : क्या... तुम अपने को महाराज का शाला कहोगे...

भिखमंगा : ओह! ऐसे थोड़े कहेंगे कहेंगे...गरीब...इस महाराज के शाले को दो पैसा दे दो।

मंत्री : घोर जुलुम... घोर जुलुम महाराज। इस भिखमंगा को सजा अवश्य मिलनी चाहिए।

राजा : ठीक है...भिखमंगा...तुमको सजा दी जानी है कि तुम छह महीने तक भीख नहीं माँग सकते हो... तब तक...बाथरूम।

डायरेक्टर : चोप, फिर बाथरूम।

राजा : नहीं-नहीं... तब तक तुमको राजा भवन से भोजन एवं वस्त्र मिलता रहेगा।

भिखमंगा : ऐसा जुलुम मत कीजिए सरकार...अगर मैं भीख नहीं माँगूँगा तो खाउँगा कहाँ से...पेट कैसे चलेगा।

रानी : हें महाराज...अगर यह भीख नहीं माँगेगा तो खायेगा कहाँ से?

महा. : हैं सो तो ठीक है, मंत्री जी यह खायेगा कहाँ से...?
(सब एक साथ से खायेगा कहाँ से, खायेगा कहाँ से?)
(व्यक्ति का जलपान लिए प्रवेश)

व्यक्ति : लीजिए ओ डायरेक्टर साहेब, कलाकार लोगों का नाश्ता...

डायरेक्टर : ठीक है उधर टेबल पर रख दीजिए *(सब पढ़ते हैं)*
अभी नहीं... अभी नहीं। पहले रिहर्सल फिर नाश्ता... चलो-चलो सब... हैं तो हम लोग कहाँ थे... है भिखमंगा को बोलना था...बोलो भिखमंगा...

भिखमंगा : बाबू...बाबू... भूख लगी है...

बाबू : जा बेटा जा लेके खाले।

डायरेक्टर : भाई साहेब ये क्या कर रहे हो?

बाबू : अजी डायरेक्टर साहेब, बेटे बच्चे को भूख लगी है तो खायेगा नहीं... भूखे पेट आपका नाटक कैसे करेगा *(फिर अपने निकालकर देता है)*

बाबू : बेटा खा... भर पेट खा ले... बहुत एक्टिंग करना है।

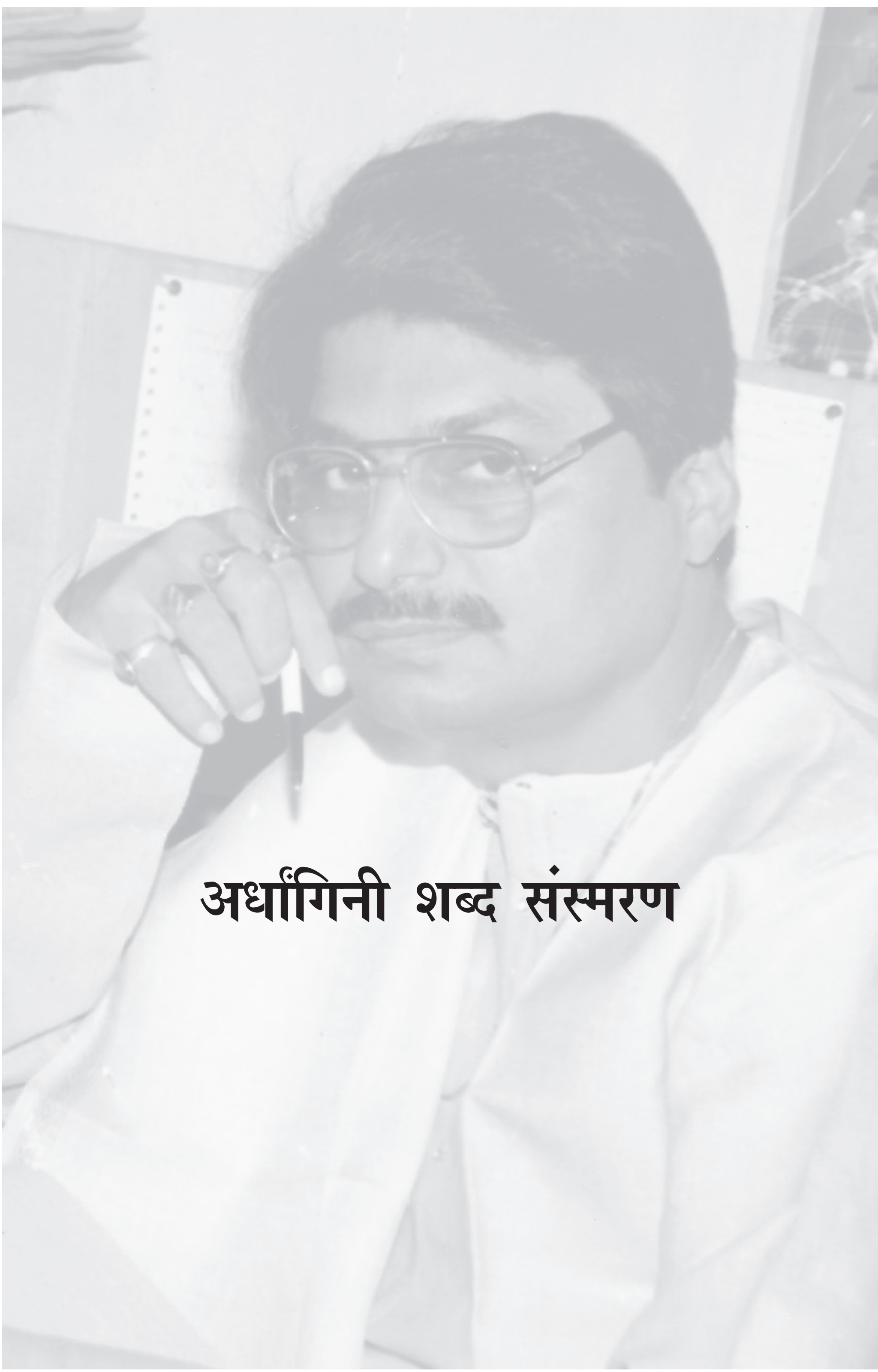
डायरेक्टर : हे भगवान, अब मैं आत्महत्या कर लूंगा, जाओ, जाओ तुम लोग भी जाओ।

(सब छोड़ता है। राजा को डायरेक्टर पकड़ लेता है)

डायरेक्टर : तुम कहाँ? तब से बाथयम, बाथरूम और अब।

राजा : मुझे भूख लगी है...

●



अर्धांगिनी शब्द संस्मरण

साली को एक पत्र

एक बार मेरे भाई बहनों ने हमें होली में आने का निमंत्रण दिया और मजाक में मेरी बहन बिन्नी और भाई पप्पू ने उस निमंत्रण पत्र में कुछ सामनों का लिस्ट देकर लिख दिया, आते समय यह सामान लेते आइएगा। उस मिमंत्रण पत्र का जवाब मेरे पति ''श्री लल्लन प्रसाद ठाकुर'' ने कविता द्वारा दी :

अर भाई मैं तो धन्य हुआ
पर, ये सामान की लंबी लिस्ट
कपड़े, तकिया, मछरदानी
सूजी, मैदा, आटा और साथ में चीनी
सोच सोच कर सन्न हुआ।
ससुर बुलाएँ हम ना आएँ
सास खिलाएँ हम ना खाएँ
साली जी होली में बुलाएँ
कहो भला, ऐसी होली हम न मनाएँ?
प्रिय,
हम किसी कोने में स्थान ग्रहण कर लेंगें।
जरूरी नहीं कि आप हमें सजा सजाया सेज दें
पर, सामान की लंबी लिस्ट के लिए
पैसे तो कृपया भेज दें।
पैसे भेज दें, तार या मनिऑर्डर से,
अरे साली जी, इतना तो हम वापस कर ही देंगे,
सिर्फ आपके एक किस से...।

•

श्री लल्लन प्रसाद ठाकुर एक बहु आयामी व्यक्तित्व की पुन्य तिथि पर उनके ही लिखे गीत से भाव भीनी श्रद्धांजलि

गीत

सब सपना बन के मिले, कोई अपना बन के मिले।

सुख जब साथी होता है,
लाख सहारे मिलते हैं,
फूलों की फुलवारी में,
फूल हमेशा खिलते हैं,
विरानों के आँगन में,
बरसों में एक फूल खिले।

सब सपना बनके मिले, कोई अपना बन के मिले।
सुख की उजली राहों पर,
हर राही चल सकता है,
घर की चारदीवारी में,
हर दीपक जल सकता है,
गम की तेज हवाओं में,
कोई कोई दीप जले।

सब सपना बन के मिले, कोई अपना बन के मिले।
आबादी में चैन कहाँ,
ऐ दिल चल तनहाई में,
शायद मोती हासिल हो,
सागर की गहराई में,
अपना कोई मीत नहीं,
धरती पर आकाश तले।

सब सपना बन के मिले, कोई अपना बन के मिले।

05 फरवरी, जन्मदिन पर
चाहत तुम्हारी फिर से

चाहत तुम्हारी फिर से, मुझको सजा दिया
सोई हुई थी आशा, उसको जगा दिया

कहने को जब नहीं थे, सोहबत नसीब थी
खोजा जहाँ मैं दिल से, चेहरा दिखा गया

ढूँढ़े जिसे निगाहें, उजड़ा वही चमन था
देखा गुलाब सूखा, लगता चिढ़ा दिया

चाहत किसे कहेंगे, तब तक समझ नहीं थी
जब चाहने लगे तो, उसने रुला दिया

नव कोपलों के संग में, कलियाँ खिले कुसुम की
खुशबू, पराग सब कुछ, तुम पर लुटा दिया

कुसुम ठाकुर

●



परिशिष्ट

स्मृतिमे ...

प्रेमलता मित्र 'प्रेम'

दिल्लीसँ प्रकाशक (प्रकाश झा; मैलोरंग) फोन आयल। नाटककार, कुशल अभिनेता एवं निर्देशक स्व. लल्लन प्रसाद ठाकुर समग्र प्रकाशित होमय जा रहल अछि। श्रीमती कुसुम ठाकुरजीक इच्छा छन्हि, जे ओकर विमोचन 13 जुलाई क' हेबाक चाही।

हम गाममे छलहुँ। समय बहुत कम अछि। सोचमे पड़ि गेलहुँ। रंगमंचक अग्रदूत लल्लन प्रसाद ठाकुर संग बीतल एक - एक क्षण अकस्मात मोनमे औनाय लागल। नाट्य संस्था 'अरिपन' द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय मैथिली नाट्य समारोहक अंतरगत विभिन्न शहरसँ, गाम - गाम सँ' कलाकार सभ अपन नाट्य दलक संग पटना पहुँचौत छलाह। एक दोसरा सँ कलाकार सभ कैं भेंट घाँट, हुनक परिचय, नाट्य प्रदर्शन देखबाक अवसर भेटैत छलैक।

ओही प्रदर्शनक माध्यमे हमरा लोकनिकैं भेटलाह एकटा प्रतिमा सम्पन्न, नाट्य निर्देशक, नाट्य लेखन, नाट्य कलाकार, गीतकार, गायक आदि सब गुण सम्पन्न जमशेदपुर लौहनगरी सँ आयल एकटा कलाकार लल्लन प्रसाद ठाकुर।

सभस' फराक व्यक्तित्व, बात - बातमे ठहका, अति मिलनसार, जहिना मंचपर तहिना जीवनमे सदिखन हँसैत हँसबैत देखलहुँ। हुनके आमंत्रणपर जमशेदपुर पहुँचल छलहुँ भरिसक दू बेर।

एहि लौह नगरीमे एहन सरस कलाकार, छगुंता लगैत छल। एहि क्रममे हुनक आवासपर सेहो गेलहुँ। रंगमंचक माध्यमे एकटा परिवारिक संबंध भ' गेल श्रीमती कुसुम ठाकुर जी सँ।

हुनक नाटक 'बड़का साहेब'मे अभिनय करबाक अवसर भेटल से एकटा संयोगे। एकरो एकटा नीक अंतरकथा अछि मुदा से छोड़ू ई सभ...।

हिंदीक प्रख्यात फिल्म निर्देशक प्रकाश झा पंचायती राज पर एकटा टेलीफिल्म बनबैत छलाह। ओ समय छल जखन राजीव गाँधी देशक प्रधानमंत्री छलाह। हुनके योजना छल पंचायती राज। फिल्मक नाम छल - कथा माधोपुर की।

इएह जेठ मासक गर्मी। अंग्रेजीक जून मास। माधोपुर गाम स' किछु दूर पर हुनक आवास। ओहीठाम कलाकार सभक ठहरबाक व्यवस्था छल। बेतिया शहर स' किछु पहिने छल ई स्थान जेनाकि हमरा मोन पड़ैत अछि। ओ अपन माता - पिता तथा सम्पूर्ण परिवारक संग ओतय ठहरल छलाह। ओहि ठाम पटनाक किछु कलाकारक संग हमरो आमंत्रण भेटल छल। पटनास' बेसी हिन्दी, नाटकक कलाकार छलाह। जमशेदपुरस' पहुँचल छलाह मिस्टर नीलो काका अर्थात् लल्लन प्रसाद ठाकुर। हुनका देखि अति प्रसन्नता भेल। हुनको प्रसन्नता भेलन्हि। ओहिठाम बैसि हम सब मैथिलीक सम्बंध मे योजना बनब' लागल रही।

भोरे जलपान बाद ओ माधोपुर गामक ढेपचेप बला खेत, कलम - गाछीके शूटिंग, फेर भोजन, किछु समय आराम आ फेर दृश्यक रिहर्सल। प्रकाश झा जीक कड़ा अनुशासनक बीच एक सप्ताह बीतल। ओहि बीच हमरा लोकनि किछु समय मैथिली फिल्म आ मैथिली सिरियलके सम्बंधमे विचार करैत छलहुँ। ओहि चिंतनमे प्रकाश झा जीक माता - पिता सेहो हमरा लोकनिक संग रहैत छलाह। हुनक माता - पिता सम्पूर्ण मैथिल गुणस' परिपूर्ण। जिनका सुच्चा मैथिल कहि सकैत छी, स्नेही।

लल्लनजी सदिखन प्रकाशजीक संग फिल्म दृश्यपर विचार विमर्श करैत रहैत छलाह। हम गद - गद छलहुँ, जे एहि अनुभवक लाभ मैथिली भाषामे लल्लनजी जे कोनो काज करताह ताहि स' मैथिली कैं लाभ भेटतैक। प्रकाश जी सँ हुनका नीक मित्रता भ' गेल छलन्हि। हम सभ पटना अयलहुँ आ हुनका लोकनिकैं अगिला प्रक्रिया लेल फिल्म नगरी जयबाक छलन्हि।

ई आखरी पड़ाव छल हमर स्व. लल्लन प्रसाद ठाकुर जीक संग। किछु दिनक बाद सुनलहुँ अस्वस्थ छथि फेर... सुनलहुँ मैना उड़ि गेल... अपन निवास दिस...।

एतेक मर्माहत भेलहुँ, जे हुनका सम्बंध मे जँ केयो चर्चा करथि त' हम कान मुनि लैत छलहुँ। बहुत दिनक उपरांत कोनो कार्यक्रममे कुसुमजीसँ अकस्मात भेंट भेल। किछु नहि पुछबाक मोन भेल। मात्र हुनका दिस टुकटुक तकैत रहलहुँ। फेर एम्हर आबि फोनपर एकआध बेर गप्प भेल।

हमर शुभकामना आ आशीर्वाद अछि कुसुम जी कैं। जे हेरा गेल से किन्नहु नहि भेटत, जे अछि ताहि सम्पूर्ण परिवारक संग सानंद रहू।

बहुमुखी प्रतिभाक धनी...

बाल मुकुन्द चौधरी

1970 केर उत्तरार्द्ध केर गप यिक, जहिया लल्लन जी आ हम टाटा स्टील, जमशेदपुर मे कार्यरत छलहुँ। ओही समय मे हमरा दूनू गोटे के परिचय भेल द्य किछुए समय पश्चात हमरा लोकनिक परिचय प्रगाढ़ मैत्री मे बदलि गेल, जे अन्त धरि रहल। ओकर मुख्य कारण छल ठाकुर जीक कलात्मक प्रतिभा, जे हमरा हुनका लग आकर्षित करैत रहल। प्रत्येक वर्ष हुनकर नाट्य मंचन टीम (सुरक्षा केर विषयपर) कम्पनी मे पुरस्कार लैत अबैत छलैन्हि। ओकर प्रमुख आ प्रथम कारण, हमरा बुझने छल हुनकर उच्च स्तरीय नाटकक लेखन तत्पश्चात छल ओकर कुशल निर्देशन, सशक्त अभिनय, प्रदर्शन आ अन्यान्य विषय-वस्तु जे कोनों आन टीम म देखबा मे नहि अबैत छल। हम बहुतो नाटक देखैत छलहुँ मुदा तुलना मे आन नाटक कहनो नहि लगैत छल। ओही काल खण्ड म हमरा जमशेदपुरक पुरान आ प्रतिष्ठित मैथिली संस्था "मिथिला सांस्कृतिक परिषद" केर महासचिव पदपर सेवा करबाक अवसर लगातार तीन वर्ष धरि प्राप्त रहल छल, जाहि बीच ठाकुर जी के सेहो परिषद मे सम्मान पूर्वक हमरा आनबाक सौभाग्य प्राप्त अछि।

ओकर पश्चात मैथिलीक बहुत प्रतिष्ठित नाट्य संस्था "अरिपन" एकटा "अंतर्राष्ट्रीय मैथिली नाट्य प्रतिस्पर्धाक" आयोजन पटना मे कएलक, जतय सँ मिथिला सांस्कृतिक परिषद, जमशेदपुर के निमंत्रण भेटलैक ओहि मे भाग लेबाक लेल। ओहि प्रथम समारोह मे ठाकुर जीक प्रबल इच्छा आ विश्वास सँ हमरा लोकनिक टीम "मिथिलाक्षर" केर बैनर मे, जाहि मे अपन आ अपन मित्र गणक परिवारक सदस्य सूब छलाह/छलीह, भाग लै जाइत गेलहुँ आ बहुत रास पुरस्कार प्राप्त भेल जाहि म प्रथम पुरस्कारक संख्या बेसी छल। हमरा लोकनिक प्रसन्नताक के वर्णन नहि हो, ततेक प्रसन्नता भेल। हमरा सब गोटे के ठाकुर जी कलाकार बना देने छलाह। आ ई क्रम आगूओ चलैत, बढैत

एवं फलैत-फूलैत रहल। संस्था “अरिपन” समारोहक आयोजन करैत रहल आ हमरा लोकनि कैं पुरस्कार भेटैत रहल। जमशेदपुर मे हमरा लोकनिक नाट्य संस्था “मिथिलाक्षर” प्रथम पंक्ति मे बहुत शीघ्र आबि गेल। ओना एतय केर नामी-गिरामी नाट्य संस्था सब हिन्दी, बांग्ला, ओड़िया एवं मराठी मे छल, जकर अस्तित्व आ प्रतिष्ठा प्रायः एखनो छैक। मुदा टिकट पर नाट्य समारोह करितहुँ रवींद्र भवन सन पैघ प्रेक्षागृह मात्र “मिथिलाक्षरक” कार्यक्रम (नाट्य एवं संगीत) मे भरैत छल। ई सब बाबा बैद्यनाथक कृपा आ ठाकुर जीक अद्भुत प्रतिभाक कारण होइत रहल।

रंग विधा केर त’ ओ शीर्ष पर छलाहे, जे हुनका मे दोसरो-दोसरो विधाक पूर्ण ज्ञान निहित छलैन्हि। ओ बहुत रास गीतक रचना केर संग ओकर धुन, संगीत केर रचना सेहो कयने छथि, जे अद्भुत अछि। नाटक मे पार्श्व संगीत पर जेना हुनका महारथ प्राप्त रहन्हि। नाटकक संवादक अनुसार ओकरा संगक संगीत केहन हयतैक से ओ स्वयं निर्णय लैत छलाह। स्वयं ओ नीक गायक सेहो छलाह। कतेको रास छोट-छोट हास्य नाटिका केर रचना, निर्देशन, अभिनय आ मंचन सेहो कएने छथि। हास्य हुनकर लेखन शैलीक प्रबल पक्ष रहलैन्हि।

नाट्य लेखन म एक-आधटा विशेष बात, जे हमर ध्यान आकर्षित कएलक आ ओ समाज के देलथीन्ह से आई धरि क्यो नहि देने छथि। तकर कारणो विशेष छैक। नाट्य लेखक ठाकुर जी एकटा बहुत नीक नाट्य-निर्देशक रहबाक संग-संग अभियन्ता सेहो छलाह। एहि प्रकारक संयोजन कोनो व्यक्ति मे साधारणतया नहि पाओल जाइत छैक। एकर लाभ ई भेटल जे हिनकर नाटकक पुस्तक मे दू टा वस्तु विशिष्ट भेटत। एकटा प्रत्येक सीन मे आवश्यक वस्तुक सूची आ दोसर - मंच पर कलाकारक निर्दिष्ट स्थान। एहि सँ मंचक प्रकाश व्यवस्था मे बहुत सुभीता होइत छैक।

हुनका मे निहित प्रतिभाक कतेक वर्णन करू। हुनकर प्रशासनिक क्षमता, उचित निर्णय लेबाक क्षमता एतेक नीक छलैन्हि जकर सम्मान पूरा टीम आ ओकर परिवारक सदस्यगण करैत छलथीन्ह। समय केर पाबंदी, जकर अभाव मैथिल मे रहिते छैक एवं अनुशासन ओ सब के सिखा देलथीन्ह।

“मिथिलक्षरक” ओ काल खण्ड स्वर्णिम रहलैक जाहिया धरि ठाकुर जी रहलाह। कतेको कार्यक्रम केर आयोजन भेल, सब एक से बढ़ि के एक, जाहि पर होमयवला व्यय केर पूर्ण व्यवस्था कयनिहार ओ स्वयं छलाह।

आमोद-विनोद के सृजनहार, सहृदयी, नीक-निकुत भोज्य पदार्थक प्रेमी, स्वाभिमानी व्यक्तिव रहलैन्हि हुनकर। ओ स्वयं मे एकटा संस्थान छलाह।

ठाकुर जीक सानिध्य मे बीतल हमर समय हमर स्वर्णिम धरोहर अछि। हुनकर एक-एकटा बात, हुनकर ठहाका, हुनकर छवि हमरा मानस पटलपर अमिट छाप जेकाँ अछि।

हमर ई भाग्य अछि जे हुनका सन व्यक्तिक पुस्तक मे हमरो ई नान्हि टा आलेख रहत।

●

समकालीन बोधक दस्तावेज

अशोक अविचल

साहित्यक सभ विधामे नाट्य विधा अपन विशिष्ट सम्प्रेषणीयताक कारणे लोक आ विशिष्ट समालोचकीय दृष्टिक केन्द्रमे रहल अछि। दृश्य काव्यक माध्यमे लोकक मनोरंजन आ समाजक नीक बेजायक लेखा-जोखा प्रभावी रुपेण होइत रहल अछि। इहो तथ्य उल्लेखनीय जे साहित्यक ई एहेन विधा थिक, जे जकरा लक्षित क' लिखल जाइत अछि, तकरा धरि पहुँचैत अछि। ओहि समाजसँ प्रत्यक्ष संवाद करैत अछि। आंगिक आ वाचिक क्षमताक उपयोग लाक्षणिक आ व्यंजनात्मक संवादक ओझरायल सूत्रकेँ सोझरयबा हेतु करैत अछि। एहि विधाक दूटा महत्वपूर्ण पक्ष अछि। लेखन आ प्रस्तुति। लल्लन ठाकुर अपन नाटकक लेखन क्रममे एहि दूनूमे महारथ प्राप्त छलनि। हुनक नाटक सभ समकालीन बोधक दस्तावेज अछि।

समकालीन परिस्थितिक अनुरूप समस्यामूलक यथार्थवादी कथानक जो हिनक सम्यक दृष्टिक परिचायक अछि त' पात्रोचित वेधक संवाद हिनक अभिनयबोधक। जतबहि फरीछ हिनक समकालीन परिस्थितिक प्रति दृष्टिकोण अछि ततबहि फरीछ अछि प्रस्तुतिकरणक शैली।

हिनक सभ नाटक अपन समयक समाज आ बदलैत परिवेशक कथा कहैत आगू बढैत अछि। चर्चित नाटक 'मिस्टर नीलो काका' लोकतंत्र, जन प्रतिनिधि आ आमजनक अपेक्षापर बेधक व्यंग्य करैत अछि। तहिना 'बड़का साहेब' नाटक शहरक स्वार्थ आ गामक निश्च्छलता मध्य नव पीढीक महत्वाकांक्षा तर कुहरैत परम्परा ओ संस्कृतिक यथार्थवादी अभिव्यक्ति अछि।

'लौंगिया मिरचाइ' हो कि 'बकलेल' सभहक गसल कथानक, सुनियोजित संवाद योजना, सहज भाषा, स्पष्ट दृष्टिकोण दर्शककेँ सहजहि बान्हि राखक क्षमता रखैत अछि।

नाटकमे प्रयोगधर्मिता हिनक वैशिष्ट्य त' अछिये मैथिली नाटकमे व्यंजनात्मक आ तीक्ष्ण शैलीक मुखर समावेश आरो विशिष्ट योगदान अछि।

नाटककार आ रंगकर्मी हेबाक संग ओ कुशल आ भविष्यकेँ अकानक क्षमता रखनिहार निर्देशक सेहो छलाह। हिनक व्यंजनात्मक अभिव्यक्तिक सामर्थ्यक द्विगदर्शन हिनक लिखल चम्पू शैलीक प्रहसन सभमे बेस मुखर अछि।

हुनक हृदयक धरकन नाटक छलनि, अभिनयक नैसर्गिक क्षमता आ निर्देशनक स्पष्ट दृष्टि छलनि तषू अन्तरूस्तलमे एकटा वा भावुक कविक वास सेहो छलनि।

जमशेदपुरक साहित्यिक आ सांस्कृतिक जीवनक त' ओ प्राण छलाह। कहियो देशभरिक मैथिली रंगमंचपर अपन उत्कृष्ट प्रदर्शनक धाख रखनिहार 'मिथिलाक्षर' शनै शनै परिदृश्यसँ ओझल होइत गेल अछि, लल्लन ठाकुर जे नहि रहलाह। हँ, हुनक धर्मपत्नी आदरणीया कुसुम ठाकुर धर्मपथपर चलैत हुनक जराओल दीपकेँ प्रकाशयुक्त राखक सार्थक प्रयास निरंतर क' रहल छथि।

हुनक समस्त रचनाक एक संग प्रकाशनसँ लल्लन ठाकुरक सम्पूर्ण साहित्यिक व्यक्तित्वक समीक्षा संभव भ' सकत। एहि सफल उद्यम लेल 'मैलोरंग' परिवार आ एकर उर्जावान नेतृत्वकर्ता मैथिली रंगमंचक धाख राष्ट्रीय राजधानीमे स्थापित केनिहार प्रकाश झा साधुवादक पात्र छथि।

●

सम्पूर्ण रंग-व्यक्तित्व

कुणाल

अपना ओत सम्मान वा उपेक्षाक चिंता मात्र लेखकलेल साहित्यकारलेल होइ छइ। परंतु साहित्य त' मात्र एकटा उपक्रम छी। लोक, समाज, कला आ शिल्प... माने संस्कृति आ सांस्कृतिक उपक्रमक विशाल क्षेत्रपर त' एखन तक कोनो धियाने नइ। एहि सब काजमे आकंठ संलिप्त अनेकानेक लोक अचर्चित आ उपेक्षित रहलए। कहक लेल (कहि सकैइ छी सप्पत खाए लेल) एखन मिथिला चित्रकलापर मधुबनी पेंटिंग नाम स' किछु - किछु भ' रहल छइ। सेहो अइ दुआरे जे एत' पद्मश्री उपाधिक पथार लागल छइ तैं। अहू ठाम बात गंभी. रताक बेगरता बनले छइ। कला आ कलाकार पर त' बात नहिएटा होइ छइ। से रंगमंच हो, संगीत हो, नृत्य - नाच - खेल हो, शिल्पक विभिन्न अनुभाग हो... श्रद्धांजलि तक सीमित होइए। बड़ बेसी भेल त' अश्रुपूरित जोइड़ देल गेल...। एहि विधा सबहक कोनोटा कलाकार आ हुनक कला हमरा लोकनिक विचार - स्मरण परिधिमे नइ रहइ छइथ। हम सब हुनका सबके कोनो तरहक संज्ञानमे लेब जोगरक नइ मानइ छी। आराम स बिसरइ छी...लल्लन प्रसाद ठाकुर एहने एकटा साहित्य - मंच शिल्पी छलाह।

लल्लन प्रसाद ठाकुर मूलतः नाटककार छलाह। पांचटा पुर्नकालिक नाटक छइन। किछु लघु नाटक छइन, गीत छइन। हिन्दी मे सेहो रचना सब छइन। से एक साहित्यकारक रूपमे हिनकापर विमर्श - विचार भ' सकइ छल। हमरा लगइए जे नाटककार के मैथिली साहित्यमे मानल त' जाइ छइ मुदा जानल नइ जाइ छइ। त' एहि माननाइ के कोनो अर्थ नइ। एकरा बेसी स बेसी मुँह छुऔअलिटा कहल जा सकइए।

पछिला सदीके नवम दशकमे मैथिली - रंगमंचक केन्द्र भ' गेल छल- पटना। एकर प्रमुख कारण छलइ 'अरिपन' द्वारा आरंभ कएल गेल आयोजन - ''अन्त.

र्राष्ट्रीय मैथिली नाटक समारोह''। लल्लन प्रसाद ठाकुर के हम पहिल बेर अही आयोजनमे देखलौं। नाटक छल 'मिस्टर निलो काका', प्रस्तुति-मिथिलाक्षर, जमशेदपुर। लेखक-निर्देशक-अभिनेता-लल्लन प्रसाद ठाकुर। सम्पुर्ण नाट्य - दल, उत्साह प्रतिभा आ अनुशासनस' संपृक्त लागल रहए। एहन दल जकरा स' संबंधित क्षेत्रमे बहुत किछु के आशा कएल जा सकए...।

नाटकक नाम आकर्षित करइ छइ। नीलाम्बर स' निलो भेनाइ वा निलो काका भेनाइ सामान्य बात भेल। मिस्टर शब्द एकटा नव रूप अनइ छइ आ इएह आकर्षण के कारण छी। आब एहि मे की आ कत्ते नीक वा अधलाह से हमरा सबके देख' पड़त, नाटक इएह बात हँसइत - खेलाइत कहइए। द्यातव्य इ जे आकर्षण देखिते - देखिते अनुकरणमे परिणत भ' जाइए।

मैथिलीमे हास्य - व्यंगक नाट्य - रचना आंगुरेपर गन' जोगरक अइ। तंत्र नाथ झाक एकांकी सब छींक, चीनीक लड्डू, तीन - चाइरटा आर...बस। लल्लन प्रसाद ठाकुरक नाटक सब एहि विपन्नता के दूर करबाक सघन प्रयास छल।

मिस्टर निलो काकाक प्रदर्शन स' इहो जानल जे ओ लेखन - निर्देशन-अभिनय के संग - संग संगठनकर्ता छइथ आर सपरिवार मंचपर छइथ।

संभवतः ओही आयोजनमे एकटा सहगान सेहो देखबाक - सुनबाक अवसर भेटल। मिथिलामे एकटा प्रसिद्ध फकरा छलइ।

सासुर थिक कैलासे
जँ रही दुई - चाइर मासे
त' छीट्टा - खुरपी हाथे...

अही फकरा के पृष्ठभूमिमे रचित गीत मिथिलाक्षरके टीम प्रस्तुतक' रहल छलय

एना किए अगुताइ छी यौ साढू
भेल दुइए मासे...

एत्तहु गीत रचना हार्मोनियम वादन आ मुख्य स्वर छल...लल्लन प्रसाद ठाकुर।

हम त' मानइ छी जे लल्लन प्रसाद ठाकुर, काम्प्लिट मैथिली थिएटर

पैकज छलाह; लेखक, निर्देशक, अभिनेता, गीतकार, गायक, वादक, संगठनकर्ता आ सपरिवार।

लल्लन प्रसाद ठाकुरके पाँचटा नाटक छइन; 'मिस्टर निलो काका', 'बड़का साहेब', 'बकलेल', 'लौंगिया मिरचाई' आ 'आदि वा अंत'... पहिल चारु नाटक प्रकाशित आ बहु - प्रदर्शित अइ। 'बकलेल' नाटक, भंगिमा, पटना द्वारा एकाधिक बेर प्रदर्शित भेल... गगन जी (कुमार गगन) बकलेल बनइ छलाह... लघु नाटक, 'मैथिली फिल्म' बाल - भंगिमाक लेल प्रमिला जी (प्रमिला झा) करइ छली...

...आइ ऊपर चर्चित तीनू व्यक्ति हमरा सभक बीच नइ छइथ! हुनका लोकनिक रचना अइ। स्मृति अइ।...आह!! अनमोल लोक छलाह ओ सब!!

●

अगिला पीढ़ीक लेल आवश्यक कृत्य

कमल मोहन चुन्नू

मैथिलीक वरेण्य नाटककार (स्व.) ललन प्रसाद ठाकुरक रचना सभके ँएक ठाम क' प्रकाशित करबाक नेयार अत्यंत उत्साहित क' रहल अछि। वस्तुतः ई कृत्य अपन भविष्यत् पीढ़ीक निमित्त एकटा आवश्यक कृत्य अछि। हमर बुझने एहने प्रयास ओहि समस्त रचनाकार लोकनिक लेल सेहो होयबाक चाही जे अल्पवित्र रहितहुँ जीवन पर्यन्त मैथिली भाषा-साहित्यिक विविध स्तरीय समृद्धिमे एहि मैथिलीसमाजक सामने अपन जान-प्राण अरोपने रहलाह, एकर बहुआयामी ख्याति लेल लागल रहलाह। जाहि रचनाकार लोकनि केँआर्थिक समृद्धि छलनि से तँ अपन जीवनकालहुँ मे अपने अन्यान्य खगता-बेगरता सभ केँ अनठबैत यथासम्भव-यथासाध्य अपन पोथी सभ प्रकाशित करैत-करबैत

रहलाह। मुदा मारिते रास एहन्ते रचनाकार लोकनि भेलाह जे विभिन्न अंतर्बाह्य कारण सँ अपन रचना केँ पुस्तकाकार रूप नहि द' सकलाह। तकर एकटा विषम परिणाम ई भेल जे उत्तर पीढ़ी अपन एहि रचनाकार लोकनि सँ आ हुनक साहित्यिक-सामाजिक योगदान सँ क्रमेण अनचिन्हार होबय लागल। अनचिन्हार बनबाक ई क्रम आइ बेसीए तीव्र भ' गेल अछि। एहन समयमे स्व. ललन प्रसाद ठाकुरक रचनावली केँ प्रकाशित करबाक कार्य, एकहि संग मारिते रास साहित्यिक-सांस्कृतिक-सामाजिक खगताक पूर्तिमे सहायक सिद्ध होइत अछि।

ललन प्रसाद ठाकुर एकटा मर्मज्ञ नाटककार छलाह। हुनका अपन मिथिला आ मैथिलीक माटि-पानिक पर्याप्त सम्पृक्ति छलनि, पर्याप्त जनतब छलनि, अपन माटि परहुक लोकक मानस-भूमिक पर्याप्त अनुभव छलनि। स्व. ठाकुर अपन एही चिन्ता-चिन्तन केँ सदति अपन नाट्यकृति मे मूर्त्तरूप दैत रहलाह। हुनका एकहि संग ओहि समस्त परिवर्त्तनक मान छलनि जे मिथिला

केँ प्रभवित करैत रहैत छल। अपन कृति मे स्व. ठाकुर ओहि परविर्तनकारी समस्या सभक जाँच-परख आ नाप-जोख करैत छलाह। ई सदति एहि बदलैत समयक बदलैत स्वरूप पर अपन साकांछ-सतर्क दृष्टि रखने रहैत छलाह। तेँ ओ अपन नाट्य रचनामे अपन दर्शक-पाठक समाजकेँ साकांदा-सतर्क करबामे सद्धति सफल होइत छलाह। ई तकरे परिणाम अछि जे स्व. ठाकुर आधुनिक मैथिलीक एकटा सशक्त हस्ताक्षर सिद्ध मेलाह।

मैलोरंग अपन आरम्भिके काल सँ अपन सांस्कृति आ नाट्य सम्बन्धी गतिविधि सँ मैथिली जगतमे एकटा परिवर्त्तनकारी भूमिका निमाहैत आबि रहल अछि। अपन प्रकाशन सँ सेहो ई मैथिली साहित्यिक मंडार केँ भरैत आबि रहल अछि। एवं क्रम 'मैलोरंग' मैथिलीक प्रदर्शन आ प्रकाशन दुनू स्थल पर अपन प्रसंशनीय सक्रियता देखा रहल अछि। ई पुस्तक...सेहो मैलोरंगक मान-प्रतिष्ठा केँ समृद्ध करत, से हमरा विश्वास अछि। सपरिकर-सदलबला 'मैलोरंग' केँ हमर शुभकामना।

●

यथार्थक रोचक प्रस्तुतिकरण

सत्येंद्र कुमार झा

मैथिलीक आधुनिक युगबोधक नाटककारक रूपमे लल्लन प्रसाद ठाकुरक नाम आदरक संग लेल जाइत अछि। हिनक नाटकक चारूकात मैथिली जे मिथिला परिक्रमा करैत रहैत अछि आ तेँ हिनक नाटक शुद्ध रूपेँ मिथिला आ मैथिलीक नाटकक रूपमे चिन्हल-जाइल अछि।

विज्ञान एवं तकनीकी गंभीर अध्येता आ वृत्तिएँ ओहीसँ सम्बद्ध रहलाक अछैतो ओ साहित्य आ ताहूमे नाट्य विधाक उत्कृष्ट चिन्तक आ रचनाकारक रूपमे माँ मैथिलीक सेवामे आजन्म लीन रहलाह।

नाटक आ सिनेमाकेँ एक दोसरक पूरक माननिहार छलाह लल्लन प्रसाद ठाकुर। ई मिथिलाक नैतिक, सांस्कृति आ आर्थिक पसार एवं विकास हेतु नाटक एवं सिनेमाकेँ अपरिहार्य मानैत छलाह। इयेह कारण छल जे ओ सिनेमाक विकास लेल सेहो चिंतन करैत रहैत छलाह आ एहि कड़ीक रूपमे ओ 1990 मे जमशेदपुरमे फिल्मोत्सव पर कार्यशाला आ विचारगोष्ठीक आयोजन सेहो सफलतापूर्वक कयलनि जाहिमे प्रकाश झा सन दृष्टिसंपन्न निर्देशक भाग लेने छलाह। एतबे नहि, लल्लन प्रसाद ठाकुर स्वयं मात्र नाटकेक अभिनेता नहि छलाह अपितु ओ प्रकाश झाक निर्देशनमे 'कथा माधोपुर की' आ 'विद्रोह' सन फिल्यमे अभिनय, मैथिलीक पहिल वीडियो फिल्म 'आदि वा अंत' केर निर्माण आ निर्देशन सेहो कयलनि।

एहि सभसँ लल्लन ठाकुरक मादे ई गप्प जगजियार भ' उठैत अछि जे ओ कतेक ऊर्जावान आ बहुमुखी प्रतिभाक स्वामी छलाह। ओ सदिखन किछु नव आ विशिष्टि करबा हेतु नियार करैत रहैत छलाह। ओ मिथिलीकेँ गतिशील

आ नव भाव-भंगिमा संग संपूर्ण मिथिलाकेँ बन्हबा लेल उताहुल रहैत छलाह।

जतयधरि हिनक साहित्यिक रचनाक संबंध अछि त' लल्लन प्रसाद ठा. कुरक जतेक प्रकाशित रचना अछि ओ सभ अपनामे नव्यताकेँ समेटने अछि। हिनक चारिगोट नाटक-बड़का साहेब, मिस्टर नीलो काका, लौंगिया मिरचाई आ बकलेल आ दूगोट एकांकी मैथिली फिल्म आ विद्यापति दुर्दशा प्रकाशित अछि। संख्यामे कम रहितहुँ अपन विशिष्टताक कारणेँ ई रचना सभ सदैव प्रासंगिक बनल रहत।

एहि प्रकारे जखन हमरालोकनि लल्लन प्रसाद ठाकुरक रचनाक मूल्यांकन करैत छी त' देखबामे स्पष्ट अबैत अछि जे ई सहज लेखक छलाह आ तेँ यथार्थक चित्रण करबामे पूर्ण समर्थ भेलाह। हिनक रचना यद्यपि गंभीर प्रश्न ठाढ़ करैत अछि, ओकर समाधान सेहो तकैत अछि मुदा एकर प्रस्तुति कतहु बोझिल नहि होइत अछि। एकर पाछां इहो कारण भ' सकैत अछि जे ओ रोचकता लेल हास्य-व्यंग्यकेँ कतहु कात नहि कयलनि।

मुदा नाट्य लेखन, अभिनय, निर्देशन आदि विधामे लल्लन प्रसाद ठाकुर एकगोट एहन नाम छथि जे मैथिली नाट्यमे आ रंगमंच पर सदैव जगमगाइत रहताह।

●

लोंगिया मिरचाइ–सन ललिचगर मुदा तीक्ष्ण

- संतोषी कुमार

विज्ञान (निरस विषय)क छात्र अभियांत्रिकी शिक्षा सँ सुशोभित श्री ललन प्रसाद ठाकुर साहित्य (सरस विषय)क लेखनमे अपन नाट्य रचनासँ हास्य, व्यंग्य, कटाक्ष आ प्रतिवादक स्वर रखैत मिथिलाक समाजक सजीव चित्रण कयने छथि। आधुनिक युग विज्ञान एवं तकनीकिक अछि। आधुनिक तकनीक लोक लेल आकर्षक होइत अछि। जँ तकनीकिक ज्ञाता साहित्य सृजन करताह त' निश्चित किछु आकर्ष सृजन होयत। रंगकर्मी श्री ठाकुर मंच तकनीकक ध्यान रखैत सभ नाटकक रचना कयने छथि जाहि सँ हिनक नाटक पठनीय सह मंचोपयोगी अछि। ओना त' नाट्य लेखक, प्रयोक्ता आ दर्शक सभक सरस आ संवेदी होयब आवश्यक रहैत अछि, मुदा वर्तमानमे कतेक दर्शक संवेदी रहैत छथि से एकटा प्रश्न ठाढ़ करैत अछि। एहनमे हिनक नाटक सटीक काज करैत अछि-मनोरंजनक संग-संग समस्याक प्रदर्शन। नाट्य प्रणयन गाममे हो वा शहरमे, दर्शक प्रबुद्ध हो वा सामान्य जन, सभक बीच नाटक अमिट छाप छोड़लक।

कोनोवाद, दर्शन, विचारधारा, पूर्वाग्रह आदि सँ इतर, कुल मिला ललन ठाकुरक नाटकमे मिथिला समाजक जिवंत चित्रण भेटैत अछि। काल्पनिक नहि एकटा वास्तविक मिथिलाक चित्रण जकर कथा आ पात्र अपनहि बीच साक्षात्कार होइत बुझाइत रहैत अछि। नाटक सहज हास्य उपस्थित करैत अछि, मुदा संवेदी दृश्य सभ कारुणिक परिस्थिति उत्पन्न करबा सँ नहि चूकैत अछि। व्यंग्यात्मक शैलीक संवाद, प्रतिवादक स्वर ठाढ करैत अछि।

•





स्व. लल्लन प्रसाद ठाकुर जीक पौत्र श्रीयुत दर्श ठाकुर (उम्र 9 साल) अमेरिका के फ्लोरिडामे आयोजित Science Bee Championship जाहि मे अमेरिका के पचासो राज्य केर बच्चा भाग लैत छैक ताहि मे सर्वश्रेष्ठ पॉइंट्स के संग champion घोषित भेला अछि। ई आयोजन 17 स' 19 जून 2022 के बीच भेल छल।



डॉ. प्रकाश झा

सुपरिचित रंगकर्मी एवं शोधार्थी । मैथिली रंगकर्मके वैश्विक स्तरपर स्थापित करबाक श्रेय ।

राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठीमे नियमित आलेख पाठ लेल आमंत्रित ।

पी.एच.–डी., एन.ई.टी., जूनियर एवं सीनियर रिसर्च फेलोशिप; संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ।

प्रकाशित कृति : 'महेन्द्र मलंगियाक सात नाटक' (सम्पादित), 'महेन्द्र मलंगिया : व्यक्तित्व आ कृतित्व' (सम्पादित), 'रज़िया सुल्तान' (मैथिलीमेअनूदित; प्रकाशन विभाग, भारत सरकार), 'ज्योतिरीश्वर कृत् धूर्त्तसमागम : प्रस्तुति, प्रक्रिया एवं परिणति' (सम्पादित), मैथिली आ हिन्दीक महत्त्वपूर्ण पत्र-पत्रिकामे नियमित शोधालेख प्रकाशित ।

रंगमंचीय अनुभव : 40स' बेसी नाटकक निर्देशन जाहिमे ज्योतिरीश्वरक 'धूर्त्तसमागम', विद्यापतिक 'मणिमञ्जरि' आ 'गोरक्षविजय', पं. जीवन झाक 'सुन्दर संयोग' शामिल, संगहि 50स' बेसी नाटकमे अभिनय। अंतरराष्ट्रीय नाट्य महोत्सव 'भारत रंग महोत्सव' मे प्रथम चयनित मैथिली नाटकक निर्देशक। 19म एवं 20म 'भारत रंग महोत्सव' मे निर्देशित नाटक क्रमश: 'आब मानि जाउ' आ 'धूर्त्तसमागम'' चयनित आ मंचित ।

सम्मान : बिहार सम्मान (कला, संस्कृति एवं भाषा विभाग, दिल्ली सरकार); अरुण सिंहा स्मृति सम्मान (पा.ना.म.; प्रांगण, पटना, बिहार); मिथिला विभूति सम्मान (अ.भा.मि. संघ दिल्ली); युवा रंगनिर्देशक (साहित्य कला परिषद, दिल्ली सरकार); स्वर्ण पदक (ल.ना.मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार) ।

वर्तमान : प्रकाशन–प्रभारी एवं स. जन-सम्पर्क अधिकारी, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली; नाट्यशोध पत्रिका 'रंग प्रसंग'क सह सम्पादक; सुप्रसिद्ध रंग संस्था 'संभव, दिल्ली'क अभिनेता; मैलोरंग रेपर्टरी एवं प्रकाशनक संस्थापक निदेशक ।

मैलोरंग प्रकाशन
मैथिली लोक रंग

₹ 595.00
ISBN: 978-93-82828-37-2
9 789382 828372